योगायोग

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

योगायोग

रवीन्द्रनाथ ठाकुर
स्व-रचित चित्र

रवीन्द्र-सदन के सौजन्य से

योगायोग

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

लिप्यन्तर

श्रीमती कणिका विश्वास

साहित्य अकादेमी

नई दिल्ली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Yogayog—(novel) by Rabindranath Tagore. Devanagari transliteration by Dr. Kanika Biswas. Frontispiece : Self-portrait in colour by Rabindranath. Sahitya Akademi, New Delhi (1963)

आमुख : रवीन्द्रनाथ ठाकुर
(स्व-रचित चित्र)
रवीन्द्र-सदन के सौजन्य से

विश्वभारती प्रकाशन विभाग के सौजन्य से
प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन

मुद्रक
व्रजरत्न मूंधड़ा
बिनानी प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड
३८, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता-१

१

आज ७इ आषाढ़। अविनाश घोषालेर जन्मदिन। वयस तार हल बत्रिश। भोर थेके आसछे अभिनन्दनेर टेलिग्राम, आर फुलेर तोड़ा।

गल्पटार एइखाने आरम्भ। किन्तु आरम्भेर पूर्वेओ आरम्भ आछे। सन्ध्यावेलाय दीप ज्वालार आगे सकालवेलाय सलते पाकानो।

एइ काहिनीर पौराणिक युग सन्धान करले देखा याय घोषालरा एक समये छिल सुन्दरवनेर दिके, तार परे हुगलि जेलार नुरनगरे। सेटा बाहिर थेके पर्टुगीजदेर ताड़ाय ना भितर थेके समाजेर ठेलाय ठिक जाना नेइ। मरिया हये यारा पुरानो घर छाड़ते पारे, तेजेर सङ्गे नूतन घर बाँधबार शक्तिओ तादेर। ताइ घोषालदेर ऐतिहासिक युगेर शुरुतेइ देखि प्रचुर ओदेर जमिजमा, गोरुबाछुर, जनमजुर, पालपार्वण; आदायविदाय। आजओ तादेर साबेक ग्राम शेयाकुलिते अन्तत बिघे दशेक आयतनेर घोषाल-दिघि पाना-अवगुण्ठनेर भितर थेके पङ्करुद्धकण्ठे अतीत गौरवेर साक्ष्य दिच्छे। आज से-दिघिते शुधु नामटाइ ओदेर, जलटा चाटुज्ये जमिदारेर। की करे एक दिन ओदेर पैतृक महिमा जलाञ्जलि दिते हयेछिल सेटा जाना दरकार।

एदेर इतिहासेर मध्यम परिच्छेदे देखा याय खिटिमिटि बेधेछे चाटुज्ये जमिदारेर सङ्गे। एबार विषय निये नय, देवतार पूजो निये। घोषालरा स्पर्धा करे चाटुज्येदेर चेये दु-हात उँचु प्रतिमा गड़ियेछिल। चाटुज्येरा तार जवाब दिले। राताराति विसर्जनेर रास्तार माझे माझे एमन मापे तोरण बसाले याते करे घोषालदेर प्रतिमार माथा याय ठेके। उँचु-प्रतिमार दल तोरण भाङते बेरोय, निचु-प्रतिमार दल तादेर माथा भाङ्ते छोटे। फले, देवी से-बार बाँधा बराद्दर चेये अनेक बेशि रक्त आदाय करेछिलेन। खुन-जखम थेके मामला उठल। से-मामला थामल घोषालदेर सर्वनाशेर किनाराय एसे।

आगुन निबल, काठओ बाकि रइल ना, सबइ हल छाइ। चाटुज्ये-देरओ वस्तुलक्ष्मीर मुख फ्याकाशे हये गेल। दाये पड़े सन्धि हते पारे, किन्तु ताते शान्ति हय ना। ये-व्यक्ति खाड़ा आछे, आर ये-व्यक्ति कात हये पड़ेछे दुइ पक्षेरइ भितरटा तखनओ गरगर करछे। चाटुज्येरा घोषालदेर उपर शेष-कोपटा दिले समाजेर खाँड़ाय। रटिये दिले एककाले ओरा छिल

भङ्गज ब्राह्मण, एखाने एसे सेटा चापा दियेछे, केँचो सेजेछे केउटे। यारा खोँटा दिले, टाकार जोरे तादेर गलार जोर। ताइ स्मृतिरत्नपाड़ातेओ तादेर एइ अपकीर्तनेर अनुस्वार-विसर्गओयाला ढाकि जुटल। कलङ्कभञ्जनेर उपयुक्त प्रमाण वा दक्षिणा घोषालदेर शक्तिते तखन छिल ना, अगत्या चण्डीमण्डपविहारी समाजेर उत्पाते एरा द्वितीयबार छाड़ल भिटे। रजबपुरे अति सामान्यभावे बासा बाँधले।

यारा मारे तारा भोले, यारा मार खाय तारा सहजे भुलते पारे ना। लाठि तादेर हात थेके खसे पड़े बलेइ लाठि तारा मने-मने खेलते थाके। बहु दीर्घकाल हातटा असार थाकातेइ मानसिक लाठिटा ओदेर वंश बेये चले आसछे। माझे माझे चाटुज्येदेर केमन करे ओरा जब्द करेछिल सत्य मिथ्ये मिशिये से-सब गल्प ओदेर घरे एखनओ अनेक जमा हये आछे। खोड़ो चालेर घरे आषाढ़-सन्ध्यावेलाय छेलेरा सेगुलो हाँ करे शोने। चाटुज्येदेर विख्यात दाशु सर्दार रात्रे यखन घुमोच्छिल तखन बिश-पँचिश जन लाठियाल ताके धरे एने घोषालदेर काछारिते केमन करे बेमालुम विलुप्त करे दिले से-गल्प आज एक-श बछर धरे घोषालदेर घरे चले आसछे। पुलिस यखन खानातल्लासि करते एल नायेब भुवन विश्वास अनायासे बलले, हाँ, से काछारिते एसेछिल तार निजेर काजे, हाते पेये बेटाके किछु अपमानओ करेछि, शुनलेम नाकि सेइ क्षोभे बिबागि हये चले गेछे। हाकिमेर सन्देह गेल ना। भुवन बलले, हुजुर एइ बछरेर मध्ये यदि तार ठिकाना बेर करे दिते ना पारि तबे आमार नाम भुवन विश्वास नय। कोथा थेके दाशुर मापेर एक गुण्डा खुंजे बार करले—एकेबारे ताके पाठाले ढाकाय। से करले घटि चुरि, पुलिसे नाम दिले दाशरथि मण्डल। हल एक मासेर जेल। ये-तारिखे छाड़ा पेयेछे भुवन सेइदिन म्याजेस्टेरिते खबर दिले दाशु सर्दार ढाकाय जेलखानाय। तदन्ते बेरोल दाशु जेलखानाय छिल बटे, तार गायेर दोलाइखाना जेलेर बाइरेर माठे फेले चले गेछे। प्रमाण हल से-दोलाइ सर्दारेरइ। तार पर से कोथाय गेल से-खबर देओयार दाय भुवनेर नय।

एइ गल्पगुलो देउले-हओया वर्तमानेर साबेक कालेर चेक। गौरवेर दिन गेछे; ताइ गौरवेर पुरातत्त्वटा सम्पूर्ण फाँका बले एत बेशि आओयाज करे।

या होक, येमन तेल फुरोय, येमन दीप नेबे, तेमनि एक समये रातओ पोहाय। घोषाल-परिवारे सूर्योदय देखा दिल अविनाशेर बाप मधुसूदनेर जोर कपाले।

२

मधुसूदनेर बाप आनन्द घोषाल रजबपुरेर आड़तदारदेर मुहुरि। मोटा भात मोटा कापड़े संसार चले। गृहिणीदेर हाते शाँखा-खाड़ु, पुरुषदेर गलाय रक्षामन्त्रेर पितलेर मादुलि आर बेलेर आटा दिये माजा खुब मोटा पइते। ब्राह्मण-मर्यादार प्रमाण क्षीण हओयाते पइतेटा हयेछिल प्रमाणसइ।

मफस्वल इस्कुले मधुसूदनेर प्रथम शिक्षा। सङ्गे सङ्गे अवैतनिक शिक्षा छिल नदीर धारे, आड़तेर प्राङ्गणे, पाटेर गाँटेर उपर चड़े बसे। याचनदार खरिददार गोरुर गाड़िर गाड़ोयानदेर भिड़ेर मध्येइ तार छुटि, येखाने बाजारे टिनेर चालाघरे साजानो थाके सारबाँधा गुड़ेर कलसी, आँटि-बाँधा तामाकेर पाता, गाँट-बाँधा विलिति र्‌यापार, केरोसिनेर टिन, सरषेर ढिबि, कलाइयेर बस्ता, बड़ो बड़ो तौल-दाँड़ि आर बाटखारा, सेइखाने घुरे तार येन बागाने बेड़ानोर आनन्द।

बाप ठाओराले छेलेटार किछु हबे। ठेलेठुले गोटा दुत्तिन पास कराते पारलेइ इस्कुलमास्टारि थेके मोक्तारि ओकालति पर्यन्त भद्रलोकदेर ये कयटा मोक्षतीर्थ तार कोनो-ना-कोनोटाते मधु भिड़ते पारबे। अन्य तिनटे छेलेर भाग्यसीमारेखा गोमस्तागिरि पर्यन्तइ पिलपे-गाड़ि हये रइल। तारा केउ वा आड़तदारेर केउ वा तालुकदारेर दफतरे काने कलम गुंजे शिक्षा-नविशिते बसे गेल। आनन्द घोषालेर क्षीण सर्वस्वेर उपर भर करे मधुसूदन बासा निले कलकातार मेसे।

अध्यापकेरा आशा करेछिल परीक्षाय ए-छेले कलेजेर नाम राखबे। एमन समय बाप गेल मारा। पड़बार बइ, माय नोटबइ समेत, विक्रि करे मधु पण करे बसल एबार से रोजगार करबे। छात्रमहले सेकेण्ड-ह्याण्ड बइ विक्रि करे व्यवसा हल शुरु। मा केंदे मरे—बड़ो तार आशा छिल, परीक्षापासेर रास्ता दिये छेले ढुकबे 'भद्दोर' श्रेणीर व्यूहेर मध्ये। तार परे घोषाल-वंशदण्डेर आगाय उड़बे केरानिवृत्तिर जयपताका।

छेलेवेला थेके मधुसूदन येमन माल बाछाइ करते पाका, तेमनि तार बन्धु बाछाइ करबारओ क्षमता। कखनो ठके नि। तार प्रधान छात्रबन्धु छिल कानाइ गुप्त। एर पूर्वपुरुषेरा बड़ो बड़ो सओदागरेर मुच्छुद्दिगिरि करे एसेछे। बाप नामजादा केरोसिन कोम्पानिर आपिसे उच्च आसने अधिष्ठित।

भाग्यक्रमे एरइ मेयेर विवाह। मधुसूदन कोमरे चादर बेंधे काजे लेगे

गेल। चाल बाँधा, फुलपाताय सभा साजानो, छापाखानाय दाँड़िये थेके सोनार कालिते चिठि छापानो, चौकि कारपेट भाड़ा करे आना, गेटे दाँड़िये अभ्यर्थना, गला भाङिये परिवेषण, किछुइ बाद दिले ना। एइ सुयोगे एमन विषयबुद्धि ओ काण्डज्ञानेर परिचय दिले ये, रजनीबाबु भारि खुशि। तिनि केजो मानुष चेनेन, बुझलेन ए-छेलेर उन्नति हबे। निजेर थेके टाका डिपजिट दिये मधुके रजबपुरे केरोसिनेर एजेन्सिते बसिये दिलेन।

सौभाग्येर दौड़ शुरु हल ; सेइ यात्रापथे केरोसिनेर डिपो कोन् प्रान्ते बिन्दु-आकारे पिछिये पड़ल। जमार घरेर मोटा मोटा अङ्केर उपर पा फेलते फेलते व्यवसा हु-हु करे एगोल गलि थेके सदर रास्ताय, खुचरो थेके पाइकिरिते, दोकान थेके आपिसे, उद्योगपर्व थेके स्वर्गारोहणे। सबाइ-बलले, "एकेइ बले कपाल!" अर्थात् पूर्वजन्मेर इस्टिमेतेइ ए-जन्मेर गाड़ि चलछे। मधुसूदन निजे जानत ये, ताके ठकाबार जन्ये अदृष्टेर त्रुटि छिल ना, केवल हिसेबे भुल करे नि बलेइ जीवनेर अङ्क-फले परीक्षकेर काटा दाग पड़े नि;—यारा हिसेबेर दोषे फेल करते मजबुत, परीक्षकेर पक्षपातेर 'परे ताराइ कटाक्षपात करे थाके।

मधुसूदनेर राश भारि। निजेर अवस्था सम्बन्धे कथा-वार्ता कय ना। तबे किना आन्दाजे बेश बोझा याय, मरा गाङे बान एसेछे। गृहपालित बांलादेशे एमन अवस्थाय सहज मानुषे विवाहेर चिन्ता करे, जीवितकालवर्ती सम्पत्ति-भोगटाके वंशावलीर पथ बेये मृत्युर परवर्ती भविष्यते प्रसारित करबार इच्छा तादेर प्रबल हय। कन्यादायिकेरा मधुके उत्साह दिते त्रुटि करे ना, मधुसूदन बले, "प्रथमे एकटा पेट सम्पूर्ण भरले तार परे अन्य पेटेर दाय नेओया चले।" एर थेके बोझा याय मधुसूदनेर हृदयटा याइ होक पेटटा छोटो नय।

एइ समये मधुसूदनेर सतर्कताय रजबपुरेर पाटेर नाम दाँड़िये गेल। हठात् मधुसूदन सब-प्रथमेइ नदीर धारेर प'ड़ो जमि बेबाक किने फेलले, तखन दर सस्ता। इँटेर पाँजा पोड़ाले विस्तर, नेपाल थेके एल बड़ो बड़ो शालकाठ, सिलेट थेके चुन, कलकाता थेके मालगाड़ि बोझाइ करोगेटेड लोहा। बाजारेर लोक अवाक! भाबले, "एइ रे! हाते किछु जमेछिल, सेटा सइबे केन! एबार बदहजमेर पाला, कारबार मरणदशाय ठेकल बले!"

एबारओ मधुसूदनेर हिसेबे भुल हल ना। देखते देखते रजबपुरे व्यव-सार एकटा आओड़ लागल! तार घूर्णिटाने दालालरा एसे जुटल, एल माड़ोयारिर दल, कुलिर आमदानि हल, कल बसल, चिमनि थेके कुण्डलायित धूमकेतु आकाशे आकाशे कालिमा विस्तार करले।

हिसेबेर खातार गवेषणा ना करेओ मधुसूदनेर महिमा एखन दूर थेके खालि-चोखेइ धरा पड़े। एका समस्त गञ्जेर मालिक, पाँचिल-घेरा दोतला इमारत, गेटे शिलाफलके लेखा 'मधुचक्र'। ए-नाम तार कलेजेर पूर्वतन संस्कृत अध्यापकेर देओया। मधुसूदनके तिनि पूर्बेर चेये अकस्मात् एखन अनेक बेशि स्नेह करेन।

एइबार विधवा मा भये-भये एसे बलले, "बाबा, कबे मरे याब, बउ देखे येते पारब ना कि?"

मधु गम्भीरमुखे संक्षेपे उत्तर करले, "विवाह करतेओ समय नष्ट, विवाह करेओ ताइ। आमार फुरसत कोथाय?"

पीड़ापीड़ि करे एमन साहस ओर मायेरओ नाइ, केनना समयेर बाजार-दर आछे। सबाइ जाने मधुसूदनेर एक कथा।

आरओ किछुकाल याय। उन्नतिर जोयार बेये कारबारेर आपिस मफस्वल थेके कलकाताय उठल। नातिनातनीर दर्शन-सुख सम्बन्धे हाल छेड़े दिये मा इहलोक त्याग करले। घोषाल-कोम्पानिर नाम आज देशविदेशे, ओदेर व्यवसा बनेदि विलिति कोम्पानिर गा घेँषे चले, विभागे विभागे इंरेज म्यानेजार।

मधुसूदन एबार स्वयं बलले, विवाहेर फुरसत हल। कन्यार बाजारे क्रेडिट तार सर्वोच्चे। अतिबड़ो अभिमानी घरेरओ मानभञ्जन करबार मतो तार शक्ति। चारदिक थेके अनेक कुलवती रूपवती गुणवती धनवती विद्यावती कुमारीदेर खबर एसे पौंछोय। मधुसूदन चोख पाकिये बले, ओइ चाटुज्येदेर घरेर मेये चाइ।

घा-खाओया वंश, घा-खाओया नेकड़े बाघेर मतो, बड़ो भयंकर।

३

एइबार कन्यापक्षेर कथा।

नुरनगरेर चाटुज्येदेर अवस्था एखन भालो नय। ऐश्वर्येर बाँध भाङ्छे। छय-आनि शरिकरा विषय भाग करे बेरिये गेल, एखन तारा बाइरे थेके लाठि हाते दश-आनिर सीमाना खाबले बेड़ाच्छे। ताछाड़ा राधाकान्त जीउर सेवायति अधिकारे दशे-छये यतइ सूक्ष्मभावे भाग करबार चेष्टा चलछे, ततइ तार शस्य अंश स्थूलभावे उकिलमोक्तारेर आङ्गिनाय नय-छय हये छड़िये पड़ल, आमलाराओ वञ्चित हल ना। नुरनगरेर से-प्रताप नेइ,—

आय नेइ, व्यय बेड़ेछे चतुर्गुण। शतकरा न-टाका हारे सुदेर न-पाओयाला माकड़सा जमिदारिर चारदिके जाल जड़िये चलेछे।

परिवारे दुइ भाइ, पाँच बोन। कन्याधिक्य अपराधेर जरिमाना एखनओ शोध हय नि। कर्ता थाकतेइ चार बोनेर बिये हये गेल कुलीनेर घरे। एदेर धनेर बहरटुकु हाल आमलेर, ख्यातिटा साबेक आमलेर। जामाइदेर पण दिते हल कौलीन्येर मोटा दामे ओ फाँका ख्यातिर लम्बा मापे। एइ बाबदेइ न-पार्सेण्टेर सूत्रे गाँथा देनार फाँसे बारो पार्सेण्टेर ग्रन्थि पड़ल। छोटो भाइ माथा झाड़ा दिये उठे बलले, विलेते गिये ब्यारि-स्टार हये आसि, रोजगार ना करले चलबे ना। से गेल विलेते, बड़ो भाइ विप्रदासेर घाड़े पड़ल संसारेर भार।

एइ समयटाते पूर्वोक्त घोषाल ओ चाटुज्येदेर भाग्येर घुड़िते परस्परेर लखे लखे आर-एक बार बेधे गेल। इतिहासटा बलि।

बड़ोबाजारेर तनसुकदास हालओआइदेर काछे एदेर एकटा मोटा अङ्केर देना। नियमित सुद दिये आसछे, कोनो कथा ओठे नि। एमन समये पुजोर छुटि पेये विप्रदासेर सहपाठी अमूल्यधन एल आत्मीयता देखाते। से हल बड़ो अ्यार्टर्नि-आपिसेर आर्टिकेल्ड् हेड्क्लार्क। एइ चशमा-परा युवकटि नुरनगरेर अवस्थाटा आड़चोखे देखे निले। सेओ कलकाताय फिरल आर तनसुकदासओ टाका फेरत चेये बसल; बलले नतुन चिनिर कारबार खुलेछे, टाकार जरुरि दरकार।

विप्रदास माथाय हात दिये पड़ल।

सेइ संकटकालेइ चाटुज्ये ओ घोषाल एइ दुइ नामे द्वितीयबार घटल द्वन्द्वसमास। तार पूर्वेइ सरकारबाहादुरेर काछ थेके मधुसूदन राजखेताब पेयेछे।

पूर्वोक्त छात्रबन्धु एसे बलले, नतुन राजा खोशमेजाजे आछे, एइ समय ओर काछ थेके सुविधेमतो धार पाओया येते पारे। ताइ पाओया गेल—चाटुज्येदेर समस्त खुचरो देना एकठाँइ करे एगारो लाख टाका सात पार्सेण्ट सुदे। विप्रदास हाँफ छेड़े बाँचल।

कुमुदिनी ओदेर शेष अवशिष्ट बोन बटे, तेमनि आज ओदेर सम्बलेरओ शेष अवशिष्ट दशा। पण जोटानोर पात्र जोटानोर कथा कल्पना करते गेले आतङ्क हय। देखते से सुन्दरी, लम्बा छिपछिपे, येन रजनीगन्धार पुष्पदण्ड; चोख बड़ ना होक एकेबारे निविड़ कालो, आर नाकटि निखुंत रेखाय येन फुलेर पापड़ि दिये तैरि। रङ् शाँखेर मतो चिकन गौर; निटोल

दुखानि हात; से-हातेर सेवा कमलार वरदान, कृतज्ञ हये ग्रहण करते हय। समस्त मुखे एकटि वेदनाय सकरुण धैर्येर भाव।

कुमुदिनी निजेर जन्ये निजे संकुचित। तार विश्वास से अपया। से जाने पुरुषरा संसार चालाय निजेर शक्ति दिये, मेयेरा लक्ष्मीके घरे आने निजेर भाग्येर जोरे। ओर द्वारा ता हल ना। यखन थेके ओर बोझबार वयस हयेछे तखन थेके चारिदिके देखछे दुर्भाग्येर पापदृष्टि। आर संसारेर उपर चेपे आछे ओर निजेर आइबुड़ो-दशा, जगद्दल पाथर, तार यतबड़ो दुःख, ततबड़ो अपमान। किछु करबार नेइ, कपाले कराघात छाड़ा। उपाय करबार पथ विधाता मेयेदेर दिलेन ना, दिलेन केवल व्यथा पावार शक्ति। असम्भव एकटा किछु घटे ना कि? कोनो देवतार वर, कोनो यक्षेर धन, पूर्वजन्मेर कोनो एकटा बाकिपड़ा पाओनार एक मुहूर्ते परिशोध? एक-एकदिन राते बिछाना थेके उठे बागानेर मर्मरित झाउगाछगुलोर माथार उपरे चेये थाके, मने मने बले, "कोथाय आमार राजपुत्र, कोथाय तोमार सातराजार धन मानिक, बाँचाओ आमार भाइदेर, आमि चिरदिन तोमार दासी हये थाकव।"

वंशेर दुर्गतिर जन्य निजेके यतइ अपराधी करे, ततइ हृदयेर सुधापात्र उपुड़ करे भाइदेर ओर भालोबासा देय,—कठिन दुःखे नेंड़ानो ओर भालोबासा। कुमुर 'परे तादेर कर्तव्य करते पारछे ना बले ओर भाइराओ बड़ो व्यथार सङ्गे कुमुके तादेर स्नेह दिये घिरे रेखेछे। एइ पितृमातृहीनाके उपरओयाला ये-स्नेहेर प्राप्य थेके वञ्चित करेछेन भाइरा ता भरिये देबार जन्ये सर्वदा उत्सुक। ओ ये चाँदेर आलोर टुकरो, दैन्येर अन्धकारके एका मधुर करे रेखेछे। यखन माझे माझे दुर्भाग्येर वाहन बले निजेके से धिक्कार देय, दादा विप्रदास हेसे बले, "कुमु, तुइ निजेइ तो आमादेर सौभाग्य,—तोके ना पेले बाड़िते श्री थाकत कोथाय?"

कुमुदिनी घरे पड़ाशुनो करेछे। बाइरेर परिचय नेइ बललेइ हय। पुरोनो नतुन दुइ कालेर आलो-आँधारे तार वास। तार जगत्टा आवछाया;—सेखाने राजत्व करे सिद्धेश्वरी, गन्धेश्वरी, घेँटु, षष्ठी; सेखाने विशेष दिने चन्द्र देखते नेइ; शाँख बाजिये ग्रहणेर कुदृष्टिके ताड़ाते हय, अम्बु-वाचीते सेखाने दुध खेले सापेर भय घोचे; मन्त्र प'ड़े, पाँठा मानत क'रे, सुपुरि आलो-चाल ओ पाँच पयसार शिन्नि मेने, तागाताबिज प'रे, से-जगतेर शुभ-अशुभेर सङ्गे कारबार; स्वस्त्यनेर जोरे भाग्य संशोधनेर आशा;—से-आशा हाजारबार व्यर्थ हय। प्रत्यक्ष देखा याय अनेक समयेइ शुभ-

लग्नेर शाखाय शुभफल फले ना, तबु वास्तवेर शक्ति नेइ प्रमाणेर द्वारा स्वप्नेर मोह काटाते पारे। स्वप्नेर जगते विचार चले ना, एकमात्र चले मेने-चला। ए-जगते दैवेर क्षेत्रे युक्तिर सुसंगति, बुद्धिर कर्तृत्व, भालो-मन्दर नित्य तत्त्व नेइ बलेइ कुमुदिनीर मुखे एमन एकटा करुणा। ओ जाने बिना अपराधेइ ओ लाञ्छित। आट बछर हल सेइ लाञ्छनाके एकान्त से निजेर बलेइ ग्रहण करेछिल––से तार पितार मृत्यु निये।

४

पुरोनो धनी-घरे पुरातन काल ये-दुर्गे वास करे तार पाका गाँथुनि। अनेक देउड़ि पार हये तबे नतुन कालके सेखाने ढुकते हय। सेखाने यारा थाके नतुन युगे एसे पौँछते तादेर विस्तर लेट हये याय। विप्रदासेर बाप मुकुन्दलालओ धावमान नतुन युगके धरते पारेन नि।

दीर्घ ताँर गौरवर्ण देह, बाबरि-काटा चुल, बड़ो बड़ो टाना चोखे अप्रतिहत प्रभुत्वेर दृष्टि। भारि गलाय यखन हाँक पाड़ेन, अनुचर-परिचरदेर बुक थरथर करे कँपे ओठे। यदिओ पालोयान रेखे नियमित कुस्ति करा ताँर अभ्यास, गाये शक्तिओ कम नय, तबु सुकुमार शरीरे श्रमेर चिह्न नेइ। परने चुनट-करा फुरफुरे मसलिनेर जामा, फरासडाङा वा ढाकाइ धुतिर बहुयत्नविन्यस्त कोंचा भूलुण्ठित, कर्तार आसन्न आगमनेर वातास इस्ताम्बुल आतरेर सुगन्धवार्ता वहन करे। पानेर सोनार वाटा हाते खानसामा पश्चाद्वर्ती, द्वारेर काछे सर्वदा हाजिर तकमापरा आरदलि। सदर दरजाय वृद्ध चन्द्रभान जमादार तामाक माखा ओ सिद्धि कोटार अवकाशे बेञ्चे बसे लम्बा दाड़ि दुइ भाग करे बार बार आँचड़िये दुइ कानेर उपर बाँधे, निम्नतन दारोयानरा तलोयार हाते पाहारा देय। देउड़िर देओयाले झोले नानारकमेर ढाल, बाँका तलोयार, बहुकालेर पुरानो बन्दुक बल्लम बर्शा।

बैठकखानाय मुकुन्दलाल बसेन गदिर उपर, पिठेर काछे ताकिया। पारिषदेरा बसे निचे, सामने बाँये दुइ भागे। हुँकाबरदारेर जाना आछे एदेर कार सम्मान कोन् रकम हुँकोय रक्षा हय, बाँधानो, आबाँधानो, ना, गुड़गुड़ि। कर्तामहाराजेर जन्ये वृहत् आलबोला, गोलापजलेर गन्धे सुगन्धि।

बाड़िर आर-एक महले विलिति बैठकखाना, सेखाने अष्टादश शताब्दीर विलिति आसबाब। सामनेइ कालोदाग-धरा मस्त एक आयना, तार गिलटि-करा फ्रेमेर दुइ गाये डानाओआला परीमूर्तिर हाते-धरा बातिदान। तलाय

टेबिले सोनार जले चित्रित कालो पाथरेर घड़ि, आर कतकगुलो विलिति काँचेर पुतुल। खाड़ापिठओयाला चौकि, सोफा, कड़िते दोदुल्यमान, झाड़-लण्ठन समस्तइ हल्याण्ड-कापड़े मोड़ा। देयाले पूर्वपुरुषदेर अयेलपेण्टिङ आर तार सङ्गे वंशेर मुरुब्बि दु-एकजन राजपुरुषेर छबि। घरजोड़ा विलिति कार्पेट, ताते मोटा मोटा फुल टकटके कड़ा रङे आँका। विशेष क्रियाकर्मे जिलार साहेबसुबादेर निमन्त्रणोपलक्ष्ये एइ घरेर अवगुण्ठन मोचन हय। बाड़िते एइ एकटा मात्र आधुनिक घर, किन्तु मने हय एइटेइ सबचेये प्राचीन भूते पाओया कामरा, अव्यवहारेर रुद्ध घनगन्धे दम-आटकानो दैनिक जीवन-यात्रार सम्पर्कवञ्चित बोबा।

मुकुन्दलालेर ये शौखिनता सेटा तखनकार आदबकायदार अत्यावश्यक अङ्ग। तार मध्ये ये निर्भीक व्ययबाहुल्य सेइटेतेइ धनेर मर्यादा। अर्थात् धन बोझा हये माथाय चड़े नि, पादपीठ हये आछे पायेर तलाय। एदेर शौखिनतार आमदरबारे दानदाक्षिण्य, खासदरबारे भोगविलास,—दु-इ खुब टाना मापेर। एकदिके आश्रितवात्सल्ये येमन अकृपणता, आर-एकदिके औद्धत्यदमने तेमनि अबाध अधैर्य। एकजन हठात्-धनी प्रतिवेशी गुरुतर अपराधे कर्तार बागानेर मालीर छेलेर कान मले दियेछिल मात्र; एइ धनीर शिक्षाविधान बाबद यत खरच हयेछे, निजेर छेलेके कलेजे पार करतेओ एखनकार दिने एत खरच करे ना। अथच मालीर छेलेटाकेओ अग्राह्य करेन नि। चाबकिये ताके शय्यागत करेछिलेन। रागेर चोटे चाबुकेर मात्रा बेशि हयेछिल बले छेलेटार उन्नति हल। सरकारि खरचे पड़ाशुना करे से आज मोक्तारि करे।

पुरातन कालेर धनवानदेर प्रथामतो मुकुन्दलालेर जीवन दुइ-महला। एक महले गार्हस्थ्य, आर-एक महले इयारकि। अर्थात् एक महले दशकर्म, आर-एक महले एकादश अकर्म। घरे आछेन इष्टदेवता आर घरेर गृहिणी। सेखाने पूजा-अर्चना, अतिथिसेवा, पालपार्वण, व्रत-उपवास, काङालिविदाय, ब्राह्मणभोजन, पाड़ापड़शि, गुरुपुरोहित। इयारमहल गृहसीमार बाइरेइ, सेखाने नवाबि आमल, मजलिसि समारोहे सरगरम। एइखाने आनागोना चलत गृहेर प्रत्यन्तपुरवासिनीदेर। तादेर संसर्गके तखनकार धनीरा सहवत शिक्षार उपाय बले गण्य करत। दुइ विरुद्ध हाओयार दुइ कक्षवर्ती ग्रह-उपग्रह निये गृहिणीदेर विस्तर सह्य करते हय।

मुकुन्दलालेर स्त्री नन्दरानी अभिमानिनी, सह्य कराटा ताँर सम्पूर्ण अभ्यास हल ना। तार कारण छिल। तिनि निश्चित जानेन बाइरेर दिके ताँर

स्वामीर तानेर दौड़ यतदूरइ थाक तिनिइ हच्छेन घुयो, भितरेर शक्त टान ताँरइ दिके। सेइजन्येइ स्वामी यखन निजेर भालोबासार 'परे निजे अन्याय करेन, तिनि सेटा सइते पारेन ना। एबारे ताइ घटल।

५

रासेर समय खुब घुम। कतक कलकाता कतक ढाका थेके आमोदेर सरञ्जाम एल। बाड़िर उठोने कृष्णयात्रा, कोनोदिन वा कीर्तन। एइ-खाने मेयेदेर ओ साधारण पाड़ापड़शिर भिड़। अन्यबारे तामसिक आयोजनटा हत बैठकखानाघरे; अन्तःपुरिकारा, राते घुम नेइ, बुके व्यथा बिँधछे, दरजार फाँक दिये किछु-किछु आभास निये येते पारतेन। एबारे खेयाल गेल बाइनाचेर व्यवस्था हबे बजराय नदीर उपर।

की हच्छे देखबार जो नेइ बले नन्दरानीर मन रुद्धवाणीर अन्धकारे आछड़े आछड़े काँदते लागल। घरे काजकर्म, लोकके खाओयानो-दाओयानो देखाशुनो हासिमुखेइ करते हय। बुकेर मध्ये काँटाटा नड़ते चड़ते केवलइ बेँधे, प्राणटा हाँपिये हाँपिये ओठे; केउ जानते पारे ना। ओदिके थेके-थेके तप्त कण्ठेर रव ओठे, जय होक रानीमार।

अवशेषे उत्सवेर मेयाद फुरोल, बाड़ि हये गेल खालि। केवल छेँड़ा कलापाता ओ सरा-खुरि-भाँड़ेर भग्नावशेषेर उपर काक-कुकुरेर कलरवमुखर उत्तरकाण्ड चलछे। फराशेरा सिँड़ि खाटिये लण्ठन खुले निल, चाँदोया नामाल, झाड़ेर टुकरो बाति ओ शोलार फुलेर झालरगुलो निये पाड़ार छेलेरा काड़ाकाड़ि बाधिये दिल। सेइ भिड़ेर मध्ये माझे माझे चड़ेर आओ-याज ओ चीत्कार कान्ना येन तारस्वरेर हाउइयेर मतो आकाश फुँड़े उठछे। अन्तःपुरेर प्रांगण थेके उच्छिष्ट भात-तरकारिर गन्धे वातास अम्लगन्धी; सेखाने सर्वत्र क्लान्ति, अवसाद ओ मलिनता। एइ शून्यता असह्य हये उठल यखन मुकुन्दलाल आजओ फिरलेन ना। नागाल पावार उपाय नेइ बलेइ नन्दरानीर धैर्येर बाँध हठात् फेटे खान खान हये गेल।

देओयानजिके डाकिये परदार आड़ाल थेके बललेन, "कर्ताकि बलबेन, वृन्दावने मार काछे आमाके एखनइ येते हच्छे। ताँर शरीर भालो नेइ।"

देओयानजि किछुक्षण टाके हात बुलिये मृदुस्वरे बललेन, "कर्ताके जानिये गेलेइ भालो हत माठाकरुन। आजकालेर मध्ये बाड़ि फिरबेन खबर पेयेछि।"

"ना, देरि करते पारब ना।"

नन्दरानीओ खबर पेयेछेन आजकालेर मध्येइ फेरबार कथा। सेइ-जन्येइ याबार एत ताड़ा। निश्चय जानेन, अल्प एकटु कान्नाकाटि-साध्य-साधनतेइ सब शोध हये याबे। प्रतिवारइ एमनि हयेछे। उपयुक्त शास्ति असमाप्तइ थाके। एबारे ता किछुतेइ चलबे ना। ताइ दण्डेर व्यवस्था करे दियेइ दण्डदाताके पालाते हच्छे। विदायेर ठिक पूर्वमुहूर्ते पा सरते चाय ना—शोबार खाटेर उपर उपुड़ हये पड़े फुले फुले कान्ना। किन्तु याओया बन्ध हल ना।

तखन कार्तिक मासेर वेला दुटो। रौद्रे वातास आतप्त। रास्तार धारेर शिशुतरुश्रेणीर मर्मरेर सङ्गे मिशे क्वचित् गलाभाङा कोकिलेर डाक आसछे। ये रास्ता दिये पालकि चलेछे, सेखान थेके काँचा धानेर खेतेर परप्रान्ते नदी देखा याय। नन्दरानी थाकते पारलेन ना, पालकिर दरजा फाँक करे सेदिके चेये देखलेन। ओपारेर चरे बजरा बाँधा आछे, चोखे पड़ल। मास्तुलेर उपर निशेन उड़छे। दूर थेके मने हल बजरार छातेर उपर चिरपरिचित गुपि हरकरा वसे; तार पागड़िर तकमार उपर सूर्येर आलो झकमक करछे। सबले पालकिर दरजा बन्ध करे दिलेन, बुकेर भितरटा पाथर हये गेल।

६

मुकुन्दलाल, येन मास्तुल-भाङा, पाल-छेँड़ा, टोल-खाओया, तुफाने आछाड़-लागा जहाज, ससंकोचे बन्दरे एसे भिड़लेन। अपराधेर बोझाय बुक भारि। प्रमोदेर स्मृतिटा येन अति भोजनेर परेर उच्छिष्टेर मतो मनटाके वितृष्णाय भरे दियेछे। यारा छिल ताँर एइ आमोदेर उत्साहदाता उद्योगकर्त्ता, तारा यदि सामने थाकत ताहले तादेर धरे चाबुक कषिये दिते पारतेन। मने-मने पण करछेन आर कखनो एमन हते देबेन ना। ताँर आलुथालु चुल; रक्तवर्ण चोख आर मुखेर अतिशुष्क भाव देखे प्रथमटा केउ साहस करे कर्त्री-ठाकरुनेर खबरटा दिते पारले ना, मुकुन्दलाल भये-भये अन्तःपुरे गेलेन। "वड़ोबउ, माप करो अपराध करेछि, आर कखनो एमन हबे ना" एइ कथा मने-मने बलते बलते शोबार घरेर दरजार काछे एकटुखानि थमके दाँड़िये आस्ते आस्ते भितरे ढुकलेन। मने-मने निश्चय स्थिर करेछिलेन ये, अभिमानिनी बिछानाय पड़े आछेन। एकेवारे पायेर काछे गिये पड़बेन एइ

भेबे घरे ढुकेइ देखलेन घर शून्य। बुकेर भितरटा दमे गेल। शोबार घरे बिछानाय नन्दरानीके यदि देखतेन तबे बुझतेन ये, अपराध क्षमा करबार जन्ये मानिनी अर्धेक रास्ता एगिये आछेन। किन्तु बड़ोबउ यखन शोबार घरे नेइ तखन मुकुन्दलाल बुझलेन ताँर प्रायश्चित्तटा हबे दीर्घ एवं कठिन। हयतो आज रात पर्यन्त अपेक्षा करते हबे, किंवा हबे आरओ देरि। किन्तु एतक्षण धैर्य धरे थाका ताँर पक्षे असम्भव। सम्पूर्ण शास्ति एखनइ माथा पेते निये क्षमा आदाय करबेन, नइले जलग्रहण करबेन ना। बेला हयेछे, एखनओ स्नानाहार हय नि, ए देखे कि साध्वी थाकते पारबेन? शोबार घर थेके बेरिये एसे देखलेन, प्यारी दासी बारान्दार एक कोणे माथाय घोमटा दिये दाँड़िये। जिज्ञासा करलेन, "तोर बड़ोबउमा कोथाय?"

से बलले, "तिनि ताँर माके देखते परशुदिन वृन्दावने गेछेन।"

भालो येन बुझते पारलेन ना, रुद्धकण्ठे जिज्ञासा करलेन, "कोथाय गेछेन?"

"वृन्दावने। मायेर असुख।"

मुकुन्दलाल एकबार वारान्दार रेलिङ चेपे धरे दाँड़ालेन। तार परे द्रुतपदे बाइरेर बैठकखानाय गिये एका बसे रइलेन। एकटि कथा कइलेन ना। काछे आसते कारओ साहस हय ना।

देओयानजि एसे भये भये बललेन, "माठाकरुनके आनते लोक पाठिये दिइ?"

कोनो कथा ना बले केवल आंगुल नेड़े निषेध करलेन। देओयानजि चले गेले राधु खानसामाके डेके बललेन, "ब्राण्डि ले आओ।"

बाड़िशुद्ध लोक हतबुद्धि। भूमिकम्प यखन पृथिवीर गभीर गर्भ थेके माथा नाड़ा दिये ओठे तखन येमन ताके चापा देबार चेष्टा करा मिछे, निरुपायभावे तार भाङचोरा सह्य करतेइ हय,—ए-ओ तेमनि।

दिनरात चलछे निर्जल ब्राण्डि। खाओयादाओया प्राय नेइ। एके शरीर पूर्व थेकेइ छिल अवसन्न, तारपरे एइ प्रचण्ड अनियमे विकारेर सङ्गे रक्तवमन देखा दिल।

कलकाता थेके डाक्तार एल,—दिनरात माथाय बरफ चापिये राखले।

मुकुन्दलाल याके देखेन खेपे ओठेन, ताँर विश्वास ताँर विरुद्धे बाड़िसुद्ध लोकेर चक्रान्त। भितरे भितरे एकटा नालिश गुमरे उठछिल,—एरा येते दिले केन?

एकमात्र मानुष ये ताँर काछे आसते पारत से कुमुदिनी। से एसे पाशे बसे; फ्याल फ्याल करे तार मुखेर दिके मुकुन्दलाल चेये देखेन,—येन

मार सङ्गे ओर चोखे किंवा कोथाओ एकटा मिल देखते पान। कखनो कखनो बुकेर उपरे तार मुख टेने निये चुप करे चोख बुजे थाकेन, चोखेर कोण दिये जल पड़ते थाके, किन्तु कखनो भुले एकबार तार मार कथा जिज्ञासा करेन ना। एदिके वृन्दावने टेलिग्राम गेछे। कर्त्रीठाकरुनेर कालइ फेरबार कथा। किन्तु शोना गेल कोथाय एक जायगाय रेलेर लाइन गेछे भेङे।

७

सेदिन तृतीया; सन्ध्यावेलाय झड़ उठल। बागाने मड़ मड़ करे गाछेर डाल भेङे पड़े। थेके-थेके वृष्टिर झापटा झाँकानि दिये उठछे क्रुद्ध अधैर्येर मतो। लोकजन खाओयाबार जन्ये ये-चालाघर तोला हयेछिल तार करोगेटेड लोहार चाल उड़े दिघिते गिये पड़ल। वातास बाणविद्ध बाघेर मतो गोँ-गोँ करे गोङराते गोङराते आकाशे आकाशे लेज झापटा दिये पाक खेये बेड़ाय। हठात् वातासेर एक दमके जानलादरजागुलो खड़ खड़ करे केँपे उठल। कुमुदिनीर हात चेपे धरे मुकुन्दलाल बललेन, "मा कुमु, भय नेइ, तुइ तो कोनो दोष करिस नि। ओइ शोन् दाँतकड़मड़ानि, ओरा आमाके मारते आसछे।"

बाबार माथाय बरफेर पुंटुलि बुलोते बुलोते कुमुदिनी बले, "मारबे केन बाबा? झड़ हच्छे; एखनइ थेमे याबे।"

"वृन्दावन? वृन्दावन......चन्द्र....चक्रवर्ती! बाबार आमलेर पुरुत— से तो मरे गेछे—भूत हये गेछे वृन्दावने। के बलले से आसबे?"

"कथा क'यो ना बाबा एकटु घुमोओ।"

"ओइ ये, काके बलछे, खबरदार, खबरदार।"

"किछु ना, वातासे वातासे गाछगुलोके झाँकानि दिच्छे।"

"केन, ओर राग किसेर? एतइ की दोष करेछि, तुइ बल् मा।"

"कोनो दोष कर नि बाबा। एकटु घुमोओ।"

"बिन्दे दूती? सेइ ये मधु अधिकारी साजत।

मिछे कर केन निन्दे,
ओगो बिन्दे श्रीगोविन्दे—"

चोख बुजे गुन गुन करे गाइते लागलेन।—

"कार बाँशि ऐ बाजे वृन्दावने।

सइ लो सइ
घरे आमि रइब केमने।

राधु, ब्याण्डि ले आओ।"

कुमुदिनी बाबार मुखेर दिके झुंके पड़े बले, "बाबा, ओ की बलछ?" मुकुन्दलाल चोख चेये ताकियेइ जिभ केटे चुप करेन। बुद्धि यखन अत्यन्त बेठिक तखनओ ए-कथा भोलेन नि ये, कुमुदिनीर सामने मद चलते पारे ना।

एकटु परे आबार गान धरलेन,

"श्यामेर बाँशि काड़ते हबे,
नइले आमाय ए वृन्दावन छाड़ते हबे।"

एइ एलोमेलो गानेर टुकरोगुलो शुने कुमुर बुक फेटे याय—मायेर उपर राग करे, बाबार पायेर तलाय माथा राखे येन मायेर हये माप-चाओया।

मुकुन्द हठात् डेके उठलेन, "देओयानजि!"

देओयानजि आसते ताके बललेन, "ओइ येन ठक ठक शुनते पाच्छि।"

देओयानजि बललेन, "वातासे दरजा नाड़ा दिच्छे।"

"बुड़ो एसेछे, सेइ वृन्दावनचन्द्र—टाक माथाय, लाठि हाते, चेलिर चादर काँधे। देखे एस तो। केवलइ ठक ठक ठक ठक करछे। लाठि, ना खड़म?"

रक्तवमन किछुक्षण शान्त छिल। तिनटे रात्रे आबार आरम्भ हल। मुकुन्दलाल बिछानार चारिदिके हात बुलिये जड़ितस्वरे बललेन, "बड़ोबउ, घर ये अन्धकार! एखनओ आलो ज्वालबे ना?"

बजरा थेके फिरे आसबार पर मुकुन्दलाल एइ प्रथम स्त्रीके सम्भाषण करलेन,—आर एइ शेष।

वृन्दावन थेके फिरे एसे नन्दरानी बाड़िर दरजार काछे मूर्छित हये लुटिये पड़लेन। ताँके धराधरि करे बिछानाय एने शोयाल। संसारे किछुइ ताँर आर रुचल ना। चोखेर जल एकेबारे शुकिये गेल। छेले-मेयेदेर मध्येओ सान्त्वना नेइ। गुरु एसे शास्त्रेर श्लोक आओड़ालेन, मुख फिरिये रइलेन। हातेर लोहा खुललेन ना—बललेन, "आमार हात देखे बलेछिल आमार एयोत क्षय हबे ना। से कि मिथ्ये हते पारे?"

दूरसम्पर्केर क्षेमा ठाकुरझि आँचले चोख मुछते मुछते बललेन, "या हबार ता तो हयेछे, एखन घरेर दिके ताकाओ। कर्ता ये याबार समय बले गेछेन, बड़ोबउ घरे कि आलो ज्वालबे ना?"

नन्दरानी बिछाना थेके उठे बसे दूरेर दिके ताकिये बललेन, "याब,

आलो ज्वालते याब। एबार आर देरि हबे ना।" बले ताँर पाण्डुवर्ण शीर्ण मुख उज्ज्वल हये उठल, येन हाते प्रदीप निये एखनइ यात्रा करे चलेछेन।

सूर्य गेछेन उत्तरायणे; माघ मास एल, शुक्ला चतुर्दशी। नन्दरानी कपाले मोटा करे सिँदुर परलेन, गाये जड़िये निलेन लाल बेनारसि शाड़ि। संसारेर दिके ना ताकिये मुखे हासि निये चले गेलेन।

८

बाबार मृत्युर पर विप्रदास देखले, ये-गाछे तादेर आश्रय तार शिकड़ खेये दियेछे पोकाय। विषय सम्पत्ति ऋणेर चोराबालिर उपर दाँड़िये,—अल्प करे डुबछे। क्रियाकर्म संक्षेप ओ चालचलन खाटो ना करले उपाय नाइ। कुमुर बिये नियेओ केवलइ प्रश्न आसे, तार उत्तर दिते मुखे बाधे। शेषकाले नुरनगर थेके बासा तुलते हल। कलकाताय बाग बाजारेर दिके एकटा बाड़िते एसे उठल।

पुरोनो बाड़िते कुमुदिनीर एकटा प्राणमय परिमण्डल छिल। चारिदिके फुलफल, गोयालघर, पूजोबाड़ि, शस्यखेत, मानुषजन। अन्तःपुरेर बागाने फुल तुलेछे, साजि भरेछे, नुन-लङ्का-धनेपातार सङ्गे काँचा कुल मिशिये अपथ्य करेछे; चालता पेड़ेछे, बोशेख-जष्ठिर झड़े आमबागाने आम कुड़ियेछे। बागानेर पूर्वप्रान्ते ढेँकिशाल, सेखाने लाडुकोटा प्रभृति उपलक्ष्ये मेयेदेर कल-कोलाहले तारओ अल्प किछु अंश छिल। श्याओलाय-सबुज प्राचीर दिये घेरा खिड़किर पुकुर, घन छायाय स्निग्ध, कोकिल-घुघु-दोयेल-श्यामार डाके मुखरित। एइखाने प्रतिदिन से जले केटेछे साँतार, नालफुल तुलेछे, घाटे बसे देखेछे खेयाल, आनमने एका बसे करेछे पशम सेलाइ। ऋतुते ऋतुते मासे मासे प्रकृतिर उत्सवेर सङ्गे मानुषेर एक-एकटि परब बाँधा; अक्षयतृतीया थेके दोलयात्रा वासन्तीपूजा पर्यंत कत की। मानुषे प्रकृतिते हात मिलिये समस्त बछरटिके येन नाना कारुशिल्पे बुने तुलछे। सबइ ये सुन्दर, सबइ ये सुखेर ता नय। माछेर भाग, पूजोर पार्वणी, कर्त्रीर पक्षपात, छेलेदेर कलहे स्व-स्व छेलेर पक्षसमर्थन प्रभृति निये नीरवे ईर्षा वा तारस्वरे अभियोग, काने काने परचर्चा वा मुक्तकण्ठे अपवादघोषणा ए-समस्त प्रचुर परिमाणेइ आछे,—सब-चेये आछे नित्यनैमित्तिक काजेर व्यस्ततार भितरे भितरे नियत एकटा उद्वेग,—कर्ता कखन की करे बसेन, ताँर बैठके कखन की दुर्योग आरम्भ हय। यदि आरम्भ हल तबे दिनेर परे दिन शान्ति नेइ। कुमुदिनीर

बुक दुर दुर करे, घरे लुकिये मा काँदेन, छेलेदेर मुख शुकनो। एइ समस्त शुभे अशुभे सुखे दुःखे सर्वदा आन्दोलित प्रकाण्ड संसारयात्रा।

एरइ मध्य थेके कुमुदिनी एल कलकाताय। ए येन मस्त एकटा समुद्र किन्तु कोथाय एक फोँटा पिपासार जल? देशे आकाशेर वातासेरओ एकटा चेना चेहारा छिल। ग्रामेर दिगन्ते कोथाओ वा घन वन, कोथाओ वा बालिर चर, नदीर जलरेखा, मन्दिरेर चूड़ो, शून्य विस्तृत माठ, बुनो झाउयेर झोप, गुणटाना पथ,—एरा नाना रेखाय नाना रङे विचित्र घेर दिये आकाशके एकटि विशेष आकाश करे तुलेछिल, कुमुदिनीर आपन आकाश। सूर्येर आलोओ छिल तेमनि विशेष आलो। दिघिते, शस्यखेते, वेतेर झाड़े, जेले-नौकोर खयेरि रङेर पाले, बाँशझाड़ेर कचि डालेर चिकन पाताय, काँठाल-गाछेर मसृण-घन सबुजे, ओपारेर बालुतटेर फ्याकाशे हलदेय,—समस्तर सङ्गे नाना भावे मिशिये सेइ आलो एकटि चिरपरिचित रूप पेयेछिल। कल-कातार एइ सब अपरिचित बाड़िर छादे देयाले कठिन अनम्र रेखार आघाते नानाखाना हये सेइ चिरदिनेर आकाश आलो ताके बेगाना लोकेर मतो कड़ा चोखे देखे। एखानकार देवताओ ताके एकघरे करेछे।

विप्रदास ताके केदारार काछे टेने निये बले, "की कुमु, मन केमन करछे?"

कुमुदिनी हेसे बले, "ना दादा, एकटुओ ना।"

"याबि बोन, म्युजियम देखते?"

"ह्याँ, याब।"

एत बेशि उत्साहेर सङ्गे बले ये, विप्रदास यदि पुरुषमानुष ना हत तबे बुझते पारत ये एटा स्वाभाविक नय। म्युजियमे ना येते हलेइ से बाँचे। बाइरेर लोकेर भिड़ेर मध्ये बेरोनो अभ्येस नेइ बले जनसमागमे येते तार संकोचेर अन्त नेइ। हातपा ठाण्डा हये याय, चोख चेये भालो करे देखतेइ पारे ना।

विप्रदास ताके दाबाखेला शेखाले। निजे असामान्य खेलोयाड़, कुमुर काँचा खेला निये तार आमोद लागे। शेषकाले नियमित खेलते खेलते कुमुर एतटा हात पाकल ये विप्रदासके सावधाने खेलते हय। कलकाताय कुमुर समवयसी मेये सङ्गिनी ना थाकाते एइ दुइ भाइबोन येन दुइ भाइयेर मतो हये उठेछे। संस्कृत साहित्ये विप्रदासेर बड़ो अनुराग; कुमु एकमने तार काछ थेके व्याकरण शिखेछे। यखन कुमारसम्भव पड़ले तखन थेके शिव-पूजाय से शिवके देखते पेले, सेइ महातपस्वी यिनि तपस्विनी उमार परम तपस्यार धन। कुमारीर ध्याने तार भावी पति पवित्रतार दैवज्योतिते उद्भासित हये देखा दिले।

विप्रदासेर फटोग्राफ तोलार शख, कुमुओ ताइ शिखे निले। ओरा केउ वा नेय छबि केउ वा सेटाके फुटिये तोले। बन्दुके विप्रदासेर हात पाका। पार्वण उपलक्षे देशे यखन याय, खिड़किर पुकुरे डाब, बेलेर खोला, आखरोट प्रभृति भासिये दिये पिस्तल अभ्यास करे; कुमुके डाके, "आय ना कुमु, देख् ना चेष्टा करे।"

ये-कोनो विषयेइ तार दादार रुचि से-समस्तकेइ बहुयत्ने कुमु आपनार करे नियेछे। दादार काछे एसराज शिखे शेषे ओर हात एमन हल ये दादा बले, आमि हार मानलुम।

एमनि क'रे, शिशुकाल थेके ये-दादाके ओ सब चेये बेशि भक्ति करे, कलिकाताय एसे ताकेइ से सब चेये काछे पेले। कलकाताय आसा सार्थक हल। कुमु स्वभावतइ मनेर मध्ये एकला। पर्वतवासिनी उमार मतोइ ओ येन एक कल्प-तपोवने वास करे, मानस-सरोवरेर कूले। एइरकम जन्म-एकला मानुषदेर जन्ये दरकार मुक्त आकाश, विस्तृत निर्जनता, एवं तारइ मध्ये एमन एकजन केउ, याके निजेर समस्त मनप्राण दिये भक्ति करते पारे। निकटेर संसार थेके एइ दूरवर्तिता मेयेदेर स्वभावसिद्ध नय बले मेयेरा एटा एकेबारेइ पछन्द करे ना। तारा एटाके हय अहंकार, नय हृदयहीनता बले मने करे। ताइ देशे थाकतेओ सङ्गिनीदेर महले कुमुदिनीर बन्धुत्व जमे ओठे नि।

पिता-वर्तमानेइ विप्रदासेर विवाह प्राय ठिक, एमन समय गाये हलुदेर दुदिन आगेइ कनेटि ज्वरविकारे मारा गेल। तखन भाटपाड़ाय विप्रदासेर कुष्ठिगणनाय बेरोल, विवाहस्थानीय दुर्ग्रहेर भोगक्षय हते देरि आछे। विवाह चापा पड़ल। इतिमध्ये घटल पितार मृत्यु। तार पर थेके घट-कालि प्रश्रय पाबार मतो अनुकूल समय विप्रदासेर घरे एल ना। घटक एकदा मस्त एकटा मोटा पणेर आशा देखाले। ताते हल उलटो फल। कम्पित हस्ते हुँकोटि देयालेर गाये ठेकिये सेदिन अत्यन्त द्रुतपदेइ घटकके रास्ताय बेरिये पड़ते हयेछिल।

९

सुबोधेर चिठि विलेत थेके आसत नियममतो। एखन माझे माझे फाँक पड़े। कुमु डाकेर जन्ये व्यग्र हये चेये थाके। बेहारा एवार चिठि तारइ हाते दिल। विप्रदास आयनार सामने दाँड़िये दाड़ि कामाच्छे, कुमु छुटे गिये बलले, "दादा, छोड़दादार चिठि।"

दाड़ि-कामानो सेरे केदाराय बसे विप्रदास एकटु येन भये भयेइ चिठि खुलले। पड़ा हये गेले चिठिखाना एमन करे हाते चापले येन से एकटा तीव्र व्यथा।

कुमुदिनी भय पेये जिज्ञासा करले, "छोड़दादार असुख करे नि तो?"

"ना, से भालोइ आछे।"

"चिठिते की लिखेछेन बलो ना दादा।"

"पड़ाशुनोर कथा।"

किछुदिन थेके विप्रदास कुमुके सुबोधेर चिठि पड़ते देय ना। एकटु-आधटु पड़े शोनाय। एबार ताओ नय। चिठिखाना चेये निते कुमुर साहस हल ना, मनटा छटफट करते लागल।

सुबोध प्रथम-प्रथम हिसेब करेइ खरच चालात। बाड़िर दुःखेर कथा तखनओ मने ताजा छिल। एखन सेटा यतइ छायार मतो हये एसेछे, खरचओ ततइ चलेछे बेड़े। बलछे, बड़ोरकम चाले चलते ना पारले एखानकार सामाजिक उच्च शिखरेर आबहाओयाय पौंछानो याय ना। आर ता ना गेले विलेते आसाइ व्यर्थ हय।

दाये पड़े दुइ-एकबार विप्रदासके तार-योगे अतिरिक्त टाका पाठाते हयेछे। एबार दाबि एसेछे हाजार पाउण्डेर,—जरुरि दरकार।

विप्रदास माथाय हात दिये बलले, पाब कोथाय। गायेर रक्त जल करे कुमुर विवाहेर जन्ये टाका जमाच्छि, शेषे कि सेइ टाकाय टान पड़बे? की हबे सुबोधेर ब्यारिस्टार हये, कुमुर भविष्यत् फतुर करे यदि तार दाम दिते हय?

से-रात्रे विप्रदास बारान्दाय पायचारि करे बेड़ाच्छे। जाने ना, कुमुदिनीर चोखेओ घुम नेइ। एक समये यखन बड़ो असह्य हल कुमु छुटे एसे विप्रदासेर हात धरे बलले, "सत्यि करे बलो दादा, छोड़दादार की हयेछे? पाये पड़ि, आमार काछे लुकियो ना।"

विप्रदास बुझले गोपन करते गेले कुमुदिनीर आशङ्का आरओ बेड़े उठबे। एकटु चुप करे थेके बलले, "सुबोध टाका चेये पाठियेछे, अत टाका देबार शक्ति आमार नेइ।"

कुमु विप्रदासेर हात धरे बलले, "दादा, एकटा कथा बलि, राग करबे ना बलो।"

"राग करबार मतो कथा हले राग ना करे बाँचब की करे?"

"ना दादा, ठाट्टा नय, शोनो आमार कथा,—मायेर गयना तो आमार जन्ये आछे,—ताइ निये—"

"चुप, चुप, तोर गयनाय कि आमरा हात दिते पारि!"

"आमि तो पारि।"

"ना, तुइओ पारिस ने। थाक से सब कथा, एखन घुमोते या।"

कलकाता शहरेर सकाल, काकेर डाक ओ स्क्याभेन्जारेर गाड़िर खड़-खड़ानिते रात पोयाल। दूरे कखनो स्टीमारेर, कखनो तेलेर कलेर बाँशि बाजे। बासार सामनेर रास्ता दिये एकजन लोक मइ काँधे ज्वरारि वटि-कार विज्ञापन खाटिये चलेछे; खालि-गाड़िर दुटो गोरु गाड़ोयानेर दुइ हातेर प्रबल ताड़ार उत्तेजनाय गाड़ि निये द्रुतवेगे धावमान; कल थेके जल नेबार प्रतियोगिताय एक हिन्दुस्थानि मेयेर सङ्गे उड़िया ब्राह्मणेर ठेला-ठेलि बकाबकि जमेछे। विप्रदास बारान्दाय बसे; गुड़गुड़िर नलटा हाते; मेजेते पड़े आछे ना-पड़ा खबरेर कागज।

कुमु एसे बलले, "दादा, 'ना' ब'लो ना।"

"आमार मतेर स्वाधीनताय हस्तक्षेप करबि तुइ? तोर शासने रातके दिन, ना-के हाँ करते हबे?"

"ना, शोनो बलि;—आमार गयना निये तोमार भावना घुचुक।"

"साधे तोके बलि बुड़ी? तोर गयना निये आमार भावना घुचबे एमन कथा भावते पारलि कोन् बुद्धिते?"

"से जानि ने, किन्तु तोमार एइ भावना आमार सय ना।"

"भेबेइ भावना शेष करते हय रे, ताके फाँकि दिये थामाते गेले विपरीत घटे। एकटु धैर्य धर्, एकटा व्यवस्था करे दिच्छि।"

विप्रदास से-मेले चिठिते लिखले टाका पाठाते हले कुमुर पणेर सम्बले हात दिते हय; से असम्भव।

यथासमये उत्तर एल। सुबोध लिखेछे, कुमुर पणेर टाका से चाय ना। सम्पत्तिते तार निजेर अर्ध अंश विक्रि करे येन टाका पाठानो हय। सङ्गे सङ्गेइ पाओआर अफ अ्यार्टर्नि पाठियाछे।

ए-चिठि विप्रदासेर बुके बाणेर मतो बिँधल। एत बड़ो निष्ठुर चिठि सुबोध लिखल की करे? तखनइ बुड़ो देओयानजिके डेके पाठाले। जिज्ञासा करले, "भूषण रायरा करिमहाटि तालुक पत्तनि निते चेयेछिल ना? कत पण देबे?"

देओयान बलले, "बिश हाजार पर्यन्त उठते पारे।"

"भूषण रायके तलब दिये पाठाओ। कथावार्ता कइते चाइ।"

विप्रदास वंशेर बड़ो छेले। तार जन्मकाले तार पितामह एइ तालुक

स्वतन्त्र भावे ताकेइ दान करेछेन। भूषण राय मस्त महाजन, बिश-पँचिश लाख टाकार तेजारति। जन्मस्थान करिमहाटिते। एइ जन्ये अनेक दिन थेके निजेर ग्राम पत्तनि नेबार चेष्टा। अर्थ संकटे माझे माझे विप्रदास राजि हय आर कि, किन्तु प्रजारा केँदे पड़े। बले, ओके आमरा किछुतेइ जमिदार बले मानते पारब ना। ताइ प्रस्तावटा बारे बारे याय फेँसे। एबार विप्रदास मन कठिन करे बसल। ओ निश्चय जाने सुबोधेर टाकार दाबि एइखानेइ शेष हबे ना। मने मने बलले, आमार तालुकेर एइ सेलामिर टाका रइल सुबोधेर जन्ये, तारपर देखा याबे।

देओयान विप्रदासेर मुखेर उपर जबाब दिते साहस करले ना। गोपने कुमुके गिये बलले, "दिदि, तोमार कथा बड़ो बाबु शोनेन। वारण करो ताँके, एटा अन्याय हच्छे।"

विप्रदासके बाड़िर सकलेइ भालोबासे। कारओ जन्ये बड़ोबाबु ये निजेर स्वत्व नष्ट करबे ए ओदेर गाये सय ना।

वेला हये याय। विप्रदास ओइ तालुकेर कागजपत्र निये घाँटछे। एखनओ स्नानाहार हय नि। कुमु बारे बारे ताके डेके पाठाच्छे। शुकनो मुख करे एक समये अन्दरे एल। येन बाजे-छोँओया पाता-झलसानो गाछेर मतो। कुमुर बुके शेल बिँधल।

स्नानाहार हये गेल पर विप्रदास आलबोलार नल-हाते खाटेर बिछानाय पा छड़िये ताकिया ठेसान दिये बसल यखन, कुमु तार शियरेर काछे बसे धीरे-धीरे तार चुलेर मध्ये हात बुलोते बुलोते बलले, "दादा, तोमार तालुक तुमि पत्तनि दिते पारबे ना।"

"तोके नबाब सिराजउद्दौलार भूते पेयेछे ना कि? सब कथातेइ जुलुम?"

"ना दादा, कथा चापा दियो ना।"

तखन विप्रदास आर थाकते पारले ना, सोजा हये उठे बसे कुमुके शियरेर काछ थेके सरिये सामने बसाले। रुद्ध स्वरटाके परिष्कार करिबार जन्ये एकटुखानि केशे निये बलले, "सुबोध की लिखेछे जानिस? एइ देख्।"

एइ बले जामार पकेट थेके तार चिठि बेर करे कुमुर हाते दिल। कुमु समस्तटा पड़े दुइ हाते मुख ढेके बलले, "मागो, छोड़दादा एमन चिठिओ लिखते पारले?"

विप्रदास बलले, "ओर निजेर सम्पत्ति आर आमार सम्पत्तिते ओ यखन आज भेद करे देखते पेरेछे, तखन आमार तालुक आमि कि आर आलादा

राखते पारि ? आज ओर बाप नेइ, विपदेर समये आमि ओके देब ना तो के देबे ?"

एर उपर कुमु आर कथा कइते पारले ना, नीरवे तार चोख दिये जल पड़ते लागल। विप्रदास ताकियाय आबार ठेस दिये चोख बुजे रइल।

अनेकक्षण दादार पाये हात बुलिये अवशेषे कुमु बलले, "दादा, मायेर धन तो एखन मायेरइ आछे, ताँर सेइ गयना थाकते तुमि केन—"

विप्रदास आबार चमके उठे बसे बलले, "कुमु, एटा तुइ किछुते बुझलि ने, तोर गयना निये सुबोध आज यदि विलेते थियेटार-कनसार्ट देखे बेड़ाते पारे ताहले आमि कि ताके कोनोदिन क्षमा करते पारब,—ना से कोनोदिन मुख तुले दाँड़ाते पारबे ? ताके एत शास्ति केन दिबि ?"

कुमु चुप करे रइल, कोनो उपाय से खुँजे पेल ना। तखन, अनेकवार येमन भेबेछे तेमनि करेइ भावते लागल,—असम्भव किछु घटे ना कि ? आकाशेर कोनो ग्रह, कोनो नक्षत्र एक मुहूर्ते समस्त बाधा सरिये दिते पारे ना ? किन्तु शुभलक्षण देखा दियेछे ये, किछुदिन थेके बार बार तार बाँ चोख नाचछे। एर पूर्वे जीवने आरओ अनेकबार बाँ चोख नेचेछे, ता निये किछु भावबार दरकार हय नि। एबारे लक्षणटाके मने-मने धरे पड़ल। येन तार प्रतिश्रुति ताके राखतेइ हबे—शुभलक्षणेर सत्यभङ्ग येन ना हय।

१०

बादला करेछे। विप्रदासेर शरीरटा भालो नेइ। बालापोश मुड़ि दिये आधशोओया अवस्थाय खबरेर कागज पड़छे। कुमुर आदरेर विड़ालटा बालापोशेर एकटा फालतो अंश दखल करे गोलाकार हये निद्रामग्न। विप्र-दासेर टेरियर कुकुरटा अगत्या ओर स्पर्धा सह्य करे मनिबेर पायेर काछे शुये स्वप्ने एक-एक बार गोँ-गोँ करे उठछे।

एमन समये एल आर-एक घटक।

"नमस्कार।"

"के तुमि।"

"आज्ञे, कर्तारा आमाके खुबइ चिनतेन, (मिथ्ये कथा) आपनारा तखन शिशु। आमार नाम नीलमणि घटक, गङ्गामणि घटकेर पुत्र।"

"की प्रयोजन ?"

"भालो पात्रेर सन्धान आछे। आपनादेरइ घरेर उपयुक्त।"

विप्रदास एकटु उठे बसल। घटक राजाबाहादुर मधुसूदन घोषालेर नाम करले।

विप्रदास विस्मित हये जिज्ञासा करले, "छेले आछे ना कि?"

घटक जिभ केटे बलले, "ना तिनि विवाह करेन नि। प्रचुर ऐश्वर्य। निजे काज देखा छेड़े दियेछेन, एखन संसार करते मन दियेछेन।"

विप्रदास खानिकक्षण बसे गुड़गुड़िते टान दिते लागल। तार परे हठात् एक समये एकटु येन जोर करे बले उठल, "वयसेर मिल आछे एमन मेये आमादेर घरे नेइ।"

घटक छाड़ते चाय ना, वरेर ऐश्वर्येर ये परिमाण कत, आर गवर्नरेर दरबारे ताँर आनागोनार पथ ये कत प्रशस्त इनिये-बिनिये तारइ व्याख्या करते लागल।

विप्रदास आबार स्तम्भित हये बसे रइल। आबार अनावश्यक वेगेर सङ्गे बले उठल, "वयसे मिलबे ना।"

घटक बलले, "भेबे देखबेन, दु-चारदिन बादे आर-एक बार आसब।"

विप्रदास दीर्घनिश्वास फेले आबार शुये पड़ल।

दादार जन्ये गरम चा निये कुमु घरे ढुकिते याच्छिल। दरजार बाइरे गामछासुद्ध एकटा भिजे जीर्ण छाति ओ कादामाखा तालतलार चटि देखे थेमे गेल। ओदेर कथावार्ता अनेकखानि काने पौंछल। घटक तखन बलछे, "राजाबाहादुर एबार बछर ना येते महाराजा हबेन एटा एकेबारे लाटसाहेबेर निज मुखेर कथा। ताइ एतदिन परे ताँर भावना धरेछे, महा-रानीर पद एखन आर खालि राखा चलबे ना। आपनादेर ग्रहाचार्य किनु भटचाज दूरसम्पर्के आमार सम्बन्धी, तार काछे कन्यार कुष्ठि देखा गेल—लक्षण ठिकठि मिलेछे। एइ निये शहरेर मेयेर कुष्ठि घाँटते बाकि राखि नि—एमन कुष्ठि आर-एकटिओ हाते पड़ल ना। एइ देखे नेबेन, आमि आपनाके बले दिच्छि, ए-सम्बन्ध हयेइ गेछे, ए प्रजापतिर निर्बन्ध।"

ठिक एइ समये कुमुर आबार बाँ चोख नाचल। शुभलक्षणेर की अपूर्व रहस्य! किनु आचार्यि कतबार तार हात देखे बलेछे, राजरानी हबे से। करकोष्ठीर सेइ परिणत फलटा आपनि येचे आज तार काछे उपस्थित। ओदेर ग्रहाचार्य एइ कदिन हल वार्षिक आदाय करते कलकाताय एसेछिल; से बले गेछे, एबार आषाढ़ मास थेके वृषराशिर राजसम्मान, स्त्रीलोकघटित अर्थलाभ, शत्रुनाश; मन्देर मध्ये पत्नीपीड़ा, एमन कि हयतो पत्नीवियोग। विप्रदासेर वृषराशि। माझे माझे दैहिक पीड़ार कथा आछे। तारओ

प्रमाण हाते हाते, काल रात थेके स्पष्टइ सर्दिर लक्षण। आषाढ़ मासओ पड़ल——पत्नीर पीड़ा ओ मृत्युर कथाटा भाबबार आशु प्रयोजन नेइ, अतएव एबार समय भालो।

कुमु दादार पाशे बसे बलले, "दादा, माथा धरेछे कि?"

दादा बलले, "ना।"

"चा तो ठाण्डा हये याय नि? तोमार घरे लोक देखे ढुकते पारलुम ना।"

विप्रदास कुमुर मुखेर दिके चेये दीर्घनिश्वास फेलले। भाग्येर निष्ठुरता सब चेये असह्य, यखन से सोनार रथ आने यार चाका अचल। दादार मुखभावे एइ द्विधार वेदना कुमुके व्यथा दिले। दैवेर दानके केन दादा एमन करे सन्देह करछेन? विवाह-व्यापारे निजेर पछन्द बले ये एकटा उपसर्ग आछे ए चिन्ता कखनो कुमुदिनीर माथाय आसे नि। शिशुकाल थेके परे परे से चार दिदिर बिये देखेछे। कुलीनेर घरे बिये——कुल छाड़ा आर विशेष किछु पछन्दर विषय छिल ताओ नय। छेलेपुले निये तबु तारा संसार करछे, दिन केटे याच्छे। यखन दुःख पाय विद्रोह करे ना; मने भावतेओ पारे ना ये किछुतेइ एटा छाड़ा आर किछुइ हते पारत। मा कि छेले बेछे नेय? छेलेके मेने नेय। कुपुत्रओ हय सुपुत्रओ हय। स्वामीओ तेमनि। विधाता तो दोकान खोलेन नि। भाग्येर उपर विचार चलबे कार?

एतदिन परे कुमुर मन्दभाग्येर तेपान्तर माठ पेरिये एल राजपुत्र छद्मवेशे। रथचक्रेर शब्द कुमु तार हृत्स्पन्दनेर मध्ये ओइ ये शुनते पाच्छे। बाइरेर छद्मवेशटा से याचाइ करे देखतेइ चाय ना।

ताड़ाताड़ि घरे गियेइ से पाँजि खुले देखले आज मनोरथ-द्वितीया। बाड़िते कर्मचारीदेर मध्ये ये-कयजन ब्राह्मण आछे सन्ध्यावेला डाकिये तादेर फलार कराले, दक्षिणाओ यथासाध्य किछु दिले। सबाइ आशीर्वाद करले, राजरानी हये थाको, धने-पुत्रे लक्ष्मीलाभ होक।

द्वितीयबार विप्रदासेर बैठकखानाय घटकेर आगमन। तुड़ि दिये शिव-शिव बले वृद्ध उच्चस्वरे हाइ तुलले। एबारे असम्मति दिये कथाटाके शेष करे दिते विप्रदासेर साहस हल ना। भाबले एतबड़ो दायित्व निइ की करे? केमन करे निश्चय जानब कुमुर पक्षे ए-सम्बन्ध सब चेये भालो नय? परशुदिन शेषकथा देबे बले घटकके विदाय करे दिले।

११

सन्ध्यार अन्धकार मेघेर छायाय वृष्टिर जले निविड़। कुमुर आसबाब-पत्र बेशि किछु नेइ। एक पाशे छोटो खाट, आलनाय गुटि दुयेक पाकानो शाड़ि आर चाँपा-रङेर गामछा। कोणे काँठाल-काठेर सिन्दुक, तार मध्ये ओर व्यवहारेर कापड़। खाटेर निचे सबुज रङ-करा टिनेर बाक्से पान साजबार सरञ्जाम, आर एकटा बाक्से चुल बाँधबार सामग्री। देयालेर खाँजेर मध्ये काठेर थाके किछु बइ, दोयातकलम, चिठिर कागज, मायेर हातेर पशमे-बोना बाबार सर्वदा व्यवहारेर चटिजुतोजोड़ा; शोबार खाटेर शियरे राधाकृष्णेर युगलरूपेर पट। देयालेर कोणे ठेसानो एकटा एसराज।

घरे कुमु आलो ज्वालाय नि। काठेर सिन्दुकेर उपर बसे जानलार बाइरे चेये आछे। सामने इँटेर कलेवरओआला कलकाता आदिम कालेर वर्मकठिन एकटा अतिकाय जन्तुर मतो, जलधारार मध्य दिये झापसा देखा याच्छे। माझे माझे तार गाये गाये आलोकशिखार बिन्दु। कुमुर मन तखन छिल अदृष्टनिरुपित तार भावीलोकेर मध्ये। सेखानकार घरबाड़ि-लोकजन सबइ तार आपन आदर्शे गड़ा। तारइ माझखाने निजेर सती-लक्ष्मी-रूपेर प्रतिष्ठा, कत भक्ति, कत पूजा, कत सेवा। तार निजेर मायेर पुण्यचरिते एक जायगाय एकटा गभीर क्षत रये गेछे। तिनि स्वामीर अपराधे किछुकालेर जन्येओ धैर्य हारियेछिलेन। कुमु कखनो से-भुल करबे ना।

विप्रदासेर पायेर शब्द शुने कुमु चमके उठल। दादाके देखे बलले, "आलो ज्वेले देब कि?"

"ना कुमु, दरकार नेइ" बले विप्रदास सिन्दुके तार पाशे एसे बसल। कुमु ताड़ाताड़ि मेजेर उपर नेमे बसे आस्ते आस्ते तार पाये हात बुलिये दिते लागल।

विप्रदास स्निग्धस्वरे बलले, "बैठकखानाय लोक एसेछिल ताइ तोके डेके पाठाइ नि। एतक्षण एकला बसे छिलि?"

कुमु लज्जित हये बलले, "ना, क्षेमा पिसि अनेकक्षण छिलेन।" कथाटा फिरिये देबार जन्य बलले, "बैठकखानाय के एसेछिल, दादा?"

"सेइ कथाइ तोके बलते एसेछि। ए-बछर जष्टि मासे तुइ आठारो पेरिये उनिशे पड़लि, ताइ ना?"

"हाँ दादा, ताते दोष हयेछे की?"

"दोषेर कथा ना। आज नीलमणि घटक एसेछिल। लक्ष्मी बोन,

लज्जा करिस ने। बाबा यखन छिलेन, तोर वयस दश--बिये प्राय ठिक हयेछिल। हये गेले तोर मतेर अपेक्षा केउ करत ना। आज तो आमि ता पारि ने। राजा मधुसूदन घोषालेर नाम निश्चय शुनेछिस। वंश-मर्यादाय ओंरा खाटो नन। किन्तु वयसे तोर सङ्गे अनेक तफात। आमि राजि हते पारि नि। एखन, तोर मुखेर एकटा कथा शुनलेइ चुकिये दिते पारि। लज्जा करिस ने कुमु।"

"ना लज्जा करब ना।" बले किछुक्षण चुप करे रइल। "यांर कथा बलछ निश्चयइ ताँर सङ्गे आमार सम्बन्ध ठिक हयेइ गेछे।" एटा सेइ घटकेर कथार प्रतिध्वनि---कखन कथाटा एर मनेर गभीरताय आटका पड़े गेछे।

विप्रदास आश्चर्य हये बलले, "केमन करे ठिक हल ?"

कुमु चुप करे रइल।

विप्रदास तार माथाय हात बुलिये बलले, "छेलेमानुषि करिस ने, कुमु।"

कुमुदिनी बलले, "तुमि बुझबे ना दादा, एकटुओ छेलेमानुषि करछि ने।"

दादार उपर तार असीम भक्ति। किन्तु दादा तो दैववाणी माने ना, कुमुदिनी जाने एइखानेइ दादार दृष्टिर क्षीणता।

विप्रदास बलले, "तुइ तो ताँके देखिस नि।"

"ता होक आमि ये ठिक जेनेछि।"

विप्रदास भालो करेइ जाने ए जायगातेइ भाइबोनेर मध्ये असीम प्रभेद। कुमुर चित्तेर एइ अन्धकार महले ओर उपर दादार एकटुओ दखल नेइ। तबु विप्रदास आर एकवार बलले, "देख् कुमु, चिरजीवनेर कथा, फस करे एकटा खेयालेर माथाय पण करे बसिस ने।"

कुमु आकुल हये बलले, "खेयाल नय दादा, खेयाल नय। आमि तोमार एइ पा छुँये बलछि आर काउके बिये करते पारब ना।"

विप्रदास चमके उठल। येखाने कार्यकारणेर योगायोग नेइ सेखाने तर्क करबे की निये ? अमावस्यार सङ्गे कुस्ति करा चले ना। विप्रदास बुझेछे, की एकटा दैव-संकेत कुमु मनेर मध्ये बानिये बसेछे। कथाटा सत्य। आजइ सकाले ठाकुरके उद्देश करे मने मने बलेछिल, एइ बेजोड़ संख्यार फुले जोड़ मिलिये सब-शेषे येटि बाकि थाके तार रङ यदि ठाकुरेर मतो नील हय तबे बुझब ताँरइ इच्छा। सब-शेषेर फुलटि हल नील अपराजिता।

अदूरे मल्लिकदेर बाड़िते सन्ध्यारतिर काँसरघण्टा बेजे उठल। कुमु जोड़हात करे प्रणाम करले। विप्रदास अनेकक्षण रइल बसे। क्षणे क्षणे विद्युत् चमकाच्छे; वृष्टिधारार विराम नेइ।

१२

विप्रदास आरओ कयेकबार कुमुदिनीके बुझिये बलबार चेष्टा करले। कुमु कथार जबाव ना दिये माथा निचु करे आँचल खुँटते लागल।

बियेर प्रस्ताव पाका, केवल एकटा विषय निये दुइ पक्षे किछु कथा-चालाचालि हल। बियेटा हबे कोथाय? विप्रदासेर इच्छे कलकातार बाड़िते। मधुसूदनेर एकान्त जेद नुरनगरे। वरपक्षेर इच्छेइ बाहाल रइल।

आयोजनेर जन्ये किछु आगे थाकतेइ नुरनगरे आसते हल। वैशेख-जष्टिर खरार परे आषाढ़ेर वृष्टि नामले माटि येमन देखते देखते सबुज हये आसे, कुमुदिनीर अन्तरे-बाहिरे तेमनि एकटा नूतन प्राणेर रङ लागल। आपन-मनगड़ा मानुषेर सङ्गें मिलनेर आनन्द ओके अहरह पुलकित करे राखे। शरत्कालेर सोनार आलो ओर सङ्गे चोखे चोखे कथा कइछे, कोन् एक अनादिकालेर मनेर कथा। शोबार घरेर सामनेर बारान्दाय कुमु मुड़ि छड़िये देय, पाखिरा एसे एसे खाय; रुटिर टुकरो राखे, काठबिड़ालि चञ्चल चोखे चारिदिके चेये द्रुत छुटे एसे लेजेर उपर भर दिये दाँड़ाय; सामनेर दुइ पाये रुटि तुले धरे कुटुर कुटुर करे खेते थाके। कुमुदिनी आड़ाल थेके आनन्दित हये बसे देखे। विश्वेर प्रति ओर अन्तर आज दाक्षिण्ये भरा। बिकेले गा धोबार समय खिड़किर पुकुरे गला डुबिये चुप करे बसे थाके, जल येन ओर सर्वाङ्गे आलाप करे। बिकेलेर बाँका आलो पुकुरेर पश्चिम-धारेर बाताबि-लेबुगाछेर शाखार उपर दिये एसे घन कालो जलेर उपरे निकषे सोनार रेखार मतो झिकमिकि करते थाके; ओ चेये चेये देखे, सेइ आलोय छायाय ओर समस्त शरीरेर उपर दिये अनिर्वचनीय पुलकेर काँपन बये याय। मध्याह्ने बाड़िर छादेर चिलेकोठाय एकला गिये बसे थाके, पाशेर जामगाछ थेके घुघुर डाक काने आसे। ओर यौवन-मन्दिरे आज ये-देवतार वरण हच्छे भावघन रसेर रूपटि तार, कृष्णराधिकार युगल-रूपेर माधुर्य तार सङ्गे मिशेछे। बाड़िर छादेर उपरे एसराजटि निये धीरे धीरे बाजाय, ओर दादार सेइ भूपाली सुरेर गानटि :

आजु मोर घरे आइल पियरओया
रोमे रोमे हरखीला।

रात्रे बिछानाय बसे प्रणाम करे, सकाले उठे बिछानाय बसे आबार प्रणाम करे। काके करे सेटा स्पष्ट नय,—एकटि निरवलम्ब भक्तिर स्वतःस्फूर्त उच्छ्वास।

किन्तु मनगड़ा प्रतिमार मन्दिरद्वार चिरदिन तो रुद्ध थाकते पारे ना। कानाकानिर निश्वासेर तापे ओ वेगे से-मूर्तिर सुषमा यखन घा खेते आरम्भ करे तखन देवतार रूप टिंकबे की करे। तखन भक्तेर बड़ो दुःखेर दिन।

एकदिन तेलेनिपाड़ार बुड़ी तिनकड़ि एसे कुमुदिनीर मुखेर सामनेइ बले बसल, "ह्याँ गा, आमादेर कुमुर कपाले केमन राजा जुटल? ओइ ये बेदेनी-देर गान आछे,

एक-ये छिल कुकुर-चाटा शेयालकाँटार वन,
केटे करले सिंहासन।

ए-ओ सेइ शेयालकाँटा-वनेर राजा। ओइ तो रजबपुरेर आन्दो मुहुरिर छेले मेधो। देशे ये-बार आकाल, मगेर मुलुक थेके चाल आनिये बेचे ओर टाका। तबु बुड़ी माके शेषदिन पर्यन्त राँधिये राँधिये हाड़ कालि करियेछे।"

मेयेरा उत्सुक हये तिनकड़िके धरे बसे; बले, "वरके जानते ना कि?"

"जानतुम ना? ओर मा ये आमादेर पाड़ार मेये, पुरुत चक्रवर्तीदेर घरेर। (गला निचु करे) सत्यि कथा बलि बाछा, भालो बामनेर घरे ओदेर बिये चले ना। ता होक गे, लक्ष्मी तो जातविचार करेन ना।"

पूर्वेइ बलेछि कुमुदिनीर मन एकालेर छाँचे नय। जातकुलेर पवित्रता तार काछे खुब एकटा वास्तव जिनिस। मनटा ताइ यतइ संकुचित हये ओठे ततइ यारा निन्दे करे तादेर उपर राग करे; घर थेके हठात् केंदे उठे छुटे बाइरे चले याय। सबाइ गा-टेपाटेपि करे वले, "इस एखनइ एत दरद? ए ये देखि दक्षयज्ञेर सतीकेओ छाड़िये गेल।"

विप्रदासेर मनेर गति हाल-आमलेर, तबु जात-कुलेर हीनताय ताके काबु करे। ताइ, गुजबटा चापा देबार अनेक चेष्टा करले। किन्तु छेंड़ा बालिशे चाप दिले तार तुलो येमन आरओ बेशि बेरिये पड़े, तेमनि हल।

एदिके बुड़ो प्रजा दामोदर विश्वासेर काछे खबर पाओया गेल ये, बहुपूर्वे घोषालेरा नुरनगरेर पाशेर ग्राम शेयाकुलिर मालेक छिल। एखन सेटा चाटुज्येदेर दखले। ठाकुर-विसर्जनेर मामलाय की करे सबसुद्ध घोषालदेरओ विसर्जन घटेछिल, की कौशले कर्ताबाबुरा, शुधु देशछाड़ा नय, तादेर समाजछाड़ा करेछिलेन, तार विवरण बलते बलते दामोदरेर मुख भक्तिते उज्ज्वल हये ओठे। घोषालेरा एककाले धने माने कुले चाटुज्येदेर समकक्ष छिलेन एटा सुखबर, किन्तु विप्रदासेर मने भय लागल ये, एइ बियेटाओ सेइ पुरातन मामलार एकटा जेर ना कि?

१३

अघ्रान मासे बिये। पँचिशे आश्विन लक्ष्मीपूजो हये गेल। हठात् साताशे आश्विने ताँबु ओ नानाप्रकार साजसरञ्जाम निये घोषाल-कोम्पानिर इञ्जिनियारिं विभागेर ओभारसियर एसे उपस्थित, सङ्गे एकदल पश्चिमि मजुर। व्यापारखाना की ? शेयाकुलिते घोषालदिघिर धारे ताँबु गेड़े वर ओ वरयात्रीरा किछुदिन आगे थाकतेइ सेखाने एसे उठबेन।

ए की रकम कथा ? विप्रदास बलले, "ताँरा यतजन खुशि आसुन, यतदिन खुशि थाकुन, आमराइ बन्दोबस्त करे देब। ताँबुर दरकार की ? आमादेर स्वतंत्र बाड़ि आछे, सेटा खालि करे दिच्छि।"

ओभारसियर बलले, "राजाबाहादुरेर हुकुम। दिघिर चारिधारेर वनजङ्गलओ साफ करे दिते बलेछेन,—आपनि जमिदार, अनुमति चाइ।"

विप्रदास मुख लाल करे बलले, "एटा कि उचित हच्छे ? जङ्गल तो आमराइ साफ करे दिते पारि।"

ओभारसियर विनीतभावे उत्तर करले, "ओइखानेइ राजा बाहादुरेर पूर्वपुरुषेर भिटेबाड़ि, ताइ शख हयेछे निजेइ ओटा परिष्कार करे नेबेन।"

कथाटा नितान्त असंगत नय, किन्तु आत्मीयस्वजनेरा खुँत खुँत करते लागल। प्रजारा बले, एटा आमादेर कर्ताबाबुदेर उपर टेक्का देबार चेष्टा। हठात् तबिल फेँपे उठेछे, सेटा ढाका दिते पारछे ना ; सेटाके जयढाक करे तोलबार जन्येइ ना एइ काण्ड ? साबेक आमल हले वरसुद्ध वरसज्जा वैतरणी पार करते देरि हत ना। छोटोबाबु थाकले तिनिओ सइतेन ना, देखा येत ओइ बाबुगुलो आर ताँबुगुलो थाकत कोथाय।

प्रजारा एसे विप्रदासके बलले, "हुजूर ओदेर काछे हटते पारब ना। या खरच लागे आमराइ देब।"

छय-आनार कर्ता नवगोपाल एसे बलले, "वंशेर अमर्यादा सओया याय ना। एकदिन आमादेर कर्तारा ओइ घोषालदेर हाड़े हाड़े ठकाठकि लागियेछेन, आज तारा आमादेरइ एलाकार उपर चड़ाओ हये टाकार झलक मारते एसेछे। भय नेइ दादा, खरच या लागे आमराओ आछि। विषय भाग होक वंशेर मान तो भाग हये याय नि।"

एइ बले नवगोपालइ ठेलेठुले कर्मकर्ता हये बसल।

विप्रदास कयदिन कुमुर काछे येते पारे नि। तार मुखेर दिके ताकाबे की करे ? कुमुर काछे वरपक्षेर स्पर्धार कथा केउ ये गला खाटो करे बलबे

समाजे से-दया वा भद्रता नेइ। तारइ काछे सबाइ बाड़िये-बाड़िये बले। मेयेदेर राग तारइ 'परे। ओरइ जन्ये पूर्वपुरुषेर माथा येहेँट हल। राज-रानी हते चलेछेन! कीबे राजार छिरि!

जातकुलेर कथाटाके कुमु तार भक्ति दिये चापा दियेछिल। किन्तु धनेर बड़ाइ करे श्वशुरकुलके खाटो करार नीचता देखे तार मन विषादे भरे उठल। केवलइ लोकेर काछ थेके से पालिये बेड़ाय। घोषालदेर लज्जाय आज ये ओरइ लज्जा। दादार मुख थेके किछु शोनबार जन्ये मनटा छटफट करछे। किन्तु दादार देखा नेइ, अन्दरमहले खेतेओ आसे ना।

एकदिन विप्रदास अन्तःपुरेर बागाने भियेनघरेर जन्ये चाला बाँधबार जायगा ठिक करते गिये हठात् खिड़किर पुकुरेर घाटे देखे कुमु निचेर पैँठेर उपर बसे माथा हेंट करे जलेर दिके ताकिये आछे। दादाके देखे ताड़ाताड़ि उपरे उठे एल। एसेइ रुद्धस्वरे बलले, "दादा, किछुइ बुझिते पारछि ने।" बलेइ मुखे कापड़ दिये केँदे उठल।

दादा धीरे धीरे पिठे हात बुलिये बलले, "लोकेर कथाय कान दिस ने बोन।"

"किन्तु ओँरा ए-सब की करछेन? एते कि तोमादेर मान थाकबे?"

"ओदेर दिकटाओ भेवे देखिस। पूर्वपुरुषेर जन्मस्थाने आसछे, धुमधाम करबे ना? बियेर व्यापार थेके एटाके स्वतन्त्र करे देखिस।"

कुमु चुप करे रइल। विप्रदास थाकते पारले ना, मरिया हये बलले, "तोर मने यदि एकटुओ खटका थाके बिये एखनओ भेङे दिते पारि।"

कुमुदिनी सवेगे माथा नेड़े बलले, "छि छि, से कि हय?"

अन्तर्यामीर सामने सत्यग्रन्थिते तो गाँठ पड़े गेछे। बाकि येटुकु से तो बाइरेर।

विप्रदासेर एकेले मन एतटा निष्ठाय अधैर्य हये ओठे। से बलले, "दुइ पक्षेर सततताय तबेइ विवाह-बन्धन सत्य। सुरे-बाँधा एसराजेर कोनो मानेइ थाके ना यदि बाजाबार हातटा हय बेसुरो। पुराणे देख ना, येमन सीता तेमनि राम, येमन महादेव तेमनि सती, अरुन्धती येमन वशिष्ठओ तेमनि। हाल-आमलेर बाबुदेर निजेदेर मध्ये नेइ पुण्य ताइ एकतरफा सतीत्व प्रचार करेन। ताँदेर तरफे तेल जोटे ना सलतेके बलेन ज्वलते—शुकनो प्राणे ज्वलते ज्वलतेइ ओरा गेल छाइ हये।"

कुमुके बला मिथ्ये। एखन थेके ओ मने मने जोरेर सङ्गे जपते लागल, तिनि भालोइ हन, मन्दइ हन तिनि आमार परमगति।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः
वीतरागभयक्रोधः—
शुधु यतिधर्मेर नय, सतीधर्मेरओ एइ लक्षण। से धर्म सुखदुःखेर अतीत, —ताते क्रोध नेइ, भय नेइ। आर अनुराग? तारइ वा अत्यावश्यकता किसेर। अनुरागे चाओया-पाओयार हिसेब थाके, भक्ति तारओ बड़ो। ताते आवेदन नेइ निवेदन आछे। सतीधर्म निर्व्यक्तिक, याके इंरेजिते बले इम्पार्सोनाल। मधुसूदन-व्यक्तिटिते दोष थाकते पारे, किन्तु स्वामी नामक भाव पदार्थटि निर्विकार निरञ्जन। सेइ व्यक्तिकताहीन ध्यानरूपेर काछे कुमुदिनी एकमना हये निजेके समर्पण करे दिले।

१४

घोषालदिघिर धारे जङ्गल साफ हये गेल,—चेना याय ना। जमि निखुंतभावे समतल, माझे माझे सुरकि दिये राङानो रास्ता, रास्तार धारे-धारे आलो देबार थाम। दिघिर पाना सब तोला हयेछे। घाटेर काछे तकतके नतुन विलिति पाल-खेलाबार दुटि नौको; तादेर एकटिर गाये लेखा "मधुमती", आर-एकटिर गाये "मधुकरी"। ये-ताँबुते राजाबाहादुर स्वयं थाकबेन तार सामने फ्रेमे हलदे बनातेर उपर लाल रेशमे बोना "मधुचक्र"। एकटा ताँबु अन्तःपुरेर, सेखान थेके जल पर्यन्त चाटाइ दिये घेरा घाट। घाटेर उपरेइ मस्त निमगाछेर गाये काठेर फलके लेखा, "मधुसागर"। खानिकटा जमिते नाना आकारेर चानकाय सूर्यमुखी रजनीगन्धा, गाँदा दोपाटि, क्याना ओ पाताबाहार, काठेर चौको बाक्से नाना रङेर विलिति फुल। माझे एकटि छोटो बाँधानो जलाशय, तारइ मध्ये लोहार ढालाइ-करा नग्न स्त्री-मूर्ति, मुखे शाँख तुले धरेछे, तार थेके फोयारार जल बेरोबे। एइ जायगाटार नाम देओया हयेछे "मधुकुञ्ज"। प्रवेशपथे कारुकाजकरा लोहार गेट, उपरे निशान उड़छे—निशाने लेखा "मधुपुरी"। चारिदिकेइ "मधु" नामेर छाप। नाना रङेर कापड़े कानाते चाँदोयाय निशाने रङिन फुले चीनालण्ठने हठात्-तैरि एइ मायापुरी देखबार जन्ये दूर थेके दले दले लोक आसते लागल। एदिके झकझके चापरास-झोलानो हलदेर उपर लालपाड़ देओया पागड़ि-बाँधा, जरिर फिते-देओया लाल बनातेर उर्दिपरा चापरासिर दल विलिति जुतो मस्मसिये बेड़ाय, सन्ध्यावेलाय बन्दुके फाँका आओयाज करे, दिनरात प्रहरे प्रहरे घण्टा बाजाय, तादेर कारओ कारओ चामड़ार कोमरबन्धे झोलानो

विलिति तलोयारटा जमिदारेर माटिके पाये पाये खोंचा दिते थाके। चाटु-ज्येदेर साबेक कालेर जीर्णसाजपरा बरकन्दाजेरा लज्जाय घर हते बार हते चाय ना। काण्ड देखे चाटुज्ये-परिवारेर गाये ज्वाला धरल। नुरनगरेर पांजरटार मध्ये बिँधिये दिये शेलदण्डेर उपर आज घोषालदेर जयपताका उड़ेछे।

शुभपरिणयेर एइ सूचना।

१५

विप्रदास नवगोपालके डेके बलले, "नवु, आड़म्बरे पाल्ला देबार चेष्टा,—ओटा इतरेर काज।"

नवगोपाल बलले, "चतुर्मुख ताँर पा झाड़ा दियेइ बेशि मानुष गड़ेछेन ; चारटे मुख केवल बड़ो बड़ो कथा बलबार जन्येइ। साड़े पनेरो आना लोक ये इतर, तादेर काछे सम्मान राखते हले इतरेर रास्ताइ धरते हय।"

विप्रदास बलले, "तातेओ तुमि पेरे उठबे ना। तार चेये सात्त्विकभावे काज करि, से देखाबे भालो। उपयुक्त ब्राह्मणपण्डित आनिये आमादेर सामवेदेर मते विशुद्धभावे अनुष्ठान पालन करब। ओरा राजा हयेछे करुक आड़म्बर ; आमरा ब्राह्मण, पुण्यकर्म आमादेर।"

नवगोपाल बलले, "दादा, पाँजि भुलेछ, एटा सत्ययुग नय। जलेर नौको चालाते चाओ पाँकेर उपर दिये! तोमार प्रजारा आछे,—तिनु सरकार आछे तोमार तालुकदार,—भादु परामानिक, कमरद्दि विश्वेस, पाँचु मण्डल,—एरा कि तोमार ओइ काँचकलाभाते हविष्यि-करा बामनाइयेर एक अक्षर माने बुझबे? एरा कि याज्ञवल्क्येर प्रपौत्र? एदेर ये बुक फेटे याबे। तुमि चुप करे थाको, तोमाके किछु भावते हबे ना।"

नवगोपाल प्रजादेर सङ्गे मिले उठे-पड़े लागल। सबाइ बुक ठुके बलले, टाकार जन्ये भावना की? आमला फयला पाइक बरकन्दाज सबारइ गाये चड़ल नतुन लाल बनातेर चादर, रङिन धुति। सालुते-मोड़ा झालर-झोलानो निशेन-ओड़ानो एक नहबतखाना उठल, सात क्रोश तफात थेके तार चुड़ो देखा याय। दुइ शरिके मिले तादेर चार-चार हाति बेर करले, साज चड़ल तादेर पिठे, यखन-तखन बिना कारणे घोषालदिघिर सामनेर रास्ताय शुँड़ दुलिये दुलिये तारा टहलिये बेड़ाय, गलाय ढं ढं करे घण्टा बाजते थाके। आर याइ होक, पाटेर बस्ता थेके हाति बेर हय ना, एइ बले सकलेइ दुइ पा चापड़े हो हो करे हेसे निले।

अघ्रानेर साताशे पड़ेछे बियेर दिन ; एखनओ दिनदशेक बाकि। एमन समय लोकमुखे जाना गेल, राजा आसछे दलबल निये। भावना पड़े गेल, कर्तव्य की। मधुसूदन एदेर काछे कोनो खबर देय नि। बुझि मने करेछे भद्रता साधारण लोकेर, अभद्रताइ राजोचित। एमन अवस्थाय निजेरा गाये पड़े स्टेशन थेके ओदेर एगिये आनते याओया कि संगत हबे ? खबर ना देओयार उचित जवाब ह्च्छे खबर ना-नेओया।

सबइ सत्य, किन्तु युक्तिर द्वारा संसारे दुःख ठेकानो याय ना। कुमुर प्रति विप्रदासेर गभीर स्नेह ; पाछे ताके किछुते आघात करे ए-कथाटा सकल तर्क छाड़िये याय। मेयेदेर पीड़न करा एतइ सहज ; तादेर मर्मस्थान चारदिकेइ अनावृत । जबरदस्तेर हातेइ समाज चाबुक जुगियेछे ; आर यारा वर्गहीन तादेर स्पर्श-कातर पिठेर दिके कोनो विधिविधान नजर करे ना। एमन अवस्थाय स्नेहेर धनके रोष-विद्वेष-ईर्षार तुफाने भासिये दिये निजेर अभिमान बाँचाबार चेष्टा करा कापुरुषता, विप्रदासेर मनेर एइ भाव।

विप्रदास काउके ना-जानिये घोड़ाय चड़े गेल स्टेशने। गाड़ि एसे पौंछल, तखन वेला पाँचटा। सेलुन गाड़ि थेके राजा नामल दलबल निये। विप्रदासके देखे शुष्क संक्षिप्त नमस्कार करे बलले, "ए की, आपनि केन कष्ट करे ?"

विप्रदास। विलक्षण ! एइ प्रथम आसा आमार देशे, अभ्यर्थना करे नेब ना ?

राजा। भुल करछेन। आपनार देशे एखनओ आसि नि। से हबे बियेर दिने।

विप्रदास कथाटार माने बुझते पारले ना। स्टेशने भिड़ेर मध्ये तर्क करबार जायगा नय—ताइ केवल बलले, "घाटे बजरा तैरि।"

राजा बलले, "दरकार हबे ना, आमादेर स्टीमलञ्च एसेछे।"

विप्रदास बुझले सुविधे नय। तबु आर-एकबार बलले, "खाओया-दाओयार जिनिसपत्र, रसुइयेर नौको समस्तइ प्रस्तुत।"

"केन एत उत्पात करलेन ! किछुइ दरकार हबे ना। देखुन, एकटा कथा मने राखबेन, एसेछि आमार पूर्वपुरुषदेर जन्मभूमिते—आपनादेर देशे ना। बियेर दिने सेखाने याबार कथा।"

विप्रदास बुझले किछुतेइ नरम हबार आशा नेइ। बुकेर भितरटा दमे गेल। स्टेशनेर बसबार घरे केदाराय गिये शुये पड़ल। शीतेर सन्ध्या, अन्धकार हये एसेछे। उत्तर थेके गाड़ि आसबार जन्ये घण्टा पड़ल, स्टेशने

आलो ज्वलल,—लागाम छेड़े घोड़ाके निजेर मरजिमतो चलते दिये विप्रदास यखन बाड़ि फिरले तखन यथेष्ट रात। कोथाय गियेछिल, की घटेछिल, काउके किछुइ बलले ना।

सेइदिन रात्रे ओर ठाण्डा लेगे काशि आरम्भ हल। क्रमेइ चलल बेड़े। उपेक्षा करते गिये व्यामोटाके आरओ उसके तुलले। शेषकाले कुमु ओके अनेक धरे कये एने बिछानाय शोओयाय। अनुष्ठानेर समस्त भारइ पड़ल नवगोपालेर उपर।

१६

दु-दिन परेइ नवगोपाल एसे बलले, "की करि एकटा परामर्श दाओ।"

विप्रदास व्यस्त हये जिज्ञासा करले, "केन? की हयेछे?"

"सङ्गे गोटाकतक साहेब,—दालाल हबे, किंवा मदेर दोकानेर विलिति शुंड़ि, काल पीरपुरेर चरेर थेके किछु ना हबे तो दु-श कादाखोंचा पाखि मेरे निये उपस्थित। आज चलेछे चन्दनदहेर बिले। एइ शीतेर समय सेखाने हाँसेर मरसुम—राक्षुसे ओजनेर जीवहत्या हबे,—अहिरावण महीरावण हिड़िम्बा घटोत्कच इस्तिक कुम्भकर्णेर पर्यंत पिण्डि देबार उपयुक्त,—प्रेत-लोके दशमुण्ड रावणेर चोयाल धरे याबार मतो।"

विप्रदास स्तम्भित हये रइल, किछु बलले ना।

नवगोपाल बलले, "तोमारइ हुकुम ओइ बिले केउ शिकार करते पाबे ना। सेबार जेलार म्याजिस्ट्रेटके पर्यन्त ठेकियेछिले—आमरा तो भय करे-छिलुम तोमाकेओ पाछे से राजहाँस भुल करे गुलि करे बसे। लोकटा छिल भद्र, चले गेल। किन्तु एरा गो-मृग-द्विज काउके मानबार मतो मानुष नय। तबु यदि बल तो एकबार ना हय—"

विप्रदास व्यस्त हये बलले, "ना ना, किछु बोलो ना।"

विप्रदास बाघ शिकारे जेलार मध्ये सब-सेरा। कोनो एकबार पाखि मेरे तार एमन धिक्कार हयेछिल ये, सेइ अवधि निजेर एलाकाय पाखि मारा एकेबारे बन्ध करे दियेछे।

शियरेर काछे कुमु बसे विप्रदासेर माथाय हात बुलिये दिच्छिल। नवगोपाल चले गेले से मुख शक्त करे बलले, "दादा, वारण करे पाठाओ।"

"की वारण करब?"

"पाखि मारते।"

"ओरा भुल बुझबे कुमु, सइबे ना।"

"ता बुझुक भुल। मान-अपमान शुधु ओदेर एकलार नय।"

विप्रदास कुमुर मुखेर दिके चेये मने-मने हासले। से जाने कठिन निष्ठार सङ्गे कुमु मने-मने सतीधर्म अनुशीलन करछे। छायेवानुगतास्वच्छा। सामान्य पाखिर प्राण निये कायार सङ्गे छायार पथभेद घटबे ना कि?

विप्रदास स्नेहेर स्वरे बलले, "राग करिस ने कुमु, आमिओ एकदिन पाखि मेरेछि। तखन अन्याय बले बुझतेइ पारि नि। एदेरओ सेइ दशा।"

अक्लान्त उत्साहेर सङ्गे चलल शिकार, पिकनिक, एवं सन्ध्येवेलाय ब्याण्डेर संगीतसहयोगे इंरेज अभ्यागतदेर नाच। बिकाले टेनिस; ता छाड़ा दिघिर नौकोर 'परे तिन-चार पर्दा तुले दिये बाजि रेखे पालेर खेला;—ताइ देखते ग्रामेर लोकेरा दिघिर पाड़े दाँड़िये याय। रात्रे डिनारेर परे चीत्कार चले, "फर ही इज ए जलि गुड फेलो।" एइ सब विलासेर प्रधान नायक-नायिका साहेबमेम, तातेइ गाँयेर लोकेर चमक लागे। एरा ये सोलार टुपि माथाय छिप फेले माछ धरे, सेओ बड़ो अपरूप दृश्य। अन्य पक्षे लाठि-खेला कुस्ति नौकोबाच यात्रा शखेर थियेटार एवं चारटे हातिर समावेश एर काछे लागे कोथाय?

विवाहेर दुदिन आगे गाये-हलुद। दामि गहना थेके आरम्भ करे खेलार पुतुल पर्यन्त सओगात या वरेर बासा थेके एल तार घटा देखे सकले अवाक। तार वाहनइ वा कत! चाटुज्येरा खुब दराज हातेइ तादेर विदेय करले।

अवशेषे जनसाधारणके खाओयानो निये वैवाहिक कुरुक्षेत्रेर द्रोणपर्व-शुरु हल।

सेदिन ढोल पिटिये सर्वसाधारणेर निमन्त्रण मधुसागरेर तीरे मधुपुरीते। रबाहूत अनाहूत कारओ बाद नेइ। नवगोपाल रेगे आगुन। ए की आस्पर्धा! आमरा हलुम जमिदार, एर मध्ये उनि ओँर मधुपुरी खाड़ा करेन कोथा थेके?

एदिके भोजेर आयोजनटा खुब व्यापकरूपेइ सकलेर काछे प्रकाशमान हये उठल। सामान्य फलार नय। माछ दइ क्षीर सन्देश घि मयदा चिनि खुब शोरगोल करे आमदानि। गाछतलाय मस्त मस्त उनन पाता; रान्नार जन्ये नाना आयतनेर हाँड़ि हाँड़ा मालसा कलसी जाला; सारबन्दि गोरुर गाड़िते एल आलु बेगुन काँचकला शाकसबजि। आहारटा हबे सन्ध्येर समय बाँधा रोशनाइयेर आलोय।

एदिके चाटुज्येदेर बाड़िते मध्याह्नभोजन। दले दले प्रजारा मिले

निजेराइ आयोजन करेछे। हिन्दुदेर मुसलमानदेर स्वतन्त्र जायगा। मुसलमान प्रजार संख्याइ बेशि—रात ना पोयातेइ तारा निजेराइ रान्ना चड़ियेछे। आहारेर उपकरण यत ना होक, घन घन चाटुज्येदेर जयध्वनि उठछे तार चतुर्गुण। स्वयं नवगोपालबाबु वेला प्राय पाँचटा पर्यन्त अभुक्त अवस्थाय बसे थेके सकलके खाओयालेन। तार परे हल काङालिविदाय। मातब्बर प्रजारा निजेराइ दानवितरणेर व्यवस्था करले। कलध्वनिते जयध्वनिते वातासे चलल समुद्रमन्थन।

मधुपुरीते समस्तदिन रान्ना बसेछे। गन्धे बहुदूर पर्यन्त आमोदित। खुरि भाँड़ कलापात हयेछे पर्वतप्रमाण। तरकारि ओ माछकोटार आवर्जना निये काकेदेर कलरवेर विराम नेइ—राज्येर कुकुरगुलोओ परस्पर कामड़ाकामड़ि चेंचामेचि बाधिये दियेछे। समय हये एल, रोशनाइ ज्वलेछे, मेटियाबुरुजेर रोशनचौकि इमनकल्याण थेके केदारा पर्यन्त बाजिये चलल। अनुचरपरिचरेरा थेके-थेके उद्विग्नमुखे राजाबाहादुरेर कानेर काछे फिस फिस करे जानाच्छे एखनओ खाबार लोक यथेष्ट एल ना। आज हाटेर दिन, भिन्न एलेका थेके यारा हाट करते एसेछे तादेर केउ केउ पात-पाड़ा देखे बसे गेछे। काङाल-भिक्षुकओ सामान्य कयेकजन आछे।

मधुसूदन निर्जन ताँबुर भितर ढुके मुख अन्धकार करे एकटा चापा हुंकार दिले, —"हुँ।"

छोटो भाइ राधु एसे बलले, "दादा, आर केन? चलो।"

"कोथाय?"

"फिरे याइ कलकाताय। एरा सब बदमाइशि करछे। एदेर चेये बड़ो बड़ो घरेर पात्री तोमार कड़े आङुल नाड़ार अपेक्षाय बसे। एकबार तु करलेइ हय।"

मधुसूदन गर्जन करे उठे बलले, "या चले।"

एक-श बछर पूर्वे येमन घटेछिल आजओ ताइ। एबारओ एकपक्षेर आड़म्बरेर चुड़ोटा अन्यपक्षेर चेये अनेक उँचु करेइ गड़ा हयेछिल, अन्यपक्षता रास्ता पार हते दिले ना। किन्तु आसल हारजित बाइरे थेके देखा याय ना। तार क्षेत्रटा लोकचक्षुर अगोचरे।

चाटुज्येदेर प्रजारा खुब हेसे निले। विप्रदास रोगशय्याय; तार काने किछुइ पौंछल ना।

१७

बियेर दिने, राजार हुकुम, कनेर बाड़ि याबार पथे धुमधाम एकेबारेइ बन्ध। आलो ज्वलल ना, बाजना बाजल ना, सङ्गे केवल निजेदेर पुरोहित, आर दुइ जन भाट। पालकिते करे निःशब्दे बियेबाड़िते वर एल, लोके हठात् बुझतेइ पारले ना। ओदिके मधुपुरीर ताँबुते आलो ज्वालिये ब्याण्ड बाजिये विपरीत है है शब्दे वरयात्रीर दल आहारे आमोदे प्रवृत्त। नव-गोपाल बुझले एटा हल पालटा जवाब। एमन स्थले कन्यापक्ष हाते पाये धरे वरपक्षेर साध्यसाधना करे;—नवगोपाल तार किछुइ करले ना। एक-बार जिज्ञासाओ करले ना, वरयात्रीदेर हल की।

कुमुदिनी साजसज्जा करे विवाह-आसरे याबार आगे दादाके प्रणाम करते एल; तार सर्वशरीर काँपछे। विप्रदासेर तखन एक-श पाँच डिग्रि ज्वर, बुके पिठे राइसरषेर पलस्तारा; कुमुदिनी तार पायेर उपर माथा ठेकिये आर थाकते पारले ना, फुँपिये फुँपिये केंदे उठल। क्षेमा पिसि मुखे हात चापा दिये बलले, "छि, छि, अमन करे काँदते नेइ।"

विप्रदास एकटु उठे बसे ओके हात धरे पाशे बसिये ओर मुखेर दिके चेये खानिकक्षण चुप करे रइल—दुइ चोख दिये जल गड़िये पड़ते लागल। क्षेमा पिसि बलले, "समय हल ये।"

विप्रदास कुमुर माथाय हात दिये रुद्ध कण्ठे बलले, "सर्वशुभदाता कल्याण करुन।" बलेइ धप करे बिछानाय शुये पड़ल।

विवाहेर समस्तक्षण कुमुर दु-चोख दिये केवल जल पड़ेछे। वरेर हाते यखन हात दिले से-हात ठाण्डा हिम, आर थरथर करे काँपछे। शुभदृष्टिर समय से कि स्वामीर मुख देखेछे? हयतो देखे नि। एदेर व्यवहारे सबसुद्ध जड़िये स्वामीर उपर ओर भय धरे गेछे। पाखिर मने हच्छे तार जन्ये बासा नेइ, आछे फाँस।

मधुसूदन देखते कुश्री नय किन्तु बड़ो कठिन। कालो मुखेर मध्ये येटा प्रथमेइ चोखे पड़े से हच्छे पाखिर चन्चुर मतो मस्त बड़ो बाँका नाक, ठोंटेर सामने पर्यन्त झुंके पड़े येन पाहारा दिच्छे। प्रशस्त गड़ाने कपाल घन भ्रूर उपर बाधाप्राप्त स्रोतेर मतो स्फीत। सेइ भ्रूर छायातले संकीर्ण तिर्यक् चक्षुर दृष्टि तीव्र। गोंफदाड़ि कामानो, ठोंट चापा, चिबुक भारि। कड़ा चुल काफ्रिदेर मतो कोंकड़ा, माथार तेलो घेंषे छाँटा। खुब आँटसाँट शरीर; यत वयेस तार चेये कम बोध हय, केवल दुइ रगेर काछे चुले

पाक धरेछे। बेँटे, माथाय प्राय कुमुदिनीर समान। हात दुटो रोमश ओ देहेर तुलनाय खाटो। सबसुद्ध मने हय मानुषटा एकेबारे निरेट; माथा थेके पा पर्यन्त सर्वदाइ की एकटा प्रतिज्ञा येन गुलि पाकिये आछे। येन भाग्यदेवतार कामान थेके निक्षिप्त हये एकाग्रभावे चलेछे एकटा एकगुँये गोला। देखलेइ बोझा याय बाजे कथा बाजे विषय बाजे मानुषेर प्रति मन देबार ओर एकटुओ अवकाश नेइ।

विवाहटा एमन भावे हल ये, सकलेरइ मने खाराप लागल। वरपक्ष-कन्यापक्षेर प्रथम संस्पर्शमात्रइ एमन एकटा बेसुर झनझनिये उठल ये, तार मध्ये उत्सवेर संगीत कोथाय गेल तलिये। थेके थेके कुमुर मनेर एकटा प्रश्न अभिमाने बुक ठेले ठेले उठछे, "ठाकुर कि तबे आमाके भोलालेन ?" संशयके प्राणपणे चापा देय, रुद्धघरेर मध्ये एकला बसे बारबार माटिते माथा ठेकिये प्रणाम करे; बले, मन येन दुर्बल ना हय। सब-चेये कठिन हयेछे दादार काछे संशय लुकोनो।

मायेर मृत्युर पर थेके कुमुदिनीर सेवार 'परेइ विप्रदासेर एकान्त निर्भर। कापड़चोपड़ दिनखरचेर टाकाकड़ि, बइयेर आलमारि, घोड़ार दाना, बन्दुकेर सम्मार्जन, कुकुरेर सेवा, क्यामेरार रक्षण, संगीतयन्त्रेर पर्यवेक्षण, शोबार बसवार घरेर पारिपाट्यसाधन,—समस्त कुमुर हाते। एत बेशि अभ्यास हये एसेछे ये, प्रात्यहिक व्यवहारे कुमुर हात कोथाओ ना थाकले तार रोचे ना। सेइ दादार रोगशय्याय विदायेर आगे शेष कयदिन ये-सेवा करते हयेछे तार मध्ये निजेर भावनार कोनो छाया ना पड़े एइ तार दुःसाध्य चेष्टा। कुमुर एसराजेर हात निये विप्रदासेर भारि गर्व। लाजुक कुमु सहजे बाजाते चाय ना। एइ दुदिन से आपनि चेये दादाके कानाड़ा-मालकोषेर आलाप शुनियेछे। सेइ आलापेर मध्येइ छिल तार देवतार स्तव, तार प्रार्थना, तार आशङ्का, तार आत्मनिवेदन। विप्रदास चोख बुजे चुप करे शोने आर माझे माझे फरमाश करे—सिन्धु, वेहाग, भैरवी—ये-सब सुरे विच्छेद-वेदनार कान्ना बाजे। सेइ सुरेर मध्ये भाइबोन दुजनेरइ व्यथा एक हये मिशे याय। मुखेर कथाय दुजने किछुइ बलले ना; ना दिले परस्परके सान्त्वना, ना जानाले दुःख।

विप्रदासेर ज्वर काशि बुके व्यथा सारल ना,—वरं बेड़े उठछे। डाक्तार बलछे इनफ्लुयेन्जा, हयतो न्युमोनियाय गिये पौंछते पारे, खुब सावधान हओया चाइ। कुमुर मने उद्वेगेर सीमा नेइ। कथा छिल बासि-बियेर कालरात्रिटा एखानेइ काटिये दिये परदिन कलकाताय फिरबे। किन्तु

शोना गेल मधुसूदन हठात् पण करेछे, विवाहेर परदिने ओके निये चले याबे। बुझले, एटा प्रथार जन्ये नय, प्रयोजनेर जन्ये नय, प्रेमेर जन्ये नय, शासनेर जन्ये। एमन अवस्थाय अनुग्रह दाबि करते अभिमानिनीर माथाय वज्राघात हय। तबु कुमु माथा हेँट करे लज्जा काटिये कम्पितकण्ठे विवाहेर राते स्वामीर काछे एइमात्र प्रार्थना करेछिल ये, आर दुटो दिन येन ताके बापेर बाड़िते थाकते देओया हय, दादाके एकटु भालो देखे येन से येते पारे। मधुसूदन संक्षेपे बलले, "समस्त ठिकटाक हये गेछे।" एमन वज्रे-बाँधा एकपक्षेर ठिकठाक, तार मध्ये कुमुर मर्मान्तिक वेदनारओ एक तिल स्थान नेइ। तार पर मधुसूदन ओके रात्रे कथा कओयाते चेष्टा करेछे, ओ एकटिओ जबाब दिल ना—बिछानार प्रान्ते मुख फिरिये शुये रइल।

तखनओ अन्धकार, प्रथम पाखिर द्विधाजड़ित काकलि शोनबामात्र ओ बिछाना छेड़े चले गेल।

विप्रदास समस्त रात छटफट करेछे। सन्ध्यार समय ज्वर-गायेइ विवाहसभाय याबार जन्ये ओर झोँक हल। डाक्तार अनेक चेष्टाय चेपे रेखे दिले। घन घन लोक पाठिये से खबर नियेछे। खबरगुलो युद्धेर समयकार खबरेर मतो, अधिकांशइ बानानो। विप्रदास जिज्ञासा करले, "कखन वर एल? बाजनाबाद्यिर आओयाज तो पाओया गेल ना।"

संवाददाता शिवु बलले, "आमादेर जामाइ बड़ो विवेचक—बाड़िते असुख शुनेइ सब थामिये दियेछे—वरयात्रदेर पायेर शब्द शोना याय ना, एमनि ठाण्डा।"

"ओरे शिबु, खाबार जिनिस तो कुलियेछिल? आमार ओइ एक भावना छिल, ए तो कलकाता नय!"

"कुलोय नि? बलेन की हुजुर? कत फेला गेल। आरओ अतगुलो लोकके खाओयाबार मतो जिनिस बाकि आछे।"

"ओरा खुशि हयेछे तो?"

"एकटि नालिश कारओ मुखे शोना याय नि। एकेबारे टुँ शब्दटि ना। आरओ तो एत एत बिये देखेछि, वरयात्रेर दापादापिते कन्याकर्तार भिर्मि लागे! एरा एमनि चुप, आछे कि ना-आछे बोझाइ याय ना।"

विप्रदास बलले, "ओरा कलकातार लोक कि ना, ताइ भद्र व्यवहार जाना आछे। ओरा बोझे ये, ये-बाड़ि थेके मेये नेबे तादेर अपमाने निजेदेरइ अपमान।"

"आहा, हुजुर या बललेन एइ कथाटि ओदेर लोकजनदेर आमि शुनिये देब। शुनले ओरा खुशि हबे।"

कुमु काल सन्ध्येर समयेइ बुझेछिल असुख बाड़बार मुखे। अथच से ये दादार सेवा करते पारबे ना एइ दुःख सर्वक्षण तार बुकेर मध्ये फाँदे-पड़ा पाखिर मतो छटफट करते लागल। तार हातेर सेवा ये तार दादार काछे ओषुधेर चेये बेशि।

स्नान करे ठाकुरके फुल दिये कुमु यखन दादार घरे एल तखनओ सूर्य ओठे नि। कठिन रोगेर सङ्गे अनेकक्षण लड़ाइ करे क्षणकाल छुटि पाबार समय ये अवसादेर वैराग्य आसे सेइ वैराग्ये विप्रदासेर मन तखन शिथिल। जीवनेर आसक्ति, संसारेर भावना सब तार काछे शस्यशून्य माठेर मतो धूसरवर्ण। समस्त रात दरजा बन्ध छिल, डाक्तार भोरेर वेलाय पुबदिकेर जानालाटा खुले दियेछे। अशथगाछेर शिशिर-भेजा पातार आड़ाले अरुणवर्ण आकाशेर आभा धीरे धीरे शुभ्र हये आसछे,—अदूरवर्ती नदीते महाजनि नौकोर बृहत् तालि-देओया पालगुलि सेइ आरक्तिम आकाशेर गाये स्फीत हये उठल। नहबते करुण सुरे रामकेलि बाजछे।

पाशे बसे कुमु निजेर दुइ ठाण्डा हातेर मध्ये दादार शुकनो गरम हात तुले निले। विप्रदासेर टेरियर कुकुर खाटेर निचे विमर्ष मने चुप करे शुये छिल। कुमु खाटे एसे बसतेइ से दाँड़िये उठे दु-पा तार कोलेर उपर रेखे लेज नाड़ते नाड़ते करुण चोखे क्षीण आर्तस्वरे की येन प्रश्न करले।

विप्रदासेर मने भितरे-भितरे की एकटा चिन्तार धारा चलछिल, ताइ हठात् एक समये असंलग्नभावे बले उठल, "दिदि, आसले किछुइ नय,—के बड़ो के छोटो के उपरे के निचे, ए समस्तइ वानानो कथा। फेनार मध्ये बुद्बुद्गुलोर कोन्टार कोथाय स्थान ताते की आसे याय। आपनार भितरे आपनि सहज हये थाकिस किछुतेइ तोके मारबे ना।"

"आमाके आशीर्वाद करो, दादा, आमाके आशीर्वाद करो," बले कुमु दु-हात दिये मुख ढेके कान्ना चापा दिले।

विप्रदास बालिशे ठेस दिये एकटु उठे बसे कुमुर मुख नामिये धरे तार माथाय चुमो खेले।

डाक्तार घरे ढुके बलले, "आर नय, कुमुदिदि, एखन ओँर एकटु शान्त थाका दरकार।"

कुमु रोगीर बालिश एकटु चेपे-चुपे ठिक करे गायेर उपर गरम कापड़टा टेने दिये, पाशेर टिपाइटार उपरकार विशृङ्खलता एकटु सेरे निये दादार कानेर काछे मृदुस्वरे बलले, "सेरे गेलेइ कलकाताय येयो दादा, सेखाने तोमाके देखते पाब।"

विप्रदास बड़ो बड़ो दुइ स्निग्ध चोख कुमुर मुखेर उपर स्थिर रेखे बलले, "कुमु पश्चिमेर मेघ याय पुबे, पुबेर मेघ याय पश्चिमे, ए-सब हाओयाय हय। संसारे सेइ हाओया बइछे। मेघेर मतोइ अमनि सहजे एटाके मेने निस दिदि। एखन थेके आमादेर कथा बेशि भाबिस ने। येखाने याच्छिस सेखाने लक्ष्मीर आसन तुइ जुड़े थाकिस—एइ आमार सकल मनेर आशीर्वाद। तोर काछे आमरा आर किछुइ चाइ ने।"

दादार पायेर काछे कुमु माथा रेखे पड़े रइल। "आज थेके आमार काछे आर किछुइ चाबार नेइ। एखानकार प्रतिदिनेर जीवनयात्राय आमार कोनो हातइ थाकबे ना"—एक मुहूर्ते एतबड़ो विच्छेदेर कथा मेने नेओया याय ना। झड़े यखन नौकाके डाङा थेके टेने निये याय तखन नोङर येमन करे माटि आँकड़े थाकते चाय, दादार पायेर काछे कुमुर तेमनि एइ शेष व्यग्रतार बन्धन। डाक्तार आबार एसे धीरे धीरे बलले, "आर नय दिदि।" बले निजेर अश्रुसिक्त चोख मुछे फेलले। घर थेके बेरिये गिये दरजार बाइरे ये-चौकिटा छिल तार उपर बसे पड़े मुखे आँचल दिये कुमु निःशब्दे काँदते लागल। हठात् एक समये मने पड़े गेल दादार "बेसि" घोड़ाके निजेर हाते खाइये दिये याबे बले काल रात्रे से गुड़माखा आटार रुटि तैरि करे रेखेछिल। सइस आज भोरवेलाय ताके खिड़किर बागाने रेखे एसेछे। कुमु सेखाने गिये देखले घोड़ा आमड़ा-गाछतलाय घास खेये बेड़ाच्छे। दूर थेके कुमुर पायेर शब्द शुनेइ कान खाड़ा करले एवं ताके देखेइ चिँहिँ चिँहिँ करे डेके उठल। बाँ हात तार काँधेर उपर रेखे डान हाते कुमु तार मुखेर काछे रुटि धरे ताके खाओयाते लागल। से खेते खेते तार बड़ो बड़ो कालो स्निग्ध चोखे कुमुर मुखेर दिके कटाक्षे चाइते लागल। खाओया हये गेले बेसिर दुइ चोखेर माझखानकार प्रशस्त कपालेर उपर चुमो खेये कुमु दौड़े चले गेल।

१८

विप्रदास निश्चय मने करेछिल मधुसूदन एइ कयदिनेर मध्ये एकबार एसे देखा करे याबे। ता यखन करले ना तखन ओर बुझते बाकि रइल ना ये, दुइ परिवारेर एइ विवाह सम्बन्धटाइ एल परस्परेर बिच्छेदेर खड्ग हये। रोगेर निरतिशय क्लान्तिते ए-कथाटाकेओ सहजभावे से मेने निले। डाक्तारके डेके जिज्ञासा करले, "एकटु एसराज बाजाते पारि कि ?"

डाक्तार बलले, "ना, आज थाक् ।"

"ताहले कुमुके डाको, से एकटु बाजाक। आबार कबे तार बाजना शुनते पाब, के जाने ।"

डाक्तार बलले, "आज सकाले न-टार गाड़िते ओँदेर छाड़ते हबे, नइले सूर्यास्तेर आगे कलकाताय पौंछते पारबेन ना। कुमुर तो आर समय नेइ ।"

विप्रदास निश्वास फेले बलले, "ना, एखाने ओर समय फुरोल। उनिश बछर काटते पेरेछे, एखन एक घण्टाओ आर काटबे ना ।"

विदायेर समय स्वामीस्त्री जोड़े प्रणाम करते एल। मधुसूदन भद्रता करे बलले, "ताइ तो, आपनार शरीर तो भालो देखछि ने ।"

विप्रदास तार कोन उत्तर ना करे बलले, "भगवान तोमादेर कल्याण करुन ।"

"दादा, निजेर शरीरेर एकटु यत्न कोरो" बले आर-एकबार विप्रदासेर पायेर काछे पड़े कुमु काँदते लागल ।

हुलुध्वनि शङ्खध्वनि ढाक-काँसर-नहबते एकटा आओयाजेर साइक्लोन झड़ उठल। ओरा गेल चले ।

परस्परेर आँचले चादरे बाँधा ओरा यखन चले याच्छे सेइ दृश्यटा आज, केन की जानि, विप्रदासेर काछे वीभत्स लागल। प्राचीन इतिहासे तैमुर जङ्गिस असंख्य मानुषेर कङ्काल-स्तम्भ रचना करेछिल। किन्तु ओइ ये चादरे-आँचलेर ग्रन्थि, ओर सृष्ट जीवन-मृत्युर जयतोरण यदि मापा याय तबे तार चूड़ा कोन् नरके गिये ठेकबे ! किन्तु ए केमनतरो भावना आज ओर मने !

पूजार्चनाय विप्रदासेर कोनोदिन उत्साह छिल ना। तबु आज हात जोड़ करे मने-मने प्रार्थना करते लागल ।

एक समये चमके उठे बलले, "डाक्तार, डाको तो देओयानजिके ।"

विप्रदासेर हठात् मने पड़े गेल, बिये दिते आसबार किछुदिन आगे यखन सुबोधके टाका पाठानो निये मन अत्यन्त उद्विग्न, हिसाबेर खातापत्र घेँटे क्लान्त, वेला एगारोटा,—एमन समये अत्यन्त बे-मेरामत गोछेर एकटा मानुष, किछु-कालेर ना-कामानो कण्टकित जीर्ण मुख, हाड़-बेर-करा शिर-बेर-करा हात, मयला एकखाना चादर, खाटो एकखाना धुति, छेँड़ा एकजोड़ा चटि-परा एसे उपस्थित। नमस्कार करे बलले, "बड़ोबाबु मने पड़े कि ?"

विप्रदास एकटु लक्ष्य करे बलले, "की, वैकुण्ठ नाकि ?"

विप्रदास बालककाले ये-इस्कुले पड़त सेइ इस्कुलेरइ संलग्न एकटा घरे वैकुण्ठ इस्कुलेर बइ खाता कलम छुरि ब्याटबल लाठिम आर तारइ सङ्गे मोड़के-करा चीनाबादाम विक्रि करत। तार घरे बड़ो छेलेदेर आड्डा छिल—यतरकम अद्भुत असम्भव खोशगल्प करते एर जुड़ि केउ छिल ना।

विप्रदास जिज्ञासा करले, "तोमार एमन दशा केन ?"

कयेक वत्सर हल सम्पन्न अवस्थार गृहस्थेर घरे मेयेर बिये दियेछे। तादेर पणेर विशेष कोनो आवश्यक छिल ना बलेइ वरेर पणओ छिल बेशि। बारो-श टाकाय रफा हय, ताछाड़ा आशि भरि सोनार गयना। एकमात्र आदरेर मेये बलेइ मरिया हये से राजि हयेछिल। एकसङ्गे सब टाका संग्रह करते पारे नि, ताइ मेयेके यन्त्रणा दिये दिये ओरा बापेर रक्त शुषेछे। सम्बल सबइ फुरोल तबु एखनओ आड़ाइ-श टाका बाकि। एबारे मेयेटिर अपमानेर शेष नेइ। अत्यन्त असह्य हओयातेइ बापेर बाड़ि पालिये एसेछिल। ताते करे जेलेर कयेदिर जेलेर नियम भङ्ग करा हल, अपराध बेड़ेइ गेल। एखन ओइ आड़ाइ-श टाका फेले दिये मेयेटाके बाँचाते पारले बाप मरबार कथाटा भाबबार समय पाय।

विप्रदास म्लान हासि हासले। यथेष्टपरिमाणे साहाय्य करबार कथा सेदिन भाबबारओ जो छिल ना। क्षणकालेर जन्ये इतस्तत करले, तार परे उठे गिये बाक्स थेके थलि झेड़े दशटि टाकार नोट एने तार हाते दिल। बलले, "आरओ दु-चार जायगा थेके चेष्टा देखो, आमार आर साध्य नेइ।"

वैकुण्ठ से-कथा एकटुओ विश्वास करले ना। पा टेने टेने चले गेल, चटिजुतोय अत्यन्त अप्रसन्न शब्द।

सेदिनकार एइ व्यापारटा भुलेइ गियेछिल, आज हठात् विप्रदासेर मने पड़ल। देओयानजिके डेके हुकुम हल—वैकुण्ठके आजइ आड़ाइ-श टाका पाठानो चाइ। देओयानजि चुप करे दाँड़िये माथा चुलकोय। जेदाजेदिर मुखे खरच करे विवाह तो चुकेछे, किन्तु अनेकदिन धरे तार हिसाब शोध करते हबे—एखन दिनेर गतिके आड़ाइ-श टाका ये मस्तबड़ो अङ्क।

देओयानजिर मुखेर भाव देखे विप्रदास आङुल थेके हीरेर आङटि खुले बलले, "छोटोबाबुर नामे ये-टाका ब्याङ्के जमा रेखेछि, तार थेके ओइ आड़ाइ-श टाका नाओ, तार बदले आमार आङटि बन्धक रइल। वैकुण्ठके टाकाटा येन कुमुर नामे पाठानो हय।"

१९

विवाहेर लङ्काकाण्डेर सब-शेष अध्यायटा एखनओ बाकि।

सकालवेलाय कुशण्डिका सेरे तबे वरकने यात्रा करबे एइ छिल कथा। नवगोपाल तारइ समस्त उद्योग ठिक करे रेखेछे। एमन समय विप्रदासेर घर थेके विदाय निये बेरिये एसे राजाबाहादुर बले बसल—कुशण्डिका हबे वरेर ओखाने, मधुपुरीते।

प्रस्तावेर औद्धत्यटा नवगोपालेर काछे असह्य लागल। आर केउ हले आज एकटा फौजदारि बाधत। तबु भाषार प्राबल्ये नवगोपालेर आपत्ति प्राय लाठियालिर काछ पर्यन्त एसे तबे थेमेछिल।

अन्तःपुरे अपमानटा खुब बाजल। बहुदूर थेके आत्मीय-कुटुम सब एसेछे, तादेर मध्ये घरशत्रुर अभाव नेइ। सबार सामने एइ अत्याचार। क्षेमा पिसि मुख गोँ करे बसे रइलेन। वरकने यखन विदाय निते एल ताँर मुख दिये येन आशीर्वाद बेरोते चाइल ना। सबाइ बलले ए-काजटा कलकाताय सेरे निले तो कारओ किछु बलबार कथा थाकत ना। बापेर बाड़िर अपमाने कुमु एकान्तइ संकुचित हये गेल,—मने हते लागल से-इ येन अपराधिनी तार समस्त पूर्वपुरुषदेर काछे। मने-मने तार ठाकुरेर प्रति अभिमान करे बार-बार जिज्ञासा करते लागल, "आमि तोमार काछे की दोष करेछि ये-जन्ये आमार एत शास्ति! आमि तो तोमाकेइ विश्वास करे समस्त स्वीकार करे नियेछि।"

वरकने गाड़िते उठल। कलकाता थेके मधुसूदन ये-ब्याण्ड एनेछिल ताइ उच्चैःस्वरे नाचेर सुर लागिये दिले। मस्त एकटा शामियानार निचे होमेर आयोजन। इंरेज मेयेपुरुष अभ्यागत केउ वा गदिओआला चौकिते बसे केउ वा काछे एसे झुके पड़े देखते लागल। एरइ मध्ये तादेर जन्ये चा-बिस्कुटओ एल। एकटा टिपायेर उपर मस्तबड़ो एकटा ओयेडि केकओ साजानो आछे। अनुष्ठान सारा हये गेले एरा एसे यखन कन्‌ग्रचाचुलेट करते लागल, कुमु मुख लाल करे माथा हेँट करे दाँड़िये रइल। एकजन मोटा-गोछेर प्रौढ़ा इंरेज मेये ओर बेनारसि शाड़िर आँचल तुले धरे पर्यवेक्षण करे देखले; ओर हाते खुब मोटा सोनार बाजुबन्ध घुरिये घुरिये देखतेओ तार विशेष कौतूहल बोध हल। इंरेजि भाषाय प्रशंसाओ करले। अनुष्ठान सम्बन्धे मधुसूदनके एकदल बलले, "how interesting" आर एकदल बलले, "isn't it?"

एइ मधुसूदनके कुमु तार दादा आर अन्यान्य आत्मीयदेर सङ्गे व्यवहार करते देखेछे,—आज ताकेइ देखले इंरेज बन्धुमहले। भद्रताय अति गद्‌गद-भावे अवनम्र, आर हासिर आप्यायने मुख नियतइ विकसित। चाँदेर येमन एक पिठे आलो आर एक पिठे चिर-अन्धकार, मधुसूदनेर चरित्रेओ ताइ। इंरेजेर अभिमुखे तार माधुर्य पूर्ण चाँदेर आलोर मतोइ येमन उज्जल तेमनि स्निग्ध। अन्य दिकटा दुर्गम, दुर्दृश्य एवं जमाट बरफेर निश्चलताय दुर्भेद्य।

सेलुन-गाड़िते इंरेज बन्धुदेर निये मधुसूदन; अन्य रिजार्भ-करा गाड़िते मेयेदेर दले कुमु। तारा केउ वा ओर हात तुले टिपे देखे, केउ वा चिबुक तुले मुखश्री विश्लेषण करे; केउ वा बले ढ्याङा, केउ वा वले रोगा। केउ वा अति भालोमानुषेर मतो जिज्ञासा करे, "हाँगा, गाये की रं माख, विलेत थेके तोमार भाइ बुझि किछु पाठियेछे?" सकलेइ मीमांसा करले, चोख बड़ो नय, पायेर मापटा मेयेमानुषेर पक्षे अधिक बड़ो। गायेर प्रत्येक गयनाटि नेड़ेचेड़े विचार करते बसल,—सेकेले गयना, ओजने भारि, सोना खाँटि—किन्तु की प्याशान, मरे याइ!

ओदेर गाड़िते स्टेशन-प्ल्याटफर्मेर उलटो दिकेर जानला खोला छिल सेइ दिके कुमु चेये रइल, चेष्टा करते लागल एदेर कथा याते काने ना याय। देखते पेले एकटा एक-पा-काटा कुकुर तिन पाये खों‌ड़ाते खों‌ड़ाते माटि शुंके बेड़ाच्छे। आहा, किछु खाबार यदि हातेर काछे थाकत! किछुइ छिल ना। कुमु मने-मने भावते लागल, ये-एकटि पा गियेछे तारइ अभावे ओर या-किछु सहज छिल तार समस्तइ हये गेल कठिन। एमन समय कुमुर काने गेल सेलुन-गाड़िर सामने दाँड़िये एकजन भद्रलोक बलछे, "देखुन एइ चाषिर मेयेके आड़काटि आसाम चा-बागाने भुलिये निये याच्छिल, पालिये एसेछे; गोयालन्द पर्यन्त टिकिटेर टाका आछे, ओर बाड़ि दुमराँओ, यदि साहाय्य करेन तो एइ मेयेटि बेंचे याय।" सेलुन-गाड़ि थेके एकटा मस्त ताड़ार आओयाज कुमु शुनते पेले। से आर थाकते पारले ना, तखनइ डानदिकेर जानला खुले तार पुंतिगाँथा थले उजाड़ करे दश टाका मेयेटिर हाते दियेइ जानला बन्ध करे दिले। देखे एकजन मेये बले उठल, "आमादेर बउयेर दराज हात देखि।" आर एकजन बलले, "दराज नय तो दरजा, लक्ष्मीके विदाय करबार।" आर-एक जन बलले, "टाका ओड़ाते शिखेछे, राखते शिखले काजे लागत।" एटाके ओरा देमाक बले ठिक करले,—बाबुरा याके एक पयसा दिले ना, इनि ताके अमनि झनात करे टाका फेले देन,

एत किसेर गुमोर। ओदेर मने हल एओ बुझि सेइ चाटुज्ये-घोषालदेर चिरकेले रेषारेषिर अङ्ग।

एमन समये ओदेर मध्ये एकटि मोटासोटा कालोकोलो मेये, मस्त डागर चोख, स्नेहरसे भरा मुखेर भाव, कुमुर समवयसी हबे, ओर काछे एसे बसल। चुपि चुपि बलले, "मन केमन करछे भाइ? एदेर कथाय कान दियो ना, दु-दिन एइ रकम टेपाटेपि बलाबलि करबे, तारपरे कण्ठ थेके विष नेमे गेलेइ थेमे याबे।" एइ मेयेटि कुमुर मेजो जा, नवीनेर स्त्री। ओर नाम निस्तारिणी, ओके सबाइ मोतिर मा बले डाके।

मोतिर मा कथा तुलले, "येदिन नुरनगरे एलुम, इस्टिशने तोमार दादाके देखलुम ये।"

कुमु चमके उठल। ओर दादा ये स्टेशने अभ्यर्थना करते गियेछिल से-खबर एइ प्रथम शुनले।

"आहा की सुपुरुष! एमन कखनो चक्षे देखि नि। ओइ-ये गान शुनेछिलेम कीर्तने—

गोरार रूपे लागल रसेर बान,—
भासिये निये याय नदीयार पुरनारी प्राण

आमार ताइ मने पड़ल।"

मुहूर्ते कुमुर मन गले गेल। मुख आड़ करे जानलार दिके रइल चेये,—बाइरेर माठ वन आकाश अश्रुवाष्पे झापसा हये गेल।

मोतिर मार बुझते बाकि छिल ना कोन् जायगाय कुमुर दरद, ताइ नानारकम करे ओर दादार कथाइ आलोचना करले। जिज्ञासा करले बिये हयेछे कि ना।

कुमु बलले, "ना।"

मोतिर मा बले उठल, "मरे याइ! अमन देवतार मतो रूप, एखनओ घर खालि! कोन् भाग्यवतीर कपाले आछे ओइ वर!"

कुमु तखन भावछे—दादा गियेछिलेन समस्त अभिमान भासिये दिये, केवल आमारइ जन्ये! तार परे एँरा एकबार देखतेओ एलेन ना! केवलमात्र टाकार जोरे एमन मानुषकेओ अवज्ञा करते साहस करलेन! ताँर शरीर एइजन्येइ बुझि वा भेङे पड़ल।

वृथा आक्षेपेर सङ्गे बार बार मने-मने बलते लागल—दादा केन गेल इस्टेशने। केन निजेके खाटो करले। आमार जन्ये? आमार मरण हल ना केन?

ये-काजटा हये गेछे, आर फेरानो याबे ना, तारइ उपर ओर मनटा माथा ठुकते लागल। केवलइ मने पड़ते लागल, सेइ रोगे-क्लान्त शान्त मुख, सेइ आशीर्वादे-भरा स्निग्धगम्भीर दुटि चोख।

२०

रेलगाड़ि हाओड़ाय पौंछल, वेला तखन चारटे हबे। ओड़नाय-चादरे ग्रन्थिबद्ध हये वरकने गिये बसल ब्रुहाम गाड़िते। कलकातार दिवालोकेर असंख्य चक्षु, तार सामने कुमुर देहमन संकुचित हये रइल। ये एकटि अतिशय शुचिताबोध एइ उनिश बछरेर कुमारीजीवने ओर अङ्गे अङ्गे गभीर करे व्याप्त, सेटा ये कर्णेर सहज कवचेर मतो, केमन करे ओ हठात् छिन्न करे फेलबे? एमन मन्त्र आछे ये-मन्त्रे एइ कवच एक निमेषे आपनि खसे याय। किन्तु से-मन्त्र हृदयेर मध्ये एखनओ बेजे ओठे नि। पाशे ये मानुषटि बसे आछे, मनेर भितरे से तो आजओ बाइरेर लोक। आपन लोक हबार पक्षे तार दिक थेके केवल तो बाधाइ एसेछे। तार भावे व्यवहारे ये एकटा रूढ़ता से ये कुमुके एखनओ पर्यन्त केवलइ ठेले ठेले दूरे ठेकिये राखल।

एदिके मधुसूदनेर पक्षे कुमु एकटि नूतन आविष्कार। स्त्रीजातिर परिचय पाय ए-पर्यन्त एमन अवकाश एइ केजो मानुषेर अल्पइ छिल। ओर पण्यजगतेर भिड़ेर मध्ये पण्य-नारीर छोँओयाओ ओके कखनो लागे नि। कोनो स्त्री ओर मनके कखनो विचलित करे नि ए-कथा सत्य नय, किन्तु भूमिकम्प पर्यन्तइ घटेछे—इमारत जखम हय नि। मधुसूदन मेयेदेर अति संक्षेपे देखेछे घरेर बउझिदेर मध्ये। तारा घरकन्नार काज करे, कोँदल करे, कानाकानि करे, अति तुच्छ कारणे कान्नाकाटिओ करे थाके। मधुसूदनेर जीवने एदेर संस्रव नितान्तइ यत्सामान्य। ओर स्त्रीओ ये जगतेर एइ अकिञ्चित्कर विभागे स्थान पाबे, एवं दैनिक गार्हस्थ्येर तुच्छताय छायाच्छन्न हये प्राचीरेर आड़ाले कर्तादेर कटाक्षचालित मेयेलि जीवनयात्रा अतिवाहित करबे एर बेशि से किछुइ भावे नि। स्त्रीर सङ्गे व्यवहार करबारओ ये एकटा कलानैपुण्य आछे, तार मध्येओ ये पाओयार वा हाराबार एकटा कठिन समस्या थाकते पारे, ए-कथा ताहार हिसाबदक्ष सतर्क मस्तिष्केर एक कोणेओ स्थान पाय नि; वनस्पतिर निजेर पक्षे प्रजापति येमन बाहुल्य, अथच प्रजापतिर संसर्ग येमन ताके मेने निते हय, भावी स्त्रीकेओ मधुसूदन तेमनि करेइ भेबेछिल।

एमन समय विवाहेर परे से कुमुके प्रथम देखले। एक रकमेर सौन्दर्य आछे ताके मने हय येन एकटा दैव आविर्भाव, पृथिवीर साधारण घटनार चेये असाधारण परिमाणे बेशि,—प्रतिक्षणेइ येन से प्रत्याशार अतीत। कुमुर सौन्दर्य सेइ श्रेणीर। ओ येन भोरेर शुकतारार मतो, रात्रेर जगत् थेके स्वतन्त्र, प्रभातेर जगतेर ओपारे। मधुसूदन तार अवचेतन मने निजेर अगोचरे कुमुके एकरकम अस्पष्टभावे निजेर चेये श्रेष्ठ बोध करले—अन्तत एकटा भावना उठल एर सङ्गे की रकम भावे व्यवहार करा चाइ, कोन् कथा केमन करे बलले संगत हबे।

की बले आलाप आरम्भ करबे भावते भावते मधुसूदन हठात् एक समये कुमुके जिज्ञासा करले, "एदिक थेके रोद्दुर आसछे, ना ?"

कुमु किछुइ जवाब करले ना। मधुसूदन डान दिकेर पर्दाटा टेने दिले।

खानिकक्षण आबार चुपचाप काटल। आबार खामका बले उठल, "शीत करछे ना तो" ? बलेइ उत्तरेर प्रतीक्षा ना करे सामनेर आसन थेके विलिति कम्बलटा टेने निये कुमुर ओ निजेर पायेर उपर बिछिये दिये तार सङ्गे एक-आवरणेर सहयोगिता स्थापन करले। शरीर मन पुलकित हये उठल। चमके उठे कुमुदिनी कम्बलटाके सरिये दिते याच्छिल, शेषे निजेके सम्वरण करे आसनेर प्रान्ते गिये संलग्न हये रइल।

किछुक्षण एइभावे याय एमन समय हठात् कुमुर हातेर दिके मधुसूदनेर चोख पड़ल।

"देखि, देखि" बले हठात् तार बाँ हातटा चोखेर काछे तुले धरे जिज्ञासा करले, "तोमार आंङुले ए किसेर आङटि ? ए ये नीला देखछि।"

कुमु चुप करे रइल।

"देखो नीला आमार सय ना, ओटा तोमाके छाड़ते हबे।"

कोनो एक समये मधुसूदन नीला किनेछिल, सेइ बछर ओर गाधाबोट-बोझाई पाट हाओड़ार ब्रिजे ठेके तलिये याय। सेइ अवधि नीला-पाथरके ओ क्षमा करे ना।

कुमुदिनी आस्ते आस्ते हातटाके मुक्त करते चेष्टा करले। मधुसूदन छाड़ले ना ; बलले, "एटा आमि खुले निइ।"

कुमु चमके उठल; बलले, "ना थाक्।"

एकबार दाबाखेलाय ओर जित हय; सेइबार दादा ओके तार निजेर हातेर आङटि पारितोषिक दियेछिल।

मधुसूदन मने-मने हासले। आङटिर उपर विलक्षण लोभ देखछि।

एइखाने निजेर सङ्गे कुमुर साधर्म्येर परिचय पेये एकटु येन आराम लागल। बुझले समये असमये सिँथि कण्ठहार बाला बाजुर योगे अभिमानिनीर सङ्गे व्यवहारेर सोजा पथ पाओया याबे,—एइ पथे मधुसूदनेर प्रभाव ना मेने उपाय नेइ, वयस ना हय किछु बेशिइ हल।

निजेर हात थेके मस्तबड़ो कमलहीरेर एकटा आङटि खुले निये मधुसूदन हेसे बलले, "भय नेइ, एर बदले आर-एकटा आङटि तोमाके परिये दिच्छि।"

कुमु आर थाकते पारले ना,—एकटु चेष्टा करेइ हात छाड़िये निले। एइ बार मधुसूदनेर मनटा झेँके उठल। कर्तृत्वेर खर्वता ताके सइबे ना, शुष्क गलाय जोर करेइ बलले, "देखो, ए आङटि तोमाके खुलतेइ हबे।"

कुमुदिनी माथा हेँट करे चुप करे रइल, तार मुख लाल हये उठेछे।

मधुसूदन आबार बलले, "शुनछ? आमि बलछि ओटा खुले फेला भालो। दाओ आमाके!" बले हातटा टेने निते उद्यत हल।

कुमु हात सरिये निये बलले, "आमि खुलछि।"

खुले फेलले।

"दाओ ओटा आमाके दाओ।"

कुमुदिनी बलले, "ओटा आमिइ रेखे देब।"

मधुसूदन विरक्त हये हेँके उठल, "रेखे लाभ की? मने भाबछ, एटा भारि एकटा दामि जिनिस! ए किछुतेइ तोमार परा चलबे ना, बले दिच्छि।"

कुमुदिनी बलले, "आमि परब ना।" बले सेइ पुँतिर काजकरा थलेटिर मध्ये आङटि रेखे दिले।

"केन, एइ सामान्य जिनिसटार उपरे एत दरद केन? तोमार तो जेद कम नय।"

मधुसूदनेर आओयाजटा खरखरे; काने बाजे, येन बेले-कागजेर घर्षण। कुमुदिनीर समस्त शरीरटा री री करे उठल।

"ए आङटि तोमाके दिले के?"

कुमुदिनी चुप करे रइल।

"तोमार मा ना कि?"

नितान्तइ जवाब दिते हबे बलइ अर्धस्फुटस्वरे बलले, "दादा।"

दादा! से तो बोझाइ याच्छे। दादार दशा ये की, मधुसूदन ता भालोइ जाने। सेइ दादार आङटि शनिर सिँधकाठि—ए घरे आना चलबे ना। किन्तु तार चेयेओ ओके एइटेइ खोँचा दिच्छे ये, एखनओ कुमुदिनीर काछे ओर

दादाइ सब चेये बेशि। सेटा स्वाभाविक बलेइ ये सेटा सह्य हय ता नय। पुरोनो जमिदारेर जमिदारी नतुन धनी महाजन निलेमे केनार पर भक्त प्रजारा यखन साबेक आमलेर कथा स्मरण करे दीर्घनिःश्वास फेलते थाके तखन आधुनिक अधिकारीर गायेर ज्वाला धरे, एओ तेमनि। आज थेके आमिइ ये ओर एकमात्र, एइ कथाटा यत शीघ्र होक ओके जानान देओया चाइ। ताछाड़ा गाये-हलुदेर खाओयानो निये वरेर या अपमान हयेछे ताते विप्रदास नेइ ए-कथा मधुसूदन विश्वास करतेइ पारे ना। यदिओ नवगोपाल विवाहेर परदिने ओके बलेछिल, "भाया, बियेबाड़िते तोमादेर हाटखोलार आड़त थेके ये-चालचलन आमदानि करेछिले, से-कथाटा इङ्गितेओ दादाके जानियो ना; उनि एर किछुइ जानेन ना, ओँर शरीरओ बड़ो खाराप।"

आङटिर कथाटा आपातत स्थगित राखले, किन्तु मने रइल।

एदिके रूप छाड़ा आरओ एकटा कारणे हठात् कुमुदिनीर दर बेड़े गियेछे। नुरनगरे थाकतेइ ठिक विवाहेर दिने मधुसूदन टेलिग्राफ पेयेछे ये एबार तिसि चालानेर काजे लाभ हयेछे, प्राय बिश लाख टाका। सन्देह रइल ना, एटा नतुन वधूर पये। स्त्रीभाग्ये धन, तार प्रमाण हाते हाते। ताइ कुमुके पाशे निये गाड़िते बसे भितरे भितरे इए परम परितृप्ति तार छिल ये, भावी मुनाफार एकटा जीवन्त विधिदत्त दलिल निये बाड़ि चलेछे। ए नइले आजकेर एइ ब्रुहाम-रथयात्रार पालाटाय अपघात घटते पारत।

२१

राजा उपाधि पाओयार पर थेके कलकाताय घोषालबाड़िर द्वारे नाम खोदा हयेछे "मधुप्रासाद"। सेइ प्रासादेर लोहार गेटेर एक पाशे आज नहबत बसेछे, आर बागाने एकटा ताँबुते बाजछे ब्याण्ड। गेटेर माथाय अर्धचन्द्राकारे ग्यासेर टाइपे लेखा "प्रजापतये नमः"। सन्ध्यावेलाय आलोकशिखाय एइ लिखनटि समुज्ज्वल हबे। गेट थेके काँकर-देओया ये-पथ बाड़ि पर्यन्त गेछे, तार दुइधारे देवदारुपाता ओ गाँदार मालाय शोभासज्जा; बाड़िर प्रथम तलार उँचु मेजेते ओठबार सिँड़िर धापे लाल सालु पाता। आत्मीय-बन्धुर जनतार भितर दिये वरकनेर गाड़ि गाड़िबारान्दाय एसे थामल। शाँख उलुध्वनि ढाक ढोल काँसर नहबत ब्याण्ड सब एकसङ्गे उठल बेजे— येन दश-पनेरोटा आओयाजेर मालगाड़िर एक जायगाते पुरो वेगे ठोकाठुकि

घटल। मधुसूदनेर कोन् एक सम्पर्केर दिदिमा, परिपक्व बुड़ी, सिँथिते यत मोटा फाँक तत मोटा सिँदुर, चओड़ा-लालपेड़े शाड़ि, मोटा हाते मोटा मोटा सोनार बाला एवं शाँखार चुड़ि, एकटा रुपोर घटिते जल निये बउयेर पाये छिटिये दिये आँचले मुछे निलेन, हाते नोया परिये दिलेन, बउयेर मुखे एकटु मधु दिये बललेन, "आहा, एतदिन परे आमादेर नील गगने उठल पूर्ण चाँद, नील सरोबरे फुटल सोनार पद्म।" बरकने गाड़ि थेके नाबल। युवक-अभ्यागतदेर दृष्टि ईर्षान्वित। एकजन बलले, "दैत्य स्वर्ग लुठ करे एनेछे रे, अप्सरी सोनार शिकले बाँधा।" आर-एकजन बलले, "साबेक काले एमन मेयेर जन्ये राजाय राजाय लड़ाइ बेधे येत, आज तिसि-चालानिर टाकातेइ काज सिद्धि। कलियुगे देवतागुलो बेरसिक। भाग्यचक्रेर सब ग्रहनक्षत्रइ वैश्यवर्ण।"

तारपरे वरण, स्त्री-आचार प्रभृतिर पाला शेष हते हते यखन सन्ध्या हये आसे तखन कालरात्रिर मुखे क्रियाकर्म साङ्ग हल।

एकटिमात्र बड़ो बोनेर विवाह कुमुर स्पष्ट मने आछे। किन्तु तादेर निजेदेर बाड़िते कोनो नतुन बउ आसते से देखे नि। यौवनारम्भेर पूर्वे थेकेइ से आछे कलकाताय, दादार निर्मल स्नेहेर आवेष्टने। बालिकार मनेर कल्पजगत् साधारण संसारेर मोटा छाँचे गड़ा हते पाय नि। बाल्य-काले पतिकामनाय यखन से शिवेर पूजा करेछे, तखन पतिर ध्यानेर मध्ये सेइ महातपस्वी रजतगिरिनिभ शिवकेइ देखेछे। साध्वी नारीर आदर्शरूपे से आपन माकेइ जानत। की स्निग्ध शान्त कमनीयता, कत धैर्य, कत दुःख, कत देवपूजा, मङ्गलाचरण, अक्लान्त सेवा। अपर पक्षे ताँर स्वामीर दिके व्यवहारेर त्रुटि चरित्रेर स्खलन छिल; तत्सत्त्वेओ से-चरित्र औदार्ये बृहत्, पौरुषे दृढ़, तार मध्ये हीनता कपटता लेशमात्र छिल ना, ये एकटा मर्यादाबोध छिल से येन दूरकालेर पौराणिक आदर्शेर। ताँर जीवनेर मध्ये प्रतिदिन एइटेइ प्रमाण हयेछे ये, प्राणेर चेये मान बड़ो, अर्थेर चेये ऐश्वर्य। तिनि ओ ताँर समपर्यायेर लोकेरा बड़ो बहरेर मानुष। ताँदेर छिल निजेदेर क्षति करेओ अक्षत सम्मानेर गौरव रक्षा, अक्षत सञ्चयेर अहंकार प्रचार नय।

कुमुर येदिन बाँ चोख नाचल सेदिन से तार सब भक्ति निये, आत्मोत्सर्गेर पूर्ण संकल्प निये प्रस्तुत हये दाँड़ियेछिल। कोथाओ कोनो बाधा वा खर्वता घटते पारे ए-कथा तार कल्पनातेइ आसे नि। दमयन्ती की करे आगे थाकते जेने-छिलेन ये, विदर्भराज नलकेइ वरण करे निते हबे! ताँर मनेर भितरे निश्चित वार्ता एसे पौँछेछिल—तेमनि निश्चित वार्ता कि कुमु पाय नि? वरणेर आयोजन

सबइ प्रस्तुत छिल, राजाओ एलेन, किन्तु मने याके स्पष्ट देखते पेयेछिल, बाइरे ताके देखले कइ? रूपेतेओ बाधत ना, वयसेओ बाधत ना। किन्तु राजा? सेइ सत्यकार राजा कोथाय?

तार परे आज, ये-अनुष्ठानेर द्वार दिये कुमुके तार नतुन संसारे आह्वान करले ताते एमन कोनो वज्रगम्भीर मङ्गलध्वनि बाजल ना केन यार भितर दिये एइ नववधूर आकाशेर सप्तर्षिदेर आशीर्वादमन्त्र शुनते पेत! समस्त अनुष्ठानके परिपूर्ण करे एमन वन्दनागान उदात्त स्वरे केन जागल ना—

जगत: पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ

सेइ "जगत: पितरौ" याँर मध्ये चिरपुरुष ओ चिरनारी वाक्य ओ अर्थेर मतो एकत्र मिलित हये आछे?

२२

मधुसूदन यखन कलकाताय वास करते एल, तखन प्रथमे से एकटि पुरोनो बाड़ि किनेछिल, सेइ चकमेलानो वाड़िटाइ आज तार अन्त:पुर-महल। तार परे तारइ सामने एखनकार फ्याशाने एकटा मस्त नतुन महल एरइ सङ्गे जुड़े दियेछे, सेइटे ओर बैठकखाना-बाड़ि। एइ दुइ महल यदिओ संलग्न तबुओ एरा सम्पूर्ण आलादा दुइ जात। बाइरेर महले सर्वत्रइ मार्बलेर मेजे, तार उपरे विलिति कारपेट, देयाले चित्रित कागज मारा एवं ताते झुलछे नाना रकमेर छबि, कोनोटा एनग्रेभिं, कोनोटा ओलियोग्राफ, कोनोटा अयेल-पेन्टि—तार विषय हच्छे, हरिण के ताड़ा करेछे शिकारि कुकुर, किंवा डार्बिर घोड़दौड़ जितेछे एमन सब विख्यात घोड़ा, विदेशी ल्याण्डस्केप, किंवा स्नानरत नग्नदेह नारी। ताछाड़ा देयाले कोथाओ वा चीने बासन, मोरादाबादि पितलेर थाला, जापानि पाखा, तिब्बति चामर इत्यादि यत प्रकार असंगत पदार्थेर अस्थाने अयथा समावेश। एइ समस्त गृहसज्जा पछन्द करा, केना एवं साजानोर भार मधुसूदनेर इंरेज अ्यासिस्टेण्टेर उपर। ए छाड़ा मकमले वा रेशमे मोड़ा चौकि-सोफार अरण्य। काँचेर आलमारिते जमकालो बाँधानो इंरेजि बइ, झाड़न-हस्त बेहारा छाड़ा कोनो मानुष तार उपर हस्तक्षेप करे ना—टिपाइये आछे अ्यालबाम, तार कोनोटाते घरेर लोकेर छबि, कोनोटाते विदेशिनी अ्याक्ट्रेसदेर।

अन्त:पुरे एकतलार घरगुलो अन्धकार, स्याँतसेँते धोँयाय झुले कालो। उठोनो आवर्जना,—सेखाने जलेर कल, वासन माजा कापड़ काचा चलछेइ,

यखन व्यवहार नेइ तखनओ कल प्राय खोलाइ थाके। उपरेर बारान्दा थेके मेयेदेर भिजे कापड़ झुलछे, आर दाँड़ेर काकातुयार उच्छिष्ट छड़िये छड़िये पड़छे उठोने। बारान्दार देयालेर येखाने-सेखाने पानेर पिकेर दाग ओ नाना प्रकार मलिनतार अक्षय स्मृतिचिह्न। उठोनेर पश्चिम दिकेर रोयाकेर पश्चाते रान्नाघर, सेखान थेके रान्नार गन्ध ओ कयलार धोँया उपरेर घरे सर्वत्रइ प्रसार लाभ करे। रान्नाघरेर बाइरे प्राचीरबद्ध अल्प एकटु जमि आछे तारइ एक कोणे पोड़ा कोयला, चुलोर छाइ, भाङा गामला, छिन्न धामा, जीर्ण झाँझरि राशीकृत; अपर प्रान्ते गुटिदुयेक गाइ ओ बाछुर बाँधा, तादेर खड़ ओ गोबर जमछे, एवं समस्त प्राचीर घुँटेर चक्रे आच्छन्न। एक धारे एकटि मात्र निमगाछ, तार गुँड़िते गोरु बेँधे बेँधे बाकल गेछे उठे, आर क्रमागत ठेङिये ठेङिये तार पाता केड़े निये गाछटाके जेरबार करे दियेछे। अन्तःपुरे एइ एकटुमात्र जमि, बाकि समस्त जमि बाइरेर दिके। सेटा लतामण्डपे, विचित्र फुलेर केयारिते, छाँटा घासेर माठे, खोया ओ सुरकि-देओया रास्ताय, पाथरेर मूर्ति ओ लोहार बेञ्चिते सुसज्जित।

अन्दरमहले तेतलाय कुमुदिनीर शोबार घर। मस्त बड़ो खाट मेहगनि काठेर; फ्रेमे नेटेर मशारि, ताते सिल्केर झालर। बिछानार पायेर दिके पुरो बहरेर एकटा निरावरण मेयेर छबि, बुकेर उपर दुइ हात चेपे लज्जार भान करछे। शियरेर दिके मधुसूदनेर निजेर अयेलपेण्टि, ताते तार काश्मीरि शालेर कारुकार्यटाइ सब चेये प्रकाशमान। एकदिके देयालेर गाये कापड़ राखबार देराज, तार उपरे आयना; आयनार दु-दिके दुटो चीनेमाटिर शामादान, सामने चीनेमाटिर थालिर उपर पाउडारेर कौटो, रुपो-बाँधानो चिरुनि, तिन-चार रकमेर एसेन्स, एसेन्स छिटोबार पिचकारि एवं आरओ नाना रकमेर प्रसाधनेर सामग्री, विलिति ऍ्यासिस्टेण्टेर केना। नाना-शाखायुक्त गोलापि काँचेर फुलदानिते फुलेर तोड़ा। आर-एकदिके लेखबार टेबिल, ताते दामि पाथरेर दोयातदान, कलम ओ कागजकाटा। इतस्तत मोटा गदिओआला सोफा ओ केदारा—कोथाओ वा टिपाइ, ताते चा खाओया याय, तासखेला येतेओ पारे। नतुन महारानीर उपयुक्त शयनघर की रकम हओया विधिसंगत ए-कथा मधुसूदनके विशेषभावे चिन्ता करते हयेछे। एमन हये उठल, येन अन्दरमहलेर सर्वोच्चतलार एइ घरटि मयला काँथा गाये-देओया भिखारिर माथाय जरिजहरात-देओया पागड़ि।

अवशेषे एक समये गोलमाल-धुमधामेर बानडाका दिन पार हये रात्रिवेला कुमु एइ घरे एसे पौँछल। ताके निये एल सेइ मोतिर मा। से ओर सङ्गे

आज रात्रे शोबे ठिक हयेछे। आरओ एकदल मेये सङ्गे सङ्गे आसछिल। तादेर कौतूहल ओ आमोदेर नेशा मिटते चाय ना—मोतिर मा तादेर विदाय करे दियेछे। घरेर मध्ये एसेइ एक हाते से ओर गला जड़िये धरे बलले, "आमि किछुखनेर जन्ये याइ ओइ पाशेर घरे,—तुमि एकटु केँदे नाओ भाइ,—चोखेर जल ये बुक भरे जमे उठेछे।" बले से चले गेल।

कुमु चौकिर उपर बसे पड़ल। कान्ना परे हबे, एखन ओर बड़ो दरकार हयेछे निजेके ठिक करा। भितरे भितरे सकलेर चेये ये-व्यथाटा ओके बाजछिल स हच्छे निजेर काछे निजेर अपमान। एतकाल धरे ओ या-किछु संकल्प करे एसेछे ओर विद्रोही मन सम्पूर्ण तार उलटो दिके चले गेछे। सेइ मनटाके शासन करबार एकटुओ समय पाच्छिल ना। ठाकुर, बल दाओ, बल दाओ, आमार जीवन कालि करे दियो ना। आमि तोमार दासी, आमाके जयी करो, से जय तोमारइ।

परिणतवयसी आँटसाँट गड़नेर श्यामवर्ण एकटि सुन्दरी विधवा घरे ढुकेइ बलले, "मोतिर मा तोमाके एकटु छुटि दियेछे सेइ फाँके एसेछि; काउके तो काछे घेँषते देबे ना, बेड़े राखबे तोमाके—येन सिँधकाटि निये बेड़ाच्छि, ओर बेड़ा केटे तोमाके चुरि करे निये याब। आमि तोमार जा, श्यामासुन्दरी; तोमार स्वामी आमार देओर। आमरा तो भेबेछिलुम शेष पर्यन्त जमाखरचेर खाताइ हबे ओर बउ। ता ओइ खातार मध्ये जादु आछे भाइ, एत वयसे एमन सुन्दरी ओइ खातार जोरेइ जुटल। एखन हजम करते पारले हय। ओइखाने खातार मन्तर खाटे ना। सत्यि करे बलो भाइ, आमादेर बुड़ो देओरटिके तोमार पछन्द हयेछे तो?"

कुमु अवाक् हये रइल, की जवाब देबे भेबेइ पेले ना। श्यामा बले उठल, "बुझेछि, ता पछन्द ना हलेइ वा कि, सात पाक यखन घुरेछ तखन एकुश पाक उलटो घुरलेओ फाँस खुलबे ना।"

कुमु बलले, "ए की कथा बलछ दिदि!"

श्यामा जवाब दिले, "खोलसा करे कथा बललेइ कि दोष हय बोन? मुख देखे कि बुझते पारि ने? ता दोष देव ना तोमाके। ओ आमादेर आपन बलेइ कि चोखेर माथा खेये बसेछि? बड़ो शक्त हाते पड़ेछ बउ, बुझे सुझे च'लो।"

एमन समय मोतिर माके घरे ढुकते देखेइ बले उठल, "भय नेइ, भय नेइ, बकुलफुल, याच्छि आमि। भावलुम तुमि नेइ एइ फाँके आमादेर नतुन बउके एकबार देखे आसि गे। ता सत्यि बटे, ए कृपणेर धन, सावधाने

राखते हबे। सइके बलछिलुम आमादेर देओरेर ए येन हल आध-कपाले माथाधरा; बउके धरेछे ओर बाँ-दिकेर पाओयार-कपाले, एखन डानदिकेर राखार-कपाले यदि धरते पारे तबेइ पुरोपुरि हबे।"

एइ बलेइ घर थेके बेरिये गिये मुहूर्त्त परे घरे ढुके कुमुर सामने पानेर डिबे खुले धरे बलले, "एकटा पान नेओ। दोक्ता खाओया अभ्येस आछे?"

कुमु बलले, "ना।" तखन एक टिप दोक्ता निये निजेर मुखे पुरे दिये श्यामा मन्दगमने विदाय निले।

"एखनइ बद्दिमासिके खाइये विदाय करे आसछि, देरि हबे ना" बले मोतिर मा चले गेल।

श्यामासुन्दरी कुमुर मनेर मध्ये भारि एकटा विस्वाद जागिये दिले। आजके कुमुर सब चेये दरकार छिल मायार आवरण, सेइटेइ से आपन मने गड़ते बसेछिल, आर ये-सृष्टिकर्ता द्युलोके भूलोके नाना रङ निये रूपेर लीला करेन, ताँकेओ सहाय करबार चेष्टा करछिल, एमन समय श्यामा एसे ओर स्वप्न-बोना जाले घा मारले। कुमु चोख बुजे खुब जोर करे निजेके बलते लागल, "स्वामीर वयस बेशि बले ताँके भालोबासि ने ए-कथा कखनोइ सत्य नय--लज्जा, लज्जा! ए ये इतर मेयेदेर मतो कथा।" शिवेर सङ्गे सतीर बियेर कथा कि ओर मने नेइ? शिवनिन्दुकरा ताँर वयस निये खोँटा दियेछिल, किन्तु से-कथा सती काने नेन नि।

स्वामीर वयस वा रूप निये ए-पर्यन्त कुमु कोनो चिन्ताइ करे नि। साधारणत ये-भालोबासा निये स्त्रीपुरुषेर विवाह सत्य हय, यार मध्ये रूपगुण देहमन समस्तइ मिले आछे, तार ये प्रयोजन आछे ए-कथा कुमु भाबेओ नि। पछन्द करे नेओयार कथाटाकेइ रङ माखिये चापा दिते चाय।

एमन समय फुलकाटा जामा ओ जरिर पाड़ओआला धुति-परा छेले, वयस हबे बछर सातेक, घरे ढुकेइ गा घेँषे कुमुर काछे एसे दाँड़ाल। बड़ो बड़ो स्निग्ध चोख ओर मुखेर दिके तुले भये भये आस्ते आस्ते मिष्टि सुरे बलले, "ज्येठाइमा।" कुमु ताके कोलेर उपर टेने निये बलले, "की बाबा, तोमार नाम?" छेलेटि खुब घटा करे बलले, श्रीटुकुओ बाद दिले ना, "श्री मोतिलाल घोषाल।" सकलेर काछे परिचय ओर, हाबलु बले। सेइ-जन्येइ उपयुक्त देशकालपात्रे निजेर सम्मान राखबार जन्ये पितृदत्त नामटाके एत सुसम्पूर्ण करे बलते हय। तखन कुमुर बुकेर भितरटा टनटन करछिल--एइ छेलेके बुके चेपे धरे येन बाँचल। हठात् केमन मने हल कतदिन ठाकुर-घरे ये-गोपालके फुल दिये एसेछे, एइ छेलेटिर मध्ये से-इ ओर कोले एसे

बसल। ठिक ये-समये डाकछिल सेइ दु:खेर समयेइ एसे ओके बलले, "एइ ये आमि आछि तोमार सान्त्वना।" मोतिर गोल गोल गाल टिपे धरे कुमु बलले, "गोपाल, फुल नेबे।"

कुमुर मुख दिये गोपाल छाड़ा आर कोनो नाम बेरोल ना। हठात् निजेर नामान्तरे हाबलुर किछु विस्मय बोध हल—किन्तु एमन सुर ओर काने पौँछेछे ये, किछु आपत्ति ओर मने आसते पारे ना।

एमन समये पाशेर घर थेके मोतिर मा छेलेर गला शुनते पेये छुटे एसे बलले, "ओइ रे, बाँदर छेलेटा एसेछे बुझि।" श्रीमोतिलाल घोषाल-एर सम्मान आर थाके ना। नालिशे-भरा चोख तुले नि:शब्दे मायेर मुखेर दिके से चेये रइल, डान हाते ज्येठाइमार आँचल चेपे। कुमु हाबलुके तार बाँ हात दिये बेड़े निये बलले, "आहा, थाक् ना।"

"ना भाइ, अनेक रात हये गेछे। एखन शुते याक्—ए-बाड़िते ओके खुब सहजेइ मिलबे, ओर मतो सस्ता छेले आर केउ नेइ।" बले मोतिर मा अनिच्छुक छेलेके शोयाबार जन्ये निये गेल। एइ एतटुकुतेइ कुमुर मनेर भार गेल हालका हये। ओर मने हल प्रार्थनार जबाब पेलुम, जीवनेर समस्या सहज हये देखा देबे, एइ छोटो छेलेटिर मतोइ।

२३

अनेक रात्तिरे मोतिर मा एक समये जेगे उठे देखले कुमु बिछानाय उठे बसे आछे, तार कोलेर उपर दुइ हात जोड़ा, ध्यानाविष्ट चोख दुटि येन सामने काके देखते पाच्छे। मधुसूदनके यतइ से हृदयेर मध्ये ग्रहण करते बाधा पाय, ततइ तार देवताके दिये से तार स्वामीके आवृत करते चाय। स्वामीके उपलक्ष्य करे आपनाके से दान करछे तार देवताके। देवता ताँर पूजाके बड़ो कठिन करेछेन, ए प्रतिमा स्वच्छ नय, किन्तु एइ तो भक्तिर परीक्षा। शालग्रामशिला तो किछुइ देखाय ना, भक्ति सेइ रूपहीनतार मध्ये वैकुण्ठनाथेर रूपके प्रकाश करे केवल आपन जोरे। येखाने देखा याच्छे ना सेइखानेइ देखब एइ होक आमार साधना, येखाने ठाकुर लुकिये थाकेन सेइखाने गियेइ ताँर चरणे आपनाके दान करब, तिनि आमाके एड़ाते पारबेन ना।

"मेरे गिरिधर गोपाल, और नाहि कोहि"—दादार काछे शेखा मीरा-बाइ-एर एइ गानटा बारबार मने-मने आओड़ाते लागल।

मधुसूदनेर अत्यन्त रूढ़ ये-परिचय से पेयेछे ताके किछुइ नय बले, जलेर उपरकार बुद्बुद् बले उड़िये दिते चाय—चिरकालेर यिनि सत्य, समस्त आवृत करे तिनिइ आछेन, "और नाहि कोहि, और नाहि कोहि।" ए छाड़ा आर-एकटा पीड़न आछे ताकेओ माया बलते चाय—से हच्छे जीवनेर शून्यता। आज पर्यन्त यादेर निये ओर समस्त किछु गड़े उठेछे, यादेर बाद दिते गेले जीवनेर अर्थ थाके ना, तादेर सङ्गे विच्छेद,—से निजेके बलछे एइ शून्यओ पूर्ण—

"बापे छाड़े, माये छाड़े, छाड़े सगा सही,
मीरा प्रभु लगन लगी यो न होये होयी।"

छेड़ेछेन तो बाप, छेड़ेछेन तो मा, किन्तु ताँदेर भितरेइ यिनि चिरकालकार तिनि तो छाड़ेन नि। ठाकुर आरओ या-किछु छाड़ान ना केन, शून्य भराबेन बलेइ छाड़ियेछेन। आमि लेगे रइलुम, या हय ता होक। मनेर गान कखन तार गलाय फुटे उठल ता टेरइ पेले ना—दुइ चोख दिये जल पड़ते लागल।

मोतिर मा कथाटि बलले ना, चुप करे देखले, आर शुनले। तार परे कुमु यखन अनेकक्षण धरे प्रणाम करे दीर्घनिश्वास फेले शुये पड़ल तखन मोतिर मार मने एकटा चिन्ता देखा दिल या पूर्वे आर कखनो भाबे नि।

ओ भाबते लागल, आमादेर यखन बिये हयेछिल तखन आमरा तो कचि खुकी छिलुम, मन बले एकटा बालाइ छिल ना। छोटोछेले काँचा फलटाके येमन टप करे बिना आयोजने मुखे पुरे देय, स्वामीर संसार तेमनि करेइ बिना विचारे आमादेर गिलेछे, कोथाओ किछु बाधे नि। साधन करे आमादेर निते हय नि. आमादेर जन्ये दिन-गोना छिल अनावश्यक। येदिन बलले फुलशय्ये सेइदिनइ हल फुलशय्ये, केनना फुलशय्येर कोनो माने छिल ना, से छिल एकटा खेला। एइ तो कालइ हबे फुलशय्ये, किन्तु ए मेयेर पक्षे से कतबड़ो विडम्बना। बड़ोठाकुर एखन पर; आपन हते अनेक समय लागे। एके छोँबे की करे? ए-मेयेर सेइ अपमान सइबे केन? धन पेते बड़ो-ठाकुरेर कत काल लागल आर मन पेते दु-दिन सबुर सइबे ना? सेइ लक्ष्मीर द्वारे हाँटाहाँटि करे मरते हयेछे, ए लक्ष्मीर द्वारे एकबार हात पातते हबे ना?

एत कथा मोतिर मार मने आसत ना। एसेछे तार कारण, कुमुके देखबामात्रइ ओ ताके समस्त मनप्राण दिये भालोबेसेछे। एइ भालोबासार पूर्वभूमिका हयेछिल स्टेशने यखन से देखेछिल विप्रदासके। येन महाभारत

थेके भीष्म नेमे एलेन। वीरेर मतो तेजस्वी मूर्ति, तापसेर मतो शान्त मुखश्री, तार सङ्गे एकटि विषादेर नम्रता। मोतिर मार मने हयेछिल केउ यदि किछु ना बले तबे एकबार ओर पा दुटो छुँए आसि; सेइ रूप आजओ से भुलते पारे नि। तार परे यखन कुमुके देखले, मने मने बलले, दादारइ बोन बटे!

एकरकम जातिभेद आछे या समाजेर नय, या रक्तेर,—से-जात किछुते भाङा याय ना। एइ ये रक्तगत जातेर असामञ्जस्य एते मेयेके येमन मर्मान्तिक करे मारे पुरुषके एमन नय। अल्प वयसे बिये हयेछिल बले मोतिर मा एइ रहस्य निजेर मध्ये बोझबार समय पाय नि,—किन्तु कुमुर भितर दिये एइ कथाटा से निश्चित करे अनुभव करले। तार गा केमन करते लागल। ओ येन एकटा बिभीषिकार छबि देखते पेले,—येखाने एकटा अजाना जन्तु लालायित रसना मेले गुँड़ि मेरे बसे आछे, सेइ अन्धकार गुहार मुखे कुमुदिनी दाँड़िये देवताके डाकछे। मोतिर मा रेगे उठे मने मने बलले, "देवतार मुखे छाइ! ये-देवता ओर विपद घटियेछे सेइ नाकि ओके उद्धार करबे! हाय रे।"

२४

परेर दिन सकालेइ कुमु दादार काछ थेके टेलिग्राम पेयेछे, "भगवान तोमाके आशीर्वाद करुन।" सेइ टेलिग्रामेर कागजखानि जामार मध्ये बुकेर काछे रेखे दिले। एइ टेलिग्रामे येन दादार दक्षिण हातेर स्पर्श। किन्तु दादा निजेर शरीरेर कथा केन किछुइ लिखले ना? तबे कि असुख बेड़ेछे? दादार सब खबरइ मुहूर्ते मुहूर्ते यार प्रत्यक्षगोचर छिल, आज तार काछे सबइ अवरुद्ध।

आज फुलशय्ये, बाड़िते लोके लोकारण्य। आत्मीय-मेयेरा समस्तदिन कुमुके निये नाड़ाचाड़ा करछे। किछुते ताके एकला थाकते दिले ना। आज एकला थाकबार बड़ो दरकार छिल।

शोबार घरेर पाशेइ ओर नाबार घर; सेखाने जलेर कल पाता एवं धारा-स्नानेर झाँझरि बसानो। कोनो अवकाशे बाक्स थेके युगल-रूपेर फ्रेमे-बाँधानो पटखानि बेर करे स्नानेर घरे गिये दरजा बन्ध करल। सादा पाथरेर जलचौकिर उपर पट रेखे सामने माटिते बसे निजेर मने बारबार करे बलले, "आमि तोमारइ, आज तुमिइ आमाके नाओ। से आर केउ

नय, से तुमिइ, से तुमिइ, से तुमिइ। तोमारइ युगल-रूप प्रकाश होक आमार जीवने।"

डाक्ताररा बलछे विप्रदासेर इनफ्लुयेन्जा न्युमोनियाय एसे दाँड़ियेछे। नवगोपाल एकला कलकाताय एल फुलशय्यार सओगात पाठाबार व्यवस्था करते। खुब घटा करेइ सओगात पाठानो हल। विप्रदास निजे थाकले एत आडम्बर करत ना।

कुमुर विवाह उपलक्ष्ये ओर बड़ो बोन चारजनकेइ आनते पाठानो हये-छिल। किन्तु खबर रटे गेछे—घोषालरा सद्ब्राह्मण नय। बाड़िर लोक ए-बियेते किछुते तादेर पाठाते राजि हल ना। कुमुर तृतीय बोन यदि वा स्वामीर सङ्गे झगड़ाझाँटि करे बियेर परदिन कलकाताय एसे पौँछल, नवगो-पाल बलले, "ओ-बाड़िते तुमि गेले आमादेर मान थाकबे ना।" विवाह-रात्रिर कथा आजओ से भुलते पारे नि। ताइ प्राय-असम्पर्कीय गुटिकयेक छोटो-छोटो मेये एक बुड़ी दासीर सङ्गे पाठिये दिले निमन्त्रण राखते। कुमु बुझले, सन्धि एखनओ हल ना, हयतो कोनो काले हबे ना।

कुमुर साजसज्जा हल। ठाट्टार सम्पर्कीयदेर ठाट्टार पाला शेष हयेछे—निमन्त्रितदेर खाओयानो शुरु हबे। मधुसूदन आगे थाकतेइ बले रेखेछिल, बेशि रात करले चलबे ना, काल ओर काज आछे। न-टा बाजबामात्रइ हुकुम मतो निचेर उठोन थेके सशब्दे घण्टा बेजे उठल। आर एक मुहूर्त ना। समय अतिक्रम करबार साध्य कारओ नेइ। सभा भङ्ग हल। आकाश थेके बाजपाखिर छाया देखते पेये कपोतीर येमन करे, कुमुर बुकटा तेमनि काँपते लागल। तार ठाण्डा हात घामछे, तार मुख विवर्ण। घर थेके बेरिये एसेइ मोतिर मार हात धरे बलले, "आमाके एकटुखानिर जन्ये कोथाओ निये याओ आड़ाले। दश मिनिटेर जन्य एकला थाकते दाओ।" मोतिर मा ताड़ाताड़ि निजेर शोबार घरे निये दरजा बन्ध करे दिले। बाइरे दाँड़िये चोख मुछते मुछते बलले, "एमन कपालओ करेछिलि।"

दश मिनिट याय, पनेरो मिनिट याय। लोक एल—वर शोबार घरे गेछे, बउ कोथाय? मोतिर मा बलले, "अत व्यस्त हले चलबे केन? बउ गायेर जामा गयनागुलो खुलबे ना?" मोतिर मा यतक्षण पारे ओके समय दिते चाय। अवशेषे यखन बुझले आर चलबे ना तखन दरजा खुले देखे, बउ मूर्छित हये मेजेर उपर पड़े आछे।

गोलमाल पड़े गेल। धराधरि करे बिछानार उपर तुले दिये केउ जलेर छिटे देय, केउ वातास करे। किछुक्षण परे यखन चेतना हल, कुमु बुझते

पारले ना कोथाय से आछे––डेके उठल, "दादा"। मोतिर मा ताड़ाताड़ि तार मुखेर उपर झुँके पड़े बलले, "भय नेइ दिदि, एइ ये आमि आछि।" बले ओर मुखटा बुकेर उपर तुले निये ओके जड़िये धरल। सबाइके बलले, "तोमरा भिड़ क'रो ना आमि एखनइ ओके निये याच्छि।" काने-काने बलते लागल, "भय करिस ने भाइ, भय करिस ने।" कुमु धीरे धीरे उठल। मने मने ठाकुरेर नाम करे प्रणाम करले। घरेर अन्य पाशे एकटा तक्ता-पोशेर उपर हाबलु गभीर घुमे मग्न––तार पाशे गिये तार कपाले चुमो खेले। मोतिर मा ताके शोबार घर पर्यन्त पौंछिये दिये जिज्ञासा करले, "एखनओ भय करछे दिदि ?"

कुमु हातेर मुठो शक्त करे एकटु हेसे बलले, "ना, आमार किच्छु भय करछे ना।" मने-मने बलछे, "एइ आमार अभिसार, बाइरे अन्धकार, भितरे आलो।"

मेरे गिरिधर गोपाल और नाहि कोहि।

२५

इतिमध्ये श्यामासुन्दरी हाँपाते हाँपाते मधुके एसे जानाले, "बउ मूर्छा गेछे।" मधुसूदनेर मनटा दप करे ज्वले उठल; बलले, "केन, ताँर हयेछे की ?"

"ता तो बलते पारि ने, दादा दादा करेइ बउ हेदिये गेल। ता एकबार कि देखते याबे ?"

"की हबे ! आमि तो ओर दादा नइ।"

"मिछे राग करछ ठाकुरपो, ओरा बड़ोघरेर मेये, पोष मानते समय लागबे।"

"रोज रोज उनि मूर्छा याबेन आर आमि ओँर माथाय कविराजि तेल मालिस करब एइजन्येइ कि ओँके बिये करेछिलुम ?"

"ठाकुरपो तोमार कथा शुने हासि पाय। ता दोष हयेछे की, आमादेर काले कथाय कथाय मानिनीर मान भाङ्गते हत, एखन ना हय मूर्छो भाङ्गते हबे।"

मधुसूदन गोँ हये वसे रइल। श्यामासुन्दरी विगलित करुणाय काछे एसे हात धरे बलले, "ठाकुरपो अमन मन खाराप क'रो ना, देखे सइते पारि ने।"

मधुसूदनेर एत काछे गिये ओके सान्त्वना देय इतिपूर्वे एमन साहस श्यामार छिल ना। प्रगल्भा श्यामा ओर काछे भारि चुप करे थाकत; जानत मधुसूदन बेशि कथा सइते पारे ना। मेयेदेर सहज बुद्धि थेके श्यामा बुझेछे मधुसूदन आज से-मधुसूदन नेइ। आज ओ दुर्बल, निजेर मर्यादा सम्बन्धे सतर्कता ओर नेइ। मधुर हाते हात दिये बुझल एटा ओर खाराप लागे नि। नववधू ओर अभिमाने ये घा दियेछे, कोनो एकटा जायगा थेके चिकित्सा पेये भितरे भितरे एकटु आराम बोध हयेछे। श्यामा अन्तत ओके अनादर करे ना, एटा तो नितान्त तुच्छ कथा नय। श्यामा कि कुमुर चेये कम सुन्दरी, ना हय ओर रङ एकटु कालो,—किन्तु ओर चोख, ओर चुल, ओर रसालो ठोँट !

श्यामा बले उठल, "ओइ आसछे बउ, आमि याइ भाइ। किन्तु देखो ओर सङ्गे रागारागि क'रो ना, आहा, ओ छेलेमानुष !"

कुमु घरे ढुकतेइ मधुसूदन आर थाकते पारले ना, बले उठल, "बापेर बाड़ि थेके मूर्छो अभ्येस करे एसेछ बुझि ? किन्तु आमादेर एखाने ओटा चलति नेइ। तोमादेर ओइ नुरनगरि चाल छाड़ते हबे।"

कुमु निर्निमेष चोख मेले चुप करे दाँड़िये रइल, एकटि कथाओ बलले ना।

मधुसूदन ओर मौन देखे आरओ रेगे गेल। मनेर गभीर तलाय एइ मेयेटिर मन पाबार जन्ये एकटा आकाङ्क्षा जेगेछे बलेइ ओर एइ तीव्र निष्फल राग। बले उठल, "आमि काजेर लोक, समय कम, हिस्टिरिया-ओआली मेयेर खेदमदगारि करबार फुरसत आमार नेइ, एइ स्पष्ट बले दिच्छि।"

कुमु धीरे धीरे बलले, "तुमि आमाके अपमान करते चाओ ? हार मानते हबे। तोमार अपमान मनेर मध्ये नेब ना।"

कुमु काके ए-सब कथा बलछे ? ओर विस्फारित चोखेर सामने के दाँड़िये आछे ? मधुसूदन अवाक हये गेल, भावले ए-मेये झगड़ा करे ना केन ? एर भावखाना की ?

मधुसूदन वक्रोक्ति करे बलले, "तुमि तोमार दादार चेला, किन्तु जेने रेखो, आमि तोमार सेइ दादार महाजन, ताके एक हाटे किने आर-एक हाटे बेचते पारि।"

ओ ये कुमुर दादार चेये श्रेष्ठ ए-कथा कुमुर मने देगे देवार जन्ये मूढ़ आर कोनो कथा खुंजे पेले ना।

कुमु बलले, "देखो, निष्ठुर हओ तो ह'हो, किन्तु छोटो ह'हो ना।" बले सोफार उपर बसे पड़ल।

कर्कशस्वरे मधुसूदन बले उठल, "की ! आमि छोटो ! आर तोमार दादा आमार चेये बड़ो ?"

कुमु बलले, "तोमाके बड़ो जेनेइ तोमार घरे एसेछि।"

मधुसूदन व्यङ्ग करे बलले, "बड़ो जेनेइ एसेछ, ना टाकार लोभे ?"

तखन कुमु सोफा थेके उठे घर थेके बेरिये बाइरे खोला छादे मेजेर उपर गिये बसल।

कलकाताय शीतकालेर कृपण रात्रि, धोँयाय कुयाशाय घोला, आकाश अप्रसन्न, तारार आलो येन भाङा गलार कथार मतो। कुमुर मन तखन असाड़, कोनो भावना नेइ, कोनो वेदना नेइ। एकटा घन कुयासार मध्ये से येन लुप्त हये गेछे।

कुमु ये एमन करे निःशब्दे घर थेके बेरिये चले याबे मधुसूदन ए एकेबारे भाबतेइ पारे नि। निजेर एइ पराभवेर जन्ये सकलेर चेये राग हच्छे कुमुर दादार उपर। शोबार घरे चौकिर उपरे बसे पड़े शून्य आकाशेर दिके से एकटा घुषि निक्षेप करले। खानिकक्षण बसे थेके धैर्य आर राखते पारले ना। धड़फड़ करे उठे छादे बेरिये ओर पिछने गिये डाकले, "बड़ोबउ।"

कुमु चमके उठे पिछन फिरे दाँड़ाले।

"ठाण्डाय हिमे बाइरे एखाने दाँड़िये की करछ ? चलो घरे।"

कुमु असंकोचे मधुसूदनेर मुखेर दिके चेये रइल। मधुसूदनेर मध्ये येटुकु प्रभुत्वेर जोर छिल ता गेल उड़े। कुमुर बाँ हात धरे आस्ते आस्ते बलले, "एस घरे।"

कुमुर डान हाते तार दादार आशीर्वादेर सेइ टेलिग्राम छिल सेटा से बुके चेपे धरल। स्वामीर हात थेके हात टेने निले ना, नीरवे धीरे धीरे शोबार घरे फिरे गेल।

२६

परदिन भोरे यखन कुमु बिछानाय उठे बसेछे तखन ओर स्वामी घुमोच्छे। कुमु तार मुखेर दिके चाइले ना, पाछे मन बिगड़े याय। अति सावधाने उठे पायेर काछे प्रणाम करले, तार परे स्नान करबार घरे गेल। स्नान सारा हले पर पिछन दिकेर दरजा खुले गिये बसल छादे, तखन कुयाशार भितर दिये पूर्व-आकाशे एकटा मलिन सोनार रेखा देखा दियेछे।

वेला हल, रोद्दुर उठल यखन, कुमु आस्ते आस्ते शोबार घरे फिरे एसे

देखले तार स्वामी तखन चले गेछे। आयनार देराजेर उपर तार पुंतिर काज-करा थलिटि छिल। तार मध्ये दादार टेलिग्रामेर कागजटि राखबार जन्ये सेटा खुलेइ देखते पेले सेइ नीलार आङटि नेइ।

सकालबेलाकार मानसपूजार पर तार मुखे ये एकटि शान्तिर भाव एसेछिल सेटा मिलिये गिये चोखे आगुन ज्वले उठल। किछु मिष्टि ओ दुध खाओयाबे बले डाकते एल मोतिर मा। कुमुर मुखे जबाब नेइ, येन कठिन पाथरेर मूर्ति।

मोतिर मा भय पेये पाशे एसे बसल—जिज्ञासा करले, "की हयेछे, भाइ?" कुमुर मुखे कथा बेरोल ना, ठोँट काँपते लागल।

"बलो, दिदि, आमाके बलो, कोथाय तोमार बेजेछे?"

कुमु रुद्धप्राय कण्ठे बलले, "निये गेछे चुरि करे!"

"की निये गेछे दिदि?"

"आमार आङटि, आमार दादार आशीर्वादी आङटि।"

"के निये गेछे?"

कुमु उठे दाँड़िये कारओ नाम ना करे बाइरेर अभिमुखे इङ्गित करले।

"शान्त हओ भाइ, ठाट्टा करेछे तोमार सङ्गे, आबार फिरिये देबे।"

"नेब ना फिरिये—देखब कत अत्याचार करते पारे ओ!"

"आच्छा, से हबे परे, एखन मुखे किछु देबे एस।"

"ना पारब ना; एखानकार खाबार गला दिये नाबबे ना।"

"लक्ष्मीटि भाइ, आमार खातिरे खाओ।"

"एकटा कथा जिज्ञासा करि, आज थेके आमार निजेर बले किछुइ रइल ना?"

"ना, रइल ना। या-किछु रइल ता स्वामीर मर्जिर उपरे। जान ना, चिठिते दासी बले दस्तखत करते हबे।"

दासी! मने पड़ल, रघुवंशेर इन्दुमतीर कथा—

गृहिणी सचिवः सखी मिथः
प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ—

फर्देर मध्ये दासी तो कोथाओ नेइ। सत्यवानेर सावित्री कि दासी? किंवा उत्तररामचरितेर सीता?

कुमु बलले, "स्त्री यादेर दासी तारा कोन् जातेर लोक?"

"ओ-मानुषके एखनओ चेन नि। ओ ये केवल अन्यके गोलामि कराय ता नय, निजेर गोलामि निजे करे। येदिन आपिसे येते पारे ना, निजेर

बराद्द थेके सेदिनकार टाका काटा पड़े। एकबार व्यामो हये एक मासेर बराद्द बन्ध छिल, तार परेर दु-तिन मास खाइखरच पर्यन्त कमिये लोकसान पुषिये नियेछे। एतदिन आमि घरकन्नार काज चालिये आसछि सेइ अनुसारे आमारओ मासहारा बराद्द। आत्मीय बले ओ काउके माने ना। ए-बाड़िते कर्ता थेके चाकर-चाकरानि पर्यन्त सबाइ गोलाम।

कुमु एकटु चुप करे थेके बलले, "आमि सेइ गोलामिइ करब। आमार रोजकार खोरपोश हिसेबमतो रोज रोज शोध करब। आमि ए-बाड़िते बिना माइनेर स्त्री बाँदी हये थाकब ना। चलो, आमाके काजे भरति करे नेबे। घरकन्नार भार तोमार उपरेइ तो,—आमाके तुमि तोमार अधीने खाटिये नियो, आमाके रानी बले केउ येन ठाट्टा ना करे।"

मोतिर मा हेसे कुमुर चिबुक धरे बलले, "ताहले तो आमार कथा मानते हबे। आमि हुकुम करछि, चलो एखन खेते।"

घर थेके बेरोते बेरोते कुमु बलले, "देखो भाइ, निजेके देब बलेइ तैरि हये एसेछिलुम, किन्तु ओ किछुतेइ दिते दिले ना। एखन दासी नियेइ थाकुक। आमाके पाबे ना।"

मोतिर मा बलले, "काठुरे गाछके काटतेइ जाने, से गाछ पाय ना काठ पाय। माली गाछके राखते जाने से पाय फुल, पाय फल। तुमि पड़ेछ काठुरेर हाते, ओ ये व्यवसादार। ओर मने दरद नेइ कोथाओ।"

एक समये शोबार घरे फिरे एसे कुमु देखले, तार टिपाइयेर उपर एक-शिशि लजेञ्जस। हाबलु तार त्यागेर अर्घ्य गोपने निवेदन करे निजे कोथाय लुकियेछे। एखाने पाषाणेर फाँक दियेओ फुल फोटे। बालकेर एइ लजेञ्जसेर भाषाय एक-सङ्गे ओके काँदाले हासाले। ताके खुंजते बेरिये देखे बाइरे से दरजार आड़ाले चुप करे दाँड़िये आछे। मा ताके ए घरे यातायात करते वारण करेछिल। तार भय छिल पाछे कोनो किछु उपलक्ष्ये कर्तार विरक्ति घटे। मोटेर उपरे मधुसूदनेर निजेर काज छाड़ा अन्य बावदे तार काछ थेके सम्पूर्ण दूरे थाकाइ निरापद, ए-कथा ए-बाड़िर सबाइ जाने।

कुमु हाबलुके धरे घरे निये एसे कोले वसाले। ओर गृहसज्जार मध्ये पुतुल-जातीय या-किछु जिनिस छिल सेइगुलो दुजने नाड़ाचाड़ा करते लागल। कुमु बुझते पारले एकटा कागज-चापा हाबलुर भारि पछन्द—काँचेर भितर दिये रङिन फुल ये की करे देखा याच्छे सेइटे बुझते ना पेरे ओर भारि ताक लेगेछे।

कुमु बलले, "एटा नेबे गोपाल ?"

एतबड़ो अभावनीय प्रस्ताव ओर वयसे कखनो शोने नि। एमन जिनिसओ कि ओ कखनो आशा करते पारे ? विस्मये संकोचे कुमुर मुखेर दिके नीखे चेये रइल।

कुमु बलले, "एटा तुमि निये याओ।"

हाबलु आह्लाद राखते पारले ना--सेटा हाते नियेइ लाफाते लाफाते छुटे चले गेल।

सेइदिन विकेले हाबलुर मा एसे बलले, "तुमि करेछ की भाइ ? हाबलुर हाते काँचेर कागजचापा देखे बड़ोठाकुर हुलस्थुल बाधिये दियेछे। केड़े तो नियेइछे--तार पर ताके चोर बले मार। छेलेटाओ एमनि, तोमार नामओ करे नि। हाबलुके आमिइ ये जिनिसपत्र चुरि करते शेखाच्छि ए-कथाओ क्रमे उठबे !"

कुमु काठेर मूर्तिर मतो शक्त हये बसे रइल।

एमन समये बाइरे मच मच शब्दे मधुसूदन आसछे। मोतिर मा ताड़ाताड़ि पालिये गेल। मधुसूदन काँचेर कागजचापा हाते करे यथास्थाने धीरे धीरे सेटा गुछिये राखले। तार परे निश्चितप्रत्ययेर कण्ठे शान्त गम्भीर स्वरे बलले, "हाबलु तोमार घर थेके एटा चुरि करे नियेछिल। जिनिसपत्र सावधान करे राखते शिखो।"

कुमु तीक्ष्ण स्वरे बलले, "ओ चुरि करे नि।"

"आच्छा, बेश, ताहले सरिये नियेछे।"

"ना, आमिइ ओके दियेछि।"

"एमनि करे ओर माथा खेते बसेछ बुझि ? एकटा कथा मने रेखो, आमार हुकुम छाड़ा जिनिसपत्र काउके देओया चलबे ना। आमि एलोमेलो किछुइ भालोबासि ने।"

कुमु दाँड़िये उठे बलले, "तुमि नाओ नि आमार नीलार आङटि ?"

मधुसूदन बलले, "हाँ नियेछि।"

"तातेओ तोमार ओइ काँचेर ढेलाटार दाम शोध हल ना ?"

"आमि तो बलेछिलुम, ओटा तुमि राखते पारबे ना।"

"तोमार जिनिस तुमि राखते पारबे, आर आमार जिनिस आमि राखते पारब ना ?"

"ए-बाड़िते तोमार स्वतन्त्र जिनिस बले किछु नेइ।"

"किछु नेइ ? तबे रइल तोमार एइ घर पड़े।"

कुमु येइ गेछे, व्यस्तसमस्त हये श्यामा घरे प्रवेश करे बलले, "बउ कोथाय गेल ?"

"केन ?"

"सकाल थेके ओर खाबार निये बसे आछि, ए-बाड़िते एसे बउ कि खाओयाओ बन्ध करबे ?"

"ता हयेछे की ? नुरनगरेर राजकन्या ना हय नाइ खेलेन ? तोमरा कि ओर बाँदि नाकि।"

"छि ठाकुरपो, छेलेमानुषेर उपर अमन राग करते नेइ। ओ ये एमन ना खेये खेये काटाबे ए आमरा सह्य करते पारि ने। साधे सेदिन मुर्छो गियेछिल ?"

मधुसूदन गर्जन करे उठल, "किछु करते हबे ना, याओ चले! खिदे पेले आपनिइ खाबे।"

श्यामा येन अत्यन्त विमर्ष हये चले गेल।

मधुसूदनेर माथाय रक्त चड़ते लागल। द्रुतवेगे नाबार घरे जलेर झाँझरि खुले दिये तार निचे माथा पेते दिले।

२७

सन्ध्ये हये एल, सेदिन कुमुके कोथाओ खुंजे पाओया याय ना। शेष-काले देखा गेल, भाँड़ारघरेर पाशे एकटा छोटो कोणेर घरे येखाने प्रदीप पिलसुज तेलेर ल्याम्प प्रभृति जमा करा हय सेइखाने मेजेर उपर मादुर बिछिये बसे आछे।

मोतिर मा एसे जिज्ञासा करले, "ए की काण्ड दिदि ?"

कुमु बलले, "ए-बाड़िते आमि सेजबाति साफ करब, आर एइखाने आमार स्थान।"

मोतिर मा बलले, "भालो काज नियेछ भाइ, ए-बाड़ि तुमि आलो करतेइ तो एसेछ, किन्तु से-जन्ये तोमाके सेजबातिर तदारक करते हबे ना। एखन चलो।"

कुमु किछुते नड़ल ना।

मोतिर मा बलले, "तबे आमि तोमार काछे शुइ।"

कुमु दृढ़स्वरे बलले, "ना।" मोतिर मा देखले एइ भालोमानुष-मेयेर मध्ये हुकुम करबार जोर आछे। ताके चले येते हल।

5

मधुसूदन रात्रे शुते एसे कुमुर खबर निले। यखन, खबर शुनले, प्रथमटा भावले, "बेश तो ओइ घरेइ थाक ना, देखि कतदिन थाकते पारे। साध्य-साधना करते गेलेइ जेद बेड़े याबे।"

एइ बले आलो निबिये दिये शुते गेल। किन्तु किछुतेइ घुम आसे ना। प्रत्येक शब्देइ मने हच्छे ओइ बुझि आसछे। एकबार मने हल, येन दरजार बाइरे दाँड़िये आछे। बिछाना छेड़े बेरिये एसे देखे केउ कोथाओ नेइ। यतइ रात हय मनेर मध्ये छटफट करते थाके। कुमुके ये अवज्ञा करबे किछुतेइ से-शक्ति पाच्छे ना। अथच निजे एगिये गिये तार काछे हार मानबे एटा ओर पलिसि-विरुद्ध। ठाण्डा जल दिये मुख धुये एसे शुल, किन्तु घुम आसे ना। छटफट करते करते उठे पड़ल, कोनोमतेइ कौतूहल सामलाते पारले ना। एकटा लण्ठन हाते करे निद्रित कक्षश्रेणी निःशब्दपदे पार हये अन्तःपुरेर सेइ फराशखानार सामने एसे एकटुक्षण कान पेते रइल, भितरे कोनो साड़ाशब्द नेइ। सावधाने दरजा खुले देखे, कुमु मेजेर उपर एकटा मादुर पेते शुये, सेइ मादुरेर एक प्रान्त गुटिये सेइटेके बालिश करेछे। मधुसूदनेर येमन घुम नेइ, कुमुरओ तेमनि घुम ना थाकाइ उचित छिल, किन्तु देखले से अकातरे घुमोच्छे; एमन कि तार मुखेर उपर यखन लण्ठनेर आलो फेलले तातेओ घुम भाङ्ल ना। एमन समय कुमु एकटुखानि उसखुस करे पाश फिरले। गृहस्थेर जागार लक्षण देखे चोर येमन करे पालाय मधुसूदन तेमनि ताड़ाताड़ि पालाल। भय हल पाछे कुमु ओर पराभव देखते पाय, पाछे मने-मने हासे।

बातिर घर थेके मधुसूदन बेरिये एसे बारान्दा बेये खानिकटा येतेइ सामने देखे श्यामा। तार हाते एकटि प्रदीप।

"एकि ठाकुरपो, एखाने कोथा थेके एले?"

मधुसूदन तार कोनो उत्तर ना करे बलले, "तुमि कोथाय याच्छ बउ?"

"काल ये आमार व्रत, ब्राह्मणभोजन कराते हबे तारइ जोगाड़े चलेछि—तोमारओ नेमन्तन्न रइल। किन्तु तोमाके दक्षिणे देबार मतो शक्ति नेइ भाइ।"

मधुसूदनेर मुखे एकटा जवाब आसछिल, सेटा चेपे गेल।

सेइ शेषरात्रेर अन्धकारे प्रदीपेर आलोय श्यामाके सुन्दर देखाच्छिल। श्यामा एकटु हेसे बलले, "आज घुम थेके उठेइ तोमार मतो भाग्यवान पुरुषेर मुख देखलुम, आमार दिन भालोइ याबे। व्रत सफल हबे।"

भाग्यवान शब्दटार उपर एकटु जोर दिले—मधुसूदनेर काने कथाटा

विडम्बनार मतो शोनाल। कुमुर सम्बन्धे कोनो कथा स्पष्ट करे जिज्ञासा करते श्यामार साहस हल ना। "काल किन्तु आमार घरे खेते एसो, माथा खाओ", बले से चले गेल।

घरे एसे मधुसूदन बिछानाय शुये पड़ल। बाइरे लण्ठनटा राखले, यदि कुमु आसे। कुमुदिनीर सेइ सुप्त मुख किछुते मन थेके नड़ते चाय ना; आर केवलइ मने पड़े कुमुर अतुलनीय सेइ हातखानि शालेर बाइरे एलिये। विवाहकाले एइ हात यखन निजेर हाते नियेछिल तखन एके सम्पूर्ण देखते पाय नि—आज देखे देखे चोखेर आर आश मिटते चाय ना। एइ हातेर अधिकारटि से कबे पाबे? बिछानाय आर टिँकते पारे ना; उठे पड़ल। आलो ज्वालिये कुमुर डेस्केर देराज खुलले। देखले सेइ पुँति-गाँथा थलिटि। प्रथमेइ बेरोल विप्रदासेर टेलिग्रामखानि—"ईश्वर तोमाके आशीर्वाद करुन"—तारपरे एकखानि फटोग्राफ, ओर दुइ दादार छबि—आर एकखानि कागजेर टुकरो, विप्रदासेर हाते-लेखा गीतार एइ श्लोक—

> यत् करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्,
> यत् तपस्यसि, कौन्तेय, तत् कुरुष्व मदर्पणम्।

ईर्षाय मधुसूदनेर मन क्षतविक्षत हते लागल। दाँते दाँते लागिये विप्रदासके मने-मने लोप करे दिले। सेइ लुप्तिर दिन एकदा आसबे ओ निश्चय जाने—अल्प अल्प करे स्क्रु आँटते हबे; किन्तु कुमुदिनीर ये-उनिशटा बछर मधु-सूदनेर आयत्तेर बाइरे, सेइटे विप्रदासेर हात थेके एइ मुहूर्तेइ छिनिये निते पारले तबेइ ओ मने शान्ति पाय। आर-कोनो रास्ता जाने ना जबरदस्ति छाड़ा। पुँतिर थलिटि आज साहस करे फेले दिते पारले ना—येदिन आङटि हरण करे नियेछिल सेदिन ओर साहस आरओ बेशि छिल; तखनओ जानत कुमुदिनी साधारण मेयेरइ मतो सहजइ शासनेर अधीन, एमन कि, शासनइ पछन्द करे। आज बुझेछे कुमुदिनी ये की करते पारे एवं पारे ना किच्छु बलबार जो नेइ।

कुमुदिनीके निजेर जीवनेर सङ्गे शक्त बाँधने जड़ाबार एकटि मात्र रास्ता आछे से केवल सन्तानेर मायेर रास्ता। सेइ कल्पनातेइ ओर सान्त्वना।

एमनि करे घड़िते पाँचटा बाजल। किन्तु शीतरात्रिर अन्धकार तखनओ याय नि। आर किछुक्षण परेइ आलो उठबे, आजकेर रात हबे व्यर्थ। मधुसूदन ताड़ाताड़ि घर छेड़े चलल—फराशखानार सामने पायेर शब्दटा

बेश एकटु स्पष्टइ ध्वनित करले—दरजाटा शब्द करेइ खुलले—देखले भितरे कुमु नेइ। कोथाय से?

उठोनेर कले जल-पड़ार शब्द काने एल। बारान्दाय दाँड़िये देखले, यत राज्येर पुरानो अव्यवहार्य मरचे-पड़ा पिलसुजगुलो निये कुमु तेंतुल दिये माजछे। ए केवल इच्छा करे काजेर भार बाड़ाबार चेष्टा, शीतेर भोरवेलार निद्राहीन दुःखके विस्तारित करे तोला।

मधुसूदन उपरेर बारान्दा थेके अवाक हये दाँड़िये देखते लागल। अबलार बलके की करे परास्त करते हय एइ तार भावना। सकाले उठे बाड़िर लोके यखन देखबे कुमु पिलसुज माजछे की भाबबे। ये चाकरेर उपरे माजाघषार भार, सेइ वा की मने करबे? विश्वसुद्ध लोकेर काछे ताके हास्यास्पद करबार एमन तो उपाय आर नेइ।

एकबार मधुसूदनेर मने हल कलतलाय गिये कुमुर सङ्गे बोझापड़ा करे नय। किन्तु सकालवेलाय सेइ उठानेर माझखाने दुजने वचसा करबे आर बाड़िसुद्ध लोके तामाशा देखते बिछाना छेड़े बेरिये आसबे एइ प्रहसनटा कल्पना करे पिछिये गेल। मेजो भाइ नवीनके डाकिये बलले, "बाड़िते की सब व्यापार हच्छे चोख राख कि?"

नवीन छिल बाड़िर म्यानेजार। से भय पेये बलले, "केन दादा, की हयेछे?"

नवीन जाने, दादार यखन राग करबार एकटा कारण घटे तखन शासन करबार एकटा मानुष चाइ। दोषी यदि फसके याय तो निर्दोषी हलेओ चले,—नइले डिसिप्लिन थाके ना, नइले संसारे ओर राष्ट्रतन्त्रेर प्रेस्टीज चले याय।

मधुसूदन बलले, "बड़ोबउ ये पागलर मतो काण्डटा करते बसेछे, तार कारणटा की से कि आमि जानि ने मने कर?"

बड़ोबउ की पागलामि करछे से-प्रश्न करते नवीन साहस करले ना पाछे खबर ना-जानाटाइ एकटा अपराध बले गण्य हय।

मधुसूदन बलले, "मेजोबउ ओर माथा बिगड़ोते बसेछेन सन्देह नेइ।"

बहु संकोचे नवीन बलते चेष्टा करले, "ना, मेजोबउ तो—"

मधुसूदन बलले, "आमि स्वचक्षे देखेछि।"

एर उपरे आर कथा खाटे ना। स्वचक्षे देखार मध्ये सेइ कागजचापार इतिहासटा निहित छिल।

२८

मोतिर मा यखनइ कुमुके अकृत्रिम भालोबासार सङ्गे आदर-यत्न करते प्रवृत्त हयेछिल तखनइ नवीन बुझेछिल एटा सइबे ना ; बाड़िर मेयेरा एइ निये लागालागि करबे। नवीन भावले सेइ रकमेर एकटा किछु घटेछे। किन्तु मधुसूदनेर आन्दाजि अभियोग सम्बन्धे प्रतिवाद करे कोनो लाभ नेइ; ताते जेद बाड़िये देओया हय।

व्यापारटा की हयेछे मधुसूदन ता स्पष्ट करे बलले ना—बोध करि बलते लज्जा करछिल ; की करते हबे ताओ रइल अस्पष्ट, केवल ओर मध्ये येटुकु स्पष्ट से हच्छे एइ ये, समस्त दायित्वटा मेजोबउयेरइ, सुतरां दाम्पत्येर आपेक्षिक मर्यादा अनुसारे जवाबदिहिर ल्याजामुड़ोर मध्ये मुड़ोर दिकटाइ नवीनेर भाग्ये।

नवीन गिये मोतिर माके बलले, "एकटा पयासाद बेधेछे।"

"केन, की हयेछे ?"

"से जानेन अन्तर्यामी, आर दादा, आर सम्भवत तुमि ; किन्तु ताड़ा आरम्भ हयेछे आमार उपरेइ।"

"केन वलो देखि ?"

"याते आमार द्वारा तोमार संशोधन हय, आर तोमार द्वारा संशोधन हय ओ'र नतुन व्यवसायेर नतुन आमदानिर।"

"ता आमार उपरे तोमार संशोधनेर काजटा शुरु करो—देखि दादार चेये तोमार हातयश आछे कि ना।"

नवीन कातर हये बलले, "दादार उड़े चाकरटा ओ'र दामि डिनार-सेटेर एकटा पिरिच भेङेछिल, तार जरिमानार प्रधान अंश आमाकेइ दिते हयेछे, जान तो,—केन ना जिनिसगुलो आमारइ जिम्मे। किन्तु एबारे ये-जिनिसटा घरे एल सेओ कि आमारइ जिम्मे ? तबु जरिमानाटा तोमाते-आमातेइ बाँटोयारा करे दिते हबे। अतएव या करते हय करो, आमाके आर दुःख दिओ ना मेजोवउ।"

"जरिमाना बलते की बोझाय शुनि।"

"रजबपुरे चालान करे देबेन। माझे माझे तो सेइरकम भय देखान।"

"भय पाओ बलेइ भय देखान ! एकवार तो पाठियेछिलेन आवार रेलभाड़ा दिये फिरिये आनते हय नि ? तोमार दादा रेगेओ हिसेबे भुल करेन ना। जानेन आमाके घरकन्ना थेके बरखास्त करले सेटा एकटुओ

सस्ता हबे ना। आर यदि कोथाओ एक पयसाओ लोकसान हय से ठका ओ'र सइबे ना।"

"बुझलुम, एखन की करते हबे बलो ना।"

"तोमार दादाके ब'लो, यतबड़ो राजाइ हन ना, माइने करे लोक रेखे रानीर मान भाङाते पारबेन ना—मानेर बोझा निजेकेइ माथाय करे नामाते हबे। बासरघरेर व्यापारे मुटे डाकते वारण क'रो।"

"मेजोबउ, उपदेश ताँके देबार जन्ये आमार दरकार हबे ना, दुदिन बादे निजेरइ हुँश हबे। इतिमध्ये दूतीगिरिर काजटा करो, फल होक वा ना होक। देखाते पारब निमक खेये सेटा चुपचाप हजम करछि ने।"

मोतिर मा कुमुके गेल खुँजते। जानत सकालवेला ताके पाओया याबे छादेर उपरे। उँचु प्राचीर-देओया छाद, तार माझे माझे घुलघुलि। एलोमेलो गोटाकतक टब, ताते गाछ नेइ। एक कोणे लोहार जाल-देओया एकटा बड़ो भाङा चौको खाँचा; तार काठेर तलाटा प्राय सबटा जीर्ण। कोनो एक समय खरगोश किंवा पायरा एते राखा हत,—एखन आचार-आमसत्त्व प्रभृतिके काकेर चौर्यवृत्ति थेके बाँचिये रोद्दुरे देबार काजे लागे। एइ छाद थेके माथार उपरकार आकाश देखते पाओया याय, दिगन्त देखा याय ना। पश्चिम-आकाशे एकटा लोहार कारखानार चिमनि। ये-दुदिन कुमु एइ छादे बसेछे ओइ चिमनि थेके उत्सारित धूमकुण्डटाइ तार एकमात्र देखबार जिनिस छिल—समस्त आकाशेर मध्ये ओइ केवल एकटि येन सजीव पदार्थ, कोन् एकटा आवेगे फुले फुले पाक दिये दिये उठछे।

पिलसुज प्रभृति माजा सेरे अन्धकार थाकतेइ स्नान करे पुबदिके मुख करे कुमु छादे एसे बसेछे। भिजे चुल पिठेर उपर एलिये देओया,—साज-सज्जार कोनो आभासमात्र नेइ। एकखानि मोटा सुतोर सादा शाड़ि, सरु कालो पाड़, आर शीतनिवारणेर जन्य एकटा मोटा एण्डि-रेशमेर ओड़ना।

किछुदिन थेके प्रत्याशित प्रियतमेर काल्पनिक आदर्शके अन्तरेर माझखाने रेखे एइ युवती आपन हृदयेर क्षुधा मेटाते बसेछिल। तार यत पूजा यत व्रत यत पुराणकाहिनी समस्तइ एइ कल्पमूर्तिके सजीव करे रेखेछिल। से छिल अभिसारिणी तार मानस-वृन्दावने,—भोरे उठे से गान गेयेछे रामकेली रागिणीते—

हमारे तुमारे सम्प्रीति लगी है
शुन मनमोहन प्यारे—

ये-अनागत मानुषटिर उद्देशे उठछे तार आत्मनिवेदनेर अर्घ्य, समुखे एसे

पौछबार आगेइ से येन ओर काछे प्रतिदिन तार पेयाला पाठिये दियेछे। वर्षार रात्रे खिड़किर बागानेर गाछगुलि अविश्राम धारापतनेर आघाते आपन पल्लवगुलिके यखन उतरोल करेछे तखन कानाड़ार सुरे मने पड़ेछे तार ओइ गान--

बाजे झननन मेरे पायेरिया
कैस करो याउँ घरोयारे।

आपन उदास मनटार पाये पाये नूपुर बाजछे झननन--उद्देशहारा पथे बेरिये पड़ेछे, कोनोकाले फिरबे केमन करे घरे। याके रूपे देखबे एमनि करे कतदिन थेके ताके सुरे देखते पाच्छिल। निगूढ़ आनन्द-वेदनार परिपूर्णतार दिने यदि मनेर मतो काउके दैवात् से काछे पेत ताहले अन्तरेर समस्त गुञ्जरित गानगुलि तखनइ प्राण पेत रूपे। कोनो पथिक ओर द्वारे एसे दाँड़ाल ना। कल्पनार निभृत निकुञ्जगृहे ओ एकेबारेइ छिल एकला। एमन कि, ओर समवयसी सङ्गिनीओ विशेष केउ छिल ना। ताइ एतदिन श्यामसुन्दरेर पायेर काछे ओर निरुद्ध भालोबासा पूजार फुल आकारे आपन निरुद्दिष्ट दयितेर उद्देश खुंजेछे। सेइ जन्येइ घटक यखन विवाहेर प्रस्ताव निये एल कुमु तखन तार ठाकुरेरइ हुकुम चाइले--जिज्ञासा करले, "एइबार तोमाकेइ तो पाब?" अपराजितार फुल बलले, "एइ तो पेयेइछ।"

अन्तरेर एतदिनेर एत आयोजन व्यर्थ हल--एकेबारे ठन करे उठल पाथरटा, भराडुबि हल एक मुहूर्तेइ। व्यथित यौवन आज आबार खुंजते बेरियेछे, कोथाय देबे तार फुल। थालिते या छिल तार अर्घ्य, से ये आज विषम बोझा हये उठल। ताइ आज एमन करे प्राणपणे गाइछे, "मेरे गिरिधर गोपाल और नाहि कोहि।"

किन्तु आज ए-गान शून्ये घुरे बेड़ाच्छे, पौछल ना कोथाओ। एइ शून्यताय कुमुर मन भरे भरे उठल। आज थेके जीवनेर शेष दिन पर्यन्त मनेर गभीर आकाङ्क्षा कि ओइ धोँयार कुण्डलीर मतोइ केवल सङ्गिहीन निःश्वसित हये उठबे?

मोतिर मा दूरे पिछने बसे रइल। सकालेर निर्मल आलोय निर्जन छादे एइ असज्जिता सुन्दरीर महिमा ओके विस्मित करे दियेछे। भावछे, ए-बाड़िते ओके केमन करे मानाबे? एखाने ये-सब मेये आछे एर तुलनाय तारा कोन् जातेर? तारा आपनि ओर थेके पृथक हये पड़ेछे, ओर उपरे राग करछे किन्तु ओर सङ्गे भाव करते साहस करछे ना।

बसे थाकते थाकते मोतिर मा हठात् देखले कुमु दुइ हाते तार ओड़नार आँचल मुखे चेपे धरे केंदे उठेछे। ओ आर थाकते पारले ना, काछे एसे गला जड़िये धरे बले उठल, "दिदि आमार, लक्ष्मी आमार, की हयेछे बलो आमाके।"

कुमु अनेकक्षण कथा कइते पारले ना। एकटु सामले निये बलले, "आजओ दादार चिठि पेलुम ना, की हयेछे ताँर बुझते पारछि ने।"

"चिठि पाबार कि समय हयेछे भाइ ?"

"निश्चय हयेछे। आमि ताँर असुख देखे एसेछि। तिनि जानेन, खबर पाबार जन्ये आमार मनटा की रकम करछे।"

मोतिर मा बलले, "तुमि भेबो ना, खबर नेबार आमि एकटा-किछु उपाय करब।"

कुमु टेलिग्राफ करबार कथा अनेकबार भेबेछे, किन्तु काके दिये कराबे। येदिन मधुसूदन निजेके ओर दादार महाजन बले बड़ाइ करेछिल सेइदिन थेके मधुसूदनेर काछे ओर दादार उल्लेखमात्र करते ओर मुखे बेधे याय। आज मोतिर माके बलले, "तुमि यदि दादाके आमार नामे टेलिग्राफ करते पार तो आमि बाँचि।"

मोतिर मा बलले, "ताइ करब, भय की ?"

कुमु बलले, "तुमि जान, आमार काछे एकटिओ टाका नेइ।"

"की बल, दिदि, तार ठिक नेइ। संसारखरचेर ये-टाका आमार काछे थाके, से तो तोमारइ टाका। आज थेके आमि ये तोमारइ निमक खाच्छि।"

कुमु जोर करे बले उठल, "ना ना ना, ए-बाड़िर किछुइ आमार नय, सिकि पयसाओ ना।"

"आच्छा भाइ, तोमार जन्ये ना हय, आमार निजेर टाका थेके किछु खरच करब। चुप करे रइले केन ? ताते दोष की ? टाकाटा आमि यदि अहंकार करे दितुम, तुमि अहंकार करे ना निते पारते। भालोबेसे यदि दिइ, ताहले भालोबेसेइ नेबे ना केन ?"

कुमु बलले, "नेब।"

मोतिर मा जिज्ञासा करले, "दिदि, तोमार शोबार घर कि आजओ शून्य थाकबे ?"

कुमु बलले, "ओखाने आमार जायगा नेइ।"

मोतिर मा पीड़ापीड़ि करले ना। तार मनेर भावखाना एइ ये, पीड़ापीड़ि करबार भार आमार नय; यार काज से करुक। केवल आस्ते आस्ते से बलले, "एकटु दुध एने देब तोमार जन्ये ?"

कुमु बलले, "एखन ना, आर एकटु परे।"

तार ठाकुरेर सङ्गे बोझापड़ा करते एखनओ बाकि आछे। एखनओ मनेर मध्ये कोनो जवाब पाच्छे ना।

मोतिर मा आपन घरे गिये नवीनके डेके बलले, "शोनो एकटि कथा। बड़ोठाकुरेर बाइरेर घरे ताँर डेस्केर उपर खोँज करे एस गे, दिदिर कोनो चिठि एसेछे कि ना--देराज खुलेओ देखो।"

नवीन बलले, "सर्वनाश!"

तुमि यदि ना याओ तो आमि याब।"

"ए ये झोपेर भितर थेके भालुकेर छाना धरते पाठानो।"

"कर्ता गेछेन आपिसे, ताँर काज सेरे आसते वेला एकटा हबे---एर मध्ये--"

"देखो मेजोबउ, दिनेर वेलाय ए-काज किछुतेइ आमार द्वारा हबे ना, एखन चारिदिके लोकजन। आज रात्रे तोमाके खबर दिते पारब।"

मोतिर मा बलले, "आच्छा, ताइ सइ। किन्तु नुरनगरे एखनइ तार करे जानते हबे विप्रदासबाबु केमन आछेन।"

"बेश कथा, ता दादाके जानिये करते हबे तो?"

"ना।"

"मेजोबउ, तुमि ये देखि मरिया हये उठेछ? ए-बाड़िते टिकटिकि माछि धरते पारे ना कर्तार हुकुम छाड़ा, आर आमि—"

"दिदिर नामे तार याबे तोमार ताते की?"

"आमार हात दिये तो याबे।"

बड़ोठाकुरेर आपिसे ढेर तार तो रोज दरोयानके दिये पाठानो हय, तार सङ्गे एटा चालान दियो। एइ नाओ टाका, दिदि दियेछेन।"

कुमुर सम्बन्धे नवीनेर मनओ यदि करुणाय व्यथित ना थाकत ताहले एतबड़ो दुःसाहसिक काजेर भार से किछुतेइ निते पारत ना।

२९

यथानियमे मधुसूदन वेला एकटार परे अन्तःपुरे खेते एल। यथा-नियमे आत्मीय-स्त्रीलोकेरा ताके घिरे बसे केउ वा पाखा दिये माछि ताड़ाच्छे, केउ वा परिवेषण करछे। पूर्वेइ बलेछि, मधुसूदनेर अन्तःपुरेर व्यवस्थाय ऐश्वर्येर आडम्बर छिल ना। तार आहारेर आयोजन पुरानो अभ्यासमतोइ।

मोटा चालेर भात ना हले ना मुखे रोचे, ना पेट भरे। किन्तु पात्रगुलि दामि। रूपोर थाला, रुपोर बाटि, रुपोर ग्लास। साधारणत कलाइयेर डाल, माछेर झोल, तेँतुलेर अम्बल, काँटाचच्चड़ि हच्छे खाद्यसामग्री; तार परे सब-शेषे बड़ो एकबाटि दुध चिनि दिये शेष बिन्दु पर्यन्त समाधा करे पानेर बोँटाय मोटा एक फोँटा चुन सहयोगे एकटा पान मुखे ओ दुटो पान डिबेय भरे पनेरो मिनिट काल तामाक टानते टानते विश्राम करे तत्क्षणात् आपिसे प्रस्थान। अपेक्षाकृत दैन्यदशा थेके आज पर्यन्त सुदीर्घकाल एर आर व्यतिक्रम हय नि। आहारे मधुसूदनेर क्षुधा आछे, लोभ नेइ।

श्यामासुन्दरी दुधेर बाटिते चिनि घेँटे दिच्छिल। अनुज्ज्वल श्यामवर्ण, मोटा बलले या बोझाय ता नय, किन्तु परिपुष्ट शरीर निजेके बेश एकटु येन घोषणा करछे। एकखानि सादा शाड़िर बेशि गाये कापड़ नेइ, किन्तु देखे मने हय, सर्वदाइ परिच्छन्न। वयस यौवनेर प्राय प्रान्ते एसेछे, किन्तु येन ज्येष्ठेर अपराह्णेर मतो, वेला याय-याय तबु गोधूलिर छाया पड़े नि। घन भुरुर नीचे तीक्ष्ण कालो चोख काउके येन सामने थेके देखे ना, अल्प एकटु देखे समस्तटा देखे नेय। तार टसटसे ठोँटदुटिर मध्ये एकटा भाव आछे येन अनेक कथाइ से चेपे रेखेछे। संसार ताके बेशि किछु रस देय नि, तबु से भरा। से निजेके दामि बलेइ जाने, से कृपणओ नय, किन्तु तार महार्घ्यता व्यवहारे लागल ना बले निजेर आशपाशेर उपर तार एकटा अहंकृत अश्रद्धा। मधुसूदनेर ऐश्वर्येर जोयारेर मुखेइ श्यामा ए-संसारे प्रवेश करेछे। यौवनेर जादुमन्त्रे एइ संसारेर चूड़ाय से स्थान करे नेबे एमनओ संकल्प छिल। मधुसूदनेर मन ये कोनो दिन टले नि ताओ बला याय ना। किन्तु मधुसूदन किछुतेइ हार मानल ना; तार कारण, मधुसूदनेर विषयबुद्धि केवलमात्र ये बुद्धि ता नय, से हच्छे प्रतिभा। एइ प्रतिभार जोरे सम्पद से सृष्टि करेछे, आर सेइ सृष्टिर परमानन्दे गभीर करे से मग्न। एइ प्रतिभार जोरेइ से निश्चय जानत धनसृष्टिर ये तपस्याय से नियुक्त इन्द्रदेव सेटा भाङ्बार जन्ये प्रबल विघ्न पाठियेछेन—क्षणे क्षणे तपोभङ्गेर धाक्का लेगेछे, बार बारइ से सामले नियेछे। सुविधा छिल एइ ये, व्यवसायेर भरा मध्याह्ने तार अवकाशमात्र छिल ना। एइ कठिन परिश्रमेर माझखाने चोखेर देखाय कानेर शोनाय श्यामार ये-सङ्गटुकु निःसङ्गभावे पेत ताते येन मधुसूदनेर क्लान्ति दूर करत। क्रियाकर्मेर पार्वणी उपलक्ष्ये श्यामासुन्दरीर दिके तार पक्षपातेर भारटा एकटु येन बेशि करे झुंकत बले बोझा याय। किन्तु कोनो दिन श्यामाके से एतटुकु प्रश्रय देय नि अन्तःपुरे याते तार स्पर्धा बाड़े। श्यामा

मधुसूदनेर मनेर झोँकटा ठिक धरेछे, तबुओ ओर सम्बन्धे तार भय घुचल ना।

मधुसूदनेर आहारेर समय श्यामासुन्दरी रोजइ उपस्थित थाके; आजओ छिल। सद्य स्नान करे एसेछे—तार असामान्य कालो घन लम्बा चुल पिठेर उपर मेले-देओया—तार उपर दिये अमलशुभ्र शाड़िटि माथार उपर टेने-देओया—भिजे चुल थेके माथाघषा मसलार मृदु गन्ध आसछे।

दुधेर बाटि थेके मुख ना तुले एक समय आस्ते आस्ते बलले, "ठाकुरपो, बउके कि डेके देब?"

मधुसूदन कोनो कथा ना बले तार भाजेर मुखेर दिके गम्भीरभावे चाइले। तार भाज श्यामासुन्दरी भये थतोमतो खेये प्रश्नटाके व्याख्या करे बलले, "तोमार खाबार समय काछे बसले हय भालो, तोमाके एकटु सेवा करते—"

मधुसूदनेर मुखेर भावेर कोनो अर्थ बुझते ना पेरे श्यामासुन्दरी वाक्य शेष ना करेइ चुप करे गेल। मधुसूदन आबार माथा हेँट करे आहारे लागल।

किछुक्षण परे थाला थेके मुख ना तुलेइ जिज्ञासा करले, "बड़ोबउ एखन कोथाय?"

श्यामासुन्दरी व्यस्त हये उठल, "आमि देखे आसछि।"

मधुसूदन भ्रूकुञ्चित करे आङुल नेड़े निषेध करले। प्रश्नेर ये-उत्तर पाबार आशा आछे सेटा एर मुखे शुनले सह्य हबे ना—अथच मनेर मध्ये यथेष्ट कौतूहल। आहार-शेषे तेतलाय यखन तार शोबार घरे गेल, मनेर कोणे एकटा क्षीण प्रत्याशा छिल। एकबार छाद एल घुरे। पाशेर नावार घरे ढुके क्षणकालेर जन्य स्तब्ध हये दाँड़िये रइल। तार परे बिछानाय शुये गुड़गुड़िते टान दिते लागल। निर्दिष्ट पनेरो मिनिट याय—बिश मिनिट पार हये यखन आधघण्टा पुरो हते चलल तखन बुकेर पकेट थेके घड़ि बेर करे एकबार समयटा देखले। वत्सरेर पर वत्सर गेछे, आपिसे याबार पूर्वे कखनो पाँच मिनिट देरि हय नि। आपिसे एकटा रेजिस्टारि बइ आछे, के ठिक कोन् समये एल एवं गेल सेइ बइये तार हिसाब थाके—सेइ हिसाबेर सङ्गे सङ्गे वेतनेर मात्रारेखा ओठानामा करे। आपिसेर सकल कर्मचारीदेर मध्ये मधुसूदनेर जरिमानार अङ्क सब चेये संख्याय कम। अथच ए-सम्बन्धे निजेर प्रति तार पक्षपात नेइ। वस्तुत निजेर काछ थेके कर्मचारी-देर चेये डबल हारे जरिमाना आदाय करे। मने-मने आज से पण करेछे ये, अपराह्णे आपिसेर समय उत्तीर्ण हले अतिरिक्त समय काज करे क्षति-पूरण करे नेबे। वेला यतइ पड़े आसछे, काजे मन दिते आर पारे ना।

एमन कि आज आधघण्टा समय थाकतेइ काज फेले बाड़ि फिरे एल। केवलइ इच्छे करछिल असमये एकबार शोबार घरे एसे ढुकते। हयतो काउके देखते पेतेओ पारे। दिन थाकते से कखनोइ शोबार घरे आसे ना। आज आपिसेर साजसुद्ध अन्त:पुरे प्रवेश करले।

ठिक सेइ समये मोतिर मा छादेर रोद्दुरे-मेला आमसिगुलो झुड़िते तुलछिल। मधुसूदनके अवेलाय शोबार घरे ढुकते देखे एकहात घोमटा टेने तार आड़ाले अनेकखानि हासले। मेजोबउयेर काछे तार एइ अनियम धरा पड़ाते मधुसूदन लज्जित ओ विरक्त हल। मने प्ल्यान छिल अत्यन्त नि:शब्दपदे घरे ढुकबे—पाछे भीरु हरिणी चकित हये पालाय। से आर हल ना। कौतुकदृष्टिर आघात एड़ाबार जन्ये से निजेइ द्रुत घरेर मध्ये प्रवेश करले। देखले आपिस पालानो सम्पूर्ण व्यर्थ हयेछे। घरे केउ तो नेइ-इ, दिनेर वेला कोनो समये केउ ये क्षणकालेर जन्येओ छिल तार चिह्नओ पाओया याय ना। एक मुहूर्ते तार अधैर्य येन असह्य हये उठल। यदिओ से भाशुर, एवं कोनोदिन मेजोबउयेर सङ्गे एकटा कथाओ कय नि, तबु ताके डेके कुमु सम्बन्धे या-हय किछु एकटा बलबार जन्ये मनटा छटफट करते लागल। एकबार बेर हयेओ एल किन्तु मोतिर मा तखन निचे चले गियेछे।

नववधू कर्तृक परित्यक्त शोबार घरे अकारणे असमये एकला यापन करबार असम्मान थेके रक्षा पाबार जन्ये बाइरेर दिके वेगे गेल हन हन करे। मस्त एकटा जरुरि काज करबार भान करे डेस्केर उपर झुंके पड़ल। सामने छिल एकखाना खाता। साधारणत सेटा से प्राय देखे ना, देखे तार आपिसेर हेडबाबु। आज लोकचक्षुके प्रतारणा करबार उद्देश्ये सेटा खुले बसल। एइ खाताय तार बाड़िर समस्त चिठि ओ टेलिग्राम रओना करबार दिन-क्षण टोका थाके। खाता खुले प्रथमेइ देखते पेले आजकेर तारीखेर टेलिग्रामेर फर्दर मध्ये विप्रदासेर नाम ओ ठिकाना। प्रेरक हच्छेन स्वयं कर्त्रीठाकुरानी।

"डाको दारोयानके।"

दारोयान एल।

"ए टेलिग्राम के दियेछिल पाठाते?"

"मेजोबाबु।"

"डाको मेजोबाबुके।"

मेजोबाबु पांशुवर्ण मुखे एसे हाजिर।

"आमार हुकुम ना निये टेलिग्राम पाठाते के बलले?" ये बलेछिल

शासनकर्तार सामने तार नाम मुखे आना तो सहज व्यापार नय; की बलबे किछुइ भेबे ना पेये नवीन व्याकुल हये एइ शीतेर दिने घेमे उठल।

नवीनके नीरव देखे मधुसूदन आपनिइ जिज्ञासा करले, "मेजोबउ बुझि ?"

मुख हेँट करे निरुत्तर थाकातेइ तार उत्तर स्पष्ट हल। झाँ करे माथाय रक्त गेल चड़े, मुख हल लाल टकटके—एत राग हल ये, कण्ठ दिये कथा बेरोल ना। सवेगे हात नेड़े नवीनके घर थेके बेरिये येते इशारा करे घरेर एक धार थेके आर-एक धार पर्यन्त पायचारि करते लागल।

३०

नवीन घरे गिये मुख शुकनो करे मोतिर माके बलले, "मेजोबउ, आर केन ?"

"हयेछे की ?"

"एबार जिनिसपत्रगुलो बाक्सय तोलो।"

"तोमार बुद्धिते यदि तुलि, ताहले आबार कालइ बेर करते हबे। केन ? तोमार दादार मेजाज भालो नेइ बुझि ?"

"आमि तो चिनि ओँके। एबार बोध हच्छे एखानकार बासाय हात पड़बे।"

"ता चलोइ ना। अत भाबछ केन ? सेखाने तो जले पड़बे ना ?"

"आमाके चलते बलछ किसेर जन्ये ? एबारे हुकुम हबे मेजोबउके देशे पाठिये दाओ।"

"से हुकुम तुमि मानते पारबे ना जानि।"

"केमन करे जानले ?"

"आमि केवल एकाइ जानि मने कर, ता नय—बाड़िसुद्ध सबाइ तोमाके स्त्रैण बले जाने। पुरुषमानुष ये की करे स्त्रैण हते पारे एतदिन तोमार दादा से-कथा बुझतेइ पारत ना। एइबार निजेर बोझबार पाला एसेछे।"

"बल की ?"

"आमि तो देखछि तोमादेर वंशे ओ रोगटा आछे। एतदिन बड़ोभाइयेर धातटा धरा पड़े नि। अनेक काल जमा हये छिल बले तार झाँजटा खुब बेशि हबे, देखे नियो एइ आमि बले दिलाम। ये-जोरेर सङ्गे जगत्-संसार भुले टाकार थले आँकड़े बसेछिल, ठिक सेइ जोरटाइ पड़बे बउयेर उपर।"

"ताइ पड़ुक। बड़ो स्त्रैणटि आसर जमान किन्तु मेजो स्त्रैणटि बाँचबे काके निये।"

"से-भावनार भार आमार उपरे। एखन आमि तोमाके या बलि ताइ करो। ओँर देराज तोमाके सन्धान करते हबे।"

नवीन हात जोड़ करे बलले, "दोहाइ तोमार मेजोबउ—सापेर गर्ते हात दिते यदि बलते आमि दितुम, किन्तु देराजे ना।"

"सापेर गर्ते यदि हात दिते हत तबे निजे दितुम किन्तु देराजटा सन्धान तोमाकेइ करते हबे। तुमि तो जान ए-बाड़िर सब चिठिइ प्रथमे ओँके ना देखिए काउके देबार हुकुम नेइ। आमार मन बलछे ओँर हाते चिठि एसेछे।"

"आमारओ मन ताइ बलछे, किन्तु सेइ सङ्गे ए-ओ बलछे ओ-चिठिते यदि आमि हात ठेकाइ ताहले दादा उपयुक्त दण्ड खुँजेइ पाबे ना। बोध हय सात बछर सश्रम फाँसिर हुकुम हबे।"

"किछु तोमाके करते हबे ना, चिठिते हात दियो ना, केवल एकबार देखे एस दिदिर नामे चिठि आछे कि ना।"

मेजोबउयेर प्रति नवीनेर भक्ति सुगभीर, एमन कि, निजेके तार स्त्रीर अयोग्य बलेइ मने करे। सेइजन्येइ तार जन्ये कोनो एकटा दुरूह काज करबार उपलक्ष्य जुटले यतइ भय करुक सेइ सङ्गे खुशिओ हय।

सेइ रात्रेइ नवीनेर काछे मेजोबउ खबर पेल ये, कुमुर नामे एकटा टेलिग्राम देराजे आछे।

ये-उत्तेजनार प्रथम धाक्काय कुमु तार शोबार घर छेड़े दास्यवृत्तिते प्रवृत्त हयेछिल, तार वेग थेमेछे। अपमानेर विरक्ति कमे एसे विषादेर म्लानताय एखन तार मन छायाच्छन्न। बुझते पारछे चिरदिनेर व्यवस्था ए नय। अथच से-रकम एकटा व्यवस्था ना हले कुमु बाँचबे की करे? संसारे आमृत्युकाल दिनरात्रि जोर करे ए-रकम असंलग्नभावे थाका तो सम्भवपर नय।

एइ कथाइ से भावछिल तार घरेर दरजा बन्ध करे। घरटा बारान्दार एक कोणे, काठेर बेड़ा दिये घेरा। प्रवेशेर द्वार छाड़ा बाकि समस्त कुठरि अवरुद्ध। देयालेर गाये उपर पर्यन्त काठेर थाक बसानो। सेइ थाके आलो ज्वालाबार विचित्र सरञ्जाम। तैलाक्त मलिनताय घरटा आगागोड़ा क्लिन्न। देयालेर ये-अंशे दरजा सेइ दिके बातिर मोड़क थेके काटा छविगुलो एँटे दिये कोनो एक भृत्य सौन्दर्यबोधेर तृप्ति साधन करेछिल। एक कोणे

टिनेर बाक्से आछे गुँड़ोकरा खड़ि, तार पाशे झुड़िते शुकनो तेंतुल, एवं कतक गुलो मयला झाड़न ; आर सारि सारि केरोसिनेर टिन, अधिकांशइ खालि, गुटि दुइ-तिन भरा।

अनिपुण हस्ते आज सकाल थेके कुमु तार काजे लेगेछिल। भाँड़ारेर कर्तव्य शेष करे मोतिर मा उँकि मेरे एकबार कुमुर कर्मतपस्यार दुःसाध्य संकटटा दाँड़िये दाँड़िये देखले। बुझते पारले दुइ-एकटा क्षणभंगुर जिनिसेर अपघात आसन्न। ए-बाड़िते जिनिसपत्रेर सामान्य क्षुण्णताओ दृष्टि अथवा हिसाब एड़ाय ना।

मोतिर मा आर थाकते पारले ना ; बलले, "काज नेइ हाते, ताइ एलुम। भाबलुम दिदिर काजटाते एकटु हात लागाइ, पुण्यि हबे।" एइ बलेइ काँचेर ग्लोब ओ चिमनिर झुड़ि निजेर कोलेर काछे टेने निये माजा-मोछाय लेगे गेल।

आपत्ति करते कुमुर आर तेज नेइ, केनना इतिमध्ये आपन अक्षमता सम्बन्धे आत्म-आविष्कार प्राय सम्पूर्ण हयेछे। मोतिर मार सहायता पेये बेंचे गेल। किन्तु मोतिर मारओ अशिक्षितपटुत्वेर सीमा आछे। केरोसिन ल्याम्पे हिसाब करे फिते योजना तार पक्षे असाध्य। काजटा हय तारइ तत्त्वावधाने, बराद्द अनुसारे तेल प्रभृतिर माप तारइ स्वहस्ते, किन्तु हाते-कलमे सलते काटा आज पर्यन्त तार द्वारा हय नि। ताइ अगत्या बुड़ो बंकु फराशके सहयोगितार जन्ये डाकबार प्रस्ताव तुलले।

हार मानते हल। बंकु फराश एल, एवं द्रुतहस्ते अल्पकालेर मध्येइ काज समाधा करे दिले। सन्ध्यार पूर्वेइ दीपगुलो घरे घरे भाग करे दिये आसते हय। सेइ काजेर जन्ये पूर्व नियममतो ताके यथा-समये आसते हबे किना बंकु जिज्ञासा करले। लोकटा सरल प्रकृतिर बटे किन्तु तबु प्रश्नेर मध्ये एकटु श्लेष छिल वा। कुमुर कानेर डगा लाल हये उठल।

से कोनो जवाब करबार आगेइ मोतिर मा बलले, "आसबि ना तो कि ?" कुमुर बुझते एकटुओ बाकि रइल ना ये, काज करते गिये केवल से काजेर व्याघात घटाच्छे।

३१

दुपुरवेला आहारेर पर दरजा बन्ध करे कुमु बसे पण करते लागल मनेर मध्ये किछुते से क्रोधेर आगुन ज्वले उठते देबे ना। कुमु बलले,

आजकेर दिनटा लागबे मनके स्थिर करे निते ; ठाकुरेर आशीर्वाद निये काल सकाल थेके संसारधर्मेर सत्यपथे प्रवृत्त हब। मध्याह्ने आहारेर पर तार काठेर घरे दरजा भितर थेके बन्ध करे दिये चलल निजेर सङ्गे बोझा-पड़ा। एइ काजे सब चेये सहाय छिल तार दादार स्मृति। से ये देखछे तार दादार धैर्येर आश्चर्य गभीरता; ताँर मुखे सेइ विषाद, येटि ताँर अन्तरेर महत्त्वेर छाया,—तार सेइ दादा, तखनकार कालेर शिक्षितसमाजे प्रचलित पजिटिभिज्म् याँर धर्म छिल, देवताके बाइरे थेके प्रणाम करा याँर अभ्यास छिल ना, अथच देवता आपनिइ याँर जीवन पूर्ण करे आविर्भूत।

अपराह्ने बंकु फराश यखन दरजाय आघात करले, घर खुले कुमु बेरिये गेल। मोतिर माके बलले, आज रात्रे से खाबे ना। मनके विशुद्ध करे नेबार जन्येइ तार एइ उपवास। मोतिर मा कुमुर मुख देखे आश्चर्य हये गेल। से मुखे आज चित्तज्वालार रक्तच्छटा छिल ना। ललाटे चक्षुते छिल प्रशान्त स्निग्ध दीप्ति। एखनइ येन से पूजा सेरे तीर्थस्नान करे एल। अन्तर्यामी देवता येन तार सब अभिमान हरण करे निलेन; हृदयेर माझखाने येन से एनेछे निर्माल्येर फुल वहन करे, तारइ सुगन्ध रयेछे ताके घिरे। ताइ कुमु यखन उपवासी थाकते चाइले तखन मोतिर मा बुझले, ए अभिमानेर आत्मपीड़न नय। ताइ से आपत्ति मात्र करले ना।

कुमु तार ठाकुरेर मूर्तिके अन्तरेर मध्ये बसिये छादेर एक कोणे गिये आसन निल। आज से स्पष्ट बुझते पेरेछे दुःख यदि ताके एमन करे धाक्का ना दित ताहले से आपन देवतार एत काछे कखनोइ आसते पारत ना। अस्तसूर्येर आभार दिके ताकिये कुमु हात जोड़ करे बलले, "ठाकुर, आर कखनो येन तोमार सङ्गे आमार विच्छेद ना घटे ; तुमि आमाके काँदिये तोमार आपन करे राखो।"

शीतेर दिन देखते देखते म्लान हये एल। धूलि कुयाशा ओ कलेर धोँयाते मिश्रित एकटा विवर्ण आवरणे सन्ध्यार स्वच्छ तिमिर-गम्भीर महिमा आच्छन्न। ओइ आकाशटा येमन एकटा परिव्याप्त मलिनतार बोझा निये माटिर दिके नेमे पड़ेछे, तेमनि दादार जन्ये एकटा दुश्चिन्तार दुःसह भार कुमुर मनटाके येन निचेर दिके नामिये धरे रेखे दिले।

एमनि करे एकदिके कुमु अभिमानेर बन्धन थेके निष्कृति पेये मुक्तिर आनन्द आर एकदिके दादार जन्ये भावनाय पीड़ित हृदयेर भार दुइइ एक सङ्गे निये आबार तार सेइ कोटरेर मध्ये गिये प्रवेश करल। बड़ो इच्छा, एइ निरुपाय भावनार बोझाटाकेओ एकान्त विश्वासे भगवानेर उपर सम्पूर्ण समर्पण करे

देय। किन्तु निजेके बार बार धिक्कार दियेओ किछुतेइ सेइ निर्भर पाय ना। टेलिग्राफ तो करा हयेछे, तार उत्तर आसे ना केन, एइ प्रश्न अनवरत मने लेगेइ रइल।

नारीहृदयेर आत्मसमर्पणेर सूक्ष्म बाधाय मधुसूदन कोथाओ हात लागाते पारछे ना। ये विवाहित स्त्रीर देहमनेर उपर तार सम्पूर्ण दाबि सेओ तार पक्षे निरतिशय दुर्गम। भाग्येर एमन अभावनीय चक्रान्तके से कोन् दिक थेके केमन करे आक्रमण करबे भेबे पाय ना। कखनो कोनो कारणेइ मधुसूदन निजेर व्यवसार प्रति लेशमात्र अमनोयोगी हय नि, एखन सेइ दुर्लक्षणओ देखा दिल। निजेर मार पीड़ा ओ मृत्युतेओ मधुसूदनेर कर्मे किछुमात्र व्याघात घटे नि् ए-कथा सकलेइ जाने। तखन तार अविचलित दृढ़चित्तताय अनेके ताके भक्ति करेछे। मधुसूदन आज़ हठात् निजेर एकटा नूतन परिचय पेये निजे स्तम्भित हये गेछे, बाँधा-पथेर बाइरे ये-शक्ति ताके एमन करे टानछे से ये ताके कोन् दिके निये याबे भेबे पाच्छे ना।

रात्रेर आहार सेरे मधुसूदन घरे शुते एल। यदिओ विश्वास करे नि, तबु आशा करेछिल आज हयतो कुमुके शोबार घरे देखते पाबे। सेइजन्येइ नियमित समय अतिक्रम करेइ मधुसूदन एल। सुस्थ शरीरेर चिराभ्यासमतो एकेबारे घड़िधरा समये मधुसूदन घुमिये पड़े, एक मुहूर्त देरि हय ना। पाछे आज तेमनि घुमिये पड़ार पर कुमु घरे आसे तार परे चले याय, एइ भये बिछानाय शुते गेल ना। सोफाय खानिकटा बसे रइल, छादे खानिकटा पायचारि करते लागल। मधुसूदनेर घुमोबार समय न-टा—आज एकसमये चमके उठे शुनले तार देउड़िर घण्टाय एगारोटा बाजछे। लज्जा बोध हल। किन्तु बिछानार सामने दु-तिनबार एसे चुप करे दाँड़िये थाके, किछुते शुते येते प्रवृत्ति हय ना। तखन स्थिर करले बाइरेर घरे गिये सेइ रात्रेइ नवीनेर सङ्गे किछु बोझापड़ा करे नेबे।

बाइरेर घरेर सामनेर बारान्दाय पौँछिये देखे घरे तखनओ आलो ज्वलछे। सेओ घरे ढुकते याच्छे एमन समये देखे नवीन लण्ठन हाते घर थेके बेरिये आसछे। दिनेर वेला हले देखते पेत एक मुहूर्ते नवीनेर मुख की रकम फ्याकाशे हये गेल।

मधुसूदन जिज्ञासा करले, "एत रात्रे तुमि ये एखाने?"

नवीनेर माथाय बुद्धि जोगाल, से बलले, "शुते याबार आगेइ तो आमि घड़िते दम दिये याइ, आर तारिखेर कार्ड ठिक करे दिइ।"

"आच्छा, घरे एसे शोनो।"

6

नवीन त्रस्त हये काठगड़ार आसामिर मतो चुप करे दाँड़िये रइल।

मधुसूदन बलले, "बड़ोबउयेर काने मन्त्र फोसलाबार केउ थाके एटा आमि पछन्द करि ने। आमार घरेर बउ आमार इच्छेमतो चलबे, आर-कारओ परामर्श मतो चलबे ना,—एइटे हल नियम।"

नवीन गम्भीर भावे बलले, "से तो ठिक कथा।"

"ताइ आमि बलछि, मेजोबउके देशे पाठिये दिते हबे।"

नवीन खुब येन निश्चिन्त हल एमनि भावे बलले, "भालो हल दादा, आमि आरओ भाबछिलुम पाछे तोमार मत ना हय।"

मधुसूदन विस्मित हये जिज्ञासा करले, "तार माने?"

नवीन बलले, "क-दिन घरे देशे याबार जन्ये मेजोबउ अस्थिर करे तुलेछे, जिनिसपत्र सब गोछानोइ आछे, एकटा भालो दिन देखलेइ बेरिये पड़बे।"

बला बाहुल्य, कथाटा सम्पूर्ण बानानो। तार बाड़िते मधुसूदन याके इच्छे विदाय करे देबे, ताइ बले केउ निजेर इच्छाय विदाय हते चाइबे एटा सम्पूर्ण बेदस्तुर। विरक्तिर स्वरे बलले, "केन, याबार जन्ये तार एत ताड़ा किसेर?"

नवीन बलले, "बाड़िर गिन्नि ए-बाड़िते एसेछेन, एखन ए-बाड़िर समस्त भार तो ताँकेइ निते हबे। मेजोबउ बलले, आमि माझे थाकले की जानि कखन की कथा ओठे।"

मधुसूदन बलले, "ए-सब कथार विचारभार कि तारइ उपरे?"

नवीन भालोमानुषेर मतो बलले, "की करब बलो, मेयेमानुषेर जेद। की जानि, तार मने हयेछे, कोन् कथा निये तुमि हयतो एक दिन हठात् ताके सरिये देबे, से अपमान तार सइबे ना—ताइ से एकेबारे पण करे बसेछे से याइबे। आसछे त्रयोदशी तिथिते दिन पड़ेछे—एर मध्ये काजकर्म सब गुछिये दिये हिसाबपत्र चुकिये से चले येते चाय।"

मधुसूदन बलले, "देखो नवीन, मेजोबउके आदर दिये तुमिइ बिगड़े दियेछ। ताके एकटु कड़ा करेइ ब'लो से किछुतेइ येते पारबे ना। तुमि पुरुषमानुष, घरे तोमार निजेर शासन चलबे ना, ए आमि देखते पारि ने।"

नवीन माथा चुलकिये बलले, "चेष्टा करे देखब दादा, किन्तु—"

"आच्छा, आमार नाम करे ब'लो, एखन तार याओया चलबे ना। यखन समय बुझब तखन याबार दिन आमिइ ठिक करे देब।"

नवीन बलले, "तुमि बलले कि ना मेजोबउके देशे पाठाते हबे ताइ भाबछि—"

मधुसूदन उत्तेजित हये बलले, "आमि कि बलेछि, एइ मुहूर्तेइ पाठिये दिते हबे ?"

नवीन धीरे-धीरे चले गेल। मधुसूदन एकटा ग्यासेर शिखा ज्वालिये दिये लम्बा केदाराय ठेसान दिये बसे रइल। बाड़िर चौकिदार रात्रे एक-एकबार बाड़िर घरगुलोर सामने दिये टहलिये आसे। मधुसूदनेर अल्प एकटु तन्द्रार मतो एसेछिल, एमन समय हठात् चमकिये उठे देखे चौकिदार घरे ढुके लण्ठन तुले धरे तार मुखेर दिके चेये आछे। हयतो से भाबछिल, महाराज मूर्छाइ गेछे, ना माराइ गेछे। मधुसूदन लज्जित हये धड़फड़ करे चौकि थेके उठे पड़ल। बाइरेर आपिसघरे बसे सद्योविवाहित राजाबाहादुरेर रात्रियापनेर शोकावह दृश्यटा चौकिदारेर काछे ये असम्मानकर ए-कथाटा मुहूर्तेइ ताके येन मारले। उठेइ किछु रागेर स्वरे चौकिदारके बलले, "घर बन्ध करो।" येन घर बन्ध ना थाकाटाते तारइ अपराध छिल। देउड़िर घण्टाते बाजल दुटो।

मधुसूदन घर छेड़े याबार आगे एकबार तार देराज खुलले। इतस्तत करते करते कुमुर नामेर टेलिग्रामटा पकेटे पुरे अन्तःपुरेर दिके चले गेल। तेतालाय ओठबार सिँड़िर सामने किछुक्षण दाँड़िये रइल।

गभीर रात्रे प्रथम घुम थेके जेगे मानुष आपनार समस्त शक्तिके सम्पूर्ण पाय ना। ताइ तार दिनेर चरित्रेर सङ्गे रातेर चरित्रेर अनेकटा प्रभेद। एइ रात्रि दुटोर समय चारिदिके लोकेर दृष्टि बले यखन किछुइ नेइ, से यखन विश्वसंसारे एकमात्र निजेर काछे छाड़ा आर कारओ काछेइ दायी नय, तखन कुमुर काछे मने-मने हार-माना तार पक्षे असम्भव हल ना।

३२

सिँड़िर तला थेके मधुसूदन फिरल, बुकेर मध्ये रक्त तोलपाड़ करते लागल। एकटा कोन् रुद्ध घरेर सामने केरोसिनेर लण्ठन ज्वलछिल। सेइटे तुले निये चुपि चुपि तेलवातिर कुठरिर बाइरे एसे दाँड़ाल। आस्ते आस्ते दरजा ठेलते गिये देखले दरजा भेजानो ; दरजा खुले गेल। सेइ मादुरेर उपर गाये एकखाना चादर दिये कुमु गभीर घुमे मग्न—बाँ हातखानि बुकेर उपर तोला। देयालेर कोणे लण्ठन रेखे मधुसूदन कुमुर मुखेर दिके

मुख करे बाँ-पाशे एसे बसल। एइ मुखटि ये मनके एमन प्रबल शक्तिते टाने तार कारण मुखेर मध्ये तार एकटि अनिर्वचनीय सम्पूर्णता। कुमुर आपनार मध्ये आपनार कोनो दिन विरोध घटे नि। दादार संसारे अभावेर दुःखे से पीड़ित हयेछे किन्तु सेटा बाह्य अवस्थाघटित व्यापारे, सेटाते तार प्रकृतिके आघात करे नि। ये-संसारे से छिल से-संसार तार स्वभावेर पक्षे सब दिकेइ अनुकूल। एइ जन्येइ तार मुखभावे एमन एकटि अनवच्छिन्न सरलता, तार चलाफेराय तार व्यवहारे एमन एकटा अक्षुण्ण मर्यादा। ये-मधुसूदनके जीवनेर साधनाय केवल प्राणपण लड़ाइ करते हयेछे, प्रतिदिन उद्यत संशय निये निरन्तर याके सतर्क थाकते हय, तार काछे कुमुर एइ सर्वाङ्गीण सुपरिणतिर अपूर्व गाम्भीर्य परम विस्मयेर विषय। से निजे एकटुओ सहज नय, आर कुमु येन एकेबारे देवतार मतो सहज। तार सङ्गे कुमुर एइ वैपरीत्यइ ताके एमन प्रबल वेगे टानछे। बियेर परे वधू श्वशुर-बाड़िते प्रथम आसबामात्रइ ये काण्डटि घटल तार समस्त छबिटि यखन से मनेर मध्ये देखे तखन देखते पाय तार निजेर दिके व्यर्थ प्रभुत्वेर क्रुद्ध अक्षमता, अन्यदिके वधूर मनेर मध्ये अनमनीय आत्ममर्यादार सहज प्रकाश। साधारण मेयेदेर मतो तार व्यवहारे कोथाओ किछुमात्र अशोभन प्रगल्भता देखा गेल ना। ए यदि ना हत ताहले ताके अपमान करबार ये-स्वामित्व तार आछे सेइ अधिकार खाटाते मधुसूदन लेशमात्र द्विधा करत ना। किन्तु की ये हल ता से निजे बुझतेइ पारे ना; की एकटा अद्भुत कारणे कुमुके से आपनार घराछोँयार मध्ये पेले ना।

मधुसूदन मने स्थिर करले, कुमुके ना जागिये समस्त रात्रि ओर पाशे एमनि करे जेगे बसे थाकबे। किछुक्षण बसे थेके थेके आर किछुतेइ थाकते पारले ना,—आस्ते आस्ते कुमुर बुकेर उपर थेके तार हातटि निजेर हातेर उपर तुले निले। कुमु घुमेर घोरे उसखुस करे हातटा टेने निये मधुसूदनेर उलटो दिके पाश फिरे शुल।

मधुसूदन आर थाकते पारले ना, कुमुर कानेर काछे मुख निये एसे बलले, "बड़ोबउ, तोमार दादार टेलिग्राम एसेछे।"

अमनि घुम भेङे कुमु द्रुत उठे बसल, विस्मित चोख मेले मधुसूदनेर मुखेर दिके अवाक हये रइल चेये। मधुसूदन टेलिग्रामटा सामने धरे बलले, "तोमार दादार काछ थेके एसेछे।" बले घरेर कोणे थेके लण्ठनटा काछे निये एल।

कुमु टेलिग्रामटा पड़े देखले, ताते इंरेजिते लेखा आछे, "आमार जन्ये उद्विग्न ह'यो ना; क्रमशइ सेरे उठछि; तोमाके आमार आशीर्वाद।"

कठिन उद्वेगेर निरतिशय पीड़नेर मध्ये एइ सान्त्वनार कथा पड़े एक मुहूर्ते कुमुर चोख छल छल करे उठल। चोख मुछे टेलिग्रामखानि यत्न करे आँचलेर प्रान्ते बाँधले। सेइटेते मधुसूदनेर हृत्पिण्डे येन मोचड़ लागाल। तारपरे की ये बलबे किछुइ भेबे पाय ना। कुमुइ बले उठल, "दादार कि चिठि आसे नि ?"

एर परे किछुतेइ मधुसूदन बलते पारले ना ये चिठि एसेछे। धाँ करे बले फेलले, "ना, चिठि तो नेइ।"

एइ घरटार मध्ये रात्रे दुजने एमन करे बसे थाकते कुमुर संकोच बोध हल। से यखन उठब-उठब करछे, मधुसूदन हठात् बले उठल, "बड़ोबउ, आमार उपर राग क'रो ना।"

ए तो प्रभुर उपरोध नय, ए ये प्रणयीर मिनति, आर तार मध्ये येन आछे अपराधीर आत्मग्लानि। कुमु विस्मित हये गेल, तार मने हल ए दैवेरइ लीला। केनना, से ये दिनेर वेला बारबार निजेके बलछे, "तुइ राग करिस ने।" सेइ कथाटाइ आज अर्धरात्रे अप्रत्याशितभावे के मधुसूदनके दिये बलिये निले।

मधुसूदन आबार ताके बलले, "तुमि कि एखनओ आमार उपर राग करे आछ ?"

कुमु बलले, "ना, आमार राग नेइ, एकटुओ ना।"

मधुसूदन ओर मुखेर दिके ताकिये आश्चर्य हये गेल। ओ येन मने-मने कथा कइछे ; अनुद्दिष्ट कारओ सङ्गे येन ओर कथा।

मधुसूदन बलले, "ता हले ए-घर थेके एस तोमार आपन घरे।"

कुमु आज रात्रे प्रस्तुत छिल ना। घुमेर थेके जेगे उठेइ हठात् मनके बेँधे तोला कठिन। काल सकाले स्नान करे देवतार काछे तार प्रतिदिनेर प्रार्थना-मन्त्र पड़े तबे काल थेके संसारे तार साधना आरम्भ हबे एइ संकल्प से करेछिल। तखन ओर मने हल, ठाकुर आमाके समय दिलेन ना, आज एइ गभीर रात्रेइ डाक दिलेन। ताके केमन करे बलब ये, "ना।" मनेर भितरे ये एकटा प्रकाण्ड अनिच्छा हच्छिल ताके अपराध बले कुमु भय पेले। एइ अनिच्छार बाधा ताके टेने राखछिल बलेइ कुमु जोरेर सङ्गे उठे दाँड़ाले, बलले, "चलो।"

उपरे उठे तार शोबार घरेर सामने एकटु थमके दाँड़िये से बलले, "आमि एखनइ आसछि, देरि करब ना।"

बले छादेर कोणे गिये बसे पड़ल। कृष्णपक्षेर खण्ड चाँद तखन मध्य-आकाशे।

निजेर मने-मने कुमु बार बार करे बलते लागल, "प्रभु तुमि डेकेछ आमाके, तुमि डेकेछ। आमाके भोल नि बलेइ डेकेछ। आमाके काँटापथेर उपर दियेइ निये याबे,—से तुमिइ, से तुमिइ, से आर केउ नय।"

आर-समस्तकेइ कुमु लुप्त करे दिते चाय। आर समस्तइ माया, आर-समस्तइ यदि काँटाओ हय तबु से पथेरइ काँटा, आर से ताँरइ पथेर काँटा। सङ्गे पाथेय आछे, तार दादार आशीर्वाद। सेइ आशीर्वाद से ये आँचले बेँधे नियेछे। सेइ आँचले-बाँधा आशीर्वाद बार बार माथाय ठेकाले। तार परे माटिते माथा ठेकिये अनेकक्षण धरे प्रणाम करले। एमन समय हठात् चमके उठल, पिछन थेके मधुसूदन बले उठल, "बड़ोबउ, ठाण्डा लागबे, घरे एस।" अन्तरेर मध्ये कुमु ये-वाणी शुनते चाय तार सङ्गे ए-कण्ठेर सुर तो मेले ना। एइ तो तार परीक्षा, ठाकुर आज ताके बाँशि दियेओ डाकबेन ना। तिनि रइबेन आज छद्मवेशे।

३३

येखाने कुमु व्यक्तिगत मानुष सेखाने यतइ तार मन धिक्कारे घृणाय वितृष्णाय भरे उठछे, यतइ तार संसार सेखाने आपन गायेर जोरेर रूढ़ अधिकारे ताके अपमानित करछे ततइ से आपनार चारिदिके एकटा आवरण तैरि करछे। एमन एकटा आवरण याते करे निजेर काछे तार भालो-लागा मन्द-लागार सत्यताके लुप्त करे, अर्थात् निजेर सम्बन्धे निजेर चैतन्यके कमिये देय। ए हच्छे क्लोरोफरमेर विधान। किन्तु ए तो दु-तिन घण्टार व्यवस्था नय, समस्त दिनरात्रि वेदनाबोधके वितृष्णाबोधके ताड़िये राखते हबे। एइ अवस्थाय मेयेरा यदि कोनोमते एकजन गुरुके पाय तबे तार आत्मविस्मृतिर चिकित्सा सहज हय; से तो सम्भव हल ना। ताइ मने-मने पूजार मन्त्रके नियतइ बाजिये राखते चेष्टा करले। तार एइ दिनरात्रिर मन्त्रटि छिल।—

> तस्मात् प्रणम्य प्रणिधाय कायं
> प्रसादये त्वाम् अहमीशमीड्यं
> पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
> प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।

हे आमार पूजनीय, तोमार काछे आमार समस्त शरीर प्रणत करे एइ प्रसादटि चाइ ये, पिता येमन करे पुत्रके, सखा येमन करे सखाके, प्रिय येमन करे प्रियाके सह्य करते पारेन, हे देव, तुमिओ येन आमाके तेमनि करे सइते पार।

तुमि ये तोमार भालोबासाय आमाके सह्य करते पार तार प्रमाण ए छाड़ा आर किछु नय ये, तोमार भालोबासाय आमिओ समस्त क्षमा करते पारि। कुमु चोख बुजे मने-मने ताँके डेके बले, "तुमि तो बलेछ, ये-मानुष आमाके सब जायगाय देखे, आमार मध्ये समस्तके देखे सेओ आमाके त्याग करे ना, आमिओ ताके त्याग करि ने। एइ साधनाय आमार येन एकटुओ शैथिल्य ना हय।"

आज सकाले स्नान करे चन्दन-गोला जल दिये तार शरीरके अनेकक्षण धरे अभिषिक्त करे निले। देहके निर्मल करे सुगन्धि करे से ताँके उत्सर्ग करे दिले—मने-मने एकाग्रतार सङ्गे ध्यान करते लागल ये, निमिषे निमिषे तार हाते ताँर हात आछे, तार समस्त शरीरे ताँर सर्वव्यापी स्पर्श अविराम विराजमान। ए-देहके सत्यरूपे सम्पूर्णरूपे तिनिइ पेयेछेन, ताँर पाओयार बाइरे ये-शरीरटा से तो मिथ्या, से तो माया, से तो माटि, देखते देखते माटिते मिशिये यावे। यतक्षण ताँर स्पर्शके अनुभव करि ततक्षण ए-देह किछुतेइ अपवित्र हते पारे ना। एइ कथा मने करते करते आनन्दे तार चोखेर पाता भिजे एल—तार देहटा येन मुक्ति पेले मांसेर स्थूल बन्धन थेके। पुण्यसम्मिलनेर नित्यक्षेत्र बले आपन देहेर उपर तार येन भक्ति एल। यदि कुन्दफुलेर माला हातेर काछे पेत ताहले एखनइ आज से परत गलाय, बाँधत कवरीते। स्नान करे परल से एकटि शुभ्र शाड़ि, खुब मोटा लाल पाड़ देओया। छादे यखन बसल तखन मने हल सूर्येर आलो हये आकाशपूर्ण एकटि परम स्पर्श तार देहके अभिनन्दित करले।

मोतिर मार काछे एसे कुमु बलले, "आमाके तोमार काजे लागिये दाओ।"

मोतिर मा हेसे बलले, "एस तबे तरकारि कुटबे।"

मस्त मस्त बारकोश, बड़ो बड़ो पितलेर खोरा, झुड़ि झुड़ि शाकसबजि, दश पनेरोटा बँटि पाता,—आत्मीया-आश्रितारा गल्प करते करते द्रुत हात चालिये याच्छे, क्षतविक्षत खण्डविखण्डित तरकारिगुलो स्तूपाकार हये उठछे। तारइ मध्ये कुमु एक जायगाय बसे गेल। सामने गरादेर भितर दिये देखा याय पाशेर बसतिर एक वृद्ध तेंतुल गाछ तार चिरचञ्चल पातागुलो दिये सूर्येर आलो चूर्ण चूर्ण करे छिटिये छिटिये दिच्छे।

मोतिर मा माझे माझे कुमुर मुखेर दिके चेये देखे आर भावे, ओ कि काज करछे, ना, ओर आङुलेर गति आश्रय करे ओर मन चले याच्छे कोन् एक तीर्थेर पथे? ओके देखे मने हय येन पालेर नौको, आकाशे-तोला पालटाते हाओया एसे लागछे, नौकोटा येन सेइ स्पर्शेइ भोर, आर तार खोलेर

दुधारे ये जल केटे केटे पड़छे, सेटा येन खेयालेर मध्येइ नेइ। घरे अन्य यारा काज करछे तारा ये कुमुर सङ्गे गल्पगुजब करबे एमन येन एकटा सहज रास्ता पाच्छे ना। श्यामासुन्दरी एकबार बलले, "बउ, सकालेइ यदि स्नान कर, गरम जल बले दाओ ना केन। ठाण्डा लागबे ना तो?"

कुमु बलले, "आमार अभ्येस आछे।"

आलाप आर एगोलो ना। कुमुर मनेर मध्ये तखन एकटा नीरव जपेर धारा चलछे--

पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।

तरकारि-कोटा भाँड़ार-देओयार काज शेष हये गेल, मेयेरा स्नानेर जन्ये अन्दरेर उठोने कलतलाय गिये कलरव तुलले।

मोतिर माके एकला पेये कुमु बलले, "दादार काछ थेके टेलिग्राफेर जवाब पेयेछि।"

मोतिर मा किछु आश्चर्य हये बलले, "कखन पेले?"

कुमु बलले, "काल रात्तिरे।"

"रात्तिरे!"

"हाँ, अनेक रात। तखन उनि निजे एसे आमार हाते दिलेन।"

मोतिर मा बलले, "ता हले चिठिखानाओ निश्चय पेयेछ।"

"कोन् चिठि?"

"तोमार दादार चिठि।"

व्यस्त हये बले उठल, "ना, आमि तो पाइ नि! दादार चिठि एसेछे नाकि?"

मोतिर मा चुप करे रइल।

कुमु तार हात चेपे धरे उत्कण्ठित हये बलले, "कोथाय दादार चिठि, आमाके एने दाओ ना।"

मोतिर मा चुपि चुपि बलले, "से-चिठि आनते पारब ना, से बड़ोठाकुरेर बाइरेर घरेर देराजे आछे।"

"आमार चिठि आमाके केन एने दिते पारबे ना?"

"ताँर देराज खुलेछि जानते पारले प्रलय-काण्ड हबे।"

कुमु अस्थिर हये बलले, "दादार चिठि ताहले आमि पड़ते पाब ना?"

"बड़ोठाकुर यखन आपिसे याबेन तखन से-चिठि पड़े आबार देराजे रेखे दियो।"

राग तो ठेकिये राखा याय ना। मनटा गरम हये उठल। बलले, "निजेर चिठिओ कि चुरि करे पड़ते हबे ?"

"कोन्‌टा निजेर कोन्‌टा निजेर नय, से-विचार ए-बाड़िर कर्ता करे देन।"

कुमु तार पण भुलते याच्छिल, एमन समय हठात् मनेर भितरटा तर्जनी तुले बले उठल, "राग कोरो ना।" क्षणकालेर जन्ये कुमु चोख बुजले। निःशब्द वाक्ये ठोंट दुटो केँपे उठल, "प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।"

कुमु बलले, "आमार चिठि केउ यदि चुरि करेन करुन, आमि ताइ बले चुरि करे चुरिर शोध दिते चाइ ने।"

बलेइ कुमुर तखनइ मने हल कथाटा कठिन हयेछे। बुझते पारले, भितरे ये-राग आछे निजेर अगोचरे से आपनाके प्रकाश करे। ताके उन्मूलित करते हबे। तार सङ्गे लड़ाइ करते चाइले सब समय तो तार नागाल पाओया याय ना। गुहार मध्ये से दुर्ग तैरि करे थाके, बाइरे थेके सेखाने प्रवेशेर पथ कइ? ताइ एमन एकटि प्रेमेर वन्या नामिये आना चाइ याते रुद्धके मुक्त करे बद्धके भासिये निये याय। अनेक भुलिये देवार ओर एकटि उपाय हाते छिल, से हच्छे संगीत। किन्तु ए-बाड़िते एसराज बाजाते ओर लज्जा करे। सङ्गे एसराज आनेओ नि। कुमु गान गाइते पारे, किन्तु कुमुर गलाय तेमन जोर नेइ। गानेर धाराय आकाश भासिये दिते इच्छा करल, अभिमानेर गान। ये-गाने ओ बलते पारे, "आमि तो तोमारइ डाके एसेछि, तबे तुमि केन लुकोले? आमि तो निमेषेर जन्ये द्विधा करि नि। तबे आज आमाके केन एमन संशयेर मध्ये फेलले?" एइ सब कथा खुब गला छेड़े गान गेये ओर बलते इच्छे करे। मने हय, ताहलेइ येन सुरे एर उत्तर पाबे।

३४

कुमुर पालाबार एकटिमात्र जायगा आछे, ए-बाड़िर छाद सेइखाने चले गेल। वेला हयेछे, प्रखर रौद्रे छाद भरे गेछे, केवल प्राचीरेर गाये एक जायगाय एकटुखानि छाया। सेइखाने गिये बसल। एकटि गान मने पड़ल, तार सुरटि आसावरी। से गानेर आरम्भटि हच्छे, "बाँशरी हमारि रे"—किन्तु बाकिटुकु ओस्तादेर मुखे मुखे विकृत वाणी—तार माने बुझते पारा याय ना। कुमु ओइ असम्पूर्ण अंश आपन इच्छामतो नूतन नूतन तान

दिये भरिये पालटे पालटे गाइते लागल। ओइ एकटुखानि कथा अर्थे भरे उठल। ओइ वाक्यटि येन बलछे, "ओ आमार बाँशि, तोमाते सुर भरे उठछे ना केन ? अन्धकार पेरिये पौँछच्छे ना केन येखाने दुयार रुद्ध, येखाने घुम भाङ्ल ना ? बाँशरी हमारि रे, बाँशरि हमारि रे !"

मोतिर मा यखन एसे बलले, "चलो भाइ खेते याबे" तखन सेइ छादेर कोणेर एकटुखानि छाया गेछे लुप्त हये, किन्तु तखन ओर मन सुरे भरपुर, संसारे के ओर 'परे की अन्याय करेछे से-समस्त तुच्छ हये गेछे। ओर चिठि निये मधुसूदनेर ये-क्षुद्रता, ये-क्षुद्रताय ओर मने तीव्र अवज्ञा उद्यत हये उठेछिल से येन एइ रोदभरा आकाशे एकटा पतङ्गेर मतो कोथाय विलीन हये गेल, तार क्रुद्ध गुञ्जन मिलिये गेल असीम आकाशे। किन्तु चिठिर मध्ये दादार ये स्नेहवाक्य आछे सेटुकु पाबार जन्ये तार मनेर आग्रह तो याय ना।

ओइ व्यग्रताटा तार मने लेगे रइल। खाओया हये गेले आर से थाकते पारले ना। मोतिर माके बलले, "आमि याइ बाइरेर घरे, चिठि पड़े आसि।"

मोतिर मा बलले, "आर एकटु देरि होक, चाकररा सबाइ यखन छुटि निये खेते याबे, तखन येयो।"

कुमु बलले, "ना, ना से बड़ो चुरि करे याओयार मतो हबे। आमि सकलेर सामने दिये येते चाइ, ताते ये या मने करे करुक।"

मोतिर मा बलले, "ताहले चलो आमिओ सङ्गे याइ।"

कुमु बले उठल, "ना से किछुतेइ हबे ना। तुमि केवल बले दाओ कोन् दिक दिये येते हबे।"

मोतिर मा अन्तःपुरेर झरका-देओया बारान्दा दिये घरटा देखिये दिले। कुमु बेरिये एल। भृत्येरा सचकित हये उठे ताके प्रणाम करले। कुमु घरे ढुके डेस्केर देराज खुले देखले तार चिठि। तुले निये देखले लेफाफा खोला। बुकेर भितरटा फुले उठते लागल, एकेबारे असह्य हये उठल। ये-बाड़िते कुमु मानुष हयेछे सेखाने ए-रकम अवमानना कोनोमतेइ कल्पना-पर्यन्त करा येत ना। निजेर आवेगेर एइ तीव्र प्रबलतातेइ ताके धाक्का मेरे सचेतन करे तुलल। से बले उठल, "प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्"— तबु तुफान थामे ना—ताइ बार बार बलले। बाइरे ये आरदालि छिल, आपिस-घरे तादेर बउरानीर एइ आपन-मने मन्त्र-आवृत्ति शुने से अवाक हये गेल। अनेकक्षण बलते बलते कुमुर मन शान्त हये एल। तखन चिठिखानि सामने रेखे चौकिते बसे हात जोड़ करे स्थिर हये रइल। चिठि से चुरि करे पड़बे ना एइ तार पण।

एमन समय मधुसूदन घरे ढुकेइ चमके उठे दाँड़ाल—कुमु तार दिके चाइलेओ ना। काछे एसे देखले, डेस्केर उपर सेइ चिठि। जिज्ञासा करले, "तुमि एखाने ये!"

कुमु नीरवे शान्तदृष्टिते मधुसूदनेर मुखेर दिके चाइले। तार मध्ये नालिश छिल ना। मधुसूदन आबार जिज्ञासा करले, "ए-घरे तुमि केन?"

एइ बाहुल्यप्रश्ने कुमु अधैर्येर स्वरेइ बलले, "आमार नामे दादार चिठि एसेछे कि ना ताइ देखते एसेछिलेम।"

से-कथा आमाके जिज्ञासा करले ना केन, एमनतरो प्रश्नेर रास्ता काल रात्तिरे मधुसूदन आपनि बन्ध करे दियेछे। ताइ बलले, "ए-चिठि आमिइ तोमार काछे निये याच्छिलुम, से-जन्ये तोमार एखाने आसबार तो दरकार छिल ना।"

कुमु एकटुखानि चुप करे रइल, मनके शान्त करे तार परे बलले, "ए-चिठि तुमि आमाके पड़ते दिते इच्छे कर नि, सेइ जन्ये ए-चिठि आमि पड़ब ना। एइ आमि छिँड़े फेललुम। किन्तु एमन कष्ट आमाके आर कखनो दियो ना। एर चेये कष्ट आमार आर किछु हते पारे ना।"

एइ बले से मुखे कापड़ दिये छुटे बेरिये चले गेल।

इतिपूर्वे आज मध्याह्ने आहारेर पर मधुसूदनेर मनटा आलोड़ित हये उठछिल। आन्दोलन किछुते थामाते पारछिल ना। कुमुर खाओया हलेइ ताके डाकिये पाठाबे बले ठिक करे रेखेछे। आज से माथार चुल आँचड़ानो सम्बन्धे एकटु विशेष यत्न निले। आज सकालेइ एकटि इंरेज नापितेर दोकान थेके स्पिरिट-मेशानो सुगन्धित केशतैल ओ दामि एसेन्स किनिये आनियेछिल। जीवने एइ प्रथम सेगुलि से व्यवहार करेछे। सुगन्धि ओ सुसज्जित हये से प्रस्तुत छिल। आपिसेर समय आज अन्तत पँयताल्लिश मिनिट पेरिये गेल।

सिँड़िते पायेर शब्द पेतेइ मधुसूदन चमके उठे बसल। हातेर काछे आर किछु ना पेये एकखाना पुरोनो खबरेर कागजेर विज्ञापनेर पाताटा निये एमनभावे सेटाके देखते लागल येन तार आपिसेरइ काजेर अङ्ग। एमन कि पकेट थेके एकटा मोटा नील पेन्सिल बेर करे दुटो-एकटा दागओ टेने दिले।

एमन समये घरे प्रवेश करले श्यामासुन्दरी। भ्रूकुञ्चित करे मधुसूदन तार मुखेर दिके चाइले। श्यामासुन्दरी बलले, "तुमि एखाने बसे आछ; बउ ये तोमाके खुंजे बेड़ाच्छे।"

"खुंजे बेड़ाच्छे! कोथाय?"

"एइ ये देखलुम, बाइरे तोमार आपिस-घरे गिये ढुकल। ता एते अत आश्चर्य हच्छ केन ठाकुरपो—से भेबेछे तुमि बुझि—"

ताड़াताड़ि मधुसूदन बाइरे चले गेल। तार परेइ सेइ चिठिर व्यापार।

पालेर नौकाय हठात् पाल फेटे गेले तार ये-दशा मधुसूदनेर ताइ हल। तखन आर देरि करबार लेशमात्र अवकाश छिल ना। आपिसे चले गेल। किन्तु सकल काजेर भितरे भितरे तार असम्पूर्ण भाङा चिन्तार तीक्ष्ण धारगुलो केवलइ येन ठेले ठेले बिँधे बिँधे उठछे। एइ मानसिक भूमिकम्पेर मध्ये मनोयोग दिये काज करा सेदिन तार पक्षे एकेबारे असम्भव। आपिसे जानिये दिले उत्कट माथा धरेछे, कार्यशेषेर अनेक आगेइ बाड़ि फिरे एल।

३५

एदिके नवीन ओ मोतिर मा बुझेछे एबारे भित गेल भेङे, पालिये बाँचबार आश्रय तादेर आर कोथाओ रइल ना। मोतिर मा बलले, "एखाने ये-रकम खेटे खाच्छि से-रकम खेटे खाबार जायगा संसारे आमार मिलबे। आमार दुःख एइ ये आमि गेले ए-बाड़िते दिदिके देखबार लोक आर केउ थाकबे ना।"

नवीन बलले, "देखो मेजोबउ, ए-संसारे अनेक लाञ्छना पेयेछि, ए-बाड़िर अन्नजले अनेकबार आमार अरुचि हयेछे। किन्तु एइबार असह्य हच्छे ये, एमन बउ घरे पेयेओ की करे ताके निते हय, राखते हय ता दादा बुझले ना—समस्त नष्ट करे दिले। भालो जिनिसेर भाङा टुकरो दियेइ अलक्ष्मी बासा बाँधे।"

मोतिर मा बलले, "से-कथा तोमार दादार बुझते देरि हबे ना। किन्तु तखन भाङा आर जोड़ा लागबे ना।"

नवीन बलले, "लक्ष्मण देओर हबार भाग्य आमार घटल ना, एइटेइ आमार मने बाजछे। या होक, तुमि जिनिसपत्तर एखनइ गुछिये फेलो, ए-बाड़िते यखन समय आसे तखन आर तर सय ना।"

मोतिर मा चले गेल। नवीन आर थाकते पारले ना, आस्ते आस्ते तार बउदिदिर घरेर बाइरे एसे देखले कुमु तार शोबार घरेर मेजेर बिछानार उपर पड़े आछे। ये-चिठिखाना छिँड़े फेलेछे तार वेदना किछुतेइ मन थेके याच्छे ना।

नवीनके देखे ताड़াताড़ि उठे बसल। नवीन बलले, "बउदिदि, प्रणाम करते एसेछि, एकटु पायेर धुलो दाओ।"

बउदिदिर सङ्गे नवीनेर एइ प्रथम कथावार्ता।

कुमु बलले, "एस, बोसो।"

नवीन माटिते बसे बलले, "तोमाके सेवा करते पारब एइ खुशिते बुक भरे उठेछिल। किन्तु नवीनेर कपाले एतटा सौभाग्य सइबे केन? क-टा दिन मात्र तोमाके पेयेछि, किछुइ करते पारि नि एइ आपसोस मने रये गेल।"

कुमु जिज्ञासा करले, "कोथाय याच्छ तोमरा?"

नवीन बलले, "दादा आमादेर देशेइ पाठाबे। एर परे तोमार सङ्गे बोध हय आर देखा हबार सुविधा हबे ना, ताइ प्रणाम करे विदाय निते एसेछि।" बले येइ से प्रणाम करले मोतिर मा छुटे एसे बलले, "शीघ्र चले एस। कर्ता तोमार खोँज करछेन।"

नवीन ताड़ाताड़ि उठे चले गेल। मोतिर माओ गेल तार सङ्गे।

सेइ बाइरेर घरे दादा तार डेस्केर काछे बसे; नवीन एसे दाँड़ाल। अन्यदिने एमन अवस्थाय तार मुखे ये-रकम आशङ्कार भाव थाकत आज ता किछुइ नेइ।

मधुसूदन जिज्ञासा करले, "डेस्केर चिठिर कथा बड़ोबउके के बलले?"

नवीन बलले, "आमिइ बलेछि।"

"हठात् तोमार एत साहस बेड़े उठल कोथा थेके?"

"बड़ोबउरानी आमाके जिज्ञासा करलेन ताँर दादार चिठि एसेछे कि ना। ए-बाड़िर चिठि तो तोमार काछे एसे प्रथमटा ओइ डेस्केइ जमा हय, ताइ आमि देखते एसेछिलुम।"

"आमाके जिज्ञासा करते सबुर सय नि?"

"तिनि व्यस्त हये पड़ेछिलेन ताइ--"

"ताइ आमार हुकुम उड़िये दिते हबे?"

"तिनि तो ए-बाड़िर कर्त्री, केमन करे जानब ताँर हुकुम एखाने चलबे ना? तिनि या बलबेन आमि ता मानब ना एतबड़ो आस्पर्धा आमार नेइ। एइ आमि तोमार काछे बलछि, तिनि तो शुधु आमार मनिब नन तिनि आमार गुरुजन. ताँके ये मानब से निमक खेये नय, से आमार भक्ति थेके।"

"नवीन, तोमाके तो एतटुकु वेला थेके देखछि ए-सब बुद्धि तोमार नय। जानि तोमार बुद्धि के जोगाय। याइ होक, आज आर समय नेइ, काल सकालेर ट्रेने तोमादेर देशे येते हबे।"

"ये-आज्ञे" बलेइ नवीन द्विरुक्ति ना करेइ द्रुत चले गेल।

एत संक्षेपे "ये-आज्ञे" मधुसूदनेर एकटुओ भालो लागल ना। नवीनेर

कान्नाकाटि करा उचित छिल; यदिओ ताते मधुसूदनेर संकल्पेर व्यत्यय हत ना। नवीनके आबार फिरे डेके बलले, "माइने चुकिये निये याओ, किन्तु एखन थेके तोमादेर खरचपत्र जोगाते पारब ना।"

नवीन बलले, "ता जानि, देशे आमार अंशे ये-जमि आछे ताइ आमि चाष करे खाब।"

बलेइ अन्य कोनो कथार अपेक्षा ना करेइ से चले गेल।

मानुषेर प्रकृति नाना विरुद्ध धातु मिशोल करे तैरि, तार एकटा प्रमाण एइ ये, मधुसूदन नवीनके गभीरभावे स्नेह करे। तार अन्य दुइ भाइ रजबपुरे विषयसम्पत्तिर काज निये पाड़ागाँये पड़े आछे, मधुसूदन तादेर बड़ो एकटा खोँज राखे ना। पितार मृत्युर पर नवीनके मधुसूदन कलकाताय आनिये पड़ाशुनो करियेछे एवं ताके बराबर रेखेछे निजेर काछे। संसारेर काजे नवीनेर स्वाभाविक पटुता। तार कारण से खुब खाँटि। आर-एकटा हच्छे तार कथावार्ताय व्यवहारे सकलेइ ताके भालोबासे। ए-बाड़िते यखन कोनो झगड़ाझाँटि बाधे तखन नवीन सेटाके सहजे मिटिये दिते पारे। नवीन सब कथाय हासते जाने, आर लोकदेर शुधु केवल सुविचार करे ना, एमन व्यवहार करे याते प्रत्येकेइ मने करे तारइ 'परे बुझि ओर विशेष पक्षपात।

नवीनके मधुसूदन ये मनेर सङ्गे स्नेह करे तार एकटा प्रमाण, मोतिर माके मधुसूदन देखते पारे ना। यार प्रति ओर ममता तार प्रति ओर एकाधिपत्य चाइ। सेइ कारणे मधुसूदन केवल कल्पना करे मोतिर मा येन नवीनेर मन भाङातेइ आछे। छोटो भाइयेर प्रति ओर ये पैतृक अधिकार, बाइरे थेके एक मेये एसे सेटाते केवलइ बाधा घटाय। नवीनके मधुसूदन यदि विशेष भालो ना बासत ताहले अनेक दिन आगेइ मोतिर मार निर्वासन-दण्ड पाका हत।

मधुसूदन भेबेछिल एइटुकु काज सेरेइ आबार एकबार आपिसे चले याबे। किन्तु कोनोमतेइ मनेर मध्ये जोर पेले ना। कुमु सेइ ये चिठिखाना छिँड़े दिये चले गेल सेइ छबिटि तार मने गभीर करे आँका हये गेछे। से एक आश्चर्य छबि, एमनतरो किछु से कखनो मने करते पारत ना। एकबार तार चिरकालेर सन्देह-करा स्वभाववशत मधुसूदन भेबेछिल निश्चयइ कुमु चिठिखाना आगेइ पड़े नियेछे, किन्तु कुमुर मुखे एमन एकटि निर्मल सत्येर दीप्ति आछे ये, बेशिक्षण ताके अविश्वास करा मधुसूदनेर पक्षेओ असम्भव।

कुमुके कठिनभावे शासन करबार शक्ति मधुसूदन देखते देखते हारिये

फेलेछे, एखन तार निजेर तरफे ये-सब अपूर्णता ताइ ताके पीड़ा दित आरम्भ करेछे। तार वयस बेशि, ए-कथा आज से भुलते पारछे ना। एमन कि तार ये चुले पाक धरेछे सेटा से कोनोमते गोपन करते पारले बाँचे। तार रङटा कालो विधातार सेइ अविचार एतकाल परे ताके तीव्र करे बाजछे। कुमुर मनटा केवलइ तार मुष्टि थेके फसके याच्छे, तार कारण मधुसूदनेर रूप ओ यौवनेर अभाव एते तार सन्देह नेइ। एइखानेइ से निरस्त्र से दुर्बल। चाटुज्येदेर घरेर मेयेके बिये करते चेयेछिल किन्तु से ये एमन मेये पावे विधाता आगे थाकतेइ यार काछे तार हार मानिये रेखे दियेछेन, ए से मनेओ करे नि। अथच ए-कथा बलबारओ जोर मने नेइ ये तार भाग्ये एकजन साधारण मेये हलेइ भालो हत यार उपरे तार शासन खाटत।

मधुसूदन केवल एकटा विषये टेक्का दिते पारे। से तार धने। ताइ आज सकालेइ घरे जहरि एसेछिल। तार काछ थेके तिनटे आङटि निये रेखेछे, देखते चाय कोन्टाते कुमुर पछन्द। सेइ आङटिर कौटा तिनटि पकेटे निये से तार शोबार घरे गेल। एकटा चुनि, एकटा पान्ना, एकटा हीरेर आङटि। मधुसूदन मने-मने एकटि दृश्य कल्पनायोगे देखते पाच्छे। प्रथमे से येन चुनिर आङटिर कौटा अति धीरे धीरे खुलले, कुमुर लुब्ध चोख उज्ज्वल हये उठल। तार परे बेरोल पान्ना, ताते चक्षु आरओ प्रसारित। तार पर हीरे, तार बहुमूल्य उज्ज्वलताय रमणीर विस्मयेर सीमा नेइ। मधुसूदन राजकीय गाम्भीर्येर सङ्गे बलले, तोमार येटा इच्छे पछन्द करे नाओ। हीरे-टाइ कुमु यखन पछन्द करले तखन तार लुब्धतार क्षीण साहस देखे ईषत् हास्य करे मधुसूदन तिनटे आङटिइ कुमुर तिन आङुले परिये दिले। तार परेइ रात्रे शयन-मञ्चेर यवनिका उठल।

मधुसूदनेर अभिप्राय छिल एइ व्यापारटा आज रात्रेर आहारेर पर हबे। किन्तु दुपुरवेलाकार दुर्योगेर पर मधुसूदन आर सबुर करते पारले ना। रात्रेर भूमिकाटा आज अपराह्ने सेरे नेबार जन्ये अन्तःपुरे गेल।

गिये देखे कुमु एकटा टिनेर तोरङ्ग खुले शोबार घरेर मेजेते बसे गोछाच्छे। पाशे जिनिसपत्र कापड़चोपड़ छड़ानो।

"ए की काण्ड? कोथाओ याच्छ ना कि?"

"हाँ।"

"कोथाय?"

"रजबपुरे।"

"तार माने की हल?"

"तोमार देराज खोला निये ठाकुरपोदेर शास्ति दियेछ। से-शास्ति आमारइ पाओना।"

"येयो ना" बले अनुरोध करते बसा एकेबारेइ मधुसूदनेर स्वभावविरुद्ध। तार मनटा प्रथमेइ बले उठल—याक ना देखि कतदिन थाकते पारे। एक मुहूर्त देरि ना करे हन हन करे फिरे चले गेल।

३६

मधुसूदन बाइरे गिये नवीनके डेके पाठिये बलले, "बड़ोबउके तोरा खेपियेछिस।"

"दादा, कालइ तो आमरा याच्छि, तोमार काछे भये-भये आर ढोंक गिले कथा कब ना। आमि आज एइ स्पष्ट बले याच्छि, बड़ोबउरानीके खेपाबार जन्ये संसारे आर कारओ दरकार हबे ना,—तुमि एकाइ पारबे। आमरा थाकले तबु यदि वा किछु ठाण्डा राखते पारतुम, किन्तु से तोमार सइल ना।"

मधुसूदन गर्जन करे उठे बलले, "ज्येठामि करिस ने। रजबपुरे याबार कथा तोराइ ओके शिखियेछिस।"

"ए-कथा भाबतेइ पारि ने तो शेखाब कि।"

"देख्, एइ निये यदि ओके नाचास तोदेर भालो हबे ना स्पष्टइ बले दिच्छि।"

"दादा, ए-सब कथा बलछ काके? येखाने बलले काजे लागे बलो गे।"

"तोरा किछु बलिस नि?"

"एइ तोमार गा छुँये बलछि कल्पनाओ करि नि।"

"बड़ोबउ यदि जेद धरे बसे ताहले की करबि तोरा?"

"तोमाके डेके आनब। तोमार पाइक बरकन्दाज पेयादा आछे, तुमि ठेकाते पार। तार परे तोमार शत्रुपक्षेरा एइ युद्धेर संवाद यदि कागजे रटाय ताहले मेजोबउके सन्देह करे बोसो ना।"

मधुसूदन आबार ताके धमक दिये बलले, "चुप कर्! बड़ोबउ यदि रजबपुरे येते चाय तो याक्, आमि ठेकाब ना।"

"आमरा ताँके खाओयाब की करे?"

"तोमार स्त्रीर गहना बिक्रि करे। या, या बलछि! बेरो बलछि घर थेके।"

नवीन बेरिये गेल। मधुसूदन ओडिकलोन भिजनो पटि कपाले जड़िये आबार एकबार आपिसे याबार संकल्प मने दृढ़ करते लागल।

नवीनेर काछे मोतिर मा सब कथा शुने दौड़े गेल कुमुर शोबार घरे। देखले तखनओ से कापड़-चोपड़ पाट करछे तोलबार जन्ये। बलले, "ए की करछ बउरानी ?"

"तोमादेर सङ्गे याब।"

"तोमाके निये याबार साध्य की आमार।"

"केन ?"

"बड़ोठाकुर ताहले आमादेर मुख देखबेन ना।"

"ताहले आमारओ देखबेन ना।"

"ता से येन हल, आमरा ये बड़ो गरिब।"

"आमिओ कम गरिब ना, आमारओ चले याबे।"

"लोके ये बड़ोठाकुरके निये हासबे।"

"ता बले आमार जन्ये तोमरा शास्ति पाबे ए आमि सइब ना।"

"किन्तु दिदि, तोमार जन्ये तो शास्ति नय, ए आमादेर निजेर पापेर जन्येइ।"

"किसेर पाप तोमादेर ?"

"आमराइ तो खबर दियेछि तोमाके।"

"आमि यदि खबर जानते चाइ ताहले खबर देओयाटा अपराध ?"

"कर्ताके ना-जानिये देओयाटा अपराध।"

"ताइ भालो, अपराध तोमराओ करेछ आमिओ करेछि। एकसङ्गेइ फल भोग करब।"

"आच्छा बेश, ताहले बले देब तोमार जन्ये पालकि। बड़ोठाकुरेर हुकुम हयेछे तोमाके बाधा देओया हबे ना। एखन तबे तोमार जिनिस-गुलि गुछिये दिइ। ओगुलो निये ये घेमे उठले।"

दुजने गोछाते लेगे गेल।

एमन समय काने एल बाइरे जुतोर मच मच ध्वनि। मोतिर मा दिल दौड़।

मधुसूदन घरे ढुकेइ बलले, "बड़ोबउ, तुमि येते पारबे ना।"

"केन येते पारब ना ?"

"आमि हुकुम करछि बले।"

"आच्छा ताहले याब ना। तार परे आर की हुकुम बलो।

"बन्ध करो तोमार जिनिस प्याक करा।"

"एइ बन्ध करलुम।" बले कुमु उठे घर थेके बेरिये गेल। मधुसूदन बलले, "शोनो, शोनो।"

तखनइ कुमु फिरे एसे बलले, "की बलो।"

विशेष किछुइ बलवार छिल ना। तबु एकटु भेबे बलले, "तोमार जन्ये आंटि एनेछि।"

"आमार ये-आंटिर दरकार छिल से तुमि परते वारण करेछ, आर आमार आंटिर दरकार नेइ।"

"एकबार देखोइ ना चेये।"

मधुसूदन एके एके कौटो खुले देखाले। कुमु एकटि कथाओ बलले ना।

"एर येटा तोमार पछन्द सेइटेइ तुमि परते पार।"

"तुमि येटा हुकुम करबे सेइटेइ परब।"

"आमि तो मने करि तिनटेइ तिन आंगुले मानाबे।"

"हुकुम कर तिनटेइ परब।"

"आमि परिये दिइ।"

"दाओ परिये।"

मधुसूदन परिये दिले। कुमु बलले, "आर किछु हुकुम आछे?"

"बड़ोबउ राग करछ केन?"

"आमि एकटुओ राग करछि ने।" बले कुमु आबार घर थेके चले गेल।

मधुसूदन अस्थिर हये बले उठल, "आहा याओ कोथाय? शोनो, शोनो।"

कुमु तखनइ फिरे एसे बलले, "की बलो।"

भेबे पेले ना की बलबे। मधुसूदनेर मुख लाल हये उठल। धिक्कार दिये बले उठल, "आच्छा याओ।" रेगे बलले, "दाओ आंटिगुलो फिरिये दाओ।"

तखनइ कुमु तिनटे आंटि खुले टिपायेर उपर राखले।

मधुसूदन धमक दिये बलले, "याओ चले।"

कुमु तखनइ चले गेल।

एइबार मधुसूदन दृढ़ प्रतिज्ञा करले ये, से आपिसे याबेइ। तखन काजेर समय प्राय उत्तीर्ण। इंरेज कर्मचारीरा सकलेइ चले गेछे टेनिस खेलाय। उन्वतन बड़ोवाबुदेर दल उठि-उठि करछे। एमन समय मधुसूदन आपिसे उपस्थित हये एकेबारे खुब कषे काजे लेगे गेल। छटा वाजल, सातटा बाजल, आटटा बाजे, तखन खातापत्र बन्ध करे उठे पड़ल।

३७

एतदिन मधुसूदनेर जीवनयात्रार कखनो कोनो खेइ छिँड़े येत ना। प्रतिदिनेर प्रति मुहूर्तेइ निश्चित नियमे बाँधा छिल। आज हठात् एकटा अनिश्चित एसे सब गोलमाल बाधिये दियेछे। एइ ये आज आपिस थेके बाड़िर दिके चलेछे, रात्तिरटा ये ठिक की भावे प्रकाश पावे ता सम्पूर्ण अनिश्चित। मधुसूदन भये-भये बाड़िते एल, आस्ते आस्ते आहार करले। आहार करे तखनइ साहस हल ना शोबार घरे येते। प्रथमे किछुक्षण बाइरेर दक्षिणेर बारान्दाय पायचारि करे बेड़ाते लागल। शोबार समय न-टा यखन बाजल तखन गेल अन्तःपुरे। आज छिल दृढ़ पण—यथासमये बिछानाय शोबे, किछुतेइ अन्यथा हबे ना। शून्य शोबार घरे ढुकेइ मशारि खुलेइ एकेबारे झप करे बिछानार उपरे पड़ल। घुम आसते चाय ना। रात्रि यतइ निबिड़ हय ततइ भितरकार उपवासी जीवटा अन्धकारे धीरे-धीरे बेरिये आसे। तखन ताके ताड़ा करबार केउ नेइ, पाहाराओयालारा सकलेइ क्लान्त।

घड़िते एकटा बाजल, चोखे एकटुओ घुम नेइ; आर थाकते पारल ना, बिछाना थेके उठे भावते लागल कुमु कोथाय? बङ्कु फराशेर उपर कड़ा हुकुम, फराशखाना तालाचाबि दिये बन्ध। छाद घुरे एल, केउ नेइ। पायेर जुतो खुले फेले निचेर तलाय बारान्दा बेये धीरे-धीरे चलते लागल। मोतिर मार घरेर सामने एसे मने हल येन कथावार्तार शब्द। हते पारे काल चले याबे आज स्वामीस्त्रीते परामर्श चलछे। बाइरे चुप करे दरजाय कान पेते रइल। दुजने गुन गुन करे आलाप चलछे। कथा शोना याय ना किन्तु स्पष्टइ बोझा गेल दुटिइ मेयेर गला। तबे तो विच्छेदेर पूर्वरात्रे मोतिर मायेर सङ्गे कुमुरइ मनेर कथा हच्छे। रागे क्षोभे इच्छे करते लागल लाथि मेरे दरजा खुले फेले एकटा काण्ड करे। किन्तु नवीनटा ताहले कोथाय? निश्चय बाइरे।

अन्तःपुर थेके बाइरे याबार झिलमिल-देओया रास्ताटाते लण्ठने एकटा टिमटिमे आलो ज्वलछे सेइखाने एसेइ मधुसूदन देखले एकखाना लाल शाल गाये जड़िये श्यामा दाँड़िये। तार काछे लज्जित हये मधुसूदन रेगे उठल। बलले, "की करछ एत रात्रे एखाने?"

श्यामा उत्तर करले, "शुयेछिलुम। बाइरे पायेर शब्द शुने भय हल भावलुम बुझि—"

मधुसूदन तर्जन करे बले उठल, "आस्पर्धा बाड़छे देखछि। आमार सङ्गे चालाकि करते चेयो ना, सावधान करे दिच्छि। याओ शुते।"

श्यामासुन्दरी कयदिन थेके एकटु एकटु करे तार साहसेर क्षेत्र बाड़िये-बाड़िये चलछिल। आज बुझले, असमये अजायगाय पा पड़ेछे। अत्यन्त करुण मुख करे एकबार से मधुसूदनेर दिके चाइले--तार परे मुख फिरिये आँचलटा टेने चोख मुछले। चले याबार उपक्रम करे आबार से पिछने फिरे दाँड़िये बले उठल, "चालाकि करब ना ठाकुरपो। या देखते पाच्छि ताते चोखे घुम आसे ना। आमरा तो आज आसि नि, कतकालेर सम्बन्ध, आमरा सइब की करे?" बले श्यामा द्रुतपदे चले गेल।

मधुसूदन एकटुक्षण चुप करे दाँड़िये रइल, तार परे चलल बाइरेर घरे। ठिक एकेबारे पड़ल चौकिदारेर सामने, से तखन टहल दिते बेरियेछे। एमनि नियमेर कठिन जाल ये, निजेर बाड़िते ये चुपि चुपि सञ्चरण करबे तार जो नेइ। चारिदिकेइ सतर्क दृष्टिर व्यूह। राजाबाहादुर एइ रात्रे बिछाना छेड़े खालि-पाये अन्धकारे बाइरेर बारान्दाय भूतेर मतो बेरियेछे ए ये एकेबारे अभूतपूर्व। प्रथमे दूर थेके यखन चिनते पारे नि, चौकिदार बले उठेछिल, "कोन् ह्याय?" काछे एसे जिभ केटे मस्त प्रणाम करले; बलले, "राजा-बाहादुर, किछु हुकुम आछे?"

मधुसूदन बलले, "देखते एलुम ठिकमतो चलछे किना।" कथाटा मधु-सूदनेर पक्षे असंगत नय।

तार परे मधुसूदन बैठकखानाघरे गिये देखे या भेबेछिल ताइ, नवीन बसबार घरे गदिर ऊपर ताकिया आँकड़े निद्रा दिच्छे। मधुसूदन घरे एकटा ग्यासेर आलो ज्वेले दिले, तातेओ नवीनेर घुम भाङल ना। ताके ठेला दितेइ धड़फड़ करे जेगे से उठे बसल। मधुसूदन तार कोनोरकम कैफियत तलब ना करेइ बलले, "एखनइ या, बड़ोबउके बल् गे आमि ताके शोबार घरे डेके पाठियेछि।" बले तखनइ से अन्तःपुरे चले गेल।

किछुक्षण परेइ कुमु शोबार घरे एसे प्रवेश करले। मधुसूदन तार मुखेर दिके चाइले। सादासिधे एकखानि लालपेड़े शाड़ि परा। शाड़िर प्रान्तटि माथार उपरे टाना। एइ निर्जन घरेर अल्प आलोय ए की अपरूप आवि-र्भाव। कुमु घरेर प्रान्तेर सोफाटिर उपरे बसल।

मधुसूदन तखनइ एसे बसल मेजेर उपरे तार पायेर काछे। कुमु संकुचित हये ताड़ाताड़ि ओठबार चेष्टा करबामात्र मधुसूदन हाते धरे ताके टेने बसाले; बलले, "उठो ना शोनो आमार कथा। आमाके माप करो, आमि दोष करेछि।"

मधुसूदनेर एइ अप्रत्याशित विनति देखे कुमु अवाक हये रइल। मधु-सूदन आबार बलले, "नवीनके मेजोबउके रजबपुरे येते आमि बारण करे देब। तारा तोमार सेवातेइ थाकबे।"

कुमु की ये बलबे किछुइ भेबे पेले ना। मधुसूदन भाबले, निजेर मान खर्व करे आमि बड़ोबउयेर मान भाङ्ग। हात धरे मिनति करे बलले, "आमि एखनइ आसछि, बलो तुमि चले याबे ना।"

कुमु बलले, "ना, याब ना।"

मधुसूदन निचे चले गेल। मधुसूदन यखन क्षुद्र हय, कठोर हय, तखन सेटा कुमुदिनीर पक्षे तेमन कठिन नय। किन्तु आज तार एइ नम्रता, एइ तार निजेके खर्व करा, एर सम्बन्धे कुमुर ये की उत्तर ता से भेबे पाय ना। हृदयेर ये-दान निये से एसेछिल से तो सब स्खलित हये पड़े गेछे, आर तो ता धुलो थेके कुड़िये निये काज चलबे ना। आबार से ठाकुरके डाकते लागल, "प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।"

खानिक बादे मधुसूदन नवीन ओ मोतिर माके सङ्गे निये कुमुर सामने उपस्थित करले। तादेर सम्बोधन करे बलले, "काल तोमादेर रजबपुरे येते बलेछिलाम, किन्तु तार दरकार नेइ। काल थेके बड़ोबउयेर सेवाय आमि तोमादेर नियुक्त करे दिच्छि।"

शुने ओरा दुजने अवाक हये गेल। एके तो एमन हुकुम प्रत्याशा करे नि, तार परे एत रात्तिरे ओदेर डेके एने ए कथा बलबार जरुरि दर-कार की छिल।

मधुसूदनेर धैर्य सबुर मानछिल ना। आज रात्तिरेइ कुमुर मनके फेराबार जन्ये उपाय प्रयोग करते कार्पण्य वा संकोच करते पारले ना। एमन करे निजेर मर्यादा क्षुण्ण से जीवने कखनो करे नि। से या चेयेछिल ता पाबार जन्ये तार पक्षे सब चेये दुःसाध्य मूल्य से दिले। तार भाषाय से कुमुके बुझिये दिले, तोमार काछे आमि असंकोचे हार मानछि।

एइबार कुमुर मने बड़ो एकटा संकोच एल, से भाबते लागल एइ जिनिस-टाके केमन करे से ग्रहण करबे? एर बदले की आछे तार देबार? बाइरे थेके जीवनेर यखन बाधा आसे तखन लड़ाइ करबार जोर पाओया याय, तखन स्वयं देवताइ हन सहाय। हठात् सेइ बाइरेर विरुद्धता एकेबारे निरस्त हले युद्ध थामे किन्तु सन्धि हते चाय ना। तखन बेरिये पड़े निजेर भितरेर प्रतिकूलता। कुमु हठात् देखते पेले मधुसूदन यखन उद्धत छिल तखन तार सङ्गे व्यवहार अप्रिय होक तबुओ ता सहज छिल; किन्तु मधु-

सूदन यखन नम्र हयेछे तखन तार सङ्गे व्यवहार कुमुर पक्षे बड़ो शक्त हये उठल। एखन तार क्षुब्ध अभिमानेर आड़ाल थाके ना, तार सेइ फराश-खानार आश्रय चले याय, एखन देवतार काछे हात जोड़ करबार कोनो माने नइ।

मोतिर माके कोनो छुतोय कुमु यदि राखते पारत ता हले से बेंचे येत। किन्तु नवीन गेल चले, हतबुद्धि मोतिर माओ आस्ते आस्ते चलल तार पिछने; दरजार काछे एसे एकबार मुख आड़ करे उद्विग्नभावे कुमुदिनीर मुखेर दिके चेये गेल। स्वामीर प्रसन्नतार हात थेके एइ मेयेटिके एखन के बाँचाबे?

मधुसूदन बलले, "बड़ोबउ, कापड़ छेड़े शुते आसबे ना?"

कुमु धीरे धीरे उठे पाशेर नावार घरे गिये दरजा बन्ध करले--मुक्तिर मेयाद यतटुकु पारे बाड़िये निते चाय। से घरे देओयालेर काछे एकटा चौकि छिल सेइटेते बसे रइल। तार व्याकुल देहटा येन निजेर मध्ये निजेर अन्तराल खुंजछे। मधुसूदन माझे माझे देओयालेर घड़िटार दिके ताकाय आर हिसेब करते थाके कापड़ छाड़बार जन्ये कतटा समय दरकार। इतिमध्ये आयनाते निजेर मुखटा देखले, माथार तेलोर ये-जायगाटाते कड़ा चुलगुलो वेमान।न रकम खाड़ा हये थाके वृथा तार ऊपरे कयेकबार बुरुशेर चाप लागाले आर गायेर कापड़े अनेकखानि दिले ल्याभेण्डार ढेले।

पनेरो मिनिट गेल; वेश-बदलेर पक्षे से-समयटा यथेष्ट। .मधुसूदन चुपि चुपि एकबार नावार घरेर दरजार काछे कान दिये दाँड़ाल, भितरे नड़ाचड़ार कोनो शब्द नेइ--मने भावले कुमु हयतो चुलटार बाहार करछे, खोँपाटा निये व्यस्त। मेयेरा साज करते भालोवासे मधुसूदनेरओ ए आन्दाजटा छिल, अतएव सबुर करतेइ हबे। आध घण्टा हल--मधुसूदन आर-एकबार दरजार उपर कान लागाले, एखनो कोनो शब्द नेइ। फिरे एसे केदाराय बसे पड़े खाटेर सामनेर देयाले विलिति ये-छबिटा झोलानो छिल तार दिके ताकिये रइल। हठात् एक समये धड़फड़ करे उठे रुद्ध द्वारेर काछे दाँड़िये डाक दिले, "बड़ोबउ, एखनओ हय नि?"

एकटु परेइ आस्ते आस्ते दरजा खुले गेल। कुमुदिनी बेरिये एल, येन से स्वप्ने-पाओया। ये-कापड़ परा छिल ताइ आछे; ए तो रात्रे शोबार साज नय। गाये एकखाना प्राय पूरो हाता-ओआला ब्राउन रङेर सार्जेर जामा, एकटा लालपेड़े बादामि रङेर आलोयानेर आँचल माथार उपर टेने देओया। दरजार एकटा पाल्लाय बाँ हात रेखे येन की द्विधार भावे दाँड़िये रइल--एकखानि अपरूप छवि! निटोल गौरवर्ण हाते मकरमुखो

प्लेन सोनार बाला—सेकेले छाँदेर—बोध हय एककाले तार मायेर छिल। एइ मोटा भारि बाला तार सुकुमार हातके ये-ऐश्वर्येर मर्यादा दियेछे सेटि ओर पक्षे एत सहज ये, ओइ अलंकारटा ओर शरीरे एकटुमात्र आड़म्बरेर सुर देय नि। मधुसूदन ओके आबार येन नतुन करे देखले। ओर महिमाय आबार से विस्मित हल। मधुसूदनेर चिरार्जित समस्त सम्पद एतदिन परे श्रीलाभ करेछे ए-कथा ना मने करे से थाकते पारले ना। संसारे ये-सब लोकेर सङ्गे मधुसूदनेर सर्वदा देखासाक्षात् तादेर अधिकांशेर चेये निजेके धनगौरवे अनेक बड़ो मने करा तार अभ्यास। आज ग्यासेर आलोते शोबार घरेर दरजार पाशे ओइ ये मेयेटि स्तब्ध दाँड़िये ताके देखे मधुसूदनेर मने हल, आमार यथेष्ट धन नेइ—मने हल यदि राजचक्रवर्ती सम्राट हतुम ता हलेइ ओके ए-घरे मानात। येन प्रत्यक्ष देखते पेले एर स्वभावटि जन्मावधि लालित एकटि विशुद्ध वंशमर्यादार मध्ये—अर्थात् ए येन एर जन्मेर पूर्ववर्ती बहु दीर्घकालके अधिकार करे दाँड़िये। सेखाने बाइरे थेके ये-से प्रवेश करतेइ पारे ना—सेखानेइ आपन स्वाभाविक स्वत्व निये विराज करछे विप्रदास,—ताकेओ ओइ कुमुर मतोइ एकटि आत्मविस्मृत सहज गौरव सर्वदा घिरे रयेछे।

मधुसूदन एइ कथाटाइ किछुते सह्य करते पारे ना। विप्रदासेर मध्ये औद्धत्य एकटुओ नेइ, आछे एकटा दूरत्व। अतिबड़ो आत्मीयओ ये हठात् एसे तार पिठ चापड़िये बलते पारे "की हे, केमन ?" ए येन असम्भव। विप्रदासेर काछे मधुसूदन मने मने की-रकम खाटो हये थाके सेइटेते तार राग धरे। सेइ एकइ सूक्ष्म कारणे कुमुर उपरे मधुसूदन जोर करते पारछे ना—आपन संसारे येखाने सब चेये तार कर्तृत्व करबार अधिकार सेइखानेइ से येन सब चेये हटे गियेछे। किन्तु एखाने तार राग हय ना—कुमुर प्रति आकर्षण दुर्निवार वेगे प्रबल हये ओठे। आज कुमुके देखे मधुसूदन स्पष्टइ बुझले कुमु तैरि हये आसे नि,—एकटा अदृश्य आड़ालेर पिछने दाँड़िये आछे। किन्तु की सुन्दर। की एकटा दीप्यमान शुचिता, शुभ्रता। येन निर्जन तुषारशिखरेर उपरे निर्मल उषा देखा दियेछे।

मधुसूदन एकटु काछे एगिये एसे धीर स्वरे बलले, "शुते आसबे ना बड़ो-बउ ?"

कुमु आश्चर्य हये गेल। से निश्चय मने करेछिल मधुसूदन राग करबे, ताके अपमानेर कथा बलबे। हठात् एकटा चिरपरिचित सुर तार मने पड़े गेल—तार बाबा स्निग्ध गलाय केमन करे तार माके बड़ोबउ बले डाकतेन।

सेइ सङ्गेइ मने पड़ल मा तार बाबाके काछे आसते बाधा दिये केमन करे चले गियेछिलेन। एक मुहूर्ते तार चोख छलछलिये एल--माटिते मधुसूदनेर पायेर काछे बसे पड़े बले उठल, "आमाके माप करो।"

मधुसूदन ताड़ाताड़ि तार हात धरे तुले चौकिर उपरे बसिये बलले, "की दोष करेछ ये तोमाके माप करब?"

कुमु बलले, "एखनओ आमार मन तैरि हय नि। आमाके एकटुखानि समय दाओ।"

मधुसूदनेर मनटा शक्त हये उठल; बलले, "किसेर जन्ये समय दिते हबे बुझिये बलो।"

"ठिक बलते पारछि ने, काउके बुझिये बला शक्त--"

मधुसूदनेर कण्ठे आर रस रइल ना। से बलले, "किछुइ शक्त ना। तुमि बलते चाओ, आमाके तोमार भालो लागछे ना।"

कुमुर पक्षे मुशकिल हल। कथाटा सत्यि अथच सत्यि नय। हृदय भरे नैवेद्य देबार जन्येइ से पण करे आछे, किन्तु से नैवेद्य एखनओ एसे पौछँल ना। मन बलछे, एकटु सबुर करलेइ, पथे बाधा ना दिले, एसे पौछँबे; देरि ये आछे ताओ ना। तबुओ एखनओ डाला ये शून्य से-कथा मानतेइ हबे।

कुमु बलले, "तोमाके फाँकि दिते चाइ ने बलेइ बलछि, एकटु आमाके समय दाओ।"

मधुसूदन क्रमेइ असहिष्णु हते लागल--कड़ा करेइ बलले, "समय दिले की सुविधे हबे! तोमार दादार सङ्गे परामर्श करे स्वामीर घर करते चाओ!"

मधुसूदनेर ताइ विश्वास। से भेबेछे विप्रदासेर अपेक्षातेइ कुमुर समस्त ठेके आछे। दादा येमनटि चालाबे, ओ तेमनि चलबे। विद्रूपेर सुरे बलले, "तोमार दादा तोमार गुरु!"

कुमुदिनी तखनइ माटि थेके उठे दाँड़िये बलले, "ह्याँ, आमार दादा आमार गुरु।"

"ताँर हुकुम ना हले आज कापड़ छाड़बे ना, बिछानाय शुते आसबे ना! ताइ नाकि?"

कुमुदिनी हातेर मुठो शक्त करे काठ हये दाँड़िये रइल।

"ताहले टेलिग्राफ करे हुकुम आनाइ,--रात अनेक हल।"

कुमु कोनो जवाब ना दिये छाते याबार दरजार दिके चलल।

मधुसूदन गर्जन करे धमके उठे बलले, "येयो ना बलछि।"

कुमु तखनइ फिरे दाँड़िये बलले, "की चाओ, बलो।"

"एखनइ कापड़ छेड़े एस!" घड़ि खुले बलले, "पाँच मिनिट समय दिच्छि।"

कुमु तखनइ नाबार घरे गिये कापड़ छेड़े शाड़िर उपर एकखाना मोटा चादर जड़िये चले एल। एखन द्वितीय हुकुमेर जन्ये तार अपेक्षा। मधुसूदन देखे बेश बुझले ए-ओ रणसाज। राग बेड़े उठल, किन्तु की करते हबे भेबे पाय ना। प्रबल क्रोधेर मुखेओ मधुसूदनेर मने व्यवस्थाबुद्धि थाके; ताइ से थमके गेल। बलले, "एखन की करते चाओ आमाके बलो।"

"तुमि या बलबे ताइ करब।"

मधुसूदन हताश हये बसे पड़ल चौकिते। ओइ चादरे-जड़ानो मेयेटिके देखे मने हल, ए येन विधवार मूर्ति—ओर स्वामी आर ओर माझखाने येन एकटा निस्तब्ध मृत्युर समुद्र। तर्जन करे ए समुद्र पार हओया याय ना। पाले कोन् हाओया लागले तरी भासबे? कोनो दिन कि भासबे?

चुप करे बसे रइल। घड़िर टिक टिक शब्द छाड़ा घरे एकटुओ शब्द नेइ। कुमुदिनी घर थेके बेरिये गेल ना—आबार फिरे बाइरे छातेर अन्धकारेर दिके चोख मेले छबिर मतो दाँड़िये रइल। रास्तार मोड़ थेके एकटा मातालेर गद्गद कण्ठेर गानेर आओयाज शोना याच्छे आर प्रतिवेशीर आस्ताबले एकटा कुकुरेर बाच्छाके बेँधे रेखेछे, रात्रिर शान्ति घुलिये दिये उठछे तारइ अश्रान्त आर्तनाद।

समय एकटा अतलस्पर्श गर्तेर मतो शून्य हये येन हाँ करे आछे। मधुसूदनेर संसारेर कलेर समस्त चाकाइ येन बन्ध। काल तार आपिसेर अनेक काज, डाइरेक्टारदेर मीटिङ,—कतकगुलो कठिन प्रस्ताव अनेकेर बाधा सत्त्वेओ कौशले पास करिये निते हबे। से समस्त जरुरि व्यापार आज तार काछे एकेबारे छायार मतो। आगे हले कालकेर दिनेर कार्यप्रणाली आज रात्रे नोटबइये टुके राखत। सब चिन्ता दूर हये गेल, जगते ये कठिन सत्य सुनिश्चित से हच्छे चादर दिये ढाका ओइ मेये, घरेर थेके बेरिये याबार पथे स्तब्ध दाँड़िये। खानिक बादे मधुसूदन एकटा गभीर दीर्घनिश्वास फेलले, घरटा येन ध्यान भेङे चमके उठल। द्रुत चौकि थेके उठे कुमुर काछे गिये बलले, "बड़ोबउ, तोमार मन कि पाथरे गड़ा?"

ओइ बड़ोबउ शब्दटा कुमुर मने मन्त्रेर मतो काज करे। निजेर मध्ये तार मायेर जीवनेर अनुवृत्ति हठात् उज्ज्वल हये उठे। एइ डाके तार मा

कतदिन कत सहजे साड़ा दियेछिलेन, तारइ अभ्यासटा येन कुमुरओ रक्तेर मध्ये। ताइ चकिते से मुख फिरिये दाँड़ाल। मधुसूदन गभीर कातरतार सङ्गे बलले, "आमि तोमार अयोग्य, किन्तु आमाके कि दया करबे ना?"

कुमुदिनी व्यस्त हये बले उठल, "छि छि अमन करे ब'लो ना।" माटिते पड़े मधुसूदनेर पायेर धुलो निये बलले, "आमि तोमार दासी, आमाके तुमि आदेश करो।"

मधुसूदन ताके हात धरे तुले निये बुके चेपे धरले, बलले, "ना, तोमाके आदेश करब ना, तुमि आपन इच्छाते आमार काछे एस।"

कुमुदिनी मधुसूदनेर बाहुबन्धने हाँपिये उठल। किन्तु निजेके छाड़ाबार चेष्टा करले ना। मधुसूदन रुद्धप्राय कण्ठे बलले, "ना, तोमाके आदेश करब ना, तबु तुमि आमार काछे एस।" एइ बले कुमुदिनीके छेड़े दिले।

कुमुदिनीर गौरवर्ण मुख लाल हये उठेछे। से चोख निचु करे बलले, "तुमि आदेश करले आमार कर्त्तव्य सहज हय। आमि निजे भेबे किछु करते पारि ने।"

"आच्छा तुमि तोमार ओइ गायेर चादरखाना खुले फेलो——ओटाके आमि देखते पारछि ने।"

ससंकोचे कुमुदिनी चादरखाना खुले फेलले। गाये छिल एकखानि डुरे शाड़ि, सरु पाड़ेर। कालो डोरार धारागुलि कुमुदिनीर तनुदेहटिके घिरे, येन तारा रेखार झरना——थेमे आछे मने हय ना, केवलइ येन चलछे—— येन कोनो एकटि कालो दृष्टि आपन अश्रान्त गतिर चिह्न रेखे रेखे ओर अङ्गके घिरे घिरे प्रदक्षिणा करछे, किछुते शेष करते पारछे ना। मुग्ध हये गेल मधुसूदन, अथच सेइ मुहूर्ते एकटु लक्ष्य ना करे थाकते पारले ना ये, ओइ शाड़िटि एखानकार देओया नय। कुमुदिनीके यतइ मानाक ना केन, एर दाम तुच्छ एवं एटा ओर बापेर बाड़िर। ओइ नावार घरेर संलग्न कापड़ छाड़बार घरे आछे देराजओआला मेहगिनि काठेर मस्त आलमारि, तार आयना-देओया पाल्ला,——विवाहेर पूर्व हतेइ नाना रकमेर दामि कापड़े ठासा। सेगुलिर उपरे लोभ नेइ——मेयेर एत गर्व! मने पड़े गेल सेइ तिनटे आंटिर कथा, असह्य औदासीन्ये ताके कुमु ग्रहण करे नि, अथच एकटा लक्ष्मीछाड़ा नीलार आंटिर जन्ये कत आग्रह। विप्रदास आर मधुसूदनेर मध्ये कुमुर ममतार कत मूल्यभेद। चादर खोलबामात्र एइ समस्त कथा दमका झड़ेर मतो मधुसूदनके प्रकाण्ड धाक्का दिले। किन्तु हाय रे, की सुन्दर, की आश्चर्य सुन्दर। आर एइ दृप्त अवज्ञा, सेओ येन ओर अलंकार।

एइ मेयेइ तो पारे ऐश्वर्यके अवज्ञा करते। सहज सम्पदे महीयसी हये जन्मेछे --ओके धनेर दाम कषते हय ना, हिसेब राखते हय ना--मधुसूदन ओके की दिये लोभ देखाते पारे।

मधुसूदन बलले, "याओ, तुमि शुते याओ।"

कुमु ओर मुखेर दिके चेये रइल--नीरव प्रश्न एइ ये, तुमि आगे बिछानाय याबे ना?

मधुसूदन दृढ़स्वरे पुनराय बलले, "याओ, आर देरि करो ना।" कुमु बिछानाय यखन प्रवेश करले मधुसूदन सोफार उपरे बसे बलले, "एइखानेइ बसे रइलुम, यदि आमाके डाक तबेइ याब। वत्सरेर पर वत्सर अपेक्षा करते राजि आछि।"

कुमुर समस्त गा एल झिम झिम करे--ए की परीक्षा तार! कार दरजाय से आज माथा कुटबे? देवता तो ताके साड़ा दिलेन ना। ये-पथ दिये से एखाने एल से तो एकेबारेइ भुल पथ। बिछानाय बसे बसे मने-मने से बलले, "ठाकुर, तुमि आमाके कखनो भोलाते पार ना, एखनओ तोमाके विश्वास करब। ध्रुवके तुमिइ वने एनेछिले, वनेर मध्ये ताके देखा देबे बले।"

सेइ निस्तब्ध घरे आर शब्द नेइ; रास्तार मोड़े सेइ मातालटार गला शोना याय ना; केवल सेइ बन्दी कुकुरटा यदिओ श्रान्त तबु माझे माझे आर्तनाद करे उठछे।

अल्प समयकेओ अनेक समय बले मने हल, स्तब्धतार भारग्रस्त प्रहर येन नड़ते पारछे ना। एइ कि तार दाम्पत्येर अनन्तकालेर छवि? दुपारे दुजने नीरवे बसे--रात्रिर शेष नेइ--माझखाने एकटा अलंघनीय निस्तब्धता। अवशेषे एक समये कुमु तार समस्त शक्तिके संहत करे निये बिछाना थेके बेरिये एसे बलले, "आमाके अपराधिनी क'रो ना।"

मधुसूदन गम्भीरकण्ठे बलले, "की चाओ बलो, की करते हबे?" शेष कथाटुकु पर्यन्त एकेबारे निङड़े बेर करे निते चाय।

कुमु बलले, "शुते एस।"

किन्तु एकेइ कि बले जित?

३८

परेर दिन सकाले मोतिर मा यखन कुमुर जन्ये एक बाटि दुध निये एल, देखले कुमुर दुइ चोख लाल, फुले आछे, मुखेर रङ हयेछे पाँशेर मतो।

सकाले छादेर ये-कोणे आसन पेते पुब दिके मुख करे से मानसिक पूजाय बसे, भेबेछिल सेइखानेइ कुमुके देखते पाबे। किन्तु आज सेखाने नेइ, सिड़ि दिये उठेइ ये एकटुखानि ढाका छाद, सेइखानेइ देयालेर गाये अवसन्नभावे ठेसान दिये से माटिते ब'से। आज बुझि ठाकुरेर उपरे राग करेछे। निरपराध छेलेके निष्ठुर बाप यखन अकारण मारे तखन से येमन किछुइ बुझते पारे ना, अभिमान करे आघात गाये पेते नेय, प्रतिवाद करबारओ चेष्टा करते मुखे बाधे, ठाकुरेर 'परे कुमुर आज सेइ रकम भाव। ये आह्वानके से दैव बले मेनेछिल, से कि एइ अशुचितार मध्ये, एइ आन्तरिक असतीत्वे? ठाकुर नारीबलि चान बलेइ शिकार भुलिये एनेछेन नाकि;—ये-शरीरटार मध्ये मन नेइ सेइ मांसपिण्डके करबेन ताँर नैवेद्य? आज किछुते भक्ति जागल ना। एतदिन कुमु बार बार करे बलेछे, आमाके तुमि सह्य करो—आज विद्रोहिणीर मन बलछे, तोमाके आमि सह्य करब की करे? कोन् लज्जाय आनब तोमार पूजा? तोमार भक्तके निजे ना ग्रहण करे ताके बिक्रि करे दिले कोन् दासीर हाटे,—ये-हाटे माछमांसेर दरे मेये बिक्रि हय, येखाने निर्माल्य नेबार जन्ये केउ श्रद्धार सङ्गे पूजार अपेक्षा करे ना, छागलके दिये फुलेर वन मुड़िये खाइये देय।

मोतिर मा यखन दुध खाबार जन्ये अनुरोध करले, कुमु बलले, "थाक्।"

मोतिर मा बलले, "केन, थाकबे केन? आमार दूधेर बाटिर अपराध की?"

कुमु बलले, "एखनओ स्नान करि नि, पूजा करि नि।"

मोतिर मा बलले, "याओ तुमि स्नान करते, आमि अपेक्षा करे थाकब।"

कुमु स्नान सेरे एल। मोतिर मा भावले एइबार से खोला छादेर कोणटाते गिये बसबे। कुमु मुहूर्तेर जन्ये अभ्यासेर टाने छादेर दिके येते पा बाड़ियेछिल, गेल ना, फिरे आबार सेइ माटिते एसे बसल। तार मन तैरि छिल ना।

मोतिर माके कुमु जिज्ञासा करले, "दादार चिठि कि आसेनि?"

चिठि खुब सम्भव एसेछे मने करेइ आज खुब भोरे मोतिर मा निजे लुकिये आपिसघरे गिये चिठिर देराजटा टानते गिये देखले सेटा चाबि दिये बन्ध। अतएव एखन थेके चुरिर उपर बाटपाड़ि करबार रास्ता आटक रइल।

मोतिर मा बलले, "ठिक बलते तो पारि ने, खबर निये देखब।"

एमन समय हठात् श्यामा एसे उपस्थित; बलले, "बउ तोमाके एमन शुकनो देखि ये, असुख करे नि तो?"

कुमु बलले, "ना।"

"बाड़िर जन्ये मनटा केमन करछे। आहा, ता तो हतेइ पारे। ता तोमार दादा तो आसछेन, देखा हबे।"

कुमु चमके उठे श्यामार मुखेर दिके उत्सुक दृष्टिते चाइले।

मोतिर मा जिज्ञासा करले, "ए-खबर तुमि कोथाय पेले बकुलफुल?"

"ओइ शोनो! ए तो सबाइ जाने। आमादेर रान्नाघरेर पार्वती ये बलले, ओँर बापेर बाड़िर सरकार एसेछिल राजाबाहादुरेर काछे, बउयेर खबर निते। तार काछे शुनेछे, चिकित्सार जन्ये बउयेर दादा आजकालेर मध्येइ कलकाताय आसछेन।"

कुमु उद्विग्न हये जिज्ञासा करले, "ताँर ब्यामो कि बेड़ेछे?"

"ता बलते पारि ने। तबे एमन किछु भावनार कथा नेइ, ताहले शुनतुम।"

श्यामा बुझेछिल ओर दादार खबर मधुसूदन कुमुके देय नि, ये-बउयेर मन पाय नि, पाछे से बाड़िमुखो हये आरओ अन्यमनस्क हये याय। कुमुर मनटाके उसकिये दिये बलले, "तोमार दादार मतो मानुष हय ना एइ कथा सबार काछेइ शुनि। बकुलफुल, चलो देरि हये याच्छे, भाँड़ार दिते हबे। आपिसेर रान्ना चड़ाते देरि हले मुशकिल बाधबे।"

मोतिर मा दुधेर बाटिटा आर-एकबार कुमुर काछे एगिये निये बलले, "दिदि, दुध ठाण्डा हये याच्छे, खेये फेलो लक्ष्मीटि।"

एबार कुमु दुध खेते आपत्ति करले ना।

मोतिर मा काने-काने जिज्ञासा करले, "भाँड़ारघरे याबे आज?"

कुमु बलले, "आज थाक्,—गोपालके आमार काछे एकबार पाठिये दाओ।"

एकटा कालो कठोर क्षुधित जरा बाहिर थेके कुमुके ग्रास करछे राहुर मतो। ये परिणत वयस शान्त स्निग्ध शुभ्र सुगम्भीर, ए तो ता नय; या लालायित, यार संयमेर शक्ति शिथिल, यार प्रेम विषयासक्तिरइ स्वजातीय, तारइ स्वेदाक्त स्पर्शे कुमुर एत वितृष्णा। ओर स्वामीर वयस बेशि बले कुमुर कोनो आक्षेप छिल ना, किन्तु सेइ वयस निजेर मर्यादा भुलेछे बले तार एत पीड़ा। सम्पूर्ण आत्मनिवेदन एकटा फलेर मतो, आलोहाओयाय मुक्तिर मध्ये से पाके, काँचा फलके जाँताय पिषलेइ तो पाके ना। समय पेल ना बलेइ आज ओदेर सम्बन्ध कुमुके एमन करे मारछे, एत अपमान करछे। कोथाय पालाबे। मोतिर माके ओइ ये बलले, गोपालके डेके दाओ, से

एइ पालाबार पथ खोँजा,--वृद्ध अशुचितार काछ थेके नवीन निर्मलतार मध्ये, दूषित निश्वासवाष्प थेके फुलेर बागानेर हाओयाय।

एकटा पातला तुलो-भरा छिटेर जामा गाये दिये हाबलु सिँड़िर दरजार काछे एसे भये भये दाँड़ाल। ओर मायेर मतोइ बड़ो बड़ो कालो चोख, तेमनिइ जलभरा मेघेर मतो सरस शामला रङ, गाल दुटो फुलो फुलो, प्राय न्याड़ा करे चुल छाँटा।

कुमु उठे गिये संकुचित हाबलुके टेने एने बुके चेपे धरले; बलले, "दुष्टु छेले, ए दुदिन आस नि केन?"

हाबलु कुमुर गला जड़िये धरे काने-काने बलले, "ज्येठाइमा तोमार जन्ये की एनेछि बलो देखि?"

कुमु तार गाले चुमो खेये बलले, "मानिक एनेछ गोपाल।"

"आमार पकेटे आछे।"

"आच्छा तबे बेर करो।"

"तुमि बलते पारले ना।"

"आमार बुद्धि नेइ, या चोखे देखि ताओ बुझते पारि ने, या ना देखि ता आरओ भुल बुझि।"

तखन हाबलु खुब आस्ते आस्ते पकेट थेके ब्राउन कागजेर एकटा पुंटलि बेर करे कुमुर कोलेर उपर रेखे दौड़े पालाबार उपक्रम करले।

"ना, तोमाके पालाते देब ना।"

पुंटुलिटा हात दिये चापा दिये व्यस्त हये हाबलु बलले, "ताहले एखन देखो ना।"

"ना, भय नेइ, तुमि चले गेले तखन खुलब।"

"आच्छा ज्येठाइमा, तुमि जटाइबुड़िके देखेछ?"

"की जानि, हयतो देखे थाकब, किन्तु चिनते समय लागे।"

"एकतलाय उठोनेर पाशे कयलार घरे सन्ध्येर समय चामचिकेर पिठे चड़े से आसे।"

"चामचिकेर पिठे चड़े से आसे!"

"इच्छे करलेइ से खुब छोट्टो हते पारे, चोखे प्राय देखाइ याय ना।"

"सेइ मन्तरटा तार काछे शिखे निते हबे तो।"

"केन, ज्येठाइमा?"

"आमि यदि पालावार जन्ये कयलार घरे ढुकि तबुओ ये आमाके देखते पाओया याय।"

हाबलु ए कथाटार कोनो माने बुझते पारले ना ! बलले, "कयलार मध्ये सिँदुरेर कौटो लुकिये रेखेछे । सेइ सिँदुर कोथा थेके एनेछे जान ?"

"बोध हय जानि ।"

"आच्छा, बलो देखि ।"

"भोरवेलाकार मेघेर भितर थेके ।"

हाबलु थमके गेल । ताके भाबिये दिले । विशेष-संवाददाता ताके सागरपारेर दैत्यपुरीर कथा बलेछिल । किन्तु ज्येठाइमार कथाटा मने हल विश्वासयोग्य, ताइ कोनो विरुद्ध तर्क ना तुले बलले, "ये-मेये सेइ कौटो खुंजे बेर करे सिँदुरटिप कपाले परबे से हबे राजरानी ।"

"सर्बनाश ! कोनो हतभागिनी खबर पेयेछे नाकि ?"

"सेजोपिसिमार मेये खुदि जाने । झुड़ि निये छत्रु यखन सकाले कयला बेर करते याय रोज खुदि सेइसङ्गे याय—ओ एकटुओ भय करे ना ।"

"ओ-ये छेलेमानुष ताइ राजरानी हतेओ भय नेइ ।"

बाइरे ठाण्डा उत्तरे हाओया दिच्छिल ताइ मोतिके निये कुमु घरे गेल ; सेखाने सोफाय बसे ओके कोले तुले निले । पाशेर तेपाइये छोटो रुपोर थालिते छिल शीतकालेर फुल,—गाँदा, कुन्द, दोपाटि, जवा । प्रतिदिनेर जोगानमतो एइ फुलइ मालीर तोला । कुमु छादेर कोणे बसे सूर्योदयेर दिके मुख करे देवताके उत्सर्ग करे देबे बले एटा अपेक्षा करे आछे । आज तार सेइ अनिवेदित फुल थालासुद्ध निये से हाबलुर काछे धरल ; बलले, "नेबे फुल ?"

"हाँ नेब ।"

"की करबे बलो तो ?"

"पूजो-पूजो खेलब ।"

कुमुर कोमरे एकटा सिल्केर रुमाल गोँजा छिल, सेइटेते फुलगुलि बेँधे दिये ओके चुमो खेये बलले, "एइ नाओ ।" मने-मने भावले, "आमारओ पूजो-पूजो खेला हल ।" बलले, "गोपाल, एर मध्ये कोन् फुल तोमार सब चेये भालो लागे, बलो तो ?"

हाबलु बलले, "जवा ।"

"केन जवा भालो लागे बलब ?"

"बलो देखि ।"

"ओ ये भोर ना हतेइ जटाइबुड़िर सिंदुरेर कौटो थेके रङ चुरि करेछे ।"

हाबलु खानिकक्षण गम्भीर हये बसे भावले । हठात् बले उठल,

"ज्येठाइमा, जवाफुलेर रङ ठिक तोमार शाड़िर एइ लाल पाड़ेर मतो।" एइटुकुते ओर मनेर सब कथा बला हये गेल।

एमन समय हठात् पिछने देखे मधुसूदन। पायेर शब्द पाओया याय नि। एखन अन्तःपुरे आसबार समय नय। एइ समयटाते बाइरेर आपिस-घरे व्यवसाघटित कर्मेर यत उच्छिष्ट परिशिष्ट एसे जोटे ; एइ समय दालाल आसे, उमेदार आसे, यत रकम खुचरो खबर ओ कागजपत्र निये सेक्रेटारि आसे। आसल काजेर चेये एइ सब उपरि-काजेर भिड़ कम नय।

३९

ये भिक्षुकेर झुलिते केवल तुष जमेछे चाल जोटे नि, तारइ मतो मन निये आज सकाले मधुसूदन खुब रुक्षभावेइ बाइरे चले गियेछिल। किन्तु अतृप्तिर आकर्षण बड़ो प्रचण्ड। बाधातेइ बाधार उपर टेने आने।

ओके देखेइ हाबलुर मुख शुकिये गेल, बुक उठल केँपे, पालाबार उपक्रम करले। कुमु जोर करे चेपे धरले, उठते दिले ना।

सेटा मधुसूदन बुझते पारले। हाबलुके खुब एकटा धमक दिये बलले, "एखाने की करछिस ? पड़ते याबि ने ?"

गुरुमशायेर आसबार समय हय नि ए-कथा बलबार साहस हाबलुर छिल ना—धमकटाके निःशब्दे स्वीकार करे निये माथा हेँट करे आस्ते आस्ते उठे चलल।

ताके बाधा देबार जन्ये उद्यत हयेइ कुमु थेमे गेल। बलले, "तोमार फुल फेले गेले ये, नेबे ना ?" बले सेइ रुमालेर पुँटुलिटा ओर सामने तुले धरले। हाबलु ना निये भये भये तार ज्येठामशायेर मुखेर दिके चेये रइल।

मधुसूदन फस करे पुँटुलिटा कुमुर हात थेके छिनिये निये जिज्ञासा करले, "ए रुमालटा कार ?"

मुहूर्तेर मध्ये कुमुर मुख लाल हये उठल ; बलले, "आमार।"

ए रुमालटा ये सम्पूर्णइ कुमुर, ताते सन्देह नेइ,—अर्थात् विवाहेर पूर्वेर सम्पत्ति। एते रेशमेर काज करा ये-पाड़टा सेओ कुमुर निजेर रचना।

फुलगुलो बेर करे माटिते फेले मधुसूदन रुमालटा पकेटे पुरले ; बलले, 'एटा आमिइ निलुम—छेलेमानुष ए निये की करबे ? या तुइ।"

मधुसूदनेर एइ रूढ़ताय कुमु एकेबारे स्तम्भित। व्यथितमुखे हाबलु चले गेल, कुमु किछुइ बलले ना।

तार मुखेर भाव देखे मधुसूदन बलले, "तुमि तो दानसत्र खुले बसेछ, फाँकि कि आमारइ वेलाय ? ए-हमाल रइल आमारइ ; मने थाकबे किछु पेयेछि तोमार काछ थेके ।"

मधुसूदन या चाय ता पावार विरुद्धे ओर स्वभावेर मध्येइ बाधा ।

कुमु चोख निचु करे सोफार प्रान्ते नीरवे बसे रइल । शाड़िर लाल पाड़ तार माथा घिरे मुखटिके वेष्टन करे नेमे एसेछे, तारइ सङ्गे सङ्गे नेमेछे तार भिजे एलो चुल । कण्ठेर निटोल कोमलताके वेष्टन करे आछे एकगाछि सोनार हार । एइ हारटि ओर मायेर, ताइ सर्वदा परे थाके । तखनओ जामा परे नि, भितरे केवल एकटि शेमिज, हात दुखानि खोला, कोलेर उपर स्तब्ध । अति सुकुमार शुभ्र हात, समस्त देहेर वाणी ओइखाने येन उद्वेल । मधुसूदन नतनेत्र अभिमानिनीके चेये-चेये देखले, आर चोख फेराते पारले ना, मोटा सोनार काँकन-परा ओइ दुखानि हातेर थेके । सोफाय ओर पाशे बसे एकखानि हात टेने निते चेष्टा करले—अनुभव करले विशेष एकटा बाधा । कुमु हात सराते चाय ना—ओर हात दिये चापा आछे एकटा कागजेर मोड़क ।

मधुसूदन जिज्ञासा करले, "ओइ कागजे की मोड़ा आछे ?"

"जानि ने ।"

"जान ना, तार माने की ?"

"तार माने आमि जानि ने ।"

मधुसूदन कथाटा विश्वास करले ना ; बलले, "आमाके दाओ, आमि देखि ।"

कुमु बलले, "ओ आमार गोपन जिनिस, देखाते पारब ना ।"

तीरेर मतो तीक्ष्ण एकटा राग एक मुहूर्ते मधुसूदनेर माथाय चड़े उठल । बलले, "की ! आस्पर्धा तो कम नय ।" बले जोर करे सेइ कागजेर मोड़क केड़े निये खुले फेलले—देखे ये किछुइ नय, कतकगुलि एलाचदाना । मातार सस्ता व्यवस्थाय हाबलुर जन्ये ये-जलखावार बराद्द तार मध्ये एइटेइ बोध करि सबचेये हाबलुर पक्षे लोभनीय—ताइ से यत्न करे मुड़े एनेछिल ।

मधुसूदन अवाक ! व्यापारखाना की ! भावले बापेर बाड़िते एइ रकम जलखावारइ कुमुर अभ्यस्त—ताइ लुकिये आनिये नियेछे, लज्जाय प्रकाश करते चाय ना । मने-मने हासले ; भावले, लक्ष्मीर दान ग्रहण करते समय लागे । धाँ करे एकटा प्ल्यान माथाय एल । द्रुत उठे बाइरे गेल चले ।

कुमु तखन देराज खुले बेर करले तार एकटि छोटो चौको चन्दनकाठेर बाक्स, तार मध्ये एलाचदानागुलि रेखे तार दादाके चिठि लिखते बसल। दु-चार लाइन लेखा हतेइ मधुसूदन घरे एसे उपस्थित। ताड़ाताड़ि चिठि चापा दिये कुमु शक्त हये बसल। मधुसूदनेर हाते रुपोय सोनाय मिनेर काज-करा हातल-देओया एकटि फलदानि, तार उपरे फुलकाटा सुगन्धि एकटि रेशमेर रुमाल। हासिमुखे डेस्के सेटि कुमुर सामने राखले। बलले, "खुले देखो तो।"

कुमु रुमालटा तुले निये देखे सेइ दामि फलदानिते कानाय-कानाय भरा एलाचदाना। यदि एकला थाकत हेसे उठत। कोनो कथा ना बले कुमु गम्भीर हये चुप करे रइल। एर चेये हासा भालो छिल।

मधुसूदन बलले, "एलाचदाना लुकिये खाबार की दरकार? एते लज्जा की बलो। रोज आनिये देब--कत चाओ? आमाके आगे बलले ना केन।"

कुमु बलले, "तुमि पारबे ना आनिये दिते।"

"पारब ना! अवाक करले तुमि।"

"ना, पारबे ना।"

"असम्भव दाम नाकि एर।"

"हाँ, टाकाय मेले ना।"

शुनेइ मधुर माथाय चट करे एकटा सन्देह जागल—बलले, "तोमार दादा पार्सेल करे पाठियेछेन बुझि।"

ए-प्रश्नेर जबाब दिते कुमुर इच्छे हल ना। फलदानिटा ठेले दिये चले याबार जन्ये उठे दाँड़ाल। मधुसूदन हात धरे आबार जोर करे ताके बसिये दिले।

मधुसूदनके कोनो कथा बलते ना दियेइ कुमु ताके प्रश्न करले, "दादार बाड़ि थेके तोमार काछे लोक एसेछिल ताँर खबर निये?"

ए-कथाटा कुमु आगेइ शुने फेलेछे जेने मधुर मन भारि विरक्त हये उठल। बलले, "सेइ खबर देबार जन्येइ तो आज सकाले तोमार काछे एसेछि।" बला बाहुल्य एटा मिथ्ये कथा।

"दादा कबे आसबेन?"

"हप्ताखानेकेर मध्ये।"

मधु निश्चित जानत कालइ विप्रदास आसबे, "हप्ताखानेक" कथाटा व्यवहार करे खबरटाके अनिर्दिष्ट करे रेखे दिले।

"दादार शरीर कि आरओ खाराप हयेछे ?"

"ना, तेमन किछु तो शुनलुम ना ।"

ए-कथाटार मध्येओ एकटुखानि पाश-काटानो छिल । विप्रदास चिकित्सार जन्यइ कलकाताय आसछे—तार अर्थ, शरीर अन्तत भालो नेइ ।

"दादार चिठि कि एसेछे ?"

"चिठिर बाक्स तो एखनओ खुलि नि, यदि थाके तोमाके पाठिये देब ।"

कुमु मधुसूदनेर कथा अविश्वास करते आरम्भ करेनि, सुतरां ए-कथाटाओ मेने निले ।

"दादार चिठि एसेछे कि ना एकबार खोंज करबे कि ?"

"यदि एसे थाके, खाओयार परे दुपुरवेला निजेइ निये आसब ।"

कुमु अधैर्य दमन करे नीरवे सम्मत हल । तखन आर-एकबार मधुसूदन कुमुर हातखाना टेने नेबार उपक्रम करछे एमन समय श्यामा हठात् घरेर मध्ये ढुकेइ बले उठल, "ओमा, ठाकुरपो ये !" बलेइ बेरिये येते उद्यत ।

मधुसूदन बलले, "केन, की चाइ तोमार ?"

"बउके भाँड़ारे डाकते एसेछि । राजरानी हलेओ घरेर लक्ष्मी तो बटे ; ता आज ना-हय थाक् ।" मधुसूदन सोफा थेके उठे कोनो कथा ना बले द्रुत बाइरे चले गेल ।

आहारेर पर यथारीति शोबार घरेर खाटे ताकियाय हेलान दिये पान चिबोते चिबोते मधुसूदन कुमुके डेके पाठाले । ताड़ाताड़ि कुमु चले एल । से जाने आज दादार चिठि पाबे । शोबार घरे ढुके खाटेर पाशे दाँड़िये रइल ।

मधुसूदन गुड़गुड़िर नलटा रेखे पाशे देखिये दिये बलले, "बसो ।"

कुमु बसल । मधुसूदन ताके ये-चिठि दिले ताते केवल एइ कयटि कथा आछे—

प्राणप्रतिमासु

शुभाशीर्वादराशयः सन्तु

चिकित्सार जन्य शीघ्रइ कलिकाताय याइतेछि । सुस्थ हइले तोमाके देखिते याइब । गृहकर्मेर अवकाशमतो माझे माझे कुशलसंवाद दिले निरुद्विग्न हइ ।

एइ छोटो चिठिटुकु मात्र पेये कुमुर मने प्रथमे एकटा धाक्का लागल । मनेमने बलले, "पर हये गेछि ।" अभिमानटा प्रबल हते ना हतेइ मने एल, "दादार हयतो शरीर भालो नेइ, आमार की छोटो मन । निजेर कथाटाइ सब-आगे मने पड़े ।"

मधुसूदन बुझते पारले कुमु उठि-उठि करछे ; बलले, "याच्छ कोथाय, एकटु बसो।"

कुमुके तो बसते बलले, किन्तु की कथा बलबे माथाय आसे ना। अविलम्बे किछु बलतेइ हबे, ताइ सकाल थेके ये-कथाटा निये ओर मने खटका रयेछे सेइटेइ मुख दिये बेरिये गेल। बलले, "सेइ एलाचदानार व्यापारटा निये एत हाङ्गामा करले केन। ओते लज्जार कथा की छिल।"

"ओ आमार गोपन कथा।"

"गोपन कथा। आमार काछेओ बला चले ना ?"

"ना।"

मधुसूदनेर गला कड़ा हये एल, बलले, "ए तोमादेर नुरनगरि चाल, दादार इस्कुले शेखा।"

कुमु कोनो जबाब करले ना। मधुसूदन ताकिया छेड़े उठे बसल, "ओइ चाल तोमार ना यदि छाड़ाते पारि ताहले आमार नाम मधुसूदन ना।"

"की तोमार हुकुम, बलो।"

"सेइ मोड़क के तोमाके दियेछिल बलो।"

"हाबलु।"

"हाबलु ! ता निये एत ढाकाढाकि केन।"

"ठिक बलते पारि ने।"

"आर केउ तार हात दिये पाठिये दियेछे ?"

"ना।"

"तबे ?"

"ओइ पर्यन्तइ ; आर कोनो कथा नेइ।"

"तबे एत लुकोचुरि केन ?"

"तुमि बुझते पारबे ना।"

कुमुर हात चेपे धरे झाँकानि दिये मधु बलले, "असह्य तोमार बाड़ाबाड़ि।"

कुमुर मुख लाल हये उठल, शान्तस्वरे बलले, "की चाओ तुमि, बुझिये बलो। तोमादेर चाल आमार अभ्येस नेइ से-कथा मानि।"

मधुसूदनेर कपालेर शिरदुटो फुले उठल। कोनो जबाब भेबे ना पेये इच्छे हल ओके मारे। एमन समय बाइरे थेके गला-खाँकारि शोना गेल, सेइ सङ्गे आओयाज एल, "आपिसेर सायेब एसे बसे आछे।" मने पड़ल आज डाइरेक्टरदेर मीटिङ। लज्जित हल ये से एजन्ये प्रस्तुत हय नि—

सकालटा प्राय सम्पूर्ण व्यर्थ गेछे। एतबड़ो शैथिल्य एतइ ओर स्वभाव- ओ अभ्यास-विरुद्ध ये, एटा सम्भव हल देखे ओ स्तम्भित।

४०

मधुसूदन चले येतेइ कुमु खाट थेके नेमे मेजेर उपर बसे पड़ल। चिर-जीवन धरे एमन समुद्रे कि ताके साँतार काटते हबे यार कूल कोथाओ नेइ? मधुसूदन ठिकइ बलेछे ओदेर सङ्गे तार चाल तफात। आर सकल रकम तफातेर चेये एइटेइ दुःसह। की उपाय आछे एर?

एक समये हठात् की मने पड़ल, कुमु चलल निचेर तलाय मोतिर मार घरेर दिके। सिंड़ि दिये नामबार समय देखे श्यामासुन्दरी उपरे उठे आसछे।

"की बउ, चलेछ कोथाय? आमि याच्छिलुम तोमार घरेइ।"

"कोनो कथा आछे?"

"एमन किछु नय। देखलुम ठाकुरपोर मेजाज किछु चड़ा, भावलुम तोमाके एकबार जिज्ञासा करे जानि, नतुन प्रणये खटका बाधल कोन्खानटाते। मने रेखो बउ, ओर सङ्गे की रकम करे बनिये चलते हय से-परामर्श आमराइ दिते पारि। बकुलफुलेर घरे चलेछ बुझि? ता याओ, मनटा खोलसा करे एस गे।"

आज हठात् कुमुर मने हल श्यामासुन्दरी आर मधुसूदन एकइ माटिते गड़ा एक कुमोरेर चाके! केन ए-कथा माथाय एल बला शक्त। चरित्र विश्लेषण करे किछु बुझेछे ता नय, आकारे-प्रकारे विशेष ये मिल ताओ नय, तबु दुजनेर भावगतिकेर एकटा अनुप्रास आछे येन श्यामासुन्दरीर जगते आर मधुसूदनेर जगते एकइ हाओया। श्यामासुन्दरी यखन बन्धुत्व करते आसे ताओ कुमुके उलटो दिके ठेला देय, गा केमन करे ओठे।

मोतिर मार शोबार घरे ढुकेइ कुमु देखले नवीने ताते मिले की एकटा निये हात-काड़ाकाड़ि चलछे। फिरे याबे याबे मने करछे, एमन समय नवीन बले उठल, "बउदिदि, येयो ना येयो ना। तोमार काछेइ याच्छिलुम; नालिश आछे।"

"किसेर नालिश?"

"एकटु बसो, दुःखेर कथा बलि।"

तक्तपोशेर उपर कुमु बसल।

नवीन बलले, "बड़ो अत्याचार! एइ भद्रमहिला आमार बइ रेखेछेन लुकिये।"

"एमन शासन केन ?"

"ईर्षा,—येहेतु निजे इंरेजि पड़ते पारेन ना। आमि स्त्री-शिक्षार पक्षे, किन्तु उनि स्वामी-जातिर एडुकेशनेर विरोधी। आमार बुद्धिर यतइ उन्नति हच्छे, ओंर बुद्धिर सङ्गे ततइ गरमिल हओयाते ओँर आक्रोश। अनेक करे बोझालेम ये, एतबड़ो ये सीता तिनिओ रामचन्द्रेर पिछने पिछनेइ चलवेन; विद्येबुद्धिते आमि ये तोमार चेये अनेक दूरे एगिये एगिये चलछि एते बाधा दियो ना।"

"तोमार विद्येर कथा मा सरस्वती जानेन, किन्तु बुद्धिर बड़ाइ करते एसो ना बलछि।"

नवीनेर महा विपदेर भान करा मुखभङ्गि देखे कुमु खिलखिल करे हेसे उठल। ए-बाड़िते एसे अवधि एमन मन खुले हासि एइ ओर प्रथम। एइ हासि नवीनेर बड़ो मिष्टि लागल। से मने-मने बलले, "एइ आमार काज हल, आमि बउरानीके हासाब।"

कुमु हासते हासते जिज्ञासा करले, "केन भाइ, ठाकुरपोर बइ लुकिये रेखेछ ?"

"देखो तो दिदि। शोबार घरे कि ओंर पाठशालार गुरुमशाय बसे आछेन ? खेटेखुटे रात्तिरे घरे एसे देखि एकटा पिद्दिम ज्वलछे, तार सङ्गे आर-एकटा बातिर सेज, महापण्डित पड़ते बसे गेछेन। खाबार ठाण्डा हये याय, तागिदेर पर तागिद, हुँश नेइ।"

"सत्यि ठाकुरपो ?"

"बउरानी, खाबार भालोबासि ने एतबड़ो तपस्वी नइ, किन्तु तार चेये भालोबासि ओँर मुखेर मिष्टि तागिद। सेइ जन्येइ इच्छे करे खेते देरि हये याय, बइ पड़ाटा एकटा अछिले।"

"ओँर सङ्गे कथाय हार मानि।"

"आर आमि हार मानि यखन उनि कथा बन्ध करेन।"

"ताओ कखनो घटे नाकि ठाकुरपो ?"

"दुटो एकटा खुब ताजा दृष्टान्त दिइ ता हले। अश्रुजलेर उज्ज्वल अक्षरे मने लेखा रयेछे।"

"आच्छा, आच्छा तोमार आर दृष्टान्त दिते हबे ना। एखन आमार चाबि कोथाय बलो। देखो तो दिदि, आमार चाबि लुकिये रेखेछेन।"

"घरेर लोकेर नामे तो पुलिस-केस करते पारि ने, ताइ चोरके चुरि दिये शासन करते हय। आगे दाओ आमार बइ।"

"तोमाके देब ना, दिदिके दिच्छि।" घरेर कोणे एकटा झुड़िते रेशम-पशम, टुकरा कापड़, छेंड़ा मोजा जमे छिल ; तारइ तला थेके एकखाना इंरेजि संक्षिप्त एन्साइक्लोपीडियार द्वितीय खण्ड बेर करे मोतिर मा कुमुर कोलेर उपर रेखे बलले, "तोमार घरे निये याओ दिदि, ओंके दियो ना ; देखि तोमार सङ्गे की रकम रागारागि करेन।"

नवीन मशारिर चालेर उपर थेके चाबि तुले निये कुमुर हाते दिये बलले, "आर काउके दियो ना बउदिदि, देखब आर केउ तोमार सङ्गे की रकम व्यवहार करेन।"

कुमु बइयेर पाता ओलटाते ओलटाते बलले, "एइ बइये बुझि ठाकुरपोर शख ?"

"ओंर शख नेइ एमन बइ नेइ। सेदिन देखि कोथा थेके एकखाना गो-पालन जुटिये निये पड़ते बसे गेछेन।"

"निजेर देहरक्षार जन्ये ओटा पड़िने, अतएव एते लज्जार कारण किछु नेइ।"

"दिदि, तोमार की एकटा कथा बलबार आछे। चाओ तो, एइ वाचा-लटिके एखनइ विदाय करे दिइ।"

"ना, तार दरकार नेइ। आमार दादा दुइ-एकदिनेर मध्ये आसबेन शुनेछि।"

नवीन बलले, "हाँ, तिनि कालइ आसबेन।"

"काल।" विस्मित हये कुमु खानिकक्षण चुप करे बसे रइल। निश्वास फेले बलले, "की करे ताँर सङ्गे देखा हबे ?"

मोतिर मा जिज्ञासा करले, "तुमि बड़ोठाकुरके किछु बल नि ?"

कुमु माथा नेड़े जानाले ये, ना।

नवीन बलले, "एकबार बले देखबे ना ?"

कुमु चुप करे रइल। मधुसूदनेर काछे दादार कथा बला बड़ो कठिन। दादार प्रति अपमान ओर घरेर मध्ये उद्यत ; ताके एकटुओ नाड़ा दिते ओर असह्य संकोच।

कुमुर मुखेर भाव देखे नवीनेर मन व्यथित हये उठल। बलले, "भावना क'रो ना बउदिदि, आमरा सब ठिक करे देब, तोमाकें किछु बलते कइते हबे ना।"

दादार काछे नवीनेर शिशुकाल थेके अत्यन्त एकटा भीरुता आछे। बउदिदि एसे आज सेइ भयटा ओर मन थेके भाङाले बुझि।

कुमु चले गेले मोतिर मा नवीनके बलले, "की उपाय करबे बलो देखि ? सेदिन रात्रे तोमार दादा यखन आमादेर डेके निये एसे बउयेर काछे निजेके खाटो करलेन तखनइ बुझेछिलुम सुविधे हल ना। तार पर थेके तोमाके देखलेइ तो मुख फिरिये चले यान।"

"दादा बुझेछेन ये, ठका हल; झोँकेर माथाय थलि उजाड़ करे आगाम दान देओया हये गेछे, एदिके ओजनमतो जिनिस मिलल ना। आमरा ओंर बोकामिर साक्षी छिलुम ताइ आमादेर सइते पारछेन ना।"

मोतिर मा बलले, "ता होक, किन्तु विप्रदासबाबुर उपरे रागटा ओंके येन पागलामिर मतो पेये बसेछे, दिने दिने बेड़ेइ चलल। ए की अनाछिष्टि बलो दिकि।"

नवीन बलले, "ओ-मानुषेर भक्तिर प्रकाश ओइ रकमइ ! एइ जातेर लोकेराइ भितरे भितरे याके श्रेष्ठ बले जाने बाइरे ताके मारे। केउ केउ बले रामेर प्रति रावणेर असाधारण भक्ति छिल, ताइ बिश हात दिये नैवेद्य चालात। आमि तोमाके बले दिच्छि दादार सङ्गे बउरानीर देखासाक्षात् सहजे हबे ना।"

"ता बलले चलबे ना, किछु उपाय करतेइ हबे।"

"उपाय माथाय एसेछे।"

"की बलो देखि।"

"बलते पारब ना।"

"केन बलो तो ?"

"लज्जा बोध करछि।"

"आमाकेओ लज्जा ?"

"तोमाकेइ लज्जा।"

"कारणटा शुनि ?"

"दादाके ठकाते हबे। से तोमार शुने काज नेइ।"

"याके भालोबासि तार जन्ये ठकाते एकटुओ संकोच करि ने।"

"ठकानो विद्येय आमार उपर दियेइ हात पाकियेछ बुझि ?"

"ओ-विद्ये सहजे खाटाबार उपयुक्त एमन मानुष पाब कोथाय !"

"ठाकरुन, राजिनामा लिखे-पड़े दिच्छि, यखन खुशि ठकियो।"

"एत फुर्ति केन शुनि ?"

"बलब ? विधाता तोमादेर हाते ठकाबार ये-सब उपाय दियेछेन ताते मधु दियेछेन ढेले। सेइ मधुमय ठकानोकेइ बले माया।"

"सेटा तो काटानोइ भालो।"

"सर्वनाश ! माया गेले संसारे रइल की ? मूर्तिर रङ खसिये फेलले बाकि थाके खड़माटि। देवी, अबोधके भोलाओ, ठकाओ, चोखे घोर लागाओ, मने नेशा जागाओ, या खुशि करो।"

एर परे या कथावार्ता चलल से एकेबारेइ काजेर कथा नय, ए गल्पेर सङ्गे तार कोनो योग नेइ।

४१

मीटिङे एइबार मधुसूदनेर प्रथम हार। ए-पर्यन्त ओर कोनो प्रस्ताव कोनो व्यवस्था केउ कखनो टलाय नि। निजेर 'परे ओर विश्वास येमन, ओर प्रति ओर सहयोगीदेरओ तेमनि विश्वास। एइ भरसातेइ मीटिङे कोनो जरुरि प्रस्ताव पाका करे नेबार आगेइ काज अनेक दूर एगिये राखे। एबारे पुरोनो नीलकुठिओआला एकटा पत्तनि तालुक ओदेर नीलेर कारबारेर शामिल किने नेबार बन्दोबस्त करछिल। ए निये खरचपत्रओ हये गेछे। प्राय समस्तइ ठिकठाक ; दलिल स्टयाम्पे चड़िये रेजेस्टारि करे दाम चुकिये देबार अपेक्षा ; ये सब लोक नियुक्त करा आवश्यक तादेर आशा दिये राखा हयेछे ; एमन समय एइ बाधा। सम्प्रति ओदेर कोनो ट्रेजारारेर पद खालि हओयाते सम्पर्कीय एकटि जामातार जन्य उमेदारि चलेछिल, अयोग्य-उद्धारणे उत्साह ना थाकाते मधुसूदन कान देय नि। सेइ व्यापारटा बीजेर मतो माटि चापा थेके हठात् विरुद्धतार आकारे अंकुरित हये उठल। एकटु छिद्रओ छिल। तालुकेर मालेक मधुसूदनेर दूरसम्पर्कीय पिसिर भाशुर-पो। पिसि यखन हाते पाये एसे धरे तखन ओ हिसेब करे देखले नेहात सस्ताय पाओया याबे, मुनाफाओ आछे, तार उपरे आत्मीयदेर काछे मुरु-ब्बियाना करबार गौरव। याँर अयोग्य जामाइ ट्रेजारार पद थेके वञ्चित, तिनिइ मधुसूदनेर स्वजनवात्सल्येर प्रमाण बहु सन्धाने आविष्कार ओ यथा-स्थाने प्रचार करेछेन। ताछाड़ा कोम्पानिर सकल रकम केनाबेचाय मधुसूदन ये गोपने कमिशन निये थाकेन, एइ मिथ्या सन्देह काने-काने सञ्चारित करबार भारओ तिनिइ नियेछिलेन। ए-सकल निन्दार प्रमाण अधिकांश लोक दावि करे ना। कारण तादेर निजेर भितरे ये-लोभ आछे सेइ हच्छे अन्तरतम ओ प्रबलतम साक्षी। लोकेर मनके बिगड़िये देओया एकटा कारणे सहज छिल, से कारण हच्छे मधुसूदनेर असामान्य श्रीवृद्धि, एवं तार खाँटि चरित्रेर असह्य सुख्याति। मधुसूदनओ डुबे डुबे जल खाय एइ अपवादे

सेइ लोलुपरा परम शान्ति पेल, गभीर जले डुब देबार आकांक्षाय यादेर मनटा पानकौड़ि-विशेष, अथच हातेर काछे यादेर जलाशय नेइ।

मालेकके मधुसूदन पाका कथा दियेछिल। क्षतिर आशङ्काय कथा खेलाप करबार लोक से नय। ताइ निजे किनबे ठिक करेछे; आर पण करेछे कोम्पानिके देखिये देबे, ना किने तारा ठकल।

मधुसूदन विलम्बे बाड़ि फिरे एल। निजेर भाग्येर प्रति मधुसूदनेर अन्ध विश्वास जन्मे गियेछिल, आज तार भय लागल ये, जीवनयात्रार गाड़िटाके अदृष्ट एक पर्यायेर लाइन थेके आर-एक पर्यायेर लाइने चालान करे दिच्छे वा। प्रथम झाँकानितेइ बुकटा धड़ास करे उठल। मीटिङ थेके फिरे एसे आपिसघरे केदारा हेलान दिये गुड़गुड़िर धूमकुण्डलेर सङ्गे निजेर कालो रङेर चिन्ताके कुण्डलायित करते लागल।

नवीन एसे खबर दिले विप्रदासेर बाड़ि थेके लोक एसेछे देखा करते। मधुसूदन झेँके उठे बलले, "येते बले दाओ, आमार एखन समय नेइ।"

नवीन मधुसूदनेर भावगतिक देखे बुझले मीटिङे एकटा अपघात घटेछे। बुझले दादार मन एखन दुर्बल। दौर्बल्य स्वभावत अनुदार, दुर्बलेर आत्म-गरिमा क्षमाहीन निष्ठुरतार रूप धरे। दादार आहत मन बउरानीके कठिनभावे आघात करते चाइबे एते नवीनेर सन्देहमात्र छिल ना। ए आघात ये करेइ होक ठेकातेइ हबे। एर पूर्व पर्यन्त ओर मने द्विधा छिल, से द्विधा सम्पूर्ण गेल केटे। किछुक्षण घुरे फिरे आबार घरे एसे देखले ओर दादा ठिकानाओआला नामेर फर्देर खाता निये पाता ओलटाच्छे। नवीन एसे दाँड़ातेइ मधुसूदन मुख तुले रुक्ष स्वरे जिज्ञासा करले, "आबार किसेर दरकार। तोमादेर विप्रदासबाबुर मोक्तारि करते एसेछ बुझि ?"

नवीन बलले, "ना दादा, से-भय नेइ। ओदेर लोकटा एमन ताड़ा खेये गेछे ये तुमि निजेओ यदि डेके पाठाओ तबु से ए-बाड़ि-मुखो हबे ना।"

ए-कथाटाओ मधुसूदनेर सह्य हल ना। बले उठल, "कड़े आंगुलटा नाड़लेइ पायेर काछे एसे पड़ते हबे। लोकटा एसेछिल की करते ?"

"तोमाके खबर दिते ये विप्रदासबाबुर कलकाता आसा दुदिन पिछिये गेल। शरीर आर-एकटु सेरे तबे आसबेन।"

"आच्छा आच्छा, से-जन्ये आमार ताड़ा नेइ।"

नवीन बलले, "दादा, काल सकाले घण्टा दुयेर जन्ये छुटि चाइ।"

"केन ?"

"शुनले तुमि राग करबे।"

"ना शुनले आरओ राग करब।"

"कुम्भकोनाम थेके एक ज्योतिषी एसेछेन ताँके दिये एकबार भाग्य-परीक्षा कराते चाइ।"

मधुसूदनेर बुकटा धड़ास करे उठल, इच्छे करल एखनइ छुटे तार काछे याय। मुखे तर्जन करे बलले, "तुमि विश्वास कर?"

"सहज अवस्थाय करि ने, भय लागलेइ करि।"

"भयटा किसेर शुनि?"

नवीन कोनो जवाब ना करे माथा चुलकोते लागल।

"भयटा काके बलोइ ना।"

"ए-संसारे तोमाके छाड़ा आर काउके भय करि ने। किछुदिन थेके तोमार भावगतिक देखे मन सुस्थिर हच्छे ना।"

संसारेर लोक मधुसूदनके बाघेर मतो भय करे एइटेते तार भारि तृप्ति। नवीनेर मुखेर दिके ताकिये निःशब्दे गम्भीरभावे से गुड़गुड़ि टानते टानते निजेर माहात्म्य अनुभव करते लागल।

नवीन बलले, "ताइ एकबार स्पष्ट करे जानते चाइ ग्रह की करते चान आमाके निये। आर तिनि छुटिइ वा देबेन कोन् नागात।"

"तोमार मतो नास्तिक, तुमि किछु विश्वास कर ना, शेषकाले—"

"देवतार 'परे विश्वास थाकले ग्रहके विंश्वास करतुम ना दादा। डाक्तारके ये माने ना हातुड़ेके मानते तार बाधे ना।"

निजेर ग्रहके याचाइ करे नेबार जन्ये मधुसूदनेर ये परिमाण आग्रह हल, सेइ परिमाण झाँजेर सङ्गे बलले, "लेखापड़ा शिखे बाँदर, तोमार एइ विद्ये? ये या बले ताइ विश्वास कर?"

"लोकटार काछे ये भृगुसंहिता रयेछे—येखाने ये-केउ ये-कोनो काले जन्मेछे, जन्मावे, सकलेर कुष्ठि एकेवारे तैरि, संस्कृत भाषाय लेखा, एर उपर तो आर कथा चले ना। हाते-हाते परीक्षा करे देखे नाओ।"

"बोका भुलिये यारा खाय, विधाता तादेर पेट भरावार जन्ये यथेष्ट परिमाणे तोमादेर मतो बोकाओ सृष्टि करे राखेन।"

"आबार सेइ बोकादेर बाँचाबार जन्ये तोमादेर मतो बुद्धिमानओ सृष्टि करेन। ये मारे तार उपरे ताँर येमन दया, याके मारे तार उपरेओ तेमनि। भृगुसंहितार उपरे तोमार तीक्ष्ण बुद्धि चालिये देखोइ ना।"

"आच्छा, बेश, काल सकालेइ आमाके निये येयो, देखब तोमार कुम्भ-कोनामेर चालाकि।"

"तोमार ये-रकम जोर अविश्वास दादा, ओते गणनाय गोल हये येते पारे। संसारे देखा याय मानुषके विश्वास करले मानुष विश्वासी हये ओठे। ग्रहदेरओ ठिक सेइ दशा, देखो ना केन साहेबगुलो ग्रह माने ना बले ग्रहेर फल ओदेर उपर खाटे ना। सेदिन तेरोस्पर्श बेरिये तोमादेर छोटो-सायेब घोड़दौड़े बाजि जिते एल——आमि हले बाजि जेता दुरस्तां घोड़ाटा छिटके एसे आमार पेटे लाथि मेरे येत। दादा, एइ सब ग्रहनक्षत्रेर हिसेबेर उपर तोमादेर बुद्धि खाटाते येयो ना, एकटु विश्वास मने रेखो।"

मधुसूदन खुशि हये स्मितहास्ये गुड़गुड़िते मनोयोग दिले।

परदिन सकाल सातटार मध्ये मधुसूदन नवीनेर सङ्गे एक सरु गलिर आवर्जनार भितर दिये वेङ्कट शास्त्रीर बासाय गिये उपस्थित। अन्धकार एकतलार भापसा घर; लोनाधरा देयाल क्षतविक्षत, येन सांघातिक चर्म-रोगे आक्रान्त, तक्तपोशेर उपर छिन्न मलिन एकखाना शतरञ्च, एक प्रान्ते कतकगुलो पुँथि एलोमेलो जड़ो-करा, देयालेर गाये शिवपार्वतीर एक पट। नवीन हाँक दिले, "शास्त्रीजि"। मयला छिटेर बालापोश गाये, सामनेर माथा कामानो, झुँटिओआला, कालो बेंटे रोगा एक व्यक्ति घरे एसे ढुकल; नवीन ताके घटा करे प्रणाम करले। चेहारा देखे मधूसूदनेर एकटुओ भक्ति हय नि——किन्तु दैवेर सङ्गे दैवज्ञेर कोनोरकम घनिष्ठता आछे जेने भये-भये ताड़ाताड़ि एकटा आधाआधि रकम अभिवादन सेरे निले। नवीन मधुसूदनेर एकटि ठिकुजि ज्योतिषीर सामने धरतेइ सेटा अग्राह्य करे शास्त्री मधुसूदनेर हात देखते चाइले। काठेर बाक्स थेके कागज-कलम बेर करे निये निजे एकटा चक्र तैरि करे निले। मधुसूदनेर मुखेर दिके चेये बलले, "पञ्चम वर्ग।" मधुसूदन किछुइ बुझले ना। ज्योतिषी आङुलेर पर्व गुनते गुनते आउड़े गेल, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग। एतेओ मधुसूदनेर बुद्धि खोलसा हल ना। ज्योतिषी बलले, "पञ्चम वर्ण"। मधुसूदन धैर्य धरे चुप करे रइल। ज्योतिषी आओड़ाल, प, फ, ब, भ, म। मधुसूदन एर थेके एइटुकु बुझले ये, भृगुमुनि व्याकरणेर प्रथम अध्याय थेकेइ तार संहिता शुरु करेछेन। एमन समय वेङ्कट शास्त्री बले उठल, "पञ्चाक्षरकं।"

नवीन चकित हये मधुसूदनेर काछे चुपि चुपि बलले, "बुझेछि दादा।"

"की बुझले।"

"पञ्चम वर्गेर पञ्चम वर्ण म, तार परे पञ्च अक्षर म-धु-सू-द-न। जन्म-ग्रहेर अद्‌भुत कृपाय तिनटे पाँच एक जायगाय मिलेछे।"

मधुसूदन स्तम्भित। बाप माये नाम राखबार कत हाजार बछर

आगेइ नामकरण भृगुमुनिर खाताय! नक्षत्रदेर ए की काण्ड! तार परे हतबुद्धि हये शुने गेल ओर जीवनेर संक्षिप्त अतीत इतिहास संस्कृत भाषाय रचित। भाषा यत कम बुझले, भक्ति ततइ बेड़े उठल। जीवनटा आगा-गोड़ा ऋषिवाक्य मूर्तिमान। निजेर बुकेर उपर हात बुलिये देखले, देहटा अनुस्वार-विसर्ग-तद्धित-प्रत्ययेर मसला दिये तैरि कोन् तपोवने लेखा एकटा पुँथिर मतो। तार पर दैवज्ञेर शेष कथाटा एइ ये, मधुसूदनेर घरे एकदा लक्ष्मीर आविर्भाव हबे बले पूर्व हतेइ घरे अभावनीय सौभाग्येर सूचना। अल्पदिन हल तिनि एसेछेन नववधूके आश्रय करे। एखन थेके सावधान। केन ना इनि यदि मनःपीड़ा पान, भाग्य कुपित हबे।

वेङ्कट शास्त्री बलले, कोपेर लक्षण देखा दियेछे। जातक यदि एखनओ सतर्क ना हय विपद बेड़े चलबे। मधुसूदन स्तम्भित हये बसे रइल। मने पड़े गेल विवाहेर दिनइ प्रकाण्ड सेइ मुनफार खबर; आर तार कयदिनेर मध्येइ एइ पराभव। लक्ष्मी स्वयं आसेन सेटा सौभाग्य, किन्तु तार दायित्वटा कम भयंकर नय।

फेरबार समय मधुसूदन गाड़िते स्तब्ध हयेइ बसे रइल। एक समय नवीन बले उठल, "ओइ वेङ्कट शास्त्रीर कथा एकटुओ विश्वास करि ने; निश्चय ओ कारओ काछ थेके तोमार समस्त खबर पेयेछे।"

"भारि बुद्धि तोमार! येखाने यत मानुष आछे आगेभागे तार खबर निये रेखे दिच्छे; सोजा कथा किना!"

"मानुष जन्माबार आगेइ तार कोटि कोटि कुष्ठि लेखार चेये एटा अनेक सोजा। भृगुमुनि एत कागज पाबेन कोथाय, आर वेङ्कट स्वामीर ओइ घरे एत जायगा हबे केमन करे?"

"एक आँचड़े हाजारटा कथा लिखते जानतेन ताँरा।"

"असम्भव।"

"या तोमार बुद्धिते कुलोय ना ताइ असम्भव। भारि तोमार सायान्स! एखन तर्क रेखे दाओ, सेदिन ओदेर बाड़ि थेके ये-सरकार एसेछिल, ताके तुमि निजे गिये डेके एनो। आजइ, देरि क'रो ना।"

दादाके ठकिये नवीनेर मनेर भितरटाते अत्यन्त अस्वस्ति बोध हते लागल। फन्दिटा एत सहज, एर सफलताटा दादार पक्षे एत हास्यकर ये, तारइ अमर्यादाय ओके लज्जा ओ कष्ट दिले। दादाके उपस्थितमतो छोटो अनेक फाँकि अनेकबार दिते हयेछे, किछु मने हय नि; किन्तु एत करे साजिये एतबड़ो फाँकि गड़े तोलार ग्लानि ओर चित्तके अशुचि करे रेखे दिले।

४२

मधुसूदनेर मन थेके मस्त एकटा भार गेल नेमे, आत्मगौरवेर भार—ये-कठोर गौरव-बोध ओर विकाशोन्मुख आनुरक्तिके केवलइ पाथर-चापा दियेछे। कुमुर प्रति ओर मन यखन मुग्ध तखनओ सेइ विह्वलतार विरुद्धे भितरे भितरे चलेछिल लड़ाइ। यतइ अनन्यगति हये कुमुर काछे धरा दियेछे, ततइ निजेर अगोचरे कुमुर 'परे ओर क्रोध जमेछे। एमन समये स्वयं नक्षत्रदेर काछ थेके यखन आदेश एल ये, लक्ष्मी एसेछेन घरे, ताँके खुशि करते हबे, सकल द्वन्द्व घुचे गिये ओर देहमन येन रोमाञ्चित हये उठल, बार बार आपन मने आवृत्ति करते लागल,——लक्ष्मी, आमारइ घरे लक्ष्मी, आमार भाग्येर परम दान। इच्छे करते लागल,——एखनइ समस्त संकोच भासिये दिये कुमुर काछे स्तुति जानिये आसे, बले आसे, "यदि कोनो भुल करे थाकि, अपराध नियो ना।" किन्तु आज आर समय नेइ, व्यवसायेर भाङन सारबार काजे एखनइ आपिसे छुटते हबे, बाड़िते खेये याबार अवकाश पर्यन्त जुटल ना।

एदिके समस्तदिन कुमुर मनेर मध्ये तोलपाड़ चलेछे। से जाने काल दादा आसबेन, शरीर ताँर असुस्थ। ताँर सङ्गे देखाटा सहज हबे किना निश्चित जानबार जन्ये मन उद्विग्न हये आछे। नवीन कोथाय काजे गेछे, एखनओ एल ना। से निःसन्देह जानत आज स्वयं मधुसूदन एसे बउरानीके सकल रकमे प्रसन्न करबे ; आगेभागे कोनो आभास दिये रसभङ्ग करते चाय ना।

आज छाते बसबार सुविधा छिल ना। काल सन्ध्या थेके मेघ करे आछे, आज दुपुर थेके टिपटिप करे वृष्टि शुरु हल। शीतकालेर बादला, अनिच्छित अतिथिर मतो। मेघे रङ नेइ, वृष्टिते ध्वनि नेइ, भिजे वातासटा येन मन-मरा, सूर्यालोकहीन आकाशेर दैन्ये पृथिवी संकुचित। सिड़ि थेके उठेइ शोबार घरे ढोकबार पथे ये-ढाका छाद आछे सेइखाने कुमु माटिते बसे। थेके थेके गाये वृष्टिर छाँट आसछे। आज एइ छायाम्लान आर्द्र एकघेये दिने कुमुर मने हल, तार निजेर जीवनटा ताके येन अजगरेर मतो गिले फेलेछे, तारइ क्लेदाक्त जठरेर रुद्धतार मध्ये कोथाओ एकटुमात्र फाँक नेइ। ये-देवता ओके भुलिये आज एइ निरुपाय नैराश्येर मध्ये एने फेलले तार उपरे ये-अभिमान ओर मने घोँयाच्छिल आज सेटा क्रोधेर आगुने ज्वले उठल। हठात् द्रुत उठे पड़ल। डैस्क खुले बेर करले सेइ युगल-रूपेर पट। रंगिन

रेशमेर छिट दिये सेटा मोड़ा। सेइ पट आज ओ नष्ट करे फेलते चाय। येन चीत्कार करे बलते चाय, तोमाके आमि एकटुओ विश्वास करि ने। हात काँपछे, ताइ ग्रन्थि खुलते पारछे ना; टानाटानिते सेटा आरओ आँट हये उठल, अधीर हये दाँत दिये छिँड़े फेलले। अमनि चिरपरिचित सेइ मूर्ति अनावृत हतेइ आर से थाकते पारले ना; ताके बुके चेपे धरे केँदे उठल। काठेर फ्रेम बुके यत बाजे ततइ आरओ बेशि चेपे धरे।

एमन समय शोबार घरे एल मुरली बेहारा बिछाना करते। शीते काँपछे तार हात। गाये एकखाना जीर्ण मयला रयापार। माथाय टाक, रग टेपा, गाल बसा, किछुकालेर ना-कामानो काँचापाका दाड़ि खोँचा खोँचा हये उठेछे। अनतिकाल पूर्बेइ से म्यालेरियाय भुगेछिल, शरीरे रक्त नेइ बललेइ हय, डाक्तार बलेछिल काज छेड़े दिये देशे येते, किन्तु निष्ठुर नियति।

कुमु बलले, "शीत करछे मुरली?"

"हाँ मा, बादल करे ठाण्डा पड़ेछे।"

"गरम कापड़ नेइ तोमार?"

"खेताब पाबार दिने महाराजा दियेछिलेन, नातिर खाँसिर बेमारि हतेइ डाक्तारेर कथाय ताके दियेछि मा।"

कुमु एकटि पुरानो छाइ रङेर आलोयान पाशेर घरेर आलमारि थेके बेर करे एने बलले, "आमार एइ कापड़टि तोमाके दिलुम।"

मुरली गड़ हये बलले, "माप करो, मा, महाराजा राग करबेन।"

कुमुर मने पड़े गेल, ए-बाड़िते दया करबार पथ संकीर्ण। किन्तु ठाकुरेर काछ थेके निजेर जन्येओ ये ओर दया चाइ, पुण्यकर्म तारइ पथ। कुमु क्षोभेर सङ्गे आलोयानटा माटिते फेले दिले।

मुरली हात जोड़ करे बलले, "रानीमा, तुमि मा लक्ष्मी, राग कोरो ना। गरम कापड़े आमार दरकार हय ना। आमि थाकि हुँकाबरदारेर घरे, सेखाने गामलाय गुलेर आगुन, आमि बेश गरम थाकि।"

कुमु बलले, "मुरली, नवीन ठाकुरपो यदि बाड़ि एसे थाकेन ताँके डेके दाओ।"

नवीन घरे ढुकतेइ कुमु बलले, "ठाकुरपो तोमाके एकटि काज करतेइ हबे। बलो, करबे?"

"निजेर अनिष्ट यदि हय एखनइ करब, किन्तु तोमार अनिष्ट हले किछुतेइ करब ना।"

"आमार आर कत अनिष्ट हबे? आमि भय करि ने।" बले निजेर

हात थेके मोटा सोनार बालाजोड़ा खुले बलले, "आमार एइ बाला बेचे दादार जन्ये स्वस्त्ययन कराते हबे।"

"किछु दरकार हबे ना, बउरानी, तुमि ताँके ये भक्ति कर तारइ पुण्ये प्रतिमुहूर्त ताँर जन्ये स्वस्त्ययन हच्छे।"

"ठाकुरपो, दादार जन्ये आर किछुइ करते पारब ना। केवल यदि पारि देवतार द्वारे ताँर जन्ये सेवा पौंछिये देब।"

"तोमाके किछु करते हबे ना, बउरानी। आमरा सेवक आछि की करते?"

"तोमरा की करते पार बलो?"

"आमरा पापिष्ठ, पाप करते पारि। ताइ करेओ यदि तोमार कोनो काजे लागि ताहले धन्य हब।"

"ठाकुरपो, ए-कथा निये ठाट्टा क'रो ना।"

"एकटुओ ठाट्टा नय। पुण्य करार चेये पाप करा अनेक शक्त काज, देवता यदि ता बुझते पारेन ताहले पुरस्कार देबेन।"

नवीनेर कथार भावे देवतार प्रति उपेक्षा कल्पना करे कुमुर मने स्वभावत आघात लागते पारत, किन्तु तार दादाओ ये मने मने देवताके श्रद्धा करे ना, एइ अभक्तिर'परे से राग करते पारे ना ये। छोटो छेलेर दुष्टुमिर 'परेओ मायेर येमन सकौतुक स्नेह, एइ रकम अपराधेर 'परे ओरओ सेइ भाव।

कुमु एकटु म्लान हासि हेसे बलले, "ठाकुरपो, संसारे तोमरा निजेर जोरे काज करते पार; आमादेर ये सेइ निजेर जोर खाटाबार जो नेइ। यादेर भालोबासि अथच नागाल मेले ना, तादेर काज करब की करे? दिन ये काटे ना, कोथाओ ये रास्ता खुँजे पाइ ने। आमादेर की दया कर-बार कोथाओ केउ नेइ?"

नवीनेर चोख जले भेसे उठल।

"दादाके उद्देश करे आमाके किछु करतेइ हबे ठाकुरपो, किछु दितेइ हबे। एइ बाला आमार मायेर, सेइ आमार मायेर हयेइ ए-बाला आमार देवताके आमि देब।"

"देवताके हाते करे दिते हय ना बउरानी, तिनि एमनि नियेछेन। दुदिन अपेक्षा करो, यदि देख तिनि प्रसन्न हन नि, ताहले या बलबे ताइ करब। ये-देवता तोमाके दया करेन ना ताँकेओ भोग दिये आसब।"

रात्रि अन्धकार हये एल—बाइरे सिंड़िते ओइ सेइ परिचित जुतोर

शब्द। नवीन चमके उठल, बुझले दादा आसछे। पालिये गेल ना, साहस करे दादार जन्ये अपेक्षा करेइ रइल। एदिके कुमुर मन एक मुहूर्त निरतिशय संकुचित हये उठल। एइ अदृश्य विरोधेर धाक्काटा एमन प्रबल वेगे यखन तार प्रत्येक नाड़िके चमकिये तुलले, बड़ो भय हल। ए पाप केन ताके एत दुर्जय बले पेये बसेछे?

हठात् कुमु नवीनके जिज्ञासा करले, "ठाकुरपो, काउके जान यिनि आमाके गुरुर मतो उपदेश दिते पारेन?"

"की हबे बउरानी?"

"निजेर मनके निये ये पेरे उठछि ने।"

"से तोमार मनेर दोष नय।"

"विपदटा बाइरेर, दोषटा मनेर, दादार काछे एइ कथा बार बार शुनेछि।"

"तोमार दादाइ तोमाके उपदेश देबेन—भय क'रो ना।"

"सेदिन आमार आर आसबे ना।"

मधुसूदनेर विषयबुद्धिर सङ्गे तार भालोबासार आपस हये येतेइ सेइ भालोबासा मधुसूदनेर समस्त काजकर्मेर उपर दियेइ येन उपचे बये येते लागल। कुमुर सुन्दर मुखे तार भाग्येर वराभय दान। पराभवटि केटे याबे आजइ पेल तार आभास। काल यारा विरुद्धे मत दियेछिल आज तादेरइ मध्ये केउ केउ सुर फिरिये ओके चिठि लिखेछे। मधुसूदन येइ तालुकटा निजेर नामे किने नेबार प्रस्ताव करले अमनि कारओ कारओ मने हल ठकलुम बुझि। केउ केउ एमनओ भाव प्रकाश करले ये, कथाटा आर-एकबार विचार करा उचित।

गरहाजिर अपराधे आपिसेर दारोयानेर अर्धेक मासेर माइने काटा गियेछिल, आज टिफिनेर समय मधुसूदनेर पा जड़िये धरवामात्र मधुसूदन ताके माप करे दिले। माप करबार माने निजेर पकेट थेके दारोयानेर क्षतिपूरण; यदिच खाताय जरिमाना रये गेल। नियमेर व्यत्यय हबार जो नेइ।

आजकेर दिनटा मधुर पक्षे बड़ो आश्चर्येर दिन। बाइरे आकाशटा मेघे घोला, टिप् टिप् करे वृष्टि पड़छे, किन्तु एते करे ओर भितरेर आनन्द आरओ बाड़िये दिले। आपिस थेके फिरे एसे रात्रे आहारेर समयेर पूर्व पर्यन्त मधुसूदन बाइरेर घरे काटात। बियेर परे कयदिन असमये नियमेर विरुद्धे अन्तःपुरे याबार वेलाय लोकेर दृष्टि एड़ाबार चेष्टा करेछे। आज सशब्द पदक्षेपे बाड़िसुद्ध सबाइके येन जानिये दिते चाइल ये, से चलेछे

कुमुर सङ्गे देखा करते । आज बुझेछे पृथिवीर लोके ओके ईर्षा करते पारे एतबड़ो ओर सौभाग्य ।

खानिकक्षणेर जन्ये वृष्टि धरे गेछे । तखनओ सब घरे आलो ज्वले नि । आन्दिबुड़ि धुनुचि हाते धुनो दिये बेड़ाच्छे ; एकटा चामचिके उठोनेर उपरेर आकाश थेके लण्ठनज्वाला अन्त:पुरेर पथ पर्यन्त केवलइ चक्रपथे घुरछे । बारान्दाय पा मेले दिये दासीरा ऊरुर उपरे प्रदीपेर सलते पाकाच्छिल, ताड़াताड़ि उठे घोमटा टेने दौड़ दिले । पायेर शब्द पेये घर थेके बेरिए एल श्यामासुन्दरी, हाते बाटाते छिल पान । मधुसूदन आपिस थेके एले नियममतो एइ पान से बाइरे पाठिये दित । सबाइ जाने, ठिक मधुसूदनेर रुचिर मतो पान श्यामासुन्दरी साजाते पारे ; एइटे जानार मध्ये आरओ किछु-एकटु जानार इशारा छिल । सेइ जोरे पथेर मध्ये श्यामा मधुर सामने बाटा खुले धरे बलले, "ठाकुरपो, तोमार पान साजा आछे, निये याओ ।" आगे हले एइ उपलक्षे दुटो-एकटा कथा हत, आर सेइ कथाय अल्प एकटु मधुर रसेर आमेजओ लागत । आज की हल के जाने पाछे दूर थेकेओ श्यामार छोंयाच लागे सेइटे एड़िये पान ना निये मधुसूदन द्रुत चले गेल । श्यामार बड़ो बड़ो चोखदुटो अभिमाने ज्वले उठल, तार परे भेसे गेल अश्रुजलेर मोटा मोटा फोंटाय । अन्तर्यामी जानेन, श्यामासुन्दरी मधुसूदनके भालोबासे ।

मधुसूदन घरे ढुकतेइ नवीन कुमुर पायेर धुलो निये उठे दाँड़िये बलले, "गुरुर कथा मने रइल, खोंज करे देखब ।" दादाके बलले, "बउरानी गुरुर काछ थेके शास्त्र उपदेश शुनते चान । आमादेर गुरुठाकुर आछेन, किन्तु—"

मधुसूदन उत्तेजनार स्वरे बले उठल, "शास्त्र-उपदेश । आच्छा से देखब एखन, तोमाके किछु करते हबे ना ।"

नवीन चले गेल ।

मधुसूदन आज समस्त पथ मने-मने आवृत्ति करते करते एसेछिल, "बड़ोबउ, तुमि एसेछ, आमार घर आलो हयेछे ।" ए-रकम भावेर कथा बलबार अभ्यास ओर एकेबारेइ नेइ । ताइ ठिक करेछिल, घरे ढुकेइ द्विधा ना करे प्रथम झोंकेइ से बलबे । किन्तु नवीनके देखेइ कथाटा गेल ठेके । तार उपरे एल शास्त्र-उपदेशेर प्रसङ्ग, ओर मुख दिले एकेबारे बन्ध करे । अन्तरे ये आयोजनटा चलछिल, एइ एकटुखानि बाधातेइ निरस्त हये गेल । तार परे कुमुर मुखे देखले एकटा भयेर भाव, देहमनेर एकटा संकोच । अन्यदिन

हले एटा चोखे पड़त ना। आज ओर मने ये एकटा आलो ज्वलेछे ताते देखबार शक्ति हयेछे प्रबल, कुमु सम्बन्धे चित्तेर स्पर्शबोध हयेछे सूक्ष्म। आजकेर दिनेओ कुमुर मने एइ विमुखता, एटा ओर काछे निष्ठुर अविचार बले ठेकल। तबु मने-मने पण करले, विचलित हबे ना, किन्तु या सहजे हते पारत से आर सहज रइल ना।

एकटु चुप करे थेके मधुसूदन बलले, "बड़ोबउ, चले येते इच्छे करछ? एकटुक्षण थाकबे ना?"

मधुसूदनेर कथा आर तार गलार स्वर शुने कुमु विस्मित। बलले, "ना, याब केन?"

"तोमार जन्ये एकटि जिनिस एनेछि खुले देखो।" बले तार हाते छोटो एकटि सोनार कौटो दिले।

कौटो खुले कुमु देखले दादार देओया सेइ नीलार आङटि। बुकेर मध्ये धक करे उठल, की करबे भेबे पेल ना।

"एइ आङटि तोमाय परिये दिते देबे?"

कुमु हात बाड़िये दिले। मधुसूदन कुमुर हात कोलेर उपर धरे खुब आस्ते आस्ते आङटि पराते लागल। इच्छे करेइ समय निले एकटु बेशि। तार परे हातटि तुले धरे चुमो खेले, बलले, "भुल करेछिलुम तोमार हातेर आङटि खुले निये। तोमार हाते कोनो जहरते कोनो दोष नेइ।"

कुमुके मारले एर चेये कम विस्मित हत। छेलेमानुषेर मतो कुमुर एइ विस्मयेर भाव देखे मधुसूदनेर लागल भालो। दानटा ये सामान्य नय कुमुर मुखभावे ता सुस्पष्ट। किन्तु मधुसूदन आरओ किछु हाते रेखेछे, सेइटे प्रकाश करले; बलले, "तोमादेर बाड़िर कालु मुखुज्ये एसेछे, ताके देखते चाओ?"

कुमुर मुख उज्ज्वल हये उठल। बलले, "कालुदा?"

"ताके डेके दिइ। तोमरा कथावार्ता कओ, ततक्षण आमि खेये आसि गे।"

कृतज्ञताय कुमुर चोख छल छल करे एल।

४३

चाटुज्ये जमिदारेर सङ्गे कालुर पुरुषानुक्रमिक सम्बन्ध। समस्त विश्वासेर काज एर हात दियेइ सम्पन्न हय। एर कोनो एक पूर्वपुरुष चाटु-

ओदेर जन्ये जेल खेटेछे। कालु आज विप्रदासेर हये एक किस्ति सुद दिये रसिद निते मधुसूदनेर आपिसे एसेछिल। बेंटे, गौरवर्ण, परिपुष्ट चेहारा, ईषत् कटा ड्याबड्याबा चोख, तार उपरे झुंके-पड़ा रोमश कांचापाका मोटा भुरु, मस्त घन पाका गोंफ, अथच माथार चुल प्राय कांचा, सयत्ने कोंचानो शान्तिपुरे धुति परा एवं प्रभु-परिवारेर मर्यादा रक्षार उपयुक्त पुरानो दामि जामियार गाये। आङुले एकटा आङटि—तार पाथरटा नेहात कम दामि नय।

कालु घरे प्रवेश करते कुमु ताके प्रणाम करले। दुजने बसल कार्पेटेर उपर। कालु बलले, "छोटो खुकी, एइतो सेदिन चले एले दिदि, किन्तु मने हुच्छे येन कत वत्सर देखि नि।"

"दादा केमन आछेन आगे बलो।"

"बड़ोबाबुर जन्ये बड़ो भाबनाय केटेछे। तुमि येदिन चले एले तार परेर दिने खुब बाड़ाबाड़ि हयेछिल। किन्तु असम्भव जोरालो शरीर किना, देखते-देखते सामले निलेन। डाक्ताररा आश्चर्य हये गेछे।"

"दादा काल आसछेन?"

"ताइ कथा छिल। किन्तु आरओ दुटो दिन देरि हबे। पूर्णिमा पड़ेछे, सकले तांके बारण करले, की जानि यदि आबार ज्वर आसे। से येन हल, किन्तु तुमि केमन आछ दिदि?"

"आमि बेश भालोइ आछि।"

कालु किछु बलते इच्छे करल ना, किन्तु कुमुर मुखेर से-लावण्य गेल कोथाय? चोखेर निचे कालि केन? अमन चिकन रङ तार फ्याकाशे हये गेल की जन्ये? कुमुर मने एकटा प्रश्न जागछे, सेटा से मुख फुटे बलते पारछे ना, "दादा आमाके मने करे कि किछु बले पाठान नि?" तार सेइ अव्यक्त प्रश्नेर उत्तरेर मतोइ येन कालु बलले, "बड़ोबाबु आमार हात दिये तोमाके एकटि जिनिस पाठियेछेन।"

कुमु व्यग्र हये बलले, "की पाठियेछेन, कइ से?"

"सेटा बाइरे रेखे एसेछि।"

"आनले ना केन?"

"व्यस्त ह'यो ना दिदि। महाराजा बललेन, तिनि निजे निये आसबेन।"

"की जिनिस बलो आमाके।"

"इनि ये आमाके बलते बारण करलेन।" घरेर चारिदिके ताकिये कालु बलले, "बेश आदर यत्ने तोमाके रेखेछे—बड़ोबाबुके गिये बलब, कत खुशि

हबेन । प्रथम दुदिन तोमार खबर पेते देरि हये तिनि बड़ो छटफट करेछेन । डाकेर गोलमाल हयेछिल, शेषकाले तिनटे चिठि एकसङ्गे पेलेन ।"

डाकेर गोलमाल हबार कारणटा ये कोन्खाने कुमु ता आन्दाज करते पारले ।

कालुदाके कुमु खेते बलते चाय, साहस करते पारछे ना । एकटु संकोचेर सङ्गे जिज्ञासा करले, "कालुदा, एखनओ तोमार खाओया हय नि ।"

"देखेछि, कलकाताय सन्ध्येर पर खेले आमार सह्य हय ना दिदि, ताइ आमादेर रामदास कविराजेर काछ थेके मकरध्वज आनिये खाच्छि । विशेष किछु तो फल हल ना ।"

कालु बुझेछिल, बाड़िर नूतन बउ, एखनओ कर्तृत्व हाते आसे नि, मुख फुटे खाओयाबार कथा बलते पारबे ना, केवल कष्ट पाबे ।

एमन समय मोतिर मा दरजार आड़ाल थेके हातछानि दिये कुमुके डेके निये बलले, "तोमादेर ओखान थेके मुखुज्येमशाय एसेछेन, ताँर जन्ये खाबार तैरि । निचेर घरे ताँके निये एस, खाइये देबे ।"

कुमु फिरे एसेइ बलले, "कालुदा, तोमार कविराजेर कथा रेखे दाओ, तोमाके खेये येतेइ हबे ।"

"की बिभ्राट ! ए ये अत्याचार ! आज थाक्, ना-हय आर-एकदिन हबे ।"

"ना, से हबे ना,--चलो ।"

शेषकाले आविष्कार करा गेल, मकरध्वजेर विशेष फल हयेछे, क्षुधार लेशमात्र अभाव प्रकाश पेल ना ।

कालुदादाके खाओयानो शेष हतेइ कुमु शोबार घरे चले एल । आज मनटा बापेर बाड़िर स्मृतिते भरा । एतदिने नुरनगरे खिड़किर बागाने आमेर बोल धरेछे । कुसुमित जामरुल गाछेर तलाय पुकुर-धारेर चाताले कत निभृत मध्याह्ने कुमु हातेर उपर माथा रेखे एलोचुल छड़िये दिये शुये काटियेछे--मौमाछिर गुञ्जने मुखरित, छायाय आलोय खचित सेइ दुपुरवेला । बुकेर मध्ये एकटा अकारण व्यथा लागत, जानत ना तार अर्थ की । सेइ व्यथाय सन्ध्येवेलाकार व्रजेर पथेर गोखुर-धूलिते ओर स्वप्न राङा हये उठेछे । बुझते पारे नि ये, ओर यौवनेर अप्राप्त दोसर जले स्थले दियेछे माया मेले, ओर युगल रूपेर उपासनाय सेइ करेछे लुकोचुरि, ताकेइ टेने एनेछे ओर चित्तेर अलक्ष्यपुरे एसराजे मुलतानेर मिड़े मूर्छनाय । ओर प्रथम-यौवनेर सेइ ना-पाओया मनेर मानुषेर कत आभास छिल ओदेर सेखानकार बाड़िर

कत जायगाय, सेखानकार चिलेकोठाय, येखान थेके देखा येत ग्रामेर बाँका रास्तार धारे फुलेर आगुन-लागा सरषेखेत, खिड़किर पाँचिलेर धारेर सेइ ढिबिटा, येखाने बसे पाँचिलेर छयातलापड़ा सबुजे कालोय मेशा नाना रेखाय येन कोन् पुरातन विस्मृत काहिनीर अस्पष्ट छबि––दोतालाय ओर शोबार घरेर जानालाय सकाले घुम थेके उठेइ दूरेर राङा आकाशेर दिके सादा पालगुलो देखते पेत, दिगन्तेर गाये गाये चलेछे येन मनेर निरुद्देश-कामनार मतो। प्रथम-यौवनेर सेइ मरीचिकाइ सङ्गे सङ्गे एसेछे कलकाताय ओर पूजार मध्ये, ओर गानेर मध्ये। सेइ तो दैवेर वाणीर भाण करे ओके अन्धभावे एइ विवाहेर फाँसेर मध्ये टेने आनले। अथच प्रखर रौद्रे निजे गेल मिलिये।

इतिमध्ये मधुसूदन कखन पिछने एसे देयाले-झोलानो आयनाय कुमुर मुखेर प्रतिबिम्बेर दिके ताकिये रइल। बुझते पारले कुमुर मन येखाने हारिये गेछे सेइ अदृश्य अजानार सङ्गे प्रतियोगिता किछुतेइ चलबे ना। अन्य दिन हले कुमुर एइ आनमना भाव देखले राग हत। आज शान्त विषादेर सङ्गे कुमुर पाशे एसे बसल ; बलले, "की भावछ बड़ोबउ ?"

कुमु चमके उठल। मुख फ्याकाशे हये गेल। मधुसूदन ओर हात चेपे धरे नाड़ा दिये बलले, "तुमि कि किछुतेइ आमार काछे धरा देबे ना ?"

ए-कथार उत्तर कुमु भेबे पेले ना। केन धरा दिते पारछे ना से-प्रश्न ओ ये निजेकेओ करे। मधुसूदन यखन कठिन व्यवहार करछिल तखन उत्तर सहज छिल, ओ यखन नति स्वीकार करे तखन निजेके निन्दे करा छाड़ा कोनो जवाब पाय ना। स्वामीके मन-प्राण समर्पण करते ना पाराटा महापाप, ए सम्बन्धे कुमुर सन्देह नेइ, तबु ओर एमन दशा केन हल ? मेयेदेर एकटि-मात्र लक्ष्य, सती सावित्री हये ओठा। सेइ लक्ष्य हते भ्रष्ट हओयार परम दुर्गति थेके निजेके बाँचाते चाय––ताइ आज व्याकुल हये कुमु मधुसूदनके बलले, "तुमि आमाके दया करो।"

"किसेर जन्ये दया करते हबे ?"

"आमाके तोमार करे नाओ––हुकुम करो, शास्ति दाओ। आमार मने हय आमि तोमार योग्य नइ।"

शुने बड़ो दुःखे मधुसूदनेर हासि पेल। कुमु सतीर कर्तव्य करते चाय। कुमु यदि साधारण गृहिणी मात्र हत ताहले एइटुकुइ यथेष्ट हत, किन्तु कुमु ये ओर काछे मन्त्र-पड़ा स्त्रीर चेये अनेक बेशि, सेइ बेशिटुकुके पाबार जन्ये ओ यतइ मूल्य हाँकछे सबइ व्यर्थ हच्छे। धरा पड़छे निजेर खर्वता। कुमुर सङ्गे निजेर दुर्लङ्घ्य असाम्य केवलइ व्याकुलता बाड़िये तुलछे।

दीर्घनिश्वास फेले मधुसूदन बलले, "एकटि जिनिस यदि दिइ तो की देबे बलो।"

कुमु बुझते पारले दादार देओया सेइ जिनिस, व्यग्रतार सङ्गे मधुसूदनेर मुखेर दिके चेये रइल।

"येमन जिनिसटि तारइ उपयुक्त दाम नेब किन्तु," बले खाटेर निचेर थेके रेशमेर खोल दिये मोड़ा एकटि एसराज बेर करे तार मोड़कटि खुले फेलले। कुमुर सेइ चिरपरिचित एसराज, हातिर दाँते खचित। बाड़ि थेके चले आसबार समय एइटि फेले एसेछिल।

मधुसूदन बलले, "खुशि हयेछ तो। एइबार दाम दाओ।"

मधुसूदन की दाम चाय कुमु बुझते पारले ना, चेये रइल। मधुसूदन बलले, "बाजिये शोनाओ आमाके।"

एटा बेशि किछु नय, तबु बड़ो शक्त दाबि। कुमु एइटुकु आन्दाज करते पेरेछे ये, मधुसूदनेर मने संगीतेर रस नेइ। एर सामने बाजानोर संकोच काटिये तोला कठिन। कुमु मुख निचु करे एसराजेर छड़िटा निये नाड़ाचाड़ा करते लागल। मधुसूदन बलले, "बाजाओ ना बड़ोबउ, आमार सामने लज्जा क'रो ना।"

कुमु बलले, "सुर बाँधा नेइ।"

"तोमार निजेर मनेरइ सुर बाँधा नेइ, ताइ बल ना केन ?"

कथाटार सत्यताय कुमुर मने तखनइ घा लागल; "यन्त्रटा ठिक करे राखि, तोमाके आर एकदिन शोनाब।"

"कबे शोनाबे ठिक करे बलो। काल ?"

"आच्छा, काल।"

"सन्ध्येवेलाय आपिस थेके फिरे एले ?"

"हाँ, ताइ हबे।"

"एसराजटा पेये खुब खुशि हयेछ ?"

"खुब खुशि हयेछि।"

शालेर भितर थेके एकटा चामड़ार केस बेर करे मधुसूदन बलले, "तोमार जन्ये ये मुक्तार माला किने एनेछि, एटा पेये ततखानि खुशि हबे ना ?"

ए मनतरो मुशकिलेर प्रश्न केन जिज्ञासा करा ? कुमु चुप करे एसराजेर छड़िटा नाड़ाचाड़ा करते लागल।

"बुझेछि, दरखास्त नामञ्जुर।"

कुमु कथाटा ठिक बुझले ना।

मधुसूदन बलले, "तोमार बुकेर काछे आमार अन्तरेर एइ दरखास्तटि लटकिये देब इच्छे छिल--किन्तु तार आगेइ डिसमिस।"

कुमुर सामने मेजेर उपर गयनाटा रइल खोला। दुजने केउ एकटिओ कथा बलले ना। थेके थेके कुमु ये-रकम स्वप्नाविष्ट हये याय तेमनि हये रइल। एकटु परे येन सचेतन हये मालाटा तुले निये गलाय परले, आर मधुसूदनके प्रणाम करले। बलले, "तुमि आमार बाजना शुनबे?"

मधुसूदन बलले, "हाँ शुनब।"

"एखनइ शोनाब" बले एसराजेर सुर बाँधले। केदाराय आलाप आरम्भ करले; भुले गेल घरे केउ आछे, केदारा थेके पौंछल छायानटे। ये गानटि से भालोबासे सेइटि धरल, "ठाड़ि रहो मेरे आंखनके आगे।" सुरेर आकाशे रङिन छाया फेले एल सेइ अपरूप आविर्भाव, याके कुमु गाने पेयेछे, प्राणे पेयेछे, केवल चोखे पाबार तृष्णा निये यार जन्ये मिनति चिरदिन रये गेल--"ठाड़ि रहो मेरे आंखनके आगे।"

मधुसूदन संगीतेर रस बोझे ना, किन्तु कुमुर विश्वविस्मृत मुखेर उपर ये-सुर खेलछिल, एसराजेर पर्दाय पर्दाय कुमुर आङुल-छोंओयार ये छन्द नेचे उठछिल ताइ तार बुके दोल दिले, मने हते लागल ओके येन के वरदान करछे। आनमने बाजाते बाजाते कुमु हठात् एकसमये देखते पेले मधुसूदन तार मुखेर उपर एकदृष्टे चेये, अमनि हात गेल थेमे, लज्जा एल, बाजना बन्ध करे दिले।

मधुसूदनेर मन दाक्षिण्ये उद्वेल हये उठल, बलले, "बड़ोबउ, तुमि की चाओ बलो।" कुमु यदि बलत, किछुदिन दादार सेवा करते चाइ, मधुसूदन तातेओ राजि हते पारत; केनना आज कुमुर गीतमुग्ध मुखेर दिके केवलइ चेये चेये से निजेके बलछिल, "एइ तो आमार घरे एसेछे, ए की आश्चर्य सत्य।"

कुमु एसराज माटिते रेखे, छड़ि फेले चुप करे रइल।

मधुसूदन आर-एकबार अनुनय करे बलले, "बड़ोबउ, तुमि आमार काछे किछु चाओ। या चाओ ताइ पाबे।"

कुमु बलले, "मुरली बेयाराके एकखाना शीतेर कापड़ दिते चाइ।"

कुमु यदि बलत किछु चाइ ने, सेओ छिल भालो, किन्तु मुरली बेहारार जन्ये गायेर कम्बल! ये दिते पारे माथार मुकुट, तार काछे चाओया जुतोर फिते!

मधुसूदन अवाक। राग हल बेहाराटार उपर। बलले, "लक्ष्मीछाड़ा मुरली बुझि तोमाके विरक्त करछे?"

"ना आमि आपनिइ ओके एकटा आलोयान दिते गेलुम, ओ निल ना। तुमि यदि हुकुम कर तबे साहस करे नेबे।"

मधुसूदन स्तब्ध हये रइल। खानिक परे बलले, "भिक्षे दिते चाओ! आच्छा देखि, कइ तोमार आलोयान।"

कुमु तार सेइ अनेक दिनेर परा बादामि रङेर आलोयान निये एल। मधुसूदन सेटा निये निजेर गाये जड़ाल। टिपायेर उपरकार छोटो घण्टा बाजिये दिते एकजन बुड़ी दासी एल; ताके बलले, "मुरली बेहाराके डेके दाओ।"

मुरली एसे हात जोड़ करे दाँड़ाल; शीते ओ भये तार जोड़ा हात काँपछे।

"तोमार मा-जि तोमाके बकशिश दियेछेन," बले मधुसूदन पकेट-केस थेके एक-श टाकार एकटा नोट बेर करे तार भाँज खुले सेटा दिले कुमुर हाते। ए-रकम अकारणे अयाचित दान मधुसूदनेर द्वारा जीवने कखनो घटे नि। असम्भव व्यापारे मुरली बेहारार भय आरओ बेड़े उठल, द्विधा-कम्पित स्वरे बलले, "हुजुर—"

"हुजुर की रे बेटा! बोका, ने तोर मायेर हात थेके। एइ टाका दिये यत खुशि गरम कापड़ किने निस।"

व्यापारटा एइखाने शेष हल—सेइ सङ्गे सेदिनकार आर समस्तइ येन शेष हये गेल। ये-स्रोते कुमुर मन भेसेछिल से गेल हठात् बन्ध हये, मधुसूदनेर मने आत्मत्यागेर ये-ढेउ चित्तसंकीर्णतार कूल छापिये उठेछिल ताओ सामान्य बेहारार जन्य तुच्छ प्रार्थनाय ठेके गिये आबार तलाय गेल नेमे। एर परे सहजे कथावार्ता कओया दुइ पक्षेइ असाध्य। आज सन्ध्येर समय सेइ तालुक-केना व्यापार निये लोक एसे बाइरेर घरे अपेक्षा करछे, ए-कथाटा मधुसूदनेर मनेइ छिल ना। एतक्षण परे चमके उठे धिक्कार हल निजेर उपरे। उठे दाँड़िये बलले, "काज आछे, आसि।" द्रुत चले गेल।

पथेर मध्ये श्यामासुन्दरीर घरेर सामने एसे बेश प्रकाश्य कण्ठस्वरेइ बलले, "घरे आछ?"

श्यामासुन्दरी आज खाय नि; एकटा रयापार मुड़ि दिये मेजेय मादुरेर उपर अवसन्न भावे शुयेछिल। मधुसूदनेर डाक शुने ताड़ाताड़ि दरजार काछे एसे जिज्ञासा करले, "की ठाकुरपो?"

"पान दिले ना आमाके?"

४४

बाइरे अन्धकारे दरजार आड़ाले एकटि मानुष एतक्षण दाँड़िये छिल--हाबलु। कम साहस ना। मधुसूदनके यमेर मतो भय करे, तबु छिल काठेर पुतुलेर मतो स्तब्ध हये। सेदिन मधुसूदनेर काछे ताड़ा खाओयार पर थेके जेठाइमार काछे आसबार सुविधे हय नि, मनेर भितर छटफट करेछे। आज एइ सन्ध्यावेलाय आसा निरापद छिल ना। किन्तु ओके बिछानाय शुइये रेखे मा यखन घरकन्नार काजे चले गेछे एमन समय काने एल एसराजेर सुर। की बाजछे जानत ना, के बाजाच्छे बुझते पारे नि, जेठाइमार घर थेके आसछे एटा निश्चित ; जेठामशाय सेखाने नेइ एइ तार विश्वास, केन ना ताँर सामने केउ बाजना बाजाते साहस करबे ए-कथा से मनेइ करते पारे ना। उपरेर तलाय दरजार काछे एसे जेठामशायेर जुतोजोड़ा देखेइ पालाबार उपक्रम करले। किन्तु यखन बाइरे थेके चोखे पड़ल ओर जेठाइमा निजे बाजाच्छेन, तखन किछुतेइ पालाते पा सरल ना। दरजार आड़ाले लुकिये शुनते लेगेछे। प्रथम थेकेइ जेठाइमाके ओ जाने आश्चर्य, आज विस्मयेर अन्त नेइ। मधुसूदन चले येतेइ मनेर उच्छ्वास आर धरे राखते पारले ना--घरे ढुकेइ कुमुर कोले गिये बसे गला जड़िये धरे कानेर काछे बलले, "जेठाइमा।"

कुमु ताके बुके चेपे धरे बलले, "ए की, तोमार हात ये ठाण्डा ! बादलार हाओया लागियेछ बुझि।"

हाबलु कोनो उत्तर करले ना, भय पेये गेल। भाबले जेठाइमा एखनइ बुझि बिछानाय शुते पाठिये देबे। कुमु ताके शालेर मध्ये ढेके निये निजेर देहेर तापे गरम करे बलले, "एखनओ शुते याओ नि गोपाल ?"

"तोमार बाजना शुनते एसेछिलुम। केमन करे बाजाते पारले जेठाइ-मा ?"

"तुमि यखन शिखबे तुमिओ पारबे।"

"आमाके शिखिये देबे ?"

एमन समय मोतिर मा झड़ेर मतो घरे ढुकेइ बले उठल, "एइ बुझि दस्यि, एखाने लुकिये बसे ! आमि ओके सातराज्यि खुंजे बेड़ाच्छि। ए दिके सन्ध्यावेलाय घरेर बाइरे दु पा चलते गा छम् छम् करे, जेठाइमार काछे आसबार समय भयडर थाके ना। चल् शुते चल्।"

हाबलु कुमुके आँकड़े धरे रइल।

कुमु बलले, "आहा, थाक्-ना आर-एकटु।"

"एमन करे साहस बेड़े गेले शेषकाले विपदे पड़बे। ओके शुइये आमि एखनइ आसछि।"

कुमुर बड़ो इच्छे हल हाबलुके किछु देय, खाबार किम्वा खेलार जिनिस। किन्तु देबार मतो किछु नेइ, ताइ ओके चुमो खेये बलले, "आज शुते याओ, लक्ष्मी छेले, काल दुपुरवेला तोमाके बाजना शोनाब।"

हाबलु करुण मुखे उठे मायेर सङ्गे चले गेल।

किछुक्षण परेइ मोतिर मा फिरे एल। नवीनेर षड़यन्त्रेर की फल हल ताइ जानबार जन्ये मन अस्थिर हये आछे। कुमुर काछे बसेइ चोखे पड़ल, तार हाते सेइ नीलार आङटि। बुझले ये काज हयेछे। कथाटा उत्थापन करबार उपलक्ष स्वरूप बलले, "दिदि, तोमार एइ बाजनाटा पेले केमन करे?"

कुमु बलले, "दादा पाठिये दियेछेन।"

"बड़ोठाकुर तोमाके एने दिलेन बुझि?"

कुमु संक्षेपे बलले, "हाँ।"

मोतिर मा कुमुर मुखेर दिके ताकिये उल्लास वा विस्मयेर चिह्न खुँजे पेले ना।

"तोमार दादार कथा किछु बललेन कि?"

"ना।"

"परशु तिनि तो आसबेन, ताँर काछे तोमार याबार कथा उठल ना?"

"ना, दादार कोनो कथा हय नि।"

"तुमि निजेइ चाइले ना केन, दिदि?"

"आमि ओँर काछे आर या-किछु चाइ ने केन, एटा पारब ना।"

"तोमार चाबार दरकार हबे ना, तुमि अमनिइ ओँर काछे चले येयो। बड़ोठाकुर किछुइ बलबेन ना।"

मोतिर मा एखनओ एकटा कथा सम्पूर्ण बुझते पारे नि ये मधुसूदनेर अनुकूलता कुमुर पक्षे संकट हये उठेछे; एर बदले मधुसूदन या चाय ता इच्छे करलेओ कुमु दिते पारे ना। ओर हृदय हये गेछे देउले। एइ जन्येइ मधुसूदनेर काछे दान ग्रहण करे ऋण बाड़ाते एत संकोच। कुमुर एमनओ मने हयेछे ये, दादा यदि आर किछुदिन देरि करे आसे तो सेओ भालो।

एकटु अपेक्षा करे थेके मोतिर मा बलले, "आज मने हल बड़ोठाकुरेर मन येन प्रसन्न।"

संशयव्याकुल चोखे कुमु मोतिर मार मुखे ताकिये बलले, "ए-प्रसन्नता केन ठिक बुझते पारि ने, ताइ आमार भय हय ; की करते हबे भेबे पाइ ने।"

कुमुर चिबुक धरे मोतिर मा बलले, "किछुइ करते हबे ना ; एटुकु बुझते पारछ ना, एतदिन उनि केवल कारबार करे एसेछेन, तोमार मतो मेयेके कोनोदिन देखेन नि। एकटु एकटु करे यतइ चिनछेन ततइ तोमार आदर बाड़छे।"

"बेशि देखले बेशि चिनबेन, एमन किछुइ आमार मध्ये नेइ भाइ। आमि निजेइ देखते पाच्छि आमार भितरटा शून्य। सेइ फाँकटाइ दिने दिने धरा पड़बे। सेइ जन्येइ हठात् यखन देखि उनि खुशि हयेछेन, आमार मने हय उनि बुझि ठकेछेन। येइ सेटा फाँस हबे सेइ आरओ रेगे उठबेन। सेइ रागटाइ ये सत्य, ताइ ताके आमि तेमन भय करि ने।"

"तोमार दाम तुमि की जान दिदि ! येदिन एदेर बाड़िते एसेछ, सेइ-दिनइ तोमार पक्ष थेके या देओया हल, एरा सबाइ मिले ता शुधते पारबे ना। आमार कर्ताटि तो एकेबारे मरिया, तोमार जन्ये सागर लङ्घन ना करते पारले स्थिर थाकते पारछेन ना। आमि यदि तोमाके ना भालोबासतुम तबे एइ निये ओँर सङ्गे आमार झगड़ा हये येत।"

कुमु हासले, बलले, "कत भाग्ये एमन देवर पेयेछि।"

"आर तोमार एइ जा-टि बुझि भाग्यस्थाने राहु ना केतु।"

"तोमादेर एकजनेर नाम करले आर-एकजनेर नाम करबार दरकार हय ना।"

मोतिर मा डान हात दिये कुमुर गला जड़िये धरे बलले, "आमार एकटा अनुरोध आछे तोमार काछे।"

"की बलो।"

"आमार सङ्गे तुमि 'मनेर कथा' पाताओ।"

"से बेश कथा, भाइ। प्रथम थेके मने-मने पातानो हयेइ गेछे।"

"ताहले आमार काछे किछु चेपे रेखो ना। आज तुमि अमन मुखटि करे केन आछ किछुइ बुझते पारछि ने।"

खानिकक्षण मोतिर मार मुखेर दिके चेये थेके कुमु बलले, "ठिक कथा बलब ? निजेके आमार केमन भय करछे।"

"से की कथा। निजेके किसेर भय ?"

"आमि एतदिन निजेके या मने करतुम आज हठात् देखछि ता नइ। मनेर मध्ये समस्त गुछिये निये निश्चिन्त हयेइ एसेछिलुम। दादारा यखन द्विधा करेछेन, आमि जोर करेइ नतुन पथे पा बाड़ियेछि। किन्तु ये-मानुषटा भरसा करे बेरोल ताके आज कोथाओ देखते पाच्छि ने।"

"तुमि भालोबासते पारछ ना। आच्छा आमार काछे लुकियो ना, सत्यि करे बलो, काउके कि भालोबेसेछ? भालोबासा काके बले तुमि कि जान?"

"यदि बलि जानि, तुमि हासबे। सूर्य ओठबार आगे येमन आलो हय आमार समस्त आकाश भरे भालोबासा तेमनि करेइ जेगेछिल। केवलइ मने हयेछे सूर्य उठल बले। सेइ सूर्योदयेर कल्पना माथाय करेइ आमि बेरियेछि, तीर्थेर जल निये—फुलेर साजि साजिये। ये-देवताके एतदिन समस्त मन दिये मेने एसेछि, मने हयेछे तांर उत्साह पेलुम। येमन करे अभिसारे बेरोय तेमनि करेइ बेरियेछि। अन्धकार रात्रिके अन्धकार बले मनेइ हय नि, आज आलोते चोख मेले अन्तरेइ वा की देखलुम, बाइरेइ वा की देखछि! एखन बछरेर पर बछर, मुहूर्तेर पर मुहूर्त काटबे की करे?"

"तुमि की बड़ोठाकुरके भालोबासते पारबे ना मने कर?"

"पारतुम भालोबासते। मनेर मध्ये एमन किछु एनेछिलुम याते सबइ पछन्दमतो करे नेओया सहज हत। गोड़ातेइ सेइटेके तोमार बड़ोठाकुर भेङे चुरमार करे दियेछेन। आज सब जिनिस कड़ा हये आमाके बाजछे। आमार शरीरेर उपरकार नरम छालटाके के येन घषड़े तुले दिल, ताइ चारिदिके सबइ आमाके लागछे, केवलइ लागछे, या किछु छुंइ तातेइ चमके उठि; एर परे कड़ा पड़े गेले कोनो एकदिन हयतो सये याबे, किन्तु जीवने कोनोदिन आर आनन्द पाब ना तो।"

"बला याय ना भाइ।"

"खुब बला याय। आज आमार मने एकटुमात्र मोह नेइ। आमार जीवनटा एकेवारे निर्लज्जेर मतो स्पष्ट हये गेछे। निजेके एकटु भोलाबार मतो आड़ाल कोथाओ बाकि रइल ना। मरण छाड़ा मेयेदेर कि आर कोथाओ नड़े बसबार एकटुओ जायगा नेइ? तादेर संसारटाके निष्ठुर विधाता एत आंट करेइ तैरि करेछे।"

एतक्षण धरे एमनतरो उत्तेजनार कथा कुमुर मुखे मोतिर मा आर कोनोदिन शोने नि। विशेष करे आज येदिन बड़ोठाकुरके ओरा कुमुर प्रति एतटा प्रसन्न करे एनेछे, सेइदिनइ कुमुर एइ तीव्र अधैर्य देखे मोतिर मा

भय पेये गेल। बुझले लतार एकेबारे गोड़ाय घा लेगेछे, उपर थेके अनुग्रहेर जल ढेले माली आर एके ताजा करे तुलते पारबे ना।

एकटु परे कुमु बले उठल, "जानि, स्वामीके एइ ये श्रद्धार सङ्गे आत्म-समर्पण करते पारछि ने ए आमार महापाप। किन्तु से-पापेओ आमार तेमन भय हच्छे ना येमन हच्छे श्रद्धाहीन आत्मसमर्पणेर ग्लानिर कथा मने करे।"

मोतिर मा कोनो उत्तर ना भेबे पेये हतबुद्धिर मतो बसे रइल। एकटु चुप करे थेके कुमु बलले, "तोमार कत भाग्यि भाइ, कत पुण्यि करेछिले, ठाकुरपोके एमन समस्त मनटा दिये भालोबासते पेरेछ। आगे मने करतुम, भालोबासाइ सहज—सब स्त्री सब स्वामीके आपनिइ भालोबासे। आज देखते पाच्छि भालोबासते पाराटाइ सब चेये दुर्लभ, जन्मजन्मान्तरेर साधनाय घटे। आच्छा भाइ, सत्यि बलो सब स्त्रीइ कि स्वामीके भालोबासे?"

मोतिर मा एकटु हेसे बलले, "भालो ना बासलेओ भालो स्त्री हओया याय, नइले संसार चलबे की करे?"

"सेइ आश्वास दाओ आमाके। आर किछु ना हइ भालो स्त्री येन हते पारि। पुण्य तातेइ बेशि, सेइटेइ कठिन साधना।"

"बाइरे थेके तातेओ बाधा पड़े।"

"अन्तर थेके से बाधा काटिये उठते पारा याय। आमि पारब, आमि हार मानब ना।"

"तुमि पारबे ना तो के पारबे?"

वृष्टि जोर करे चेपे एल। वातासे ल्याम्पेर आलो थेके थेके चकित हये ओठे। दमका हाओया येन एकटा भिजे निशाचर पाखिर मतो पाखा झापटे घरेर मध्ये ढुके पड़े। कुमुर शरीरटा मनटा शिर शिर करे उठल। से बलले, "आमार ठाकुरेर नामे आर जोर पाच्छि ने। मन्त्र आवृत्ति करे याइ, मनटा मुख फिरिये थाके, किछुते साड़ा दिते चाय ना। तातेइ सब चेये भय हय।"

बानानो कथाय मिथ्ये भरसा दिते मोतिर मार इच्छे हल ना। कोनो उत्तर ना करे से कुमुके बुकेर काछे जड़िये धरले। एमन समय बाइरे थेके आबोयाज पाओया गेल, "मेजोबउ।"

कुमु खुशि हये उठे बलले, "एस, एस ठाकुरपो।"

"सन्ध्यावेलाकार घरेर आलोटिके घरे देखते पेलुम ना, ताइ खुंजते बेरियेछि।"

मोतिर मा बलले, "हाय हाय, मणिहारा फणी याके बले।"

"के मणि आर के फणी ता चक्र नाड़ा देखलेइ बोझा याय, की बल बउरानी।"

"आमाके साक्षी मेनो ना ठाकुरपो।"

"जानि, ताहले आमि ठकब।"

"ता तोमार हाराधनके तुमि उद्धार करे निये याओ, आमि घरे राखब ना।"

"हाराधनेर जन्ये ओंर कोनो उत्साह नेइ दिदि, छुतो करे बउरानीर चरण दर्शन करते एसेछेन।"

"छुतोर कि कोनो दरकार आछे? चरण आपनि धरा दियेछे। सबचेये या असाध्य तार साधना करबे के? से यखन आसे सहजेइ आसे। पृथिवीते हाजार हाजार मानुष आछे आमार चेये योग्य, तबु अमन सुन्दर पा-दुखानि आमिइ पारलुम छुंते, तारा तो पारले ना। नवीनेर जन्म सार्थक हये गेल बिनामूल्ये।"

"आः की बल, ठाकुरपो, तार ठिक नेइ। तोमार एनसाइक्लोपीडिया थेके बुझि—"

"अमन कथा बलते पारबे ना, बउरानी। चरण बलते की बोझाय ता ओरा जानबे की करे? छागलेर खुरेर मतो सरु सरु ठेकोओआला जुतोर मध्ये लक्ष्मीदेर पा कड़ा जेनानार मध्ये ओरा बन्दी करे रेखेछे। साइक्लोपीडियाओआलार साध्य की पायेर महिमा बोझे। लक्ष्मण चोद्दटा वत्सर केवल सीतार पायेर दिके ताकियेइ निर्वासन काटिये दिलेन, तार माने आमादेर देशेर देओरराइ जाने। ता पायेर उपर शाड़ि टेने दिच्छ तो दाओ। भय नेइ तोमार, पद्म सन्धेवेलाय मुदे थाके बले तो बराबर मुदेइ थाके ना—आबार तो पापड़ि खोले।"

"भाइ मनेर कथा, एमनितरो स्तव करेइ बुझि ठाकुरपो तोमार मन भुलियेछेन?"

"एकटुओ ना दिदि, मिष्टिकथार बाजे खरच करबार लोक नन उनि।"

"स्तुतिर बुझि दरकार हय ना?"

"बउरानी, स्तुतिर क्षुधा देवीदेर किछुतेइ मेटे ना, दरकार खुब आछे। किन्तु शिवेर मतो आमि तो पञ्चानन नइ, एइ एकटिमात्र मुखेर स्तुति पुरोनो हये गेछे, एते उनि आर रस पाच्छेन ना।"

एमन समय मुरली बेयारा एसे नवीनके खबर दिले, "कर्तामहाराजा बाइरेर आपिसघरे डाक दियेछेन।"

शुने नवीनेर मन खाराप हये गेल। से भेबेछिल मधुसूदन आज आपिस थेके फिरेइ एकेबारे सोजा तार शोबार घरे एसे उपस्थित हबे। नौको बुझि आबार ठेके गेल चड़ाय।

नवीन चले गेले मोतिर मा आस्ते आस्ते बलले, "बड़ोठाकुर किन्तु तोमाके भालोबासेन से-कथा मने रेखो।"

कुमु बलले, "सेइटेइ तो आमार आश्चर्य ठेके।"

"बल की, तोमाके भालोबासा आश्चर्य केन? उनि कि पाथरेर?"

"आमि ओंर योग्य ना।"

"तुमि यांर योग्य नओ से-पुरुष कोथाय आछे?"

"ओंर कतबड़ो शक्ति, कत सम्मान, कत पाकाबुद्धि, उनि कत मस्त मानुष। आमार मध्ये उनि कतटुकु पेते पारेन? आमि ये की असम्भव काँचा, ता एखाने एसे दुदिने बुझते पेरेछि। सेइजन्येइ यखन उनि भालो-बासेन तखनइ आमार सबचेये बेशि भय करे। आमि निजेर मध्ये ये किछुइ खुंजे पाइ ने। एतबड़ो फाँकि निये आमि ओंर सेवा करब की करे? काल रात्तिरे बसे बसे मने हल आमि येन बेयारिङ लेफाफा, आमाके दाम दिये निते हयेछे, खुले फेललेइ धरा पड़बे ये भितरे चिठिओ नेइ।"

"दिदि, हासाले। बड़ोठाकुरेर मस्तबड़ो कारबार, कारबारि बुद्धिते ओंर समान केउ नेइ, सब जानि। किन्तु तुमि कि ओंर कारबारेर म्यानेजारि करते एसेछ ये, योग्यता नेइ बले भय पाबे? बड़ोठाकुर यदि मनेर कथा खोलसा करे बलेन, तबे निश्चय बलबेन तिनिओ तोमार योग्य नन।"

"से-कथा तिनि आमाके बलेछिलेन।"

"विश्वास हय नि?"

"ना। उलटे आमार भय हयेछिल। मने हयेछिल आमार सम्बन्धे भुल करलेन, से भुल धरा पड़बे।"

"केन तोमार एमन मने हल बलो देखि?"

"बलब? एइ-ये आमार हठात् बिये हये गेल, ए तो समस्त आमि निजे घटिये तुललुम—किन्तु की अद्भुत मोहे, की छेलेमानुषि करे? या-किछुते आमाके सेदिन भुलियेछिल तार मध्ये समस्तइ छिल फाँकि। अथच एमन दृढ़ विश्वास, एमन विषम जेद ये, सेदिन आमाके किछुतेइ केउ ठेकाते पारत ना। दादा ता निश्चित जानतेन बलेइ वृथा बाधा दिलेन ना, किन्तु कत भय पेयेछेन, कत उद्विग्न हयेछेन ता कि आमि बुझते पारि नि? बुझते पेरेओ निजेर झोंकटाके एकटुओ सामलाइ नि, एतबड़ो अबुझ आमि। आज थेके

चिरदिन आमि केवलइ कष्ट पाब, कष्ट देब, आर प्रतिदिन मने जानब ए-समस्तइ आमार निजेर सृष्टि।"

मोतिर मा की ये बलबे किछुइ भेबे पेले ना। खानिकक्षण चुप करे थेके जिज्ञासा करले, "आच्छा, दिदि, तुमि ये बिये करते मन स्थिर करले, की भेबे?"

"तखन निश्चित जानतुम स्वामी भालोमन्द याइ होक ना केन स्त्रीर सतीत्वगौरव प्रमाणेर एकटा उपलक्ष मात्र। मने एकटुओ सन्देह छिल ना ये, प्रजापति याकेइ स्वामी बले ठिक करे दियेछेन ताकेइ भालोबासबइ। छेलेबेला थेके केवल माके देखेछि, पुराण पड़ेछि, कथकता शुनेछि, मने हयेछे शास्त्रेर सङ्गे निजेके मिलिये चला खुब सहज।"

"दिदि, उनिश बछरेर कुमारीर जन्ये शास्त्र लेखा हय नि।"

"आज बुझते पेरेछि संसारे भालोबासाटा उपरि-पाओना। ओटाके बाद दियेइ धर्मके आँकड़े धरे संसारसमुद्रे भासते हबे। धर्म यदि सरस हये फुल ना देय, फल ना देय, अन्तत शुकनो हये येन भासिये राखे।"

मोतिर मा निजे विशेष किछु ना बले कुमुके दिये कथा बलिये निते लागल।

४५

मधुसूदन आपिसे गियेइ देखले खबर भालो नय। माद्राजेर एक बड़ो बयाङ्क फेल करेछे, तादेर सङ्गे एदेर कारबार। तारपरे काने एल ये, कोनो डाइरेक्टरेर तरफ थेके कोनो कोनो कर्मचारी मधुसूदनेर अजानिते खातापत्र घाँटाघाँटि करछे। एतदिन केउ मधुसूदनके सन्देह करते साहस करे नि, एकजन येइ धरिये दियेछे अमनि येन एकटा मन्त्रशक्ति छुटे गेल। बड़ो काजेर छोटो त्रुटि धरा सहज, यारा मातब्बर सेनापति तारा कत खुचरो हारेर भितर दिये मोटेर उपर मस्त करेइ जेते। मधुसूदन बराबर तेमनि जितेइ एसेछे—ताइ बेछे बेछे खुचरो हार कारओ नजरेइ पड़े नि। किन्तु बेछे बेछे तारइ एकटा फर्द बानिये सेटा साधारण लोकेर नजरे तुलले तारा निजेर बुद्धिर तारिफ करे, बले आमरा हले ए-भुल करतुम ना। के तादेर बोझाबे ये, फुटो नौको नियेइ मधुसूदन पाड़ि दियेछे, नइले पाड़ि देओयाइ हत ना, आसल कथाटा एइ ये, कूले पौँछल। आज नौकोटा डाङाय तुले फुटोगुलोर विचार करबार बेलाय, यारा निरापदे एसेछे घाटे, तादेर गा

शिउरे उठछे। एमनतरो टुकरो समालोचना निये आनाड़िदेर धाँधा लागानो सहज। साधारणत आनाड़िदेर सुविधे एइ ये, तारा लाभ करते चाय, विचार करते चाय ना। किन्तु यदि दैवात् विचार करते बसे तबे मारात्मक हये ओठे। एइ सब बोकादेर उपर मधुसूदनेर निरतिशय अवज्ञा-मिश्रित क्रोधेर उदय हल। किन्तु बोकादेर येखाने प्राधान्य सेखाने तादेर सङ्गे रफा करा छाड़ा गति नेइ। जीर्ण मइ मच मच करे, दोले, भाङार भय देखाय, ये-व्यक्ति उपरे चड़े ताके एइ पायेर तलार अवलम्बनटाके बाँचिये चलतेइ हय। राग करे लाथि मारते इच्छे करे, ताते मुशकिल आरओ बाड़बारइ कथा।

शावकेर विपदेर सम्भावना देखले सिंहिनी निजेर आहारेर लोभ भुले याय, व्यवसा सम्बन्धे मधुसूदनेर सेइरकम मनेर अवस्था। ए ये तार निजेर सृष्टि ; एर प्रति तार ये-दरद से प्रधानत टाकार दरद नय। यार रचना-शक्ति आछे, आपन रचनार मध्ये से निजेकेइ निबिड़ करे पाय, सेइ पाओ-याटा यखन विपन्न हये ओठे, तखन जीवनेर आर समस्त सुखदु:खकामना तुच्छ हये याय। कुमु मधुसूदनके किछुदिन थेके प्रबल टाने टेनेछिल, सेटा हठात् आलगा हये गेल। जीवने भालोबासार प्रयोजनटा मधुसूदन प्रौढ़ वयसे खुब जोरेर सङ्गे अनुभव करेछिल। एइ उपसर्ग यखन अकाले देखा देय, तखन उद्दाम हयेइ ओठे। मधुसूदनके धाक्का कम लागे नि, किन्तु आज तार वेदना गेल कोथाय ?

नवीन घरे आसतेइ मधुसूदन जिज्ञासा करले, "आमार प्राइभेट जमा-खरचेर खाता बाइरेर कोनो लोकेर हाते पड़ेछे कि, जान ?"

नवीन चमके उठल, बलले, "से की कथा ?"

"तोमाके खुंजे बेर करते हबे खाताञ्जिर घरे केउ आनागोना करछे कि ना।"

"रतिकान्त विश्वासी लोक, से कि कखनो—"

"तार अजानते मुहुरिदेर सङ्गे केउ कथा-चालाचालि करछे बले सन्देहेर कारण घटेछे। खुब सावधाने खबरटा जाना चाइ कारा एर मध्ये आछे।"

चाकर एसे खबर दिले खाबार ठाण्डा हये याच्छे। मधुसूदन से-कथाय मन ना दिये नवीनके बलले, "शीघ्र आमार गाड़िटा तैरि करे आनते बले दाओ।"

नवीन बलले, "खेये बेरोबे ना ? रात हये आसछे।"

"बाइरेइ खाब, काज आछे।"

नवीन माथा हेंट करे भावते भावते बेरिये एल। से ये-कौशल करेछिल फेंसे गेल बुझि।

हठात् मधुसूदन नवीनके फिरे डेके बलले, "एइ चिठिखाना कुमुके दिये एस।"

नवीन देखले विप्रदासेर चिठि। बुझले ए-चिठि आज सकालेइ एसेछे, सन्ध्येवेलाय निजेर हाते कुमुके देबे बले मधुसूदन रेखेछिल। एमनि करे प्रत्येकबार मिलन उपलक्षे एकटा किछु अर्घ्य हाते करे आनबार इच्छे। आज आपिसेर काजे हठात् तुफान उठे तार एइ आदरेर आयोजनटुकु गेल डुबे।

माद्राजे ये-ब्याङ्क फेल करेछे सेटार उपरे साधारणेर निश्चित आस्था छिल। तार सङ्गे घोषाल-कोम्पानिर ये-योग से-सम्बन्धे अध्यक्षदेर वा अंशिदारदेर कारओ मने किछुमात्र संशय छिल ना। येइ कल बिगड़े गेल, अमनि अनेकेइ बलाबलि करते आरम्भ करले ये, आमरा गोड़ा थेकेइ ठाउरे-छिलुम इत्यादि।

सांघातिक आघातेर समय व्यवसाके यखन एकजोट हये रक्षार चेष्टा दरकार, सेइ समयेइ पराजयेर सम्बन्धे दोषारोप प्रबल हये ओठे एवं यादेर प्रति कारओ ईर्षा आछे तादेरके अपदस्थ करबार चेष्टाय टलमले व्यवसाके कात करे फेला हय। सेइ रकम चेष्टा चलवे मधुसूदन ता बुझेछिल। माद्राज-ब्याङ्केर विपर्यये घोषाल-कोम्पानिर लोकसानेर परिमाण ये कतटा दाँड़ाबे एखनओ ता निश्चित जानबार समय हय नि, किन्तु मधुसूदनेर प्रतिपत्ति नष्ट करबार आयोजने एओ ये एकटा मसला जोगाबे ताते सन्देह छिल ना। याइ होक समय खाराप, एखन अन्य सब कथा भुले एइटेतेइ मधुसूदनके कोमर बाँधते हबे।

रात्रे मधुसूदनेर सङ्गे आलाप हबार पर नवीन फिरे एसे देखले कुमुर सङ्गे मोतिर मार तखनओ कथा चलछे। नवीन बलले, "बउरानी, तोमार दादार चिठि आछे।"

कुमु चमके उठे चिठिखाना निले। खुलते हात काँपते लागल। भय हल हयतो किछु अप्रिय संवाद आछे। हयतो एखन आसाइ हबे ना। खुब धीरे धीरे खाम खुले पड़े देखले। एकटु चुप करे रइल। मुख देखे मने हल येन कोथाय व्यथा बेजेछे। नवीनके बलले, "दादा आज बिकेले तिनटेर समय कलकाताय एसेछेन।"

"आजइ एसेछेन। ताँर तो—"

"लिखेछेन दुइ-एकदिन परे आसबार कथा छिल किन्तु विशेष कारणे आगेइ आसते हल ।"

कुमु आर किछु बलले ना । चिठिर शेषदिके छिल एकटु सेरे उठलेइ विप्रदास कुमुके देखते आसबे, सेजन्ये कुमु येन व्यस्त वा उद्विग्न ना हय । एइ कथाटाइ आगेकार चिठितेओ छिल । केन, की हयेछे ? कुमु की अपराध करेछे ? ए येन एकरकम स्पष्ट करेइ बला, तुमि आमादेर बाड़िते एसो ना । इच्छे करल माटिते लुटिये पड़े खानिकटा केँदे नेय । कान्ना चेपे पाथरेर मतो शक्त हये बसे रइल ।

नवीन बुझले, चिठिर मध्ये एकटा की कठिन मार आछे । कुमुर मुख देखे करुणाय ओर मन व्यथित हये उठल । बलले, "बउरानी, ताँर काछे तो कालइ तोमार याओया चाइ ।"

"ना, आमि याब ना ।" येमनि बला अमनि आर थाकते पारले ना, दुइ हात दिये मुख ढेके केँदे उठल ।

मोतिर मा कोनो प्रश्न ना करे कुमुके बुकेर काछे टेने निले, कुमु रुद्धकण्ठे बले उठल, "दादा आमाके येते वारण करेछेन ।"

नवीन बलले, "ना ना, बउरानी तुमि निश्चय भुल बुझेछ ।"

कुमु खुब जोरे माथा नेड़े जानिये दिले ये, से एकटुओ भुल बोझे नि ।

नवीन बलले, "तुमि कोथाय भुल बुझेछ बलब ? विप्रदासबाबु मने करेछेन आमार दादा तोमाके ताँदेर ओखाने येते दिते चाइबेन ना । चेष्टा करते गिये पाछे तोमाके अपमानित हते हय, पाछे तुमि कष्ट पाओ सेइटे बाँचाबार जन्ये तिनि निजे थेके तोमार रास्ता सोजा करे दियेछेन ।"

कुमु एक मुहूर्ते गभीर आराम पेले । तार भिजे चोखेर पल्लव नवीनेर मुखेर दिके तुले स्निग्धदृष्टिते चुप करे चेये रइल । नवीनेर कथाटा ये सम्पूर्ण सत्य ताते एकटुओ सन्देह रइल ना । दादार स्नेहके क्षणकालेर जन्येओ भुल बुझते पेरेछे बले निजेर उपर धिक्कार हल । मने खुब एकटा जोर पेले । एखनइ दादार काछे छुटे ना गिये दादार आसार जन्ये से अपेक्षा करते पारबे । सेइ भालो ।

मोतिर मा चिबुक धरे कुमुर मुख तुले धरे बलले, "बास रे, दादार कथार एकटु आड़ हाओया लागलेइ एकेबारे अभिमानेर समुद्र उथले ओठे ।"

नवीन बलले, "बउरानी, काल ताहले तोमार याबार आयोजन करि गे ।"

"ना, तार दरकार नेइ ।"

"दरकार नेइ तो की ? तोमार दरकार ना थाके तो आमार दरकार आछे बइ कि।"

"तोमार आबार किसेर दरकार ?"

"वा ! आमार दादाके तोमार दादा या-किछु ठाओराबेन सेटा बुझि अमनि सये येते हबे ! आमार दादार पक्ष निये आमि लड़ब। तोमार काछे हार मानते पारब ना। काल तोमाके ओंर काछे येतेइ हच्छे।"

कुमु हासते लागल।

"बउरानी, ए ठाट्टार कथा नय। आमादेर बाड़िर अपवादे तोमार अगौरव। एखन चोखे मुखे एकटु जल दिये एस, खेते याबे। म्यानेजार-साहेबेर ओखाने दादार आज निमन्त्रण। आमार विश्वास तिनि आज बाड़िर भितरे शुते आसबेन ना, देखलुम बाइरेर कामराय ताँर बिछाना तैरि।"

एइ खबरटा पेये कुमु मने मने आराम पेले, तार परक्षणेइ एतटा आराम पेले बले लज्जा बोध हल।

रात्रे शोबार घरे मोतिर मार सङ्गे नवीनेर ओइ कथाटा निये परामर्श चलल। मोतिर मा बलले, "तुमि तो दिदिके आश्वास दिले। तार परे ?"

"तार परे आबार की ? नवीनेर येमन कथा तेमनि काज। बउरानीके येतेइ हबे, तार परे या हय ता हबे।"

नतुन-गड़ा राजादेर पारिवारिक मर्यादाबोध खुबइ उग्र। एँरा निश्चय ठिक करे आछेन ये, विवाह करे नववधू तार पूर्व-पदवीर चेये अनेक उपरे उठेछे ; अतएव बापेर बाड़ि बले कोनो बालाइ आछे ए-कथा एकेबारे भुलते देओयाइ संगत। ए-अवस्थाय दुइ दिक रक्षा करा यदि असम्भव हय तबे एकटा दिक तो राखतेइ हबे। सेइ दिकटा ये कोन्‌टा ता नवीन मने-मने पाका करे राखले। येखाने दादार अधिकार चरम, सेखाने ओ कोनोदिन दादार सङ्गे लड़ाइ बाधाते साहस करते पारबे ए-कथा आर किछुदिन आगे नवीन स्वप्नेओ भाबते पारत ना।

स्वामीस्त्रीते परामर्श करे स्थिर हल ये काल सकाले कुमु एकबार मात्र विप्रदासेर सङ्गे किछुक्षणेर जन्ये देखा करे आसबे, एइ प्रस्ताव मधुसूदनेर काछे करा हबे। यदि राजि हय एवं कुमुके सेखाने पाठानो याय ताहले तारपरे सेखान थेके दु-चार दिनेर मध्ये ताके ना फेराबार संगत कारण बानानो शक्त हबे ना।

मधुसूदन बाड़ि फिरल अनेक रात्रे, सङ्गे एकराश कागजपत्रेर बोझा। नवीन उँकि मेरे देखले, मधुसूदन शुते ना गिये चोखे चशमा एँटे नील पेनसिल

हाते आपिसघरेर डेस्के कोनो दलिले वा दाग दिच्छे, नोटबइये वा नोट निच्छे। नवीन साहस करे घरे ढुकेइ बलले, "दादा, आमि कि तोमार कोनो काज करे दिते पारि ?" मधुसूदन संक्षेपे बलले, "ना।" व्यवसार एइ संकटेर अवस्थाटाके मधुसूदन सम्पूर्ण निजे आयत्त करे निते चाय, सबटा तार एकार चोखे प्रत्यक्ष हओया दरकार ; ए-काजे अन्येर दृष्टिर सहायता निते गेले निजेके दुर्बल करा हबे।

नवीन कोनो कथा बलबार छिद्र ना पेये बेरिये गेल। शीघ्र ये सुयोग पाओया याबे एमन तो भाबे बोध हल ना। नवीनेर पण, काल सकालेइ बउरानीके रओना करे देबे। आज रात्रेइ सम्मति आदाय करा चाइ।

खानिकक्षण बादे नवीन एकटा ल्याम्प हाते करे दादार टेबिलेर उपरे रेखे बलले, "तोमार आलो कम हच्छे।"

मधुसूदन अनुभव करले, एइ द्वितीय ल्याम्पे तार काजेर अनेकखानि सुविधा हल। किन्तु एइ उपलक्ष्येओ कोनो कथार सूचना हते पारल ना। आबार नवीनके बेरिये आसते हल।

एकटु परेइ मधुसूदनेर अभ्यस्त गुड़गुड़िते तामाक सेजे तार चौकिर बाँ पाशे बसिये नलटा टेबिलेर उपर आस्ते आस्ते तुले राखले। मधुसूदन तखनइ अनुभव करले एटारओ दरकार छिल। क्षणकालेर जन्ये पेनसिलटा रेखे तामाक टानते लागल।

एइ अवकाशे नवीन कथा पाड़ले, "दादा, शुते याबे ना ? अनेक रात हयेछे। बउरानी तोमार जन्ये हयतो जेगे बसे आछेन।"

"जेगे बसे आछेन" कथाटा एक मुहूर्ते मधुसूदनेर मनेर भितरे गिये लागल। ढेउयेर उपर दिये जाहाज यखन टलमल करते करते चलेछे, एकटि छोटो डाङार पाखि उड़े एसे येन मास्तुले बसल ; क्षुब्ध समुद्रेर भितर क्षणकालेर जन्ये मने एने दिले श्यामल द्वीपेर निभृत वनच्छायार छवि। किन्तु से-कथाय मन देबार समय नय, जाहाज चालाते हबे।

मधुसूदन आपन मनेर एइटुकु चाञ्चल्ये भीत हल। तखनइ सेटा दमन करे बलले, "बड़ोबउके शुते येते बलो, आज आमि बाइरे शोब।"

"ताँके ना हय एखाने डेके दिइ" बले नवीन गुड़गुड़िर कलकेटाते फुं दिते लागल।

मधुसूदन हठात् झेँके उठे बले उठल, "ना ना।"

नवीन तातेओ ना दमे बलले, "तिनि ये तोमार काछे दरबार करबेन बले बसे आछेन।"

रुक्षस्वरे मधुसूदन बलले, "एखन दरबारेर समय नेइ।"

"तोमार तो समय नेइ, दादा, ताँरओ तो समय कम।"

"की, हयेछे की ?"

"विप्रदासबाबु आज कलकाताय एसेछेन खबर पाओया गेछे, ताइ बउरानी काल सकाले —"

"सकाले येते चान ?"

"बेशिक्षणेर जन्ये ना, एकबार केवल—"

मधुसूदन हात झाँकानि दिये बलले, "ता यान ना, यान। बास, आर नय तुमि याओ।"

हुकुम आदाय करेइ नवीन घर थेके एक दौड़। बाइरे आसतेइ मधुसूदनेर डाक काने एसे पौँछल, "नवीन।"

भय लागल आबार बुझि दादा हुकुम फिरिये नेय। घरे एसे दाँड़ातेइ मधुसूदन बलले, "बड़ोबउ एखन किछुदिन ताँर दादार ओखाने गियेइ थाकबेन, तुमि तार जोगाड़ करे दियो।"

नवीनेर भय लागल, दादार एइ प्रस्तावे तार मुखे पाछे एकटुओ उत्साह प्रकाश पाय। एमन कि, से एकटु द्विधार भाव देखिये माथा चुलकोते लागल। बलले, "बउरानी गेले बाड़िटा बड़ो खालि-खालि ठेकबे।"

मधुसूदन कोनो उत्तर ना करे गुड़गुड़िर नलटा नामिये रेखे काजे लेगे गेल। बुझते पारले प्रलोभनेर रास्ता एखनओ खोला आछे—ओदिके एकेबारेइ ना।

नवीन आनन्दित हये चले गेल। मधुसूदनेर काज चलते लागल। किन्तु कखन एइ काजेर धारार पाश दिये आर-एकटा उलटो मानस-धारा खुले गेछे ता से अनेकक्षण निजेइ बुझते पारे नि। एक समये नील पेनसिल प्रयोजन शेष ना हतेइ छुटि निल, गुड़गुड़िर नलटा उठल मुखे। दिनेर वेलाय मधुसूदनेर मनटा कुमुर भावना सम्बन्धे यखन सम्पूर्ण निष्कृति नियेछिल, तखन आगेकार दिनेर मतो निजेर 'परे निजेर एकाधिपत्य फिरे पेये मधुसूदन खुब आनन्दित हयेछिल। किन्तु यत रात हच्छे ततइ सन्देह हते लागल ये, शत्रु दुर्ग छेड़े पालाय नि। सुरङ्गेर घरे आछे गा ढाका दिये।

वृष्टि थेमे गेछे, कृष्णपक्षेर चाँद बागानेर कोणे एक प्राचीन शिशु गाछेर उपरे आकाशे उठे आर्द्र पृथिवीके विह्वल करे दियेछे। हाओयाटा ठाण्डा, मधुसूदनेर देहटा बिछानार भितरे एकटा गरम कोमल स्पर्शेर जन्ये दाबि जानाते आरम्भ करेछे। नील पेनसिलटा चेपे धरे खातापत्रेर उपर से झुंके

पड़ल । किन्तु मनेर गभीर आकाशे एकटा कथा क्षीण अथच स्पष्ट आओयाजे बाजछे, "बउरानी हयतो एतक्षण जेगे बसे आछेन ।"

मधुसूदन पण करेछिल, एकटा विशेष काज आज रात्रेर मध्येइ शेष करे राखबे । सेटा काल सकालेर मध्ये सारते पारले ये खुब बेशि असुविधा हत ता नय । किन्तु पण रक्षा करा ओर व्यवसायेर धर्मनीति । तार थेके कोनो कारणे यदि भ्रष्ट हय तबे निजेके क्षमा करते पारे ना । एतदिन धर्मके खुब कठिन भावेइ रक्षा करेछे । तार पुरस्कारओ पेयेछे यथेष्ट । किन्तु इदानींङ दिनेर मधुसूदनेर सङ्गे रात्रेर मधुसूदनेर सुरेर किछु किछु तफात घटे आसछे--एक वीणाय दुइ तारेर मतो । ये दृढ़ पण करे डेस्केर उपर ओ झुंके पड़े बसेछिल--रात्रि यखन गभीर हये एल, सेइ पणेर कोन् एकटा फाँकेर भितर दिये एकटा उक्ति भ्रमरेर मतो भन भन करते शुरू करले, "बउरानी हयतो जेगे बसे आछेन ।"

उठे पड़ल । बाति ना निभिये खातापत्र येमन छिल तेमनि भावेइ रेखे चलल शोबार घरेर दिके । अन्तःपुरेर आङिनाघेरा ये बारान्दा दिये तेतालार घरे येते हय सेइ बारान्दाय रेलिङेर धारे श्यामासुन्दरी मेजेर उपर बसे । चाँद तखन मध्य-आकाशे, तार आलो एसे ताके घिरेछे । ताके देखाच्छे येन कोन् एक गल्पेर बइयेर छविर मतो; अर्थात् से येन प्रतिदिनेर मानुष नय, अतिनिकटेर अतिपरिचयेर कठोर आवरण थेके येन एकटा दूरत्वेर मध्ये बेरिये एसेछे । से जानत मधुसूदन एइ पथ दियेइ शोबार घरे याय--सेइ याओयार दृश्यटा ओर काछे अति तीव्र वेदनार, सेइ जन्येइ तार आकर्षणटा एत प्रबल । किन्तु शुधु हृदयटाके व्यर्थ वेदनाय विद्ध करबार पागलामिइ ये एइ प्रतीक्षार मध्ये आछे ता नय, एर मध्ये एकटा प्रत्याशाओ आछे--यदि क्षणकालेर मध्ये एकटा किछु घटे याय ; असम्भव कखन सम्भव हये याबे एइ आशाय पथेर धारे जेगे थाका ।

मधुसूदन ओर दिके एकबार कटाक्ष करे उपरे चले गेल । श्यामासुन्दरी निजेर भाग्येर उपर राग करे रेलिङ शक्त करे धरे तार उपरे माथा ठुकते लागल ।

शोबार घरे गिये मधुसूदन देखे ये कुमु जेगे बसे नेइ । घर अन्धकार, नावार घरेर खोला दरजा दिये अल्प एकटु आलो आसछे । मधुसूदन एकबार भावल, फिरे चले याइ, किन्तु पारल ना । ग्यासेर आलोटा ज्वालिये दिले । कुमु बिछानार मध्ये मुड़िसुड़ि दिये घुमोच्छे--आलो ज्वालातेओ घुम भाङल ना । कुमुर एइ आरामे घुमोनोर उपर ओर राग धरल । अधैर्येर सङ्गे

मशारि खुले धप करे बिछानार उपर बसे पड़ल। खाटटा शब्द करे कँपे उठल।

कुमु चमके उठे बसल। आज मधुसूदन आसबे ना बलेइ जानत। हठात् ताके देखे मुखे एमन एकटा भाव एल ये, ताइ देखे मधुसूदनेर बुकेर भितर दिये येन एकटा शेल बिँधल। माथाय रक्त चड़े गेल, बले उठल, "आमाके कोनोमतेइ सइते पारछ ना, ना ?"

एमनतरो प्रश्नेर की उत्तर देबे, कुमु ता भेबेइ पेले ना। सत्यिइ हठात् मधुसूदनके देखे ओर बुक कँपे उठेछिल आतङ्के। तखन ओर मनटा सतर्क छिल ना। ये-भावटाके ओ निजेर काछेओ सर्वदा चेपे राखते चाय, यार प्रबलता निजेओ कुमु सम्पूर्ण जाने ना से तखन हठात् आत्मप्रकाश करे-छिल।

मधुसूदन चिबिये चिबिये बलले, "दादार काछे याबार जन्ये तोमार दरबार ?"

कुमु एइ मुहूर्तेइ ओर पाये पड़ते प्रस्तुत हयेछिल, किन्तु ओर मुखे दादार नाम शुनेइ शक्त हये उठल। बलले, "ना।"

"तुमि येते चाओ ना ?"

"ना, आमि चाइ ने।"

"नवीनके आमार काछे दरबार करते पाठाओ नि ?"

"ना, पाठाइ नि।"

"दादार काछे याबार इच्छे ताके तुमि जानाओ नि ?"

"आमि ताँके बलेछिलुम, दादाके देखते आमि याब ना।"

"केन ?"

"ता आमि बलते पारि ने।"

"बलते पार ना ? आबार तोमार सेइ नुरनगरि चाल ?"

"आमि ये नुरनगरेरइ मेये।"

"याओ, तादेर काछेइ याओ। योग्य नओ तुमि एखानकार। अनुग्रह करेछिलेम, मर्यादा बुझले ना। एखन अनुताप करते हबे।"

कुमु काठ हये बसे रइल, कोनो उत्तर करले ना। कुमुर हात धरे असह्य एकटा झाँकानि दिये मधुसूदन बलले, "माप चाइतेओ जान ना ?"

"किसेर जन्ये ?"

"तुमि ये आमार एइ बिछानार उपरे शुते पेरेछ तार जन्ये।"

कुमु तत्क्षणात् बिछाना थेके उठे पाशेर घरे चले गेल।

मधुसूदन बाइरेर घरे याबार पथे देखले श्यामासुन्दरी सेइ बारान्दाय उपुड़ हये पड़े। मधुसूदन पाशे एसे निचु हये तार हात धरे टेने तोलबार चेष्टा करे बलले, "की करछ, श्यामा ?" अमनि श्यामा उठे बसे मधुसूदनेर दुइ पा बुके जड़िये धरले, गद्गद कण्ठे बलले, "आमाके मेरे फेलो तुमि।"

मधुसूदन ताके हात धरे तुले दाँड़ कराले, बलले, "इस, तोमार गा ये एकेबारे ठाण्डा हिम। चलो तोमाके शुइये दिये आसि गे।" बले ताके निजेर शालेर एक अंशे आवृत करे डान हात दिये सबले चेपे धरे शोबार घरे पौँछिये दिये एल। श्यामा चुपि चुपि बलले, "एकटु बसबे ना ?"

मधुसूदन बलले, "काज आछे।"

रातेर वेला कोथा थेके भूत चेपे एतक्षण मधुसूदनेर काज नष्ट करे देबार जोगाड़ करेछे--आर नय। कुमुर काछ थेके ये-उपेक्षा पेयेछे तार क्षति-पूरणेर भाण्डार अन्य कोथाओ जमा आछे एटुकु से बुझे निले। भालोबासार भितर दिये मानुष आपनार ये परम मूल्य उपलब्धि करे, आज रात्रे सेइ अनुभव करबार प्रयोजन मधुसूदनेर छिल। श्यामासुन्दरी समस्त जीवनमन दिये ओर जन्ये अपेक्षा करे आछे, सेइ आश्वासटुकु पेये मधुसूदन आज रात्रे काजेर जोर पेले, ये-अमर्यादार काँटा ओर मनेर मध्ये बिँधे आछे तार वेदना अनेकटा कमिये दिले।

एदिके रात्रे कुमु ये-धाक्का पेले तार मध्ये ओर एकटा सान्त्वना छिल। यतबार मधुसूदन ताके भालोबासा देखियेछे, ततबारइ कुमुर मने एकटा टानाटानि एसेछे ; भालोबासार मूल्येइ एर परिशोध करा चाइ एइ कर्तव्यबोधे ओके अत्यन्त अस्थिर करेछे। ए-लड़ाइये कुमुर जेतबार कोनो आशा छिल ना। किन्तु पराभवटा कुश्री, सेटाके केवलइ चापा देबार जन्ये एतदिन कुमु प्राणपणे चेष्टा करेछे। काल रात्रे सेइ चापा-देओया पराभवटा एक मुहूर्ते सम्पूर्ण धरा पड़े गेल। कुमुर असतर्क अवस्थाय मधुसूदन स्पष्ट करे देखते पेयेछे ये कुमुर समस्त प्रकृति मधुसूदनेर प्रकृतिर विरुद्ध ; एइटे निश्चित जाना हये गेल से भालो, तार परे परस्परेर या कर्तव्य सेटा अकपट भावे करा सम्भव हबे। मधुसूदन ओके कामना करे, सेइखानेइ समस्या ; क्षोभेर सङ्गे ओके ये वर्जन करते चाय सेइखानेइ सत्य। सत्यइ मधुसूदनेर बिछानाय शोबार अधिकार ओर नेइ। शुये ओ केवलइ फाँकि दिच्छे। ए-बाड़िते ओर ये-पद सेटा विड़म्बना।

आज रात्रे एइ एकटा प्रश्न बारबार कुमुर मने उठेछे--कुमुके निये मधुसूदनेर केन एत निर्बन्ध ? ओ तो कथाय कथाय नुरनगरि चालेर प्रसङ्ग

तुले कुमुके खोंटा देय, तार माने कुमुर सङ्गे ओदेर एकेवारे धातेर तफात, जातेर तफात, किन्तु मधुसूदन केन तबे ओके भालोबासा जानाय ? ए कि कखनो सत्य भालोबासा हते पारे ? कुमुर निश्चय विश्वास, आज मधुसूदन याइ मने करुक ना केन, कुमुके दिये कखनोइ ओर मन भरते पारे ना। यत शीघ्र मधुसूदन ता बोझे ततइ सकल पक्षेर मङ्गल ।

नवीन काल रात्रे दादार काछ थेके सम्मति निये यत आनन्द करे शुते गेल, आज सकाले तार आर बड़ो-किछु बाकि रइल ना। काल रात्रि तखन आड़ाइटा। मधुसूदन काज शेष करे तखनइ नवीनके डेके पाठियेछिल। हुकुम एइ ये, कुमुदिनीके विप्रदासेर ओखाने पाठिये देओया हबे, यतदिन मधुसूदन ना आपनि डेके पाठाय ततदिन फिरे आसबार दरकार नेइ। नवीन बुझले एटा निर्वासनदण्ड ।

आङिना-घेरा चौको बारान्दार ये-अंशे काल रात्रे मधुसूदनेर सङ्गे श्यामार साक्षात् हयेछिल, ठिक तार विपरीत दिकेर बारान्दार संलग्न नवीनेर शोवार घर। तखन ओरा स्वामीस्त्री कुमुर सम्बन्धेइ आलोचना करछिल। एमन समय गलार शब्द शुने मोतिर मा घरेर दरजा खुलतेइ ज्योत्स्नार आलोते मधुसूदनेर सङ्गे श्यामार मिलनेर छवि देखते पेले। बुझते पारले कुमुर भाग्येर जाले एइ रात्रे निःशब्दे आर-एकटा शक्त गिँट पड़ल ।

नवीनके मोतिर मा बलले, "ठिक एइ संकटेर समय कि दिदिर चले याओया भालो हच्छे ?"

नवीन बलले, "एतदिन तो बउरानी छिलेन ना, काण्डटा तो एतदूर कखनोइ एगोय नि। बउरानी आछेन बलेइ एटा घटेछे।"

"की बल तुमि !"

"बउरानी ये घुमन्त क्षुधाके जागियेछेन तार अन्न जोगाते पारेन नि, ताइ से अनर्थपात करते बसेछे। आमि तो बलि एइ समयटाय ओँर दूरे थाकाइ भालो, ताते आर-किछु ना होक अन्तत उनि शान्तिते थाकते पारबेन।"

"तबे एटा कि एमनि भावेइ चलबे ?"

"ये-आगुन नेबाबार कोनो उपाय नेइ, सेटाके आपनि ज्वले छाइ हओया पर्यन्त ताकिये देखते हबे।"

परदिन सकाले हाबलु समस्त क्षण कुमुर सङ्गे सङ्गे फिरले। गुरुमशाय यखन पड़ार जन्ये ओके बाइरे डेके पाठाले, ओ कुमुर मुखेर दिके चाइले। कुमु यदि येते बलत तो ओ येत, किन्तु कुमु बेहाराके बले दिले आज हाबलुर छुटि।

वधू किछुदिनेर जन्ये बापेर बाड़ि याच्छे सेइ सुरटि आज कुमुर यात्रार

समय लागल ना। एबाड़ि येन ओके आज हाराते बसेछे। ये पाखिके खाँचाय बन्दी करा हयेछिल, आज येन दरजा एकटु फाँक करतेइ से उड़े पड़ल, आर येन ए-खाँचाय से ढुकबे ना।

नवीन बलले, "बउरानी, फिरे आसते देरि कोरो ना एइ कथाटा सब मन दिये बलते पारले बेंचे येतुम, किन्तु मुख दिये बेरोल ना। यादेर काछे तोमार यथार्थ सम्मान सेइखानेइ तुमि थाको गे। कोनो काले नवीनके यदि कोनो कारणे दरकार हय स्मरण कोरो।"

मोतिर मा निजेर हाते तैरि आमसत्त्व आचार प्रभृति एकटा हाँड़िते साजिये पालकिते तुले दिले। विशेष किछु बलले ना। किन्तु मने तार बेश एकटु आपत्ति छिल। यतदिन बाधा छिल स्थूल, यतदिन मधुसूदन कुमुके बाहिर थेके अपमान करेछे, मोतिर मार समस्त मन ततदिन छिल कुमुर पक्षे; किन्तु ये-बाधा सूक्ष्म, या मर्मगत, विश्लेषण करे यार संज्ञा निर्णय करा कठिन, तारइ शक्ति ये प्रबलतम, ए कथाटा मोतिर मार काछे सहज नय। स्वामी ये-मुहूर्ते प्रसन्न हबे सेइ मुहूर्ते अविलम्बे स्त्री सेटाके सौभाग्य बले गण्य करबे, मोतिर मा एइटेकेइ स्वाभाविक बले जाने। एर व्यतिक्रमके से बाड़ाबाड़ि मने करे। एमन कि, एखनओ ये बउरानी सम्बन्धे नवीनेर दरद आछे, एटाते तार राग हय। कुमुर प्रकृतिगत वितृष्णा ये एकान्त अकृत्रिम, एटा ये अहंकार नय, एमन कि एइटे निये ये कुमुर निजेर सङ्गे निजेर दुर्जय विरोध, साधारणत मेयेदेर पक्षे एटा स्वीकार करे नेओया कठिन। ये चीने मेये प्रथार अनुसरणे निजेर पा विकृत करते आपत्ति करे नि, से यदि शोने जगते एमन मेये आछे ये आपनार एइ पदसंकोच-पीड़नके स्वीकार करा अपमानजनक बले मने करे, तबे निश्चय सेइ कुण्ठाके से हेसे उड़िये देय, निश्चय बले ओटा न्याकामि। येटा निगूढ़भावे स्वाभाविक, सेइटेकेइ से जाने अस्वाभाविक। मोतिर मा एकदिन कुमुर दुःखे सब-चेये वेशि दुःख पेयेछिल, बोध करि सेइ जन्यइ आज तार मन एत कठिन हते आरम्भ करेछे। प्रतिकूल भाग्य यखन वरदान करते आसे, तखन तार पाये माथा ठेकिये ये मेये अविलम्बे से वर ग्रहण करते ना पारे, ताके ममता करा मोतिर मार पक्षे असम्भव—एमन कि मार्जना कराओ।

४६

बाड़िर सामने आसतेइ पालकिर दरजा एकटु फाँक करे, कुमु उपरेर

दिके चेये देखल। रोज एइ समयटा विप्रदास रास्तार धारेर बारान्दाय बसे खबरेर कागज पड़त, आज देखले सेखाने केउ नेइ। आज ये कुमु एखाने आसबे से खबर ए-बाड़िते पाठानो हय नि। पालकिर सङ्गे महाराजार तकमा-परा दरोयानके देखे ए-बाड़िर दरोयान व्यस्त हये उठल, बुझले ये दिदिठाकरुन एसेछे। बार-बाड़िर आङ्गिना पार हये अन्तःपुरेर दिके पालकि चलेछिल। कुमु थामिये द्रुतपदे बाइरेर सिंड़ि बेये उपरेर दिके उठे चलल। तार इच्छे ताके आर केउ देखबार आगे सब-प्रथमेइ दादार सङ्गे तार देखा हय। निश्चय से जानत, बाइरेर आराम-कामरातेइ रोगीर थाकबार व्यवस्था हयेछे। ओखाने जानला थेके बागानेर कृष्णचूड़ा, काञ्चन ओ अशथ गाछेर एकटि कुञ्जसभा देखते पाओया याय। सकालेर रोद्दुर डालपालार भितर दिये एइ घरेइ प्रथम देखा देय। एइ घरटिइ विप्रदासेर पछन्द।

कुमु सिंड़िर काछे आसतेइ सर्वाग्रे टम कुकुर छुटे एसे ओर गायेर 'परे झाँपिये पड़े चेंचिये लेज झापटिये अस्थिर करे दिले। कुमुर सङ्गे सङ्गेइ लाफाते लाफाते चेंचाते चेंचाते टम चलल। विप्रदास एकटा मुड़े-तोला कौचेर पिठे हेलान दिये आध-शोओया अवस्थाय, पायेर उपर एकटा छिटेर बालापोश टाना; एकखाना बइ निये डान हातटा बिछानार उपर एलिये आछे, येन क्लान्त हये एकटु आगे पड़ा बन्ध करेछे। चायेर पेयाला आर भुक्तावशिष्ट रुटि समेत एकटा पिरिच पाशे मेजेर उपरे पड़े। शियरेर काछे देयालेर गायेर शेलफे बइगुलो उलटपालट एलोमेलो। रात्रे ये-ल्याम्प ज्वलेछिल सेटा धोंयाय दागि अवस्थाय घरेर कोणे एखनओ पड़े आछे।

कुमु विप्रदासेर मुखेर दिके चेये चमके उठल। ओर एमन विवर्ण रुग्ण मूर्ति कखनो देखे नि। सेइ विप्रदासेर सङ्गे एइ विप्रदासेर येन कत युगेर तफात। दादार पायेर तलाय माथा रेखे कुमु काँदते लागल।

"कुमु ये, एसेछिस? आय एइखाने आय।" बले विप्रदास ताके पाशे टेने निये एल। यदिओ चिठिते विप्रदास ताके आसते एकरकम बारण करेछिल, तबु तार मने आशा छिल ये कुमु आसबे। आसते पेरेछे देखे ओर मने हल, तबे हयतो कोनो बाधा नेइ—तबे कुमुर पक्षे तार घरकन्ना सहज हये गेछे। एदेर पक्ष थेकेइ कुमुके आनबार जन्ये प्रस्ताव, पालकि ओ लोक पाठानोइ नियम—किन्तु ता ना हओया सत्त्वेओ कुमु एल, एटाते ओर यतटा स्वाधीनता कल्पना करे निले ततटा मधुसूदनेर घरे विप्रदास एकेबारेइ प्रत्याशा करे नि।

कुमु तार दुइ हात दिये विप्रदासेर आलुथालु चुल एकटु परिपाटि करते करते बलले, "दादा, तोमार ए की चेहारा हयेछे।"

"आमार चेहारा भालो हबार मतो इदानीङ तो कोनो घटना घटे नि—किन्तु तोर ए की रकम श्री! फ्याकाशे हये गेछिस ये।"

इतिमध्ये खबर पेये क्षेमा पिसि एसे उपस्थित। सेइ सङ्गे दरजार काछे एकदल दासी चाकर भिड़ करे जमा हल। क्षेमा पिसिके प्रणाम करतेइ पिसि ओके बुके जड़िये धरे कपाले चुमु खेले। दासदासीरा एसे प्रणाम करले। सकलेर सङ्गे कुशल-सम्भाषण हये गेले पर कुमु बलले, "पिसि, दादार चेहारा बड़ो खाराप हये गेछे।"

"साधे हयेछे! तोमार हातेर सेवा ना पेले ओर देह ये किछुतेइ भालो हते चाय ना। कतदिनेर अभ्येस।"

विप्रदास बलले, "पिसि, कुमुके खेते बलबे ना?"

"खाबे ना तो की। सेओ की बलते हबे? ओदेर पालकिर बेहारा-दरोयान सबाइके बसिये एसेछि, तादेर खाइये दिये आसि गे। तोमरा दुजने एखन गल्प करो, आमि चललुम।"

विप्रदास क्षेमा पिसिके इशारा करे काछे डेके काने काने किछु बले दिले। कुमु बुझले ओदेर बाड़िर लोकदेर की भावे विदाय करते हबे तारइ परामर्श। एइ परामर्शेर मध्ये कुमु आज अपर पक्ष हये उठेछे। ओर कोनो मत नेइ। एटा ओर एकटुओ भालो लागल ना। कुमुओ तार शोध तुलते बसल। ए-बाड़िते तार चिरकालेर स्थान फिरे दखलेर काज शुरु करे दिले।

प्रथमत, दादार खानसामा गोकुलके फिस् फिस् करे की एकटा हुकुम करले, तार परे लागल निजेर मनेर मतो करे घर गोछाते। बाइरेर बारान्दाय सरिये दिले पिरिच, पेयाला, ल्याम्प, खालि सोडा-ओआटारेर बोतल, एकखाना बेत-छेंड़ा चौकि, गोटाकतक मयला तोयाले एवं गेञ्जि। शेलफेर उपर बइगुलो ठिकमतो साजाले, दादार हातेर काछाकाछि एकखानि टिपाइ सरिये एने तार उपरे गुछिये राखले पड़वार बइ, कलमदान, ब्लटिंप्याड, खाबार जलेर काँचेर सोराइ आर गेलास, छोटो एकटि आयना, एवं चिरुनि-ब्रुश।

इतिमध्ये गोकुल एकटा पितलेर जगे गरम जल, एकटा पितलेर चिलेमचि, आर साफ तोयाले बेतेर मोड़ार उपर एने राखले। किछुमात्र सम्मतिर अपेक्षा ना रेखे कुमु गरम जले तोयाले भिजिये विप्रदासेर मुख-हात मुछिये दिये तार चुल आँचड़िये दिले, विप्रदास शिशुर मतो चुप करे सह्य करल।

कखन की ओषुध खाओयाते हबे एवं पथ्येर नियम की समस्त जेने निये एमन भाबे गुछिये बसल येन ओर जीवने आर कोथाओ कोनो दायित्व नेइ।

विप्रदास मने मने भाबते लागल एर अर्थटा की? भेबेछिल, देखा करते एसेछे आबार चले याबे, किन्तु से-रकम भाव तो नय। श्वशुरबाड़िते कुमुर सम्बन्धटा की रकम दाँड़ियेछे सेटा विप्रदास जानते चाय, किन्तु स्पष्ट करे प्रश्न करते संकोच बोध करे। कुमुर निजेर मुख थेकेइ शुनबे एइ आशा करे रइल। केवल आस्ते आस्ते एकबार जिज्ञासा करले, "आज तोके कखन येते हबे?"

कुमु बलले, "आज येते हबे ना।"

विप्रदास विस्मित हये जिज्ञासा करले, "एते तोर श्वशुरबाड़िते कोनो आपत्ति नेइ?"

"ना, आमार स्वामीर सम्मति आछे।"

विप्रदास चुप करे रइल। कुमु घरेर कोणेर टेबिलटाते एकटा चादर बिछिये दिये तार उपर ओषुधेर शिशि बोतल प्रभृति गुछिये राखते लागल। खानिकक्षण परे विप्रदास जिज्ञासा करले, "तोके कि तबे काल येते हबे?"

"ना, एखन आमि किछुदिन तोमार काछे थाकब।"

टम कुकुरटा कौचेर निचे शान्त हये निद्रार साधनाय नियुक्त छिल, कुमु ताके आदर करे तार प्रीति-उच्छ्‌वासके असंयत करे तुलले। से लाफिये उठे कुमुर कोलेर उपरे दुइ पा तुले कलभाषाय उच्चस्वरे आलाप आरम्भ करे दिले। विप्रदास बुझते पारले कुमु हठात् एइ गोलमालटा सृष्टि करे तार पिछने एकटु आड़ाल करले आपनाके।

खानिक बादे कुकुरेर सङ्गे खेला बन्ध करे कुमु मुख तुले बलले, "दादा, तोमार बार्लि खाबार समय हयेछे, एने दिइ।"

"ना समय हय नि" बले कुमुके इशारा करे बिछानार पाशेर चौकिते बसाले। आपनार हाते तार हात तुले निये बलले, "कुमु, आमार काछे खुले बल्, की रकम चलछे तोदेर।"

तखनइ कुमु किछु बलते पारले ना। माथा निचु करे बसे रइल, देखते देखते मुख हल लाल, शिशुकालेर मतो करे विप्रदासेर प्रशस्त बुकेर उपर मुख रेखे केंदे उठल; बलले, "दादा आमि सबइ भुल बुझेछि, आमि किछुइ जानतुम ना।"

विप्रदास आस्ते आस्ते कुमुर माथाय हात बुलिये दिते लागल। खानिक बादे बलले, "आमि तोके ठिकमतो शिक्षा दिते पारि नि। मा थाकले तोके तोर श्वशुरबाड़िर जन्ये प्रस्तुत करे दिते पारतेन।"

कुमु बलले, "आमि बराबर केवल तोमादेरइ जानि, एखान थेके अन्य जायगा ये एत बेशि तफात ता आमि मने करते पारतुम ना। छेलेबेला थेके आमि या-किछु कल्पना करेछि सब तोमादेरइ छाँचे। ताइ मने एकटुओ भय हय नि। माके अनेक समये बाबा कष्ट दियेछेन जानि, किन्तु से छिल दुरन्तपना, तार आघात बाइरे, भितरे नय। एखाने समस्तटाइ अन्तरे अन्तरे आमार येन अपमान।"

विप्रदास कोनो कथा ना बले दीर्घनिश्वास फेले चुप करे बसे भावते लागल। मधुसूदन ये ओदेर थेके सम्पूर्ण आर-एक जगतेर मानुष, ता सेइ विवाह-अनुष्ठानेर आरम्भ थेकेइ बुझते पेरेछे। तारइ विषम उद्वेगे ओर शरीर येन कोनोमतेइ सुस्थ हये उठछे ना। एइ दिङ्नागेर स्थूलहस्तावलेप थेके कुमुके उद्धार करबार तो कोनो उपाय नेइ। सकलेर चेये मुशकिल एइ ये, एइ मानुषेर काछे ऋणे ओर समस्त सम्पत्ति बाँधा। एइ अपमानित सम्बन्धेर धाक्का ये कुमुकेओ लागछे। एतदिन रोगशय्याय शुये शुये विप्रदास केवलइ भेबेछे मधुसूदनेर एइ ऋणेर बन्धन थेके केमन करे से निष्कृति पाबे। ओर कलकाताय आसबार इच्छे छिल ना, पाछे कुमुर श्वशुरबाड़िर सङ्गे ओदेर सहज व्यवहार असम्भव हय। कुमुर उपर ओर ये स्वाभाविक स्नेहेर अधिकार आछे, पाछे ता पदे पदे लाञ्छित हते थाके, ताइ ठिक करेछिल नुरनगरेइ वास करबे। कलकाताय आसते बाध्य हयेछे अन्य कोनो महाजनेर काछ थेके धार नेबार व्यवस्था करबे बले। जाने ये एटा अत्यन्त दुःसाध्य, ताइ एर दुश्चिन्तार बोझा ओर बुकेर उपर चेपे बसे आछे।

खानिक बादे कुमु विप्रदासेर थेके अन्यदिके घाड़ एकटु बेंकिये बलले, "आच्छा, दादा, स्वामीर 'परे कोनोमते मन प्रसन्न करते पारछि ने, एटा कि आमार पाप?"

"कुमु, तुइ तो जानिस, पापपुण्य सम्बन्धे आमार मतामत शास्त्रेर सङ्गे मेले ना।"

अन्यमनस्कभावे कुमु एकटा छविओआला इंरेजि मासिक पत्रेर पाता ओलटाते लागल। विप्रदास बलले, "भिन्न भिन्न मानुषेर जीवन तार घटनाय ओ अवस्थाय एतइ भिन्न हते पारे ये, भालोमन्दर साधारण नियम अत्यन्त पाका करे बेंधे दिले अनेक समये सेटा नियमइ हय, धर्म हय ना।"

कुमु मासिक पत्रटार दिके चोख निचु करे बलले, "येमन मीराबाइएर जीवन।"

निजेर मध्ये कर्तव्य-अकर्तव्येर द्वन्द यखनइ कठिन हये उठेछे, कुमु तखनइ

भेबेछे मीराबाइएर कथा। एकान्त मने इच्छा करेछे केउ ओके मीराबाइएर आदर्शटा भालो करे बुझिये देय।

कुमु एकटु चेष्टा करे संकोच काटिये बलते लागल, "मीराबाइ आपनार यथार्थ स्वामीके अन्तरेर मध्ये पेयेछिलेन बलेइ समाजेर स्वामीके मन थेके छेड़े दिते पेरेछिलेन, किन्तु संसारके छाड़बार सेइ बड़ो अधिकार कि आमार आछे?"

विप्रदास बलले, "कुमु, तोर ठाकुरके तुइ तो समस्त मन दियेइ पेयेछिस।"

"एक समये ताइ मने करेछिलुम। किन्तु यखन संकटे पड़लुम तखन देखि प्राण आमार केमन शुकिये गेछे, एत चेष्टा करछि किन्तु किछुते ताँके येन आमार काछे सत्य करे तुलते पारछि ने। आमार सब चेये दुःख सेइ।"

"कुमु, मनेर मध्ये जोयार-भाँटा खेले। किन्तु भय करिस ने, रात्तिर माझे-माझे आसे, दिन ता बले तो मरे ना। या पेयेछिस तोर प्राणेर सङ्गे ता एक हये गेछे।"

"सेइ आशीर्वाद करो, ताँके येन ना हाराइ। निर्दय तिनि दुःख देन, निजेके देबेन बलेइ। दादा, आमार जन्ये भाविये आमि तोमाके क्लान्त करछि।"

"कुमु, तोर शिशुकाल थेके तोर जन्ये भावा ये आमार अभ्येस। आज यदि तोर कथा जाना बन्ध हये याय, तोर जन्ये भावते ना पाइ, ता हले शून्य ठेके। सेइ शून्यता हातड़ाते गियेइ तो मन क्लान्त हये पड़ेछे।"

कुमु विप्रदासेर पाये हात बुलिये दिते दिते बलले, "आमार जन्ये तुमि किन्तु किछु भेबो ना, दादा। आमाके यिनि रक्षा करबेन तिनि भितरेइ आछेन, आमार विपद नेइ।"

"आच्छा, थाक् ओ-सब कथा। तोके येमन गान शेखातुम, इच्छे करछे तेमनि करे आज तोके शेखाइ।"

"भाग्यि शिखियेछिले, दादा, ओतेइ आमाके बाँचाय। किन्तु आज नय, तुमि आगे एकटु जोर पाओ। आज आमि वरञ्च तोमाके एकटा गान शोनाइ।"

दादार शियरेर काछे बसे कुमु आस्ते आस्ते गाइते लागल,

> पिया घर आये, सोही पीतम पिय प्यार रे।
> मीराके प्रभु गिरिधर नागर,
> चरणकमल बलिहार रे।

विप्रदास चोख बुजे शुनते लागल। गाइते गाइते कुमुर दुइ चक्षु भरे

उठल एक अपरूप दर्शने। भितरेर आकाश आलो हये उठल। प्रियतम घरे एसेछेन, चरणकमल बुकेर मध्ये छुंते पाच्छे। अत्यन्त सत्य हये उठल अन्तरलोक, येखाने मिलन घटे। गान गाइते गाइते ओ सेइखाने पौंछेछे। 'चरणकमल बलिहार रे'—समस्त जीवन भरे दिले सेइ चरणकमल, अन्त नेइ तार—संसारे दुःख-अपमानेर जायगा रइल कोथाय। 'पिया घर आये' तार बेशि आर की चाइ। एइ गान कोनोदिन यदि शेष ना हय ताहले तो चिरकालेर मतो रक्षा पेये गेल कुमु।

किछु रुटि-टोस्ट आर एक पेयाला बार्लि गोकुल टिपाइएर उपर रेखे दिये गेल। कुमु गान थामिये बलले, "दादा, किछुदिन आगे मने-मने गुरु खुंजछिलुम, आमार दरकार की? तुमि ये आमाके गानेर मन्त्र दियेछ।"

"कुमु आमाके लज्जा दिस ने। आमार मतो गुरु रास्ताय घाटे मेले, तारा अन्यके ये-मन्त्र देय निजे तार मानेइ जाने ना। कुमु, कतदिन एखाने थाकते पारबि ठिक करे बल् देखि?"

"यतदिन ना डाक पड़े।"

"तुइ एखाने आसते चेयेछिलि?"

"ना, आमि चाइ नि।"

"एर माने की?"

"मानेर कथा भेबे लाभ नेइ दादा। चेष्टा करलेओ बुझते पारब ना। तोमार काछे आसते पेरेछि एइ यथेष्ट। यतदिन थाकते पारि सेइ भालो। दादा, तोमार खाओया हच्छे ना, खेये नाओ।"

चाकर एसे खबर दिले मुखुज्येमशाय एसेछेन। विप्रदास एकटु येन व्यस्त हये उठे बलले, "डेके दाओ।"

४७

कालु घरे ढुकतेइ कुमु ताके प्रणाम करले।

कालु बलले, "छोटोखुकी, एसेछ? एइबार दादार सेरे उठते देरि हबे ना।"

कुमुर चोख छलछल करे उठल। अश्रु सामले निये बलले, "दादा, तोमार बार्लिते नबुर रस देबे ना?"

विप्रदास उदासीन भावे हात ओलटाले, अर्थात् ना हलेइ वा क्षति की। कुमु जाने विप्रदास बार्लि खेते भालोबासे ना, ताइ ओ यखनइ दादाके बार्लि

खाइयेछे बार्लिते नेबुर रस एवं अल्प एकटु गोलापजल मिशिये बरफ दिये शरबतेर मतो बानिये दित। से आयोजन आज नेइ, तबु विप्रदास आपन इच्छे काउके जानायओ नि, या पेयेछे ताइ वितृष्णार सङ्गे खेयेछे।

बार्लि ठिकमतो तैरि करे आनबार जन्ये कुमु चले गेल।

विप्रदास उद्विग्नमुखे जिज्ञासा करले, "कालुदा, खबर की बलो।"

"तोमार एकलार सइये टाका धार दिते केउ राजि हय ना, सुबोधेर सइ चाय। माड़ोयारि धनीदेर केउ केउ दिते पारे, किन्तु सेटा नितान्त बाजि-खेलार मतो करे--अत्यन्त बेशि सूद चाय, से आमादेर पोषाबे ना।"

"कालुदा, सुबोधके तार करते हबे आसबार जन्ये। आर देरि करले तो चलबे ना।"

"आमारओ भालो ठेकछे ना। सेबारे तोमार सेइ आऊटि-बेचा टाका निये यखन मूल देनार एक अंश शोध करते गेलुम, मधुसूदन निते राजि हल ना; तखनइ बुझलुम सुविधे नय। निजेर मर्जिमतो एकदिन हठात् कखन फाँस एँटे धरबे।"

विप्रदास चुप करे भावते लागल।

कालु बलले, "दादा, छोटोखुकी ये हठात् आज सकाले चले एल, रागारागि करे आसे नि तो? मधुसूदनके चटाबार मतो अवस्था आमादेर नय, एटा मने राखते हबे।"

"कुमु बलछे ओर स्वामीर सम्मति पेयेछे।"

"सम्मतिटार चेहरा की रकम ना जानले मन निश्चिन्त हच्छे ना। कत सावधाने ओर सङ्गे व्यवहार करि से आर तोमाके की बलब दादा। रागे सर्व अङ्ग यखन ज्वलछे तखनओ ठाण्डा हये सब सयेछि, गौरीशंकरेर पाहाड़टार मतो दुपुर-रोद्दुरेओ तार बरफ गले ना। एके महाजन ताते भग्निपति, एके सामले चला कि सोजा कथा!"

विप्रदास कोनो जवाब ना करे चुप करे भावते लागल।

कुमु एल बार्लि निये। विप्रदासेर मुखेर काछे पेयाला धरे बलले, "दादा खेये नाओ।"

विप्रदास तार भावना थेके हठात् चमके उठल। कुमु बुझते पारले, गभीर एकटा उद्वेगेर मध्ये दादा एतक्षण डुबे छिल।

कालु यखन घरे थेके बेरिये गेल कुमु तार पिछन पिछन गिये बारान्दाय ओके धरे बलले, "कालुदा, आमाके सब कथा बलते हबे।"

"की कथा बलते हबे दिदि?"

"तोमादेर की एकटा निये भावना चलछे।"

"विषय आछे भावना नेइ, संसारे एओ कि कखनो सम्भव हय खुकी ? ओ ये काँटागाछेर फल, खिदेर चोटे पेड़े खेतेओ हय, पाड़ते गिये सर्वाङ्ग छड़ेओ याय।"

"से-सब कथा परे हबे, आमाके बलो की हयेछे।"

"विषयकर्मेर कथा मेयेदेर बलते निषेध।"

"आमि निश्चय जानि तोमादेर की निये कथा हच्छे। बलब ?"

"आच्छा, बलो।"

"आमार स्वामीर काछे दादार धार आछे, सेइ निये।"

कोनो जवाब ना दिये कालु तार बड़ो बड़ो दुइ चोख सकौतुक विस्मय-हास्ये विस्फारित करे कुमुर मुखेर दिके ताकिये रइल।

"आमाके बलतेइ हबे, ठिक बलेछि कि ना।"

"दादारइ बोन तो, कथा ना बलतेइ कथा बुझे नेय।"

बियेर परे प्रथम येदिन विप्रदासेर महाजन बले मधुसूदन आस्फालन करे शासिये कथा बलेछिल, सेइदिन थेकेइ कुमु बुझेछिल दादार सङ्गे स्वामीर सम्बन्धेर अगौरव। प्रतिदिनइ एकान्तमने इच्छे करेछिल एटा येन घुचे याय। विप्रदासेर मने एर असम्मान ये बिँधे आछे ताते कुमुर सन्देह छिल ना। सेदिन नवीन येइ विप्रदासेर चिठिर व्याख्या करले, अमनि कुमुर मने एल समस्तर मूले आछे एइ देनापाओनार सम्बन्ध। दादार शरीर केन ये एत क्लान्त, कोन् काजेर विशेष तागिदे दादा कलकाताय चले एसेछे, कुमु समस्तइ स्पष्ट बुझते पारले।

"कालुदा, आमार काछे लुकियो ना, दादा टाका धार करते एसेछे।"

"ता, धार करेइ तो धार शुधते हबे; टाका तो आकाश थेके पड़े ना। कुटुम्बदेर खातक हये थाकाटा तो भालो नय।"

"से तो ठिक कथा, ता टाकार जोगाड़ करते पेरेछ ?"

"घुरे घेरे देखछि, हये याबे, भय की।"

"ना, आमि जानि, सुविधे करते पार नि।"

"आच्छा, छोटोखुकी, सबइ यदि जान, आमाके जिज्ञासा करा केन ? छेलेवेलाय एकदिन आमार गोंफ टेने धरे जिज्ञासा करे छिले, गोंफ हल केमन करे ? बलेछिलुम, समय बुझे गोंफेर बीज बुनेछिलुम बले। तातेइ प्रश्नटार तखनइ निष्पत्ति हये गेल। एखन हले जवाब देबार जन्ये डाक्तार डाकते हत। सब कथाइ ये तोमाके स्पष्ट करे जानाते हबे संसारेर एमन नियम नय।"

"आमि तोमाके बले राखछि, कालुदा, दादार सम्बन्धे सब कथाइ आमाके जानते हबे।"

"की करे दादार गोंफ उठल, ताओ ?"

"देखो, अमन करे कथा चापा दिते पारबे ना। आमि दादार मुख देखेइ बुझेछि टाकार सुविधे करते पार नि।"

"नाइ यदि पेरे थाकि, सेटा जेने तोमार लाभ हबे की ?"

"से आमि बलते पारि ने, किन्तु आमाके जानतेइ हबे। टाका धार पाओ नि तुमि ?"

"ना, पाइ नि।"

"सहजे पाबे ना ?"

"पाब निश्चयइ, किन्तु सहजे नय। ता दिदि, तोमार कथार जवाब देओयार चेष्टा छेड़े पाबार चेष्टाय बेरोले काज हय तो किछु एगोते पारे। आमि चललुम।"

खानिकटा गियेइ आबार फिरे एसे कालु बलले, "खुकी, एखाने ये तुमि आज चले एले, तार मध्ये तो कोनो काँटा खोंचा नेइ ? ठिक सत्यि करे बलो।"

"आछे कि ना ता आमि खुब स्पष्ट करे जानि ने।"

"स्वामीर सम्मति पेयेछ ?"

"ना-चाइतेइ तिनि सम्मति दियेछेन।"

"राग करे ?"

"ताओ आमि ठिक जानि ने; बलेछेन, डेके पाठाबार आगे आमार याबार दरकार नेइ।"

"से कोनो काजेर कथा नय, तार आगेइ येयो, निजे थेकेइ येयो।"

"गेले हुकुम माना हबे ना।"

"आच्छा, से आमि देखब।"

दादा आज एइ ये विषम विपदे पड़ेछे, एर समस्त अपराध कुमुर, ए-कथा ना मने करे कुमु थाकते पारल ना। निजेके मारते इच्छे करे, खुब कठिन मार। शुनेछे एमन संन्यासी आछे यारा कण्टकशय्याय शुये थाके, ओ सेइरकम करे शुते राजि, यदि ताते कोनो फल पाय। कोनो योगी कोनो सिद्धपुरुष यदि ओके रास्ता देखिये देय ताहले चिरदिन तार काछे बिकिये थाकते पारे। निश्चयइ तेमन केउ आछे, किन्तु कोथाय ताके पाओया याय। यदि मेयेमानुष ना हत, ताहले या हय एकटा किछु उपाय से करतइ। किन्तु

मेजदादा की करछेन। एकला दादार घाड़े समस्त बोझा चापिये दिये कोन् प्राणे इंलण्डे बसे आछेन ?

कुमु घरे ढुके देखे विप्रदास कड़िकाठेर दिके ताकिये चुप करे बिछानाय पड़े आछे। एमन करले शरीर की सारते पारे! विरुद्ध भाग्येर दुयारे माथा कुटे मरते इच्छे करे।

दादार शियरेर काछे बसे माथाय हात बुलोते बुलोते कुमु बलले, "मेजदादा कबे आसबेन ?"

"ता तो बलते पारि ने।"

"ताँके आसते लेखो-ना।"

"केन बल् देखि !"

"संसारेर समस्त दाय एकला तोमारइ घाड़े, ए तुमि बइबे की करे ?"

कारओवा थाके दाबि, कारओवा थाके दाय ; एइ दुइ निये संसार। दायटाकेइ आमि आमार करेछि, ए आमि अन्यके देब केन ?"

"आमि यदि पुरुषमानुष हतुम जोर करे तोमार काछ थेके केड़े नितुम।"

"ताह्लेइ तो बुझते पारछिस कुमु, दाय घाड़े नेबार एकटा लोभ आछे। तुइ निजे निते पारछिस ने बलेइ तोर मेजदादाके दिये साध मेटाते चास। केन आमिइ वा की अपराध करेछि।"

"दादा, तुमि टाका धार करते एसेछ ?"

"किसेर थेके बुझलि ?"

"तोमार मुख देखेइ बुझेछि। आच्छा, आमि कि किछुइ करते पारि ने ?"

"की करे बलो ?"

"एइ मने करो, कोनो दलिले सइ करे। आमार सइयेर कि कोनो दामइ नेइ ?"

"खुबइ दाम आछे ; से आमादेर काछे, महाजनेर काछे नय।"

"तोमार पाये पड़ि दादा, बलो, आमि की करते पारि।"

"लक्ष्मी हये शान्त हये थाक्, धैर्य धरे अपेक्षा कर, मने राखिस संसारे सेओ एकटा मस्त काज। तुफानेर मुखे नौको ठिक राखाओ येमन एकटा काज, माथा ठिक राखाओ तेमनि। आमार एसराजटा निये आय, एकटु बाजा।"

"दादा, आमार बड़ो इच्छे करछे एकटा किछु करि।"

"बाजानोटा बुझि एकटा किछु नय।"

"आमि चाइ खुब एकटा शक्त काज।"

"दलिल नाम सइ करार चेये एसराज बाजानो अनेक बेशि शक्त। आन् यन्त्रटा।"

४८

एकदिन मधुसूदनके सकलेइ येमन भय करत, श्यामासुन्दरीरओ भय छिल तेमनि। भितरे भितरे मधुसूदन तार दिके कखनो कखनो येन टलेछे, श्यामासुन्दरी ता आन्दाज करेछिल। किन्तु कोन् दिक दिये बेड़ा डिङ्गिये ये ओर काछे याओया याय ता ठाहर करते पारत ना। हातड़े हातड़े माझे माझे चेष्टा करेछे, प्रत्येकबार फिरेछे धाक्का खेये। मधुसूदन एकनिष्ठ हये व्यवसा गड़े तुलछिल, काञ्चनेर साधनाय कामिनीके से अत्यन्तइ तुच्छ करेछे, मेयेरा सेइजन्ये ओके अत्यन्तइ भय करत। किन्तु एइ भयेरओ एकटा आकर्षण आछे। दुरु दुरु वक्ष एवं संकुचित व्यवहार नियेइ श्यामासुन्दरी ईषत् एकटा आवरणेर आड़ाले मुग्धमने मधुसूदनेर काछे काछे फिरेछे। एक-एकबार यखन असतर्क अवस्थाय मधुसूदन ओके अल्प एकटु प्रश्रय दियेछे, सेइ समयेइ यथार्थ भयेर कारण घटेछे; तार अनतिपरेइ किछुदिन धरे विपरीत दिक थेके मधुसूदन प्रमाण करबार चेष्टा करेछे ओर जीवने मेयेरा एकेबारेइ हेय। ताइ एतकाल श्यामासुन्दरी निजेके खुबइ संयत करे रेखेछिल।

मधुसूदनेर बियेर पर थेके से आर थाकते पारछिल ना। कुमुके मधुसूदन यदि अन्य साधारण मेयेर मतोइ अवज्ञा करत, ता हले सेटा एकरकम सह्य हत। किन्तु श्यामा यखन देखले राश आलगा दिये मधुसूदनओ कोनो मेयेके निये अन्धवेगे मेते उठते पारे, तखन संयम रक्षा तार पक्षे आर सहज रइल ना। ए-कयदिन साहस करे यखन-तखन एकटु एकटु एगिये आसछिल, देखेछिल एगिये आसा चले। माझे माझे अल्पस्वल्प बाधा पेयेछे किन्तु सेओ देखले केटे याय। मधसूदनेर दुर्बलता धरा पड़ेछे, सेइजन्येइ श्यामार निजेर मध्येओ धैर्य बाँध मानते आर पारे ना। कुमु चले आसबार आगेर रात्रे मधुसूदन श्यामाके यत काछे टेनेछिल एमन तो आर कखनोइ हय नि। तार परेइ ओर भय हल पाछे उलटो धाक्काटा जोरे एसे लागे। किन्तु एटुकु श्यामा बुझे नियेछे ये, भीरुता यदि ना करे तबे भयेर कारण आपनि केटे याबे।

सकालेइ मधुसूदन बेरिये गियेछिल, वेला एकटा पेरिये बाड़ि एसेछे। इदानीङ अनेक काल धरे ओर स्नानाहारेर नियमेर एमन व्यतिक्रम घटे नि।

आज बड़ोइ क्लान्त अवसन्न हये बाड़िते येइ एल, प्रथम कथाइ मने हल, कुमु तार दादार ओखाने चले गेछे एवं खुशि हयेइ चले गेछे। एतकाल मधुसूदन आपनाते आपनि खाड़ा छिल, कखन एक समये ढिल दियेछे, शरीर-मनेर आतुरतार समय कोनो मेयेर भालोबासाके आश्रय करबार सुप्त इच्छा ओर मने उठेछे जेगे, सेइजन्येइ अनायासे कुमुर चले याओयाते ओर एमन धिक्कार लागल। आज ओर खाबार समये श्यामासुन्दरी इच्छा करेइ काछे एसे बसे नि; की जानि काल रात्रे निजेके धरा देबार परे मधुसूदन निजेर उपर पाछे विरक्त हये थाके। खाबार पर मधुसूदन शून्य शोबार घरे एसे एकटुखानि चुप करे थाकल, तार परे निजेइ श्यामाके डेके पाठाले। श्यामा लाल रङेर एकटा विलिति शाल गाये दिये येन एकटु संकुचित भावे घरे ढुके एकधारे नतनेत्रे दाँड़िये रइल। मधुसूदन डाकले, "एस, एइखाने एस, बसो।"

श्यामा शियरेर काछे बसे "तोमाके ये बड़ो रोगा देखाच्छे आज" बले एकटु झुंके पड़े माथाय हात बुलिये दिते लागल।

मधुसूदन बलले, "आः, तोमार हात बेश ठाण्डा।"

रात्रे मधुसूदन यखन शुते एल श्यामासुन्दरी अनाहूत घरे ढुके बलले, "आहा, तुमि एकला।"

श्यामासुन्दरी एकटू येन स्पर्धार सङ्गेइ कोनो आर आवरण राखते दिले ना। येन असंकोचे सबाइके साक्षी रेखेइ ओ आपनार अधिकार पाका करे तुलते चाय। समय बेशि नेइ, कबे आबार कुमु एसे पड़बे, तार मध्ये दखल सम्पूर्ण हओया चाइ। दखलटा प्रकाश्य हले तार जोर आछे, कोनोखाने लज्जा राखले चलबे ना। अवस्थाटा देखते देखते दासीचाकरदेर मध्येओ जानाजानि हल। मधुसूदनेर मने बहुकालेर प्रवृत्तिर आगुन यतबड़ो जोरे चापा छिल, ततबड़ो जोरेइ ता अवारित हल, काउके केयार करले ना, मत्तता खुब स्थूलभावेइ संसारे प्रकाश करे दिले।

नवीन मोतिर मा दुजनेइ बुझले ए-बान आर ठेकानो यावे ना।

"दिदिके कि डेके आनबे ना? आर कि देरि करा भालो?"

"सेइ कथाइ तो भावछि। दादार हुकुम नइले तो उपाय नेइ। देखि चेष्टा करे।"

येदिन सकाले कौशले दादार काछे कथाटा पाड़बे बले नवीन एल, देखे ये दादा बेरोबार जन्ये प्रस्तुत, दरजार काछे गाड़ि तैरि।

नवीन जिज्ञासा करले, "कोथाओ बेरोच्छ नाकि?"

मधुसूदन एकटु संकोच काटिये बलले, "सेइ गनत्कार वेङ्कटस्वामीर काछे।"

नवीनेर काछे दुर्बलता चापा राखतेइ चेयेछिल। हठात् मने हल ओके सङ्गे निये गेलेइ सुविधा हते पारे। ताइ बलले, "चलो आमार सङ्गे।"

नवीन भाबले, सर्वनाश। बलले, "देखे आसि गे से बाड़िते आछे कि ना। आमार तो बोध हच्छे से देशे चले गेछे, अन्तत सेइरकम तो कथा।"

मधुसूदन बलले, "ता बेश तो, देखे आसा याकना।"

नवीन निरुपाय हये सङ्गे चलल, किन्तु मने-मने प्रमाद गनले।

गनत्कारेर बाड़िर सामने गाड़ि दाँड़ाइतेइ नवीन ताड़ाताड़ि नेमे गिये एकटु उँकि मेरेइ बलले, "बोध हच्छे केउ येन बाड़िते नेइ।"

येमन बला, सेइ मुहूर्तेइ स्वयं वेङ्कटस्वामी दाँतन चिबोते चिबोते दरजार काछे बेरिये एल। नवीन द्रुत तार गा घेंषे प्रणाम करे बलले, "सावधाने कथा कवेन।"

सेइ एँदो घरे तक्तपोशे सबाइ बसल। नवीन बसल मधुसूदनेर पिछने। मधुसूदन किछु बलबार आगेइ नवीन बले बसल, "महाराजेर समय बड़ो खाराप याच्छे, कबे ग्रहशान्ति हबे बले दाओ शास्त्रीजि।"

मधुसूदन नवीनेर एइ फाँस-करे-देओया प्रश्ने अत्यन्त विरक्त हये बुड़ो आङुल दिये तार ऊरुते खुब एकटा टिपनि दिले।

वेङ्कटस्वामी राशिचक्र केटे एकेबारे स्पष्टइ देखिये दिले मधुसूदनेर धनस्थाने शनिर दृष्टि पड़ेछे।

ग्रहेर नाम जेने मधुसूदनेर कोनो लाभ नेइ, तार सङ्गे बोझापड़ा करा शक्त। ये-ये मानुष ओर सङ्गे शत्रुता करछे स्पष्ट करे तादेरइ परिचय चाइ, वर्णमालार ये-वर्गेइ पड़ुक नाम बेर करते हबे। नवीनेर मुशकिल एइ ये, से मधुसूदनेर आपिसेर इतिवृत्तान्त किछुइ जाने ना। इशारातेओ साहाय्य खाटबे ना। वेङ्कटस्वामी मुग्धबोधेर सूत्र आओड़ाय आर मधु-सूदनेर मुखेर दिके आड़े आड़े चाय। आजकेर दिनेर नामेर वेलाय भृगुमुनि सम्पूर्ण नीरव। हठात् शास्त्री बले बसल, शत्रुता करछे एकजन स्त्रीलोक।

नवीन हाँफ छेड़े बाँचल। सेइ स्त्रीलोकटि ये श्यामासुन्दरी एइटे कोनोमते खाड़ा करते पारले आर भावना नेइ। मधुसूदन नाम चाय। शास्त्री तखन वर्णमालार वर्ग शुरु करले। 'क'वर्ग शब्दटा बले येन अदृश्य भृगुमुनिर दिके कान पेते रइल—कटाक्षे देखते लागल मधुसूदनेर दिके। 'क'वर्ग शुनेइ मधुसूदनेर मुखे ईषत् एकटु चमक दिले। ओदिके

पिछन थेके 'ना' संकेत करे नवीन डाइने बाँये लागाल घाड़-नाड़ा। नवीनेर जानाइ नेइ ये माद्राजे ए-संकेतेर उलटो माने। वेङ्कटस्वामीर आर सन्देह रइल ना––जोरगलाय बलले, 'क'वर्ग। मधुसूदनेर मुख देखे ठिक बुझेछिल 'क'वर्गेर प्रथम वर्णटाइ। ताइ कथाटाके आरओ एकटु व्याख्या करे शास्त्री बलले, एइ कयेर मध्येइ मधुसूदनेर समस्त कु।

एर परे पुरो नाम जानबार जन्ये पीड़ापीड़ि ना करे व्यग्र हये मधुसूदन जिज्ञासा करले, "एर प्रतिकार ?"

वेङ्कटस्वामी गम्भीरभावे बले दिले, कण्टकनैव कण्टकं––अर्थात् उद्धार करबे अन्य एकजन स्त्रीलोक।"

मधुसूदन चकित हये उठल। वेङ्कटस्वामी मानवचरित्रविद्यार चर्चा करेछे।

नवीन अस्थिर हये जिज्ञासा करले, "स्वामीजि, घोड़दौड़े महाराजार घोड़ाटा कि जितेछे ?"

वेङ्कटस्वामी जाने अधिकांश घोड़ाइ जेते ना, एकटु हिसाबेर भान करे बले दिले, "लोकसान देखते पाच्छि।"

किछुकाल आगेइ मधुसूदनेर घोड़ा मस्त जित जितेछे। मधुसूदनके कोनो कथा बलबार समय ना दिये मुख अत्यन्त विमर्ष करे नवीन जिज्ञासा करले, "स्वामीजि, आमार कन्याटार की गति हबे ?" बला बाहुल्य, नवीनेर कन्या नेइ।

वेङ्कटस्वामी निश्चय ठाओराले पात्र खुंजछे। नवीनेर चेहरा देखेइ बुझले, मेयेटि अप्सरा नय। बले दिले, पात्र शीघ्र मिलबे ना, अनेक टाका व्यय करते हबे।

मधुसूदनके एकटु अवसर ना दिये परे परे दश-बारोटा असंगत प्रश्नेर अद्भुत उत्तर बेर करे निये नवीन बलले, "दादा, आर केन ? एखन चलो।"

गाड़िते उठेइ नवीन बले उठल, "दादा, ओर समस्त चालाकि। भण्ड कोथाकार।"

"किन्तु सेदिन ये––"

"सेदिन ओ आगे थाकते खबर नियेछिल।"

"केमन करे जानले ये आमि आसब ?"

"आमारइ बोकामि। घाट हयेछे ओर काछे तोमाके एनेछिलुम।"

ज्योतिषीर प्रतारणार प्रमाण यतइ पाक, 'क'वर्गेर कु मधुसूदनेर मने बिंधे रइल। भेबे देखले ये, नक्षत्र अनादर करे खुचरो प्रश्नेर या-ता जवाब

देय, किन्तु आदत प्रश्नेर जवाबे भुल हय ना। मधुसूदन यार प्रत्याशाइ करेनि सेइ दुःसमय ओर विवाहेर सङ्गे सङ्गेइ एल। एर चेये स्पष्ट प्रमाण की हवे ?

नवीन आस्ते आस्ते कथा पाड़ल, "दादा, दुइ सप्ताह तो केटे गेल, एइबार बउरानीके आनिये निइ।"

"केन, ताड़ा किसेर ? देखो नवीन, तोमाके बले राखलुम आर कखनोइ ए-सब कथा आमार काछे तुलबे ना। येदिन आमार खुशि आमि आनिये नेब।"

नवीन दादाके चेने, बुझले ए-कथाटा खतम हये गेल।

तबु साहस करे जिज्ञासा करले, "मेजोबउ यदि बउरानीके देखते याय ताहले कि दोष आछे ?"

मधुसूदन अवज्ञा करे संक्षेपे बलले, "याक्‌ना।"

४९

व्यस्तसमस्त हये एकटा केदारा देखिये दिये विप्रदास बलले, "आसुन नवीनबाबु, एइखाने बसुन।"

नवीन बलले, "आमार परिचयटा पान नि बोध हच्छे। मने करेछेन आमि राजबाड़िर कोन् आडुरे छेले। यिनि आपनार छोटो बोन, आमि ताँर अधम सेवक, आमाके सम्मान करे आमाय आशीर्वादटा फाँकि देबेन ना। किन्तु करेछेन की ? आपनार अमन शरीरेर केवल छायाटि बाकि रेखेछेन।"

"शरीरटा सत्य नय, छाया, माझे माझे से-खबरटा पाओया भालो। ओते शेषेर पाठ एगिये थाके।"

कुमु घरे ढुकेइ बलले, "ठाकुरपो चलो किछु खाबे।"

"खाब, किन्तु एकटा शर्त आछे। यतक्षण पूरण ना हबे; ब्राह्मण अतिथि अभुक्त तोमार द्वारे पड़े थाकबे।"

"शर्तटा की शुनि।"

"आमादेर बाड़िते थाकतेइ दरबार जानिये रेखेछिलुम किन्तु सेखाने जोर पाइ नि। भक्तके एकखानि छबि तोमाय दिते हबे। सेदिन बलेछिले नेइ, आज ता बलबार जो नेइ, तोमार दादार घरेर देयाले ओइ तो सामनेइ झुलछे।"

भालो छबि दैवात् हये थाके, कुमुर ओइ छबिटि तेमनि येन दैवेर रचना।

कपाले ये-आलोटि पड़ले कुमुर मनेर चेहाराटि मुखे प्रकाश पाय, सेइ आलो-टिइ पड़ेछिल। ललाटे निर्मल बुद्धिर दीप्ति, चोखे गभीर सारल्येर सकरुणता। दाँड़ानो छबि। कुमुर सुन्दर डान हातटि एकटा शून्य चौकिर हातार उपरे। मने हये येन सामने ओ आपनारइ एकटा दूरकालेर छाया देखते पेये हठात् थमके दाँड़ियेछे।

निजेर एइ छबिटि कुमुर चोखे पड़े नि। कलकाता थेके छबिओआला आनिये विवाहेर कयदिन आगे ओर दादा एटि तुलियेछिल। तार परे निजेर घरे छबिटि टाङियेछे, एइटेते कुमुर हृदय आर्द्र हये गेल। फटोग्राफेर कपि आरओ निश्चय आछे, ताइ दादार मुखेर दिके चाइले। नवीन बलले, "बुझते पारछेन, विप्रदासबाबु, बउरानीर दया हयेछे। देखुन ना ओँर चोखेर दिके चेये। अयोग्य बलेइ आमार प्रति ओँर एकटु विशेष करुणा।"

विप्रदास हेसे बलले, "कुमु, आमार ओइ चामड़ार बाक्सय आरओ खानकयेक छबि आछे, तोर भक्तके वरदान करते चास यदि तो अभाव हबे ना।"

कुमु नवीनके खाओयाते निये गेले पर कालु एल घरे। बलले, "आमि मेजोबाबुके तार करेछि, शीघ्र चले आसबार जन्ये।"

"आमार नामे?"

"हाँ, तोमारइ नामे, दादा। आमि जानि, तुमि शेष पर्यन्त हाँ-ना करबे, एदिके समय बड़ो कठिन हये आसछे। डाक्तारेर काछे या शोना गेल, तोमार उपर एत चाप सइबे ना।"

डाक्तार बलेछे हृद्यन्त्रेर विकारेर लक्षण देखा दियेछे, शरीरमन शान्त राखा चाइ। एकसमये विप्रदासेर ये अतिरिक्त कुस्तिर नेशा छिल एटा तारइ फल, तार सङ्गे योग दियेछे मनेर उद्वेग।

सुबोधके ए-रकम जोर-तलब करे घरे आना भालो हबे किना विप्रदास बुझते पारले ना। चुप करे भावते लागल। कालु बलले, "बड़ोबाबु, मिथ्ये भावछ, विषयकर्मेर एकटा शेष व्यवस्था एखनइ करा चाइ, आर एते ताँके ना हले चलबे ना। बारो पार्सेण्ट सुदे माड़ोयारिर हाते माथा बिकिये दिते पारब ना। तारा आबार दु-लाख टाका आगाम सुद हिसेबे केटे नेबे। तार उपर दालालि आछे।"

विप्रदास बलले, "आच्छा आसुक सुबोध। किन्तु आसबे तो?"

"यतबड़ो साहेब होक'ना, तोमार तार पेले से ना एसे थाकते पारबे

ना। से तुमि निश्चिन्त थाको। किन्तु दादा, आर देरि करा नय, खुकीके श्वशुरबाड़ि पाठिये दाओ।"

विप्रदास खानिकक्षण चुप करे रइल, बलले, "मधुसूदन ना डेके पाठाले याबार बाधा आछे।"

"केन, खुकी कि मधुसूदनेर पाटखाटा मजुर? निजेर घरे याबे तार आबार हुकुम किसेर?"

आहार सेरे नवीन एकला एल विप्रदासेर घरे। विप्रदास बलले, "कुमु तोमाके स्नेह करे।"

नवीन बलले, "ता करेन। बोध करि आमि अयोग्य बलेइ ओंर स्नेह एत बेशि।"

"ताँर सम्बन्धे तोमाके किछु बलते चाइ, तुमि आमाके कोनो कथा लुकियो ना।"

"कोनो कथा आमार नेइ या आपनाके बलते आमार बाधबे।"

"कुमु ये एखाने एसेछे आमार मने हच्छे तार मध्ये येन बाँका किछु आछे।"

"आपनि ठिकइ बुझेछेन। याँर अनादर कल्पना करा याय ना संसारे ताँरओ अनादर घटे।"

"अनादर घटेछे तबे?"

"सेइ लज्जाय एसेछि। आर तो किछुइ पारि ने, पायेर धुलो निये मने मने माप चाइ।"

"कुमु यदि आजइ स्वामीर घरे फिरे याय ताते क्षति आछे कि?"

"सत्यि कथा बलि, येते बलते साहस करि ने।"

ठिक ये की हयेछे विप्रदास सेकथा नवीनके जिज्ञासा करले ना। मने करले, जिज्ञासा करा अन्याय हबे। कुमुकेओ प्रश्न करे कोनो कथा बेर करते विप्रदासेर अभिरुचि नेइ। मनेर मध्ये छटफट करते लागल। कालुके डेके जिज्ञासा करले, "तुमि तो ओदेर बाड़ि याओया-आसा कर, मधुसूदनेर सम्बन्धे तुमि बोध हय किछु जान।"

"किछु आभास पेयेछि, किन्तु सम्पूर्ण ना जेने तोमार काछे किछु बलते चाइ ने। आर दुटो दिन सबुर करो, खबर तोमाके दिते पारब।"

आशङ्काय विप्रदासेर मन व्यथित हये उठल। प्रतिकार करबार कोनो रास्ता तार हाते नेइ बले दुश्चिन्ताटा ओर हृत्पिण्डटाके क्षणे क्षणे मोचड़ दिते लागल।

५०

कुमु अनेकदिन येटा एकान्त इच्छा करेछिल से ओर पूर्ण हल ; सेइ परिचित घरे, सेइ ओर दादार स्नेहेर परिवेष्टनेर मध्ये एल फिरे, किन्तु देखते पेले ओर सेइ सहज जायगाटि नेइ। एक-एकबार अभिमाने ओर मने हच्छे याइ फिरे, केनना ओ स्पष्ट बुझते पारछे सबारइ मने प्रतिदिन एइ प्रश्नटि रयेछे, 'ओ फिरे याच्छे ना केन, की हयेछे ओर?' दादार गभीर स्नेहेर मध्ये ओइ एकटा उत्कण्ठा, सेटा निये ओदेर मध्ये स्पष्ट आलोचना चले ना, तार विषय ओ निजे, अथच ओर काछे सेटा चापा रइल।

विकेल हये आसछे, रोद्दुर पड़े एल। शोबार घरेर जानालार काछे कुमु बसे। काकगुलो डाकाडाकि करछे, बाइरेर रास्ताय गाड़िर शब्द आर लोकालयेर नाना कलरव। नतुन वसन्तेर हाओया शहरेर इँटकाठेर उपर रङ धराते पारले ना। सामनेर बाड़िटाके अनेकखानि आड़ाल करे एकटा पातबादामेर गाछ, अस्थिर हाओया तारइ घनसबुज पाताय दोल लागिये अपराह्णेर आलोटाके टुकरो टुकरो करे छड़िये दिते लागल। एइरकम समयेइ पोषा हरिणि तार अजाना वनेर दिके छुटे येते चाय, येदिन हाओयार मध्ये वसन्तेर छोँओया लागे, मने हय पृथिवी येन उत्सुक हये चेये आछे नील आकाशेर दूर पथेर दिके। या-किछु चारदिके बेड़े आछे सेइटेकेइ मने हय मिथ्ये, आर यार ठिकाना पाओया याय नि, यार छवि आँकते गेले रङ याय आकाशे छड़िये, मूर्ति उँकि दिये पालिये याय जलस्थलेर नाना इशारार मध्ये, मन ताकेइ बले सब चेये सत्य। कुमुर मन हाँपिये उठे आज पालाइ-पालाइ करछे सब किछु थेके, आपनार काछ थेके। किन्तु ए की बेड़ा। आज ए-बाड़ितेओ मुक्ति नेइ। कल्पनाय मृत्युकेओ मधुर करे तुलले। मने मने बलले, कालो यमुनार पारे, सेइ कालोवरण, चलेछि तारइ अभिसारे, दिनेर पर दिने—कत दीर्घ पथ कत दुःखेर पथ। मने पड़े गेल, दादार असुख बेड़ेछे—सेवा करते एसे आमिइ असुख बाड़ियेछि, एखन आमि या करते याब तातेइ उलटो हबे। दुइ हाते मुख चेपे धरे कुमु खुब खानिकटा केँदे निले। कान्नार वेग थामले स्थिर करले बाड़ि फिरे याबे, ता या हय ताइ हबे—सब सह्य करबे—शेषकाले तो आछे मुक्ति, शीतल गभीर मधुर। सेइ मृत्युर कल्पना मनेर मध्ये यतइ स्पष्ट करे आँकड़े धरल ततइ ओर बोध हल जीवनेर भार एकेबारे दुर्वह हबे ना, गुन गुन करते गाइते लागल—

पथपर रयनि अँधेरा,
कुञ्जपर दीप उजियारा।

दुपुरवेला कुमु दादाके घुम पाड़िये दिये चले एसेछिल, एतक्षणे ओषुध आर पथ्य खाओयाबार समय हयेछे। घरे एसे देखले विप्रदास उठे बसे पोर्टफोलियो कोले निये सुबोधके इंरेजिते एक लम्बा चिठि लिखछे। भर्त्सनार सुरे कुमु ताके बलले, "दादा, आज तुमि भालो करे घुमोओ नि।"

विप्रदास बलले, "तुइ ठिक करे रेखेछिस घुमोलेइ विश्राम हय। मन यखन चिठि लेखार दरकार बोध करे तखन चिठि लिखलेइ विश्राम।"

कुमु बुझले, दरकारटा ओके नियेइ। समुद्रेर एपारे एक भाइके व्याकुल करेछे, समद्रेर ओपारे आर-एक भाइके छटफटिये देबे, की भाग्य नियेइ जन्मेछिल तादेर एइ बोन। दादाके चा-खाओयानो हले पर आस्ते आस्ते बलले, "अनेकदिन तो हये गेल, एबार बाड़ि याओया ठिक करेछि।"

विप्रदास कुमुर मुखेर दिके चेये बोझबार चेष्टा करले कथाटा की भावेर। एतदिन दुइ भाइबोनेर मध्ये ये स्पष्ट बोझापड़ा छिल आज आर ता नेइ, एखन मनेर कथार जन्ये हातड़े बेड़ाते हय। विप्रदास लेखा बन्ध करले। कुमुके पाशे बसिये किछु ना बले तार हातेर उपर धीरे धीरे हात बुलिये दिते लागल। कुमु तार भाषा बुझल। संसारेर ग्रन्थि कठिन हयेछे, किन्तु भालोबासार एकटुकुओ अभाव हय नि। चोख दिये जल पड़ते चाइल, जोर करे बन्ध करे दिले। कुमु मने मने बलले, एइ भालोबासार उपर से भार चापाबे ना। ताइ आबार बलले, "दादा, आमि याओया ठिक करेछि।"

विप्रदास की जवाब देबे भेबे पेले ना, केनना कुमुर याओयाटाइ हय तो भालो, अन्तत सेटाइ तो कर्तव्य। चुप करे रइल। एमन समय कुकुरटा घुम थेके जेगे कुमुर कोलेर उपर दुइ पा तुले विप्रदासेर प्रसाद रुटिर टुकरोर जन्ये काकुति जानाले।

रामस्वरूप बेहारा एसे खबर दिले मुखुज्येमशाय एसेछेन। कुमु उद्विग्न हये बलले, "आज दिने तोमार घुम हय नि, तार उपरे कालुदार सङ्गे तर्कवितर्क करे क्लान्त हये पड़बे। आमि वरञ्च याइ, किछु यदि कथा थाके शुने निइ गे, तार परे तोमाके समयमतो एसे जानाब।"

"भारि डाक्तार हयेछिस तुइ! एकजनेर कथा यदि आर-एकजन शुने नेय ताते रोगीर मन खुब सुस्थिर हय भेबेछिस!"

"आच्छा आमि शुनब ना, किन्तु आज थाक।"

"कुमु, इंरेज कवि बलेछे, श्रुत संगीत मधुर, अश्रुत संगीत मधुरतर। तेमनि श्रुत संवाद क्लान्तिकर हते पारे, किन्तु अश्रुत संवाद आरओ अनेक क्लान्तिकर, अतएव अविलम्बे शुने नेओयाइ भालो।"

"आमि किन्तु पनेरो मिनिट परेइ आसब, आर तखनओ यदि तोमादेर कथावार्ता ना थामे तबे आमि तार मध्येइ एसराज बाजाब—भीमपलश्री।"

"आच्छा तातेइ राजि।"

आधघण्टा परे एसराज हाते करेइ कुमु घरे ढुकल, किन्तु विप्रदासेर मुखेर भाव देखे तखनइ एसराजटा देयालेर कोणे ठेकिये रेखे दादार पाशे बसे तार हात चेपे धरे जिज्ञासा करले, "की हयेछे दादा?"

कुमु एतदिन विप्रदासेर मध्ये ये-अस्थिरता लक्ष्य करेछिल तार मध्ये एकटा गभीर विषाद छिल। विप्रदासेर जीवने दुःखताप अनेक गेछे, केउ ताके सहजे विचलित हते देखे नि। बइ पड़ा गानबाजना करा, दुरबीन निये तारा देखा, घोड़ाय चड़ा, नाना जायगा थेके अजाना गाछपाला निये बागान करा प्रभृति नाना विषयेइ तार औत्सुक्य थाकाते से निजेर सम्बन्धीय दुःखकष्टके निजेर मध्ये कखनो जमते देय नि। एबार रोगेर दुर्बलताय ताके निजेर छोटो गण्डिर मध्ये बड़ो बेशि करे बद्ध करेछे। एखन से बाइरे थेके सेवा ओ सङ्ग पाबार जन्ये उन्मुख हये थाके, चिठिपत्र ठिकमतो ना पेले उद्विग्न हय, भावनागुलो देखते देखते कालो हये ओठे। ताइ दादार 'परे कुमुर स्नेह आज येन मातृस्नेहेर मतो रूप धरेछे—तार अमन धैर्यगम्भीर आत्मसमाहित दादार मध्ये कोथा थेके येन बालकेर भाव एल, एत अनादर, एत चाञ्चल्य, एत जेद। आर सेइ सङ्गे एमन गम्भीर विषाद आर उत्कण्ठा।

किन्तु कुमु एसे देखले तार दादार सेइ आवेशटा केटे गियेछे। तार चोखे ये आगुन ज्वलेछे से येन महादेवेर तृतीय नेत्रेर आगुनेर मतो, निजेर कोनो वेदनार जन्ये नय—से तार दृष्टिर सामने विश्वेर कोनो पापके देखते पाच्छे, ताके दग्ध करा चाइ। कुमुर कथाय कोनो उत्तर ना दिये सामनेर देयाले अनिमेष दृष्टि रेखे विप्रदास चुप करे बसे रइल।

कुमु आर खानिक बादे आबार जिज्ञासा करल, "दादा, की हयेछे बलो।"

विप्रदास येन एक दूर लक्ष्येर दिके दृष्टि रेखे बलले, "दुःख एड़ाबार जन्ये चेष्टा करले दुःख पेये बसे। ओके जोरेर सङ्गे मानते हबे।"

"तुमि उपदेश दाओ, आमि मानते पारब दादा।"

"आमि देखते पाच्छि, मेयेदेर ये-अपमान, से आछे समस्त समाजेर भितरे, से कोनो एकजन मेयेर नय।"

कुमु भालो करे तार दादार कथार माने बुझते पारले ना।

विप्रदास बलले, "व्यथाटाके आमारइ आपनार मने करे एतदिन कष्ट पाच्छिलुम, आज बुझते पारछि, एर सङ्गे लड़ाइ करते हबे, सकलेर हये।"

विप्रदासेर फ्याकाशे गौरवर्ण मुखेर उपर लाल आभा एल। ओर कोलेर उपर रेशमेर काज-करा एकटा चौको बालिश छिल सेटाके ठेले हठात् सरिये फेले दिले। बिछाना थेके उठे पाशेर हाताओआला चौकिर उपर बसते याच्छिल, कुमु ओर हात चेपे धरे बलले, "शान्त हओ दादा, उठो ना, तोमार असुख बाड़बे।" बले एकटु जोर करेइ पिठर दिकेर उँचु-करा बालिशेर उपर विप्रदासके हेलिये शुइये दिले।

विप्रदास गायेर कापड़टाके मुठो दिये चेपे धरे बलले, "सह्य करा छाड़ा मेयेदेर अन्य कोनो रास्ता एकेबारेइ नेइ बलेइ तादेर उपर केवलइ मार एसे पड़छे। बलबार दिन एसेछे ये सह्य करब ना। कुमु, एखानेइ तोर घर मने करे थाकते पारबि? ओ-बाड़िते तोर याओया चलबे ना।"

कालुर काछ थेके विप्रदास आज अनेक कथा शुनेछे।

श्यामासुन्दरीर सङ्गे मधुसूदनेर ये-सम्बन्ध घटेछे तार मध्ये अप्रकाश्यता आर छिल ना। ओरा दुइ पक्षइ अकुण्ठित। लोके ओदेरके अपराधी मने करछे मने करेइ ओरा स्पर्धित हये उठेछे। एइ सम्बन्धटार मध्ये सूक्ष्म काज किछुइ छिल ना बलेइ परस्परके एवं लोकमतके बाँचिये चला ओदेर पक्षे छिल अनावश्यक। शोना गेछे श्यामासुन्दरीके मधुसूदन कखनो मेरेओछे, श्यामा यखन तारस्वरे कलह करेछे, तखन मधुसूदन ताके सकलेर सामनेइ बलेछे, 'दूर हये या, बज्जात, बेरिये या आमार बाड़ि थेके।' किन्तु एतेओ किछु आसे याय नि। श्यामार सम्बन्धे मधुसूदन आपन कर्तृत्व सम्पूर्ण बजाय रेखेछे, इच्छे करे मधुसूदन निजे ताके या दियेछे श्यामा यखनइ तार बेशि किछुते हात दिते गेछे अमनि खेयेछे धमक। श्यामार इच्छे छिल संसारेर काजे मोतिर मार जायगाटा सेइ दखल करे, किन्तु तातेओ बाधा पेले; मधुसूदन मोतिर माके सम्पूर्ण विश्वास करे, श्यामासुन्दरीके विश्वास करे ना। श्यामार सम्बन्धे ओर कल्पनाय रङ लागे नि, अथच खुब मोटा रकमेर एकटा आसक्ति जन्मेछे। येन शीतकालेर बहुव्यवहृत मयला रेजाइटार मतो, ताते कारुकाजेर सम्पूर्ण अभाव, विशेष यत्न करबार जिनिस नय, खाट थेके धुलोय पड़े गेलेओ आसे याय ना। किन्तु ओते आराम आछे। श्यामाके सामलिये चलबार एकटुओ दरकार नेइ, ता छाड़ा श्यामा समस्त मनप्राणेर

सङ्गे ओके ये बड़ो बले माने, ओर जन्ये सब सइते सब करते से राजि एटा निःसंशये जानार दरुन मधुसूदनेर आत्ममर्यादा सुस्थ आछे। कुमु थाकते प्रतिदिन ओर एइ आत्ममर्यादा बड़ो बेशि नाड़ा खेयेछिल।

मधुसूदनेर एइ आधुनिक इतिहासटा जानबार जन्ये कालुके खुब बेशि सन्धान करते हय नि। ओदेर बाड़िते लोकजनेर मध्ये एइ निये यथेष्ट बलाबलि चलेछिल, अवशेषे नितान्त अभ्यस्त हओयाते बलाबलिर पालाओ एकरकम शेष हये एसेछे।

खबरटा शोनबामात्र विप्रदासके येन आगुनेर तीर मारले। मधुसूदन किछु ढाकबार चेष्टामात्रओ करे नि, निजेर स्त्रीके प्रकाश्ये अपमान करा एतइ सहज—स्त्रीर प्रति अत्याचार करते बाहिरेर बाधा एतइ कम। स्त्रीके निरुपायभावे स्वामीर बाध्य करते समाजे हाजार रकम यन्त्र ओ यन्त्रणार सृष्टि करा हयेछे, अथच सेइ शक्तिहीन स्त्रीके स्वामीर उपद्रव थेके बाँचाबार जन्ये कोनो आवश्यिक पन्था राखा हय नि। एरइ निदारुण दुःख ओ असम्मान घरे घरे युगे युग की रकम व्याप्त हये आछे एक मुहूर्ते विप्रदास ता येन देखते पेले। सतीत्वगरिमार घन प्रलेप दिये एइ व्यथा मारबार चेष्टा, किन्तु वेदनाके असम्भव करबार एकटुओ चेष्टा नेइ। स्त्रीलोक एत सस्ता, एत अकिञ्चित्कर।

विप्रदास बलले, "कुमु, अपमान सह्य करे याओया शक्त नय, किन्तु सह्य करा अन्याय। समस्त स्त्रीलोकेर हये तोमाके तोमार निजेर सम्मान दाबि करते हबे, एते समाज तोमाके यत दुःख दिते पारे दिक।"

कुमु बलले, "दादा, तुमि कोन् अपमानेर कथा बलछ ठिक बुझते पारछि ने।"

विप्रदास बलले, "तुइ कि तबे सब कथा जानिस ने ?"

कुमु बलले, "ना।"

विप्रदास चुप करे रइल। एकटु परे बलले, "मेयेदेर अपमानेर दुःख आमार बुकेर मध्ये जमा हये रयेछे। केन ता जानिस ?"

कुमु किछु ना बले दादार मुखेर दिके चेये रइल। खानिक परे बलले, "चिरजीवन मा या दुःख पेयेछिलेन आमि ता कोनोमते भुलते पारि ने, आमादेर धर्मबुद्धिहीन समाज सेजन्ये दायी।"

एइखाने भाइबोनेर मध्ये प्रभेद आछे। कुमु तार बाबाके खुब बेशि भालोबासत, जानत ताँर हृदय कत कोमल। समस्त अपराध काटियेओ तार बाबा छिलेन खुब बड़ो ए-कथा ना मने करे से थाकते पारत ना, एमन

कि तार बाबार जीवने ये शोचनीय परिणाम घटेछिल सेजन्ये से तार माकेइ मने मने दोष दियेछे ।

विप्रदासओ तार बाबाके बड़ो बलेइ भक्ति करेछे । किन्तु बारे बारे स्खलनेर द्वारा तार माके तिनि सकलेर काछे असम्मानित करते बाधा पान नि एटा से कोनोमते क्षमा करते पारले ना । तार माओ क्षमा करेन नि बले विप्रदास मनेर मध्ये गौरव बोध करत ।

विप्रदास बलले, "आमार मा ये अपमान पेयेछिलेन ताते समस्त स्त्रीजातिर असम्मान । कुमु, तुइ व्यक्तिगतभावे निजेर कथा भुले सेइ असम्मानेर विरुद्धे दाँड़ाबि, किछुते हार मानबि ने ।"

कुमु मुख निचु करे आस्ते आस्ते बलले, "बाबा किन्तु माके खुब भालोबासतेन से-कथा भुलो ना, दादा । सेइ भालोबासाय अनेक पापेर मार्जना हय ।"

विप्रदास बलले, "ता मानि, किन्तु एत भालोबासा सत्त्वेओ तिनि एत सहजे मायेर सम्मानहानि करते पारतेन, से-पाप समाजेर । समाजके सेजन्य क्षमा करते पारब ना, समाजेर भालोबासा नेइ, आछे केवल विधान ।"

"दादा, तुमि कि किछु शुनेछ ?"

"हाँ शुनेछि, से-सब कथा तोके आस्ते आस्ते परे बलब ।"

"सेइ भालो । आमार भय हच्छे आजकेकार एइ सब कथावार्ताय तोमार शरीर आरओ दुर्बल हये याबे ।"

"ना कुमु, ठिक तार उलटो । एतदिन दुःखेर अवसादे शरीरटा येन एलिये पड़छिल । आज यखन मन बलछे, जीवनेर शेष दिन पर्यन्त लड़ाइ करते हबे, आमार शरीरेर भितर थेके शक्ति आसछे ।"

"किसेर लड़ाइ दादा ।"

"ये समाज नारीके तार मूल्य दिते एत बेशि फाँकि दियेछे तार सङ्गे लड़ाइ ।"

"तुमि तार की करते पार दादा ?"

"आमि ताके ना मानते पारि । ता छाड़ा आरओ आरओ की करते पारि से आमाके भावते हबे, आज थेकेइ शुरु हल, कुमु । एइ बाड़िते तोर जायगा आछे, से सम्पूर्ण तोर निजेर, आर-कारओ सङ्गे आपस करे नय । एइखानेइ तुइ निजेर जोरे थाकबि ।"

"आच्छा दादा, से हबे, किन्तु आर तुमि कथा कोयो ना ।"

एमन समय खबर एल, मोतिर मा एसेछे ।

५१

शोबार घरे कुमु मोतिर माके निये बसल। कथा कइते कइते अन्धकार हये एल, बेहारा एल आलो ज्वालते, कुमु निषेध करे दिले।

कुमु सब कथाइ शुनले; चुप करे रइल।

मोतिर मा बलले, "बाड़िके भूते पेयेछे बउरानी। ओखाने टिँके थाका दाय, तुमि कि याबे ना ?"

"आमार कि डाक पड़ेछे ?"

"ना, डाकबार कथा बोध हय मनेओ नेइ। किन्तु तुमि ना गेले तो चलबेइ ना।"

"आमार की करबार आछे ? आमि तो ताँके तृप्त करते पारब ना। भेबे देखते गेले आमार जन्येइ समस्त किछु हयेछे, अथच कोनो उपाय छिल ना। आमि या दिते पारतुम से तिनि निते पारलेन ना। आज आमि शून्य हाते गिये की करब ?"

"बल की बउरानी, संसार ये तोमारइ, से तो तोमार हातछाड़ा हले चलबे ना।"

"संसार बलते की बोझ भाइ ? घरदुयोर, जिनिसपत्र, लोकजन ? लज्जा करे ए-कथा बलते ये, ताते आमार अधिकार आछे। महले अधिकार खुइएछि, एखन कि ओइ सब बाइरेर जिनिस निये लोभ करा चले ?"

"की बलछ भाइ, बउरानी ? घरे कि तुमि एकेबारेइ फिरबे ना ?"

"सब कथा भालो करे बुझते पारछि ने। आर किछुदिन आगे हले ठाकुरेर काछे संकेत चाइतुम, दैवज्ञेर काछे शुधोते येतुम। किन्तु आमार से सब भरसा धुयेमुछे गेछे। आरम्भे सब लक्षणइ तो भालो छिल। शेषे कोनोटाइ तो एकटुओ खाटल ना। आज कतबार बसे बसे भेबेछि देवतार चेये दादार विचारेर उपर भर करले एत विपद घटत ना। तबुओ मनेर मध्ये ये देवताके निये द्विधा उठेछे, हृदयेर मध्ये ताँके एड़ाते पारि ने। फिरे फिरे सेइखाने एसे लुटिये पड़ि।"

"तोमार कथा शुने ये भय लागे। घरे कि याबेइ ना ?"

"कोनो कालेइ याब ना से-कथा भावा शक्त, याबइ से-कथाओ सहज नय।"

"आच्छा, तोमार दादार काछे एकबार कथा बले देखब। देखि तिनि की बलेन। ताँर दर्शन पाओया याबे तो ?"

"चलो ना, एखनइ निये याच्छि ।"

विप्रदासेर घरे ढुकेइ तार चेहारा देखे मोतिर मा थमके दाँड़ाल, मने हल येन भूमिकम्पेर परेकार आलो-नेबा चुड़ो-भाङा मन्दिर । भितरे एकटा अन्धकार आर निस्तब्धता । प्रणाम करे पायेर धुलो निये मेजेर उपर बसल ।

विप्रदास व्यस्त हये बलले, "एइ ये चौकि आछे ।"

मोतिर मा माथा नेड़े बलले, "ना एखाने बेश आछि ।"

घोमटार भितर थेके तार चोख छल छल करते लागल । बुझते पारले दादार एइ अवस्थाय कुमुके व्यथाइ बाजछे ।

कुमु प्रसङ्गटा सहज करे देबार जन्ये बलले, "दादा, इनि विशेष करे एसेछेन तोमार मत जिज्ञासा करते ।"

मोतिर मा बलले, "ना ना, मत जिज्ञासा परेर कथा, आमि एसेछि ओंर चरण दर्शन करते ।"

कुमु बलले, "उनि जानते चान, ओंदेर बाड़िते आमाके येते हबे कि ना ।"

विप्रदास उठे बसल ; बलले, "से तो परेर बाड़ि, सेखाने कुमु गिये थाकबे की करे ?" यदि क्रोधेर सुरे बलत ताहले कथाटार भितरकार आगुन एमन करे ज्वले उठत ना । शान्त कण्ठस्वर, मुखेर मध्ये उत्तेजनार लक्षण नेइ ।

मोतिर मा फिस फिस करे की बलले । तार अभिप्राय छिल पाशे बसे कुमु तार कथागुलो विप्रदासेर काने पौँछिये देबे । कुमु सम्मत हल ना, बलले, "तुमिइ गला छेड़े बलो ।"

मोतिर मा स्वर आर-एकटु स्पष्ट करे बलले, "या ओर आपनारइ केउ ताके परेर करे दिते पारे ना, ता से येइ हो'क ना ।"

"से-कथा ठिक नय । उनि आश्रित मात्र । ओँर निजेर अधिकारेर जोर नेइ । ओंके घरछाड़ा करले हयतो निन्दा करबे, बाधा देबे ना । यत शास्ति समस्तइ केवल ओंर जन्ये । तबु अनुग्रहेर आश्रयओ सह्य करा येत यदि ता महदाश्रय हत ।"

एमन कथार की जवाब देबे मोतिर मा भेबे पेले ना । स्वामीर आश्रये विघ्न घटले मेयेर पक्षेर लोकेराइ तो पाये धराधरि करे, ए ये उलटो काण्ड ।

किछुक्षण चुप करे थेके बलले, "किन्तु आपन संसार ना थाकले मेयेरा ये बाँचे ना, पुरुषेरा भेसे बेड़ाते पारे, मेयेदेर कोथाओ स्थिति चाइ तो ।"

"स्थिति कोथाय ? असम्मानेर मध्ये ? आमि तोमाके बले दिच्छि, कुमुके यिनि गड़ेछेन तिनि आगागोड़ा परम श्रद्धा करे गड़ेछेन । कुमुके अवज्ञा करे एमन योग्यता कारओ नेइ, चक्रवर्ती-सम्राटेरओ ना ।"

कुमुके मोतिर मा खुबइ भालोबासे, भक्ति करे, किन्तु तबु कोनो मेयेर एत मूल्य थाकते पारे ये तार गौरव स्वामीके छापिये याबे ए-कथा मोतिर मार काने ठिक लागल ना। संसारे स्वामीर सङ्गे झगड़ाझाँटि चलुक, स्त्रीर भाग्ये अनादर-अपमानओ ना हय यथेष्ट घटल, एमन कि तार थेके निष्कृति पाबार जन्ये स्त्री आफिम खेये गलाय दड़ि दिये मरे सेओ बोझा याय, किन्तु ताइ बले स्वामीके एकेबारे बाद दिये स्त्री निजेर जोरे थाकबे एटाके मोतिर मा स्पर्धा बलेइ मने करे। मेयेजातेर एत गुमर केन। मधुसूदन यत अयोग्य होक यत अन्याय करुक, तबु से तो पुरुषमानुष; एक जायगाय से तार स्त्रीर चेये आपनिइ बड़ो, सेखाने कोनो विचार खाटे ना। विधातार सङ्गे मामला करे जितबे के?

मोतिर मा बलले, "एकदिन ओखाने येते तो हबेइ, आर तो रास्ता नेइ।"

"येते हबेइ ए-कथा क्रीतदास छाड़ा कोनो मानुषेर पक्षे खाटे ना।"

"मन्त्र पड़े स्त्री ये केना हयेइ गेछे। सात पाक येदिन घोरा हल सेदिन से ये देहे मने बाँधा पड़ल तार तो आर पालाबार जो रइल ना। ए बाँधन ये मरणेर बाड़ा। मेये हये यखन जन्मेछि तखन ए-जन्मेर मतो मेयेर भाग्य तो आर किछुते उजिये फेरानो याय ना।"

विप्रदास बुझते पारल मेयेर सम्मान मेयेदेर काछेइ सबचेये कम। तारा जानेओ ना ये, एइ जन्ये मेयेदेर भाग्ये घरे घरे अपमानित हओया एत सहज। तारा आपनार आलो आपनि निबिये बसे आछे। तार परे केवलइ मरछे भये, केवलइ मरछे भावनाय, अयोग्य लोकेर हाते केवलइ खाच्छे मार, आर मने करछे सेइटे नीरवे सह्य करातेइ स्त्रीजन्मेर सर्वोच्च चरितार्थता। ना— मानुषेर एत लाञ्छनाके प्रश्रय देओया चलबे ना। समाज याके एतदूर नामिये दिले समाजकेइ से प्रतिदिन नामिये दिच्छे।

विप्रदासेर खाटेर पाशेइ मेजेर उपर कुमु मुख निचु करे बसे छिल। विप्रदास मोतिर माके किछु ना बले कुमुर माथाय हात दिये बलले, "एकटा कथा तोके बलि कुमु, बोझबार चेष्टा करिस। क्षमता जिनिसटा येखाने पड़े पाओया जिनिस, यार कोनो याचाइ नेइ, अधिकार बजाय राखबार जन्ये याके योग्यतार कोनो प्रमाण दिते हय ना, सेखाने संसारे से केवलइ हीनतार सृष्टि करे। ए-कथा तोके अनेकबार बलेछि, तोर संस्कार तुइ काटाते पारिस नि, कष्ट पेयेछिस। तुइ यखन विशेष करे ब्राह्मणभोजन करातिस कोनोदिन बाधा दिइ नि, केवल बार बार बोझाते चेष्टा करेछि, अविचारे

कोनो मानुषेर श्रेष्ठता स्वीकार करे नेओयार द्वारा शुधु ये तारइ अनिष्ट ता नय, ताते करे समाजेर श्रेष्ठतार आदर्शकेइ खाटो करे। ए-रकम अन्ध श्रद्धार द्वारा निजेरइ मनुष्यत्वके अश्रद्धा करि ए-कथा केउ भाबे ना केन ? तुइ तो इंरेजि साहित्य किछु किछु पड़ेछिस, बुझते पारछिस ने, एइ रकम यत दलगड़ा शास्त्रगड़ा निर्विकार क्षमतार विरुद्धे समस्त जगते आज लड़ाइयेर हाओया उठेछे। यत सब इच्छाकृत अन्ध दासत्वके बड़ो नाम दिये मानुष दीर्घकाल पोषण करेछे, तारइ बासा भाङबार दिन एल।"

कुमु माथा निचु करेइ बलले, "दादा, तुमि कि बल स्त्री स्वामीके अतिक्रम करबे ?"

"अन्याय अतिक्रम करा मात्रकेइ दोष दिच्छि। स्वामीओ स्त्रीके अतिक्रम करबे ना—एइ आमार मत।"

"यदि करे, स्त्री कि ताइ बले—"

कुमुर कथा शेष ना हतेइ विप्रदास बलले, "स्त्री यदि सेइ अन्याय मेने नेय तबे सकल स्त्रीलोकेर प्रतिइ ताते करे अन्याय करा हबे। एमनि करे प्रत्येकेर द्वाराइ सकलेर दुःख जमे उठेछे। अत्याचारेर पथ पाका हयेछे।"

मोतिर मा एकटु अधैर्येर स्वरेइ बलले, "आमादेर बउरानी सतीलक्ष्मी, अपमान करले से अपमान ओँके स्पर्श करतेओ पारे ना।"

विप्रदासेर कण्ठ एइबार उत्तेजित हये उठल, "तोमरा सतीलक्ष्मीर कथाइ भावछ। आर ये-कापुरुष ताके अबाधे अपमान करबार अधिकार पेये सेटाके प्रतिदिन खाटाच्छे तार दुर्गतिर कथा भावछ ना केन ?"

कुमु तखनइ उठे दाँड़िये विप्रदासेर चुलर मध्ये आङुल बुलोते बुलोते बलले, "दादा, तुमि आर कथा क'यो ना। तुमि याके मुक्ति बल, या ज्ञानेर द्वारा हय, आमादेर रक्तेर मध्ये तार बाधा। आमरा मानुषकेओ जड़िये थाकि, विश्वासकेओ ; किछुतेइ तार जट छाड़ाते पारि ने। यतइ घा खाइ घुरे फिरे आटका पड़ि। तोमरा अनेक जान तातेइ तोमादेर मन छाड़ा पाय, आमरा अनेक मानि तातेइ आमादेर जीवनेर शून्य भरे। तुमि यखन बुझिये दाओ तखन बुझते पारि हयतो आमार भुल आछे। किन्तु भुल बुझते पारा, आर भुल छाड़ते पारा कि एकइ ? लतार आँकड़िर मतो आमादेर ममत्व सब-किछुकेइ जड़िये जड़िये धरे, सेटा भालोइ होक आर मन्दइ होक तार परे आर ताके छाड़ते पारि ने।"

विप्रदास बलले, "सेइजन्येइ तो संसारके कापुरुषेर पूजार पूजारिणीर

अभाव हय ना। तारा जानबार वेला अपवित्रके अपवित्र बलेइ जाने, किन्तु मानबार वेलाय ताके पवित्रेर मतो करेइ माने।"

कुमु बलले, "की करब दादा, संसारके दुइ हाते जड़िये निते हबे बलेइ आमादेर सृष्टि : ताइ आमरा गाछकेओ आँकड़े धरि, शुकनो कुटोकेओ। गुरुकेओ मानते आमादेर यतक्षण लागे, भण्डके मानतेओ ततक्षण। जाल ये आमादेर निजेर भितरेइ। दुःख थेके आमादेरके बाँचाबे के ? सेइजन्येइ भाबि दुःख यदि पेतेइ हय, ताके मेने नियेओ ताके छाड़िये ओठबार उपाय करते हबे। ताइ तो मेयेरा एत करे धर्मके आश्रय करे थाके।"

विप्रदास किछुइ बलले ना, चुप करे बसे रइल।

सेइ ओर चुपकरे बसे थाकाटाओ कुमके कष्ट दिले। कुमु जाने कथा बलार चेयेओ एर भार अनेक बेशि।

घर थेके बेरिये एसे मोतिर मा कुमुके जिज्ञासा करले, "की ठिक करल बउरानी ?"

कुमु बलले, "येते पारब ना। ता छाड़ा, आमाके तो फिरे याबार अनुमति देन नि।"

मोतिर मा मने मने किछु विरक्तइ हल। श्वशुरबाड़िर प्रति ओर श्रद्धा ये बेशि ता नय, तबु श्वशुरबाड़ि सम्बन्धे दीर्घकालर ममत्वबोध ओर हृदयके अधिकार करे आछे। सेखानकार कोनो बउ ये ताके लङ्घन करबे एटा तार किछुतेइ भालो लागल ना। कुमुके या बलले तार भावटा एइ, पुरुषमानुषेर प्रकृतिते दरद कम आर तार असंयम बेशि, गोड़ा थेकेइ एटा तो धरा कथा। सृष्टि तो आमादेर हाते नेइ, या पेयेछि ताके नियेइ व्यवहार करते हबे। 'ओरा ओइ रकमइ' बले मनटाके तैरि करे निये येमन करे होक संसारटाके चालानोइ चाइ। केनना संसारटाइ मेयेदेर। स्वामी भालोइ होक मन्दइ होक संसारटाके स्वीकार करे नितेइ हबे। ता यदि एकेबारे असम्भव हय ताहले मरण छाड़ा आर गतिइ नेइ।

कुमु हेसे बलले, "ना हय ताइ हल। मरणेर अपराध की ?"

मोतिर मा उद्विग्न हये बले उठल, "अमन कथा ब'लो ना।"

कुमु जाने ना, अल्पदिन हल ओदेरइ पाड़ाते एकटि सतेरो बछरेर बउ कार्बलिक अ्यासिड खेये आत्महत्या करेछिल। तार एम० ए० पास-करा स्वामी—गवर्मेण्ट आपिसे बड़ो चाकरि करे। स्त्री खोंपाय गोंजबार एकटा रुपोर चिरुनि हारिये फेलेछे, मार काछ थेके एइ नालिश शुने लोकटा ताके लाथि मेरेछिल। मोतिर मार सेइ कथा मने पड़े गाये काँटा दिले।

एमन समय नवीनेर प्रवेश। कुमु खुशि हये उठल। बलले, "जानतुम ठाकुरपोर आसते बेशि देरि हबे ना।"

नवीन हेसे बलले, "न्यायशास्त्रे बउरानीर दखल आछे, आगे देखेछेन श्रीमती धोँयाके, तार थेके श्रीमान आगुनेर आविर्भाव हिसेब करते शक्त ठेके नि।"

मोतिर मा बलले, "बउरानी, तुमिइ ओके नाइ दिये बाड़िये तुलेछ। ओ बुझे नियेछे ओके देखले तुमि खुशि हओ, सेइ देमाके---"

"आमाके देखलेओ खुशि हते पारेन यिनि ताँर कि कम क्षमता? यिनि आमाके सृष्टि करेछेन तिनिओ निजेर हातेर काज देखे अनुताप करेन, आर यिनि आमार पाणिग्रहण करेछेन ताँर मनेर भाव देवा न जानन्ति कुतो मनुष्याः।"

"ठाकुरपो, तोमरा दुजने मिले कथा-काटाकाटि करो, तृतीय व्यक्ति छन्दोभङ्ग करते चाय ना, आमि एखन चललुम।"

मोतिर मा बलले, "से की कथा भाइ। एखाने तृतीय व्यक्तिटा के? तुमि ना आमि? गाड़िभाड़ा करे ओ कि आमाके देखते एसेछे भेबेछ?"

"ना, ओंर जन्ये खाबार बले दिइ गे।" बल कुमु चले गेल।

५२

मोतिर मा जिज्ञासा करल, "किछु खबर आछे बुझि?"

"आछे। देरि करते पारलुम ना, तोमार सङ्गे परामर्श करते एलुम। तुमि तो चले एले, तार परे दादा हठात् आमार घरे एसे उपस्थित। मेजाजटा खुबइ खाराप। सामान्य दामेर एकटा गिल्टि-करा चुरोटेर छाइदान टेबिल थेके अदृश्य हयेछे। सम्प्रति यार अधिकारे सेटा एसेछे तिनि निश्चयइ सेटाके सोना बलेइ ठाउरेछेन, नइले परकाल खोयाते याबेन कोन् साधे। जान तो तुच्छ एकटा जिनिस नड़े गेले दादार विपुल सम्पत्तिर भितटाते येन नाड़ा लागे, से तिनि सइते पारेन ना। आज सकाले आपिसे याबार समय आमाके बले गेलेन श्यामाके देशे पाठाते। आमि खुब उत्साहेर सङ्गेइ सेइ पवित्र काजे लेगेछिलुम। ठिक करेछिलुम तिनि आपिस थेके फेरबार आगेइ काज सेरे राखब। एमन समय वेला देड़टार समय हठात् दादा एकदमे आमार घरे एसे ढुके पड़लेन। बललेन, एखनकार मतो थाक। येइ घर थेके बेरोते याच्छेन, आमार डेस्केर उपर बउरानीर सेइ छबिटि चोखे पड़ल।

थमके गेलेन। बुझलुम आड़-चाहनिटाके सिद्ने करे निये छबिटिके देखते दादार लज्जा बोध हच्छे। बललुम, "दादा एकटु बसो, एकटा ढाकाइ कापड़ तोमाके देखाते चाइ। मोतिर मार छोटो भाजेर साध, ताइ ताके दिते हबे। किन्तु गणेशराम दामे आमाके ठकाच्छे बले बोध हच्छे। तोमाके दिये सेटा एकबार देखिये निते चाइ। आमार यतटा आन्दाज ताते मने हय ना तो तेरो टाका तार दाम हते पारे। खुब बेशि हय तो न-टाका साड़े न-टाकार मध्येइ हओया उचित।"

मोतिर मा अवाक हये बलले, "ओ आबार तोमार माथाय कोथा थेके एल? आमार छोटो भाजेर साध हबार कोनो उपायइ नेइ। तार कोलर छेलेटिर वयस तो सबे देड़ मास। बानिये बलते तोमार आजकाल देखछि किछइ बाधे ना। एइ तोमार नतुन विद्ये पेले कोथाय?"

"येखान थेके कालिदास ताँर कवित्व पेयेछेन, वाणी वीणापाणिर काछ थेके।"

"वीणापाणि तोमाके यतक्षण ना छाड़ेन ततक्षण तोमाके निये घर करा ये दाय हबे।"

"पण करेछि, स्वर्गारोहणकाले नरकदर्शन करे याब, बउरानीर चरणे एइ आमार दान।"

"किन्तु साड़े न-टाका दामेर ढाकाइ कापड़ तखनइ-तखनइ तोमार जुटल कोथाय?"

"कोथाओ ना। कुड़ि मिनिट परे फिरे एसे बललुम, गणेशराम से-कापड़ आमाके ना बलेइ फिरिये निये गेछे।" दादार मुख देखे बुझलुम, इतिमध्ये छबिटा ताँर मगजेर मध्ये ढुके स्वप्नेर रूप धरेछे। की जानि केन, पृथिवीते आमारइ काछे दादार एकटु आछे चक्षुलज्जा, आर कारओ हले छबिटा वाँ करे तुले निते ताँर बाधत ना।"

"तुमिओ तो लोभी कम नओ। दादाके ना हय सेटा दितेइ।"

"ता दियेछि, किन्तु सहज मने दिइ नि। बललम, दादा, एइ छबिटा थेके एकटा अयेलपेण्टिङ करिये निये तोमार शोबार घरे रेखे दिले हय ना? दादा येन उदासीनभावे बलले, आच्छा देखा याबे। बलेइ छबिटा निये उपरेर घरे चले गेल। तार परे की हल ठिक जानि ने। बोधकरि आपिसे याओया हय नि, आर ओइ छबिटाके फिरे पाबार आशा राखि ने।"

"तोमार बउरानीर जन्ये स्वर्गटाइ खोओयाते यखन राजि आछ, तखन ना हय एकखाना छबिइ वा खोयाले।"

"स्वर्गटा सम्बन्धे सन्देह आछे, छबिटा सम्बन्धे एकटुओ सन्देह छिल ना। एमन छबि दैवात् हय। ये-दुर्लभ लग्ने ओँर मुखटिते लक्ष्मीर प्रसाद सम्पूर्ण नेमेछिल ठिक सेइ शुभयोगटि ओइ छबिते धरा पड़े गेछे। एक एकदिन रात्तिरे घुम थेके उठे आलो ज्वालिये ओइ छबिटि देखेछि। प्रदीपेर आलोय ओर भितरकार रूपटि येन आरओ बेशि करे देखा याय।"

"देखो, आमार काछे अत बाड़ाबाड़ि करते तोमार एकटुओ भय नेइ?"

"भय यदि थाकत ताहलेइ तोमार भावनार कथाओ थाकत। ओँके देखे आमार आश्चर्य किछुते भाङे ना। मने करि आमादेर भाग्ये एटा सम्भव हल की करे? आमि ये ओँके बउरानी बलते पारछि ए भाबले गाये काँटा देय। आर उनि ये सामान्य नवीनेर मतो मानुषकेओ हासिमुखे काछे बसिये खाओयाते पारेन, विश्वब्रह्माण्डे एओ एत सहज हल की करे? आमादेर परिवारेर मध्ये सब चेये हतभाग्य आमार दादा। याके सहज पेलन ताके कठिन करे बाँधते गियेइ हारालेन।"

"बास रे, बउरानीर कथाय तोमार मुख यखन खुले याय तखन थामते चाय ना।"

"मेजोबउ, जानि तोमार मने एकटुखानि बाजे।"

"ना, कक्खनो ना।"

"हाँ अल्प एकटु। किन्तु एइ उपलक्ष्ये एकटा कथा मने करिये देओया भालो। नुरनगरे स्टेशने प्रथम बउरानीर दादाके देखे ये-सब कथा बलछिले चलति भाषाय ताकेओ बाड़ाबाड़ि बला चले।"

"आच्छा, आच्छा, ओ-सब तर्क थाक्, एखन की बलते चाच्छिले बलो।"

"आमार विश्वास आजकालेर मध्येइ दादा बउरानीके डेके पाठाबेन। बउरानी ये एत आग्रहे बापेर बाड़ि चले एलेन, आर तार पर थेके एतदिन फेरबार नाम नेइ, एते दादार प्रचण्ड अभिमान हयेछे ता जानि। दादा किछुतेइ बुझते पारेन ना सोनार खाँचाते पाखिर केन लोभ नेइ। निर्बोध पाखि, अकृतज्ञ पाखि!"

"ता भालोइ तो, बड़ोठाकुर डेकेइ पाठान ना। सेइ कथाइ तो छिल।"

"आमार मने हय, डाकबार आगेइ बउरानी यदि यान भालो हय, दादार ओइटुकु अभिमानेर ना हय जित रइल। ता छाड़ा विप्रदासबाबु तो चान बउरानी ताँर संसारे फिरे यान, आमिइ निषेध करेछिलुम।"

विप्रदासेर सङ्गे एइ निये आज की कथा हयेछे मोतिर मा तार कोनो आभास दिले ना। बलले, "विप्रदासबाबुर काछे गिये बलोइ ना।"

"ताइ याइ, तिनि शुनले खुशि हबेन।"

एमन समय कुमु दरजार बाइरे थेके बलले, "घरे ढुकब की ?"

मोतिर मा बलले, "तोमार ठाकुरपो पथ चेये आछेन।"

"जन्म-जन्म पथ चेये छिलुम, एइबार दर्शन पेलुम।"

"आः ठाकुरपो एत कथा तुमि बानिये बलते पार की करे ?"

"निजेइ आश्चर्य हये याइ, बुझते पारि ने।"

"आच्छा, चलो एखन खेते याबे।"

"खाबार आगे एकबार तोमार दादार सङ्गे किछु कथावार्ता कये आसि गे।"

"ना, से हबे ना।"

"केन ?"

"आज दादा अनेक कथा बलेछेन, आज आर नय।"

"भालो खबर आछे।"

"ता होक, काल एसो वरञ्च। आज कोनो कथा नय।"

"काल हयतो छुटि पाब ना, हयतो बाधा घटबे। दोहाइ तोमार, आज एकबार केवल पाँच मिनिटेर जन्ये। तोमार दादा खुशि हबेन, कोनो क्षति हबे ना ताँर।"

"आच्छा आगे तुमि खेये नाओ, तार परे हबे।"

खाओया हये गेले पर कुमु नवीनके विप्रदासेर घरे निये एल। देखल दादा तखनओ घुमोय नि। घर प्राय अन्धकार, आलोर शिखा म्लान। खोला जानला दिये तारा देखा याय; थेके थेके हु हु करे बइछे दक्षिणेर हाओया; घरेर पर्दा, बिछानार झालर, आलनाय झोलानो विप्रदासेर कापड़ नानारकम छाया विस्तार करे केंपे केंपे उठछे, मेजेर उपर खबरेर कागजेर एकटा पाता यखन-तखन एलोमेलो उड़े बेड़ाच्छे। आधशोओया अवस्थाय विप्रदास स्थिर हये बसे। एगोते नवीनेर पा सरे ना। प्रदोषेर छाया आर रोगेर शीर्णता विप्रदासके एकटा आवरण दियेछे, मने हच्छे ओ येन संसार थेके अनेक दूर, येन अन्य लोके। मने हल ओर मतो एमनतरो एकला मानुष आर जगते नेइ।

नवीन एसे विप्रदासेर पायेर धुलो निये बलल, "विश्रामे व्याघात करते चाइ ने। एकटि कथा बले याब। समय हयेछे, एइबार बउरानी घरे फिरे आसबेन बले आमरा चेये आछि।"

विप्रदास कोन उत्तर करले ना, स्थिर हये बसे रइल।

खानिक परे नवीन बलले, "आपनार अनुमति पेलेइ ओंके निये याबार बन्दोबस्त करि।"

इतिमध्ये कुमु धीरे धीरे दादार पायेर काछे एसे बसेछे। विप्रदास तार मुखेर उपर दृष्टि रेखे बलले, "मने यदि करिस तोर याबार समय हयेछे ताहले या कुमु।"

कुमु बलले, "ना दादा, याब ना।" बले विप्रदासेर हाँटुर उपर उपुड़ हये पड़ल।

घर स्तब्ध, केवल थेके थेके दमका वातासे एकटा शिथिल जानला खड़-खड़ करछे, आर बाइरे बागाने गाछेर पातागुलो मर्मरिये उठछे।

कुम एकटु परे बिछाना थेके उठेइ नवीनके बलल, "चलो आर देरि नय। दादा, तुमि घुमोओ।"

मोतिर मा बाड़िते फिरे एसे बलले, "एतटा किन्तु भालो ना।"

"अर्थात् चोखे खोँचा देओयाटा येमनि होक ना, चोखटा राङा हये ओठा एकबारेइ भालो नय।"

"ना गो ना, ओटा ओंदेर देमाक। संसारे ओंदेर योग्य किछुइ मेले ना, ओंरा सबार उपरे।"

"मेजोबउ, एतबड़ो देमाक सबाइके साजे ना, किन्तु ओंदेर कथा आलादा।"

"ताइ बले कि आत्मीयस्वजनेर सङ्गे छाड़ाछाड़ि करते हबे?"

"आत्मीयस्वजन बललेइ आत्मीयस्वजन हय ना। ओंरा आमादेर थेके सम्पूर्ण आर-एक श्रेणीर मानुष। सम्पर्क धरे ओंदेर सङ्गे व्यवहार करते आमार संकोच हय।"

"यिनि यतबड़ो लोकइ ह'न ना केन, तबु सम्पर्केर जोर आछे एटा मने रेखो।"

नवीन बुझते पारले एइ आलोचनार मध्ये कुमुर 'परे मोतिर मार एकटु-खानि ईर्षार झाँजओ आछे। ता छाड़ा एटाओ सत्यि, पारिवारिक बाँधनटार दाम मेयेदेर काछे खुबइ बेशि। ताइ नवीन ए निये वृथा तर्क ना करे बलले, "आर किछुदिन देखाइ याक ना। दादार आग्रहटाओ एकटु बेड़े उठुक, ताते क्षति हबे ना।"

५३

मधुसूदनेर संसारे तार स्थानटा पाका हयेछे बलेइ श्यामासुन्दरी प्रत्याशा करते पारत, किन्तु से-कथा अनुभव करते पारछे ना। बाड़िर चाकर-बाकरदेर 'परे ओर कर्तृत्वेर दाबि जन्मेछे बले प्रथमटा ओ मने करेछिल किन्तु

पदे पदे बुझते पारले ये तारा ओके मने मने प्रभुपदे बसाते राजि नय। ओके साहस करे प्रकाश्ये अवज्ञा देखाते पारले तारा येन बाँचे एमनि अवस्था। सेइजन्येइ श्यामा तादेरके यखन तखन अनावश्यक भर्त्सना ओ अकारणे फरमाश करे केवलइ तादेर दोषत्रुटि धरे। खिट खिट करे। बाप-मा तुले गाल देय। किछुदिन पूर्वे एइ बाड़ितेइ श्यामा नगण्य छिल, सेइ स्मृतिटाके संसार थेके मुछे फेलबार जन्ये खुब कड़ाभावे माजाघषार काज करते गिये देखे ये सेटा सय ना। बाड़िर एकजन पुरोनो चाकर श्यामार तर्जन ना सइते पेरे काजे इस्तफा दिले। ताइ निये श्यामाके माथा हेंट करते हल। तार कारण, निजेर धनभाग्य सम्बन्धे मधुसूदनेर कतकगुलो अन्ध संस्कार आछे। ये-सब चाकर तार आर्थिक उन्नतिर समकालवर्ती, तादेर मृत्यु वा पदत्यागके ओ दुर्लक्षण मने करे। अनुरूप कारणेइ सेइ समयकार एकटा मसीचिह्नित अत्यन्त पुरोनो डेस्क असंगतभावे आपिसघरे हाल आमलेर दामि आसबाबेर माझखानेइ असंकोचे प्रतिष्ठित आछे, तार उपरे सेइ सेदिनकारइ दस्तार दोयात आर एकटा सस्ता विलिति काठेर कलम, ये-कलमे से तार व्यवसायेर नवयुगे प्रथम बड़ो एकटा दलिले नाम सइ करेछिल। सेइ समयकार उड़े चाकर दधि यखन काजे जवाब दिले मधुसूदन सेटा ग्राह्यइ करल ना, उलटे से-लोकटार भाग्ये बकशिश जुटे गेल। श्यामासुन्दरी एइ निये घोरतर अभिमान करते गिये देखे हाले पानि पाय ना। दधिर हासिमुख ताके देखते हल। श्यामार मुशकिल एइ मधुसूदनके से सत्यिइ भालोबासे, ताइ मधुसूदनेर मेजाजेर उपर बेशि चाप दिते ओर साहस हय ना, सोहाग कोन् सीमाय स्पर्धाय एसे पौंछोबे खुब भये भये तारइ आन्दाज करे चले। मधुसूदनओ निश्चित जाने श्यामार सम्बन्धे समय वा भावना नष्ट करबार दरकार नेइ। आदर-आबदारघटित अपव्ययेर परिमाण संकोच करलेओ दुर्घटनाटार आशङ्का अल्प। अथच श्यामाके निये ओर एकटा स्थूल रकम मोह आछे, किन्तु सेइ मोहके षोलो आना भोगे लागियेओ ताके अनायासे सामलिये चलते पारे एइ आनन्दे मधुसूदन उत्साह पाय—एर व्यतिक्रम हले बन्धन छिँड़े येत। कर्मेर चेये मधुसूदनेर काछे बड़ो किछु नेइ। सेइ कर्मेर जन्ये ओर सब-चेये दरकार अविचलित आत्मकर्तृत्व। तारइ सीमार मध्ये श्यामार कर्तृत्व प्रवेश करते साहस पाय ना, अल्प एकटु पा बाड़ाते गिये उँचोट खेये फिरे आसे। श्यामा ताइ केवलइ आपनाके दानइ करे, दाबि करते गिये ठके। टाकाकड़ि-साजसरञ्जामे श्यामा चिरदिन वञ्चित—तार 'परे ओर लोभेर अन्त नेइ। एतेओ ताके परिमाण रक्षा करे चलते हय। एतबड़ो

धनीर काछे या अनायासे प्रत्याशा करते पारत ताओ ओर पक्षे दुराशा। मधसूदन माझे माझे एक-एकदिन खुशि हये ओके कापड़चोपड़ गहनापत्र किछु किछु एने देय, ताते ओर संग्रहेर क्षुधा मेटे ना। छोटोखाटो लोभेर सामग्री आत्मसात् करबार जन्ये केवलइ हाथ चन्चल हये ओठे। सेखानेओ बाधा। एइ रकमेइ एकटा सामान्य उपलक्ष्ये किछुदिन आगे ओर निर्वासनेर व्यवस्था हय; किन्तु श्यामार सङ्ग ओ सेवा मधुसूदनेर अभ्यस्त हये एसेछिल—पानतामाकेर अभ्यासेरइ मतो सस्ता अथच प्रबल। सेटाते व्याघात घटले मधुसूदनेर काजेरइ व्याघात घटबे आशङ्काय एबारकार मतो श्यामार दण्ड रद हल। किन्तु दण्डेर भय माथार उपर झुलते लागल।

निजेर एइरकम दुर्बल अधिकारेर मध्ये श्यामासुन्दरीर मने एकटा आशङ्का लेगेइ छिल कबे आबार कुमु आपन सिंहासने फिरे आसे। एइ ईर्षार पीड़ने तार मने एकटुओ शान्ति नेइ। जाने कुमुर सङ्गे ओर प्रतियोगिता चलबेइ ना, ओरा एक क्षेत्रे दाँड़िये नेइ। कुमु मधुसूदनेर आयत्तेर अतीत सेइखानेइ तार असीम जोर; आर श्यामा तार एत बेशि आयत्तेर मध्ये ये, तार व्यवहार आछे मूल्य नेइ। एइ निये श्यामा अनेक कान्नाइ केँदेछे, कतबार मने करेछे आमार मरण हलेइ बाँचि। कपाल चापड़े बलेछे एत बेशि सस्ता हलुम केन? तार परे भेबेछे सस्ता बलेइ जायगा पेलुम, यार दर बेशि तार आदर बेशि, ये सस्ता से हयतो सस्ता बलेइ जेते।

मधुसूदन यखन श्यामाके ग्रहण करे नि, तखन श्यामार एत असह्य दुःख छिल ना। से आपन उपवासी भाग्यके एकरकम करे मेने नियेछिल। माझे माझे सामान्य खोराककेइ यथेष्ट मने हत। आज अधिकार पाओया आर ना-पाओयार मध्ये सामञ्जस्य किछुतेइ घटछे ना। हाराइ हाराइ भये मन आतङ्कित। भाग्येर रेल-लाइन एमन काँचा करे पाता ये, डिरेलेर भय सर्वत्रइ एवं प्रति मुहूर्तेइ। मोतिर मार काछे मन खोलाखुलि करे सान्त्वना पाबार जन्ये एकबार चेष्टा करेछिल। से एमनि एकटा झाँझेर सङ्गे माथा-झाँकानि दिये पाश काटिये गेछे ये, तार एकटा कोनो सांघातिक शोध तुलते पारले एखनइ तुलत, किन्तु जाने संसार-व्यवस्थाय मधुसूदनेर काछे मोतिर मार दाम आछे, सेखाने एकटुओ नाड़ा सइबे ना। सेइ अवधि दुजनेर कथा बन्ध, पारतपक्षे मुख देखादेखि नेइ। एमनि करे ए-बाड़िते श्यामार स्थान पूर्वेर चेये आरओ संकीर्ण हये गेछे। कोथाओ तार एकटुओ स्वच्छन्दता नेइ।

एमन समय एकदिन सन्ध्येवेलाय शोबार घरे एसे देखे टेबिलेर उपर

देयाले हेलानो कुमुर फटोग्राफ। ये-वज्र मायाय पड़बे तारइ विद्युत्शिखा ओर चोखे एसे पड़ल। ये-माछके बँड़शि बिँधेछे तारइ मतो करे ओर बुकेर भितरटा धड़फड़ धड़फड़ करते लागल। इच्छा करे छबिटा थेके चोख फिरिये नेय, पारे ना। एकदृष्टे ताकिये ताकिये देखते थाकल, मुख विवर्ण, दुइ चोखे एकटा दाह, मुठो दृढ़ करे बन्ध। एकटा किछु भाङ्ते, एकटा किछु छिँड़े फेलते चाय। ए-घरे थाकले एखनइ किछु-एकटा लोकसान करे फेलबे एइ भये छुटे बेरिये गेल। आपनार घरे गिये बिछानार उपर उपुड़ हये पड़े चादरखाना टुकरो टुकरो करे छिँड़े-छिँड़े फेलले।

रात हये एल। बाइरे थेके बेहारा खबर दिले महाराज शोबार घरे डेके पाठियेछेन। बलबार शक्ति नेइ ये याब ना। ताड़ाताड़ि उठे मुख धुये एकटा बुटिदार ढाकाइ शाड़ि परे गाये एकटु गन्ध मेखे गेल शोबार घरे। छबिटा याते चोखे ना पड़े एइ तार चेष्टा। किन्तु ठिक सेइ छबिटार सामनेइ बाति—समस्त आलो येन कारओ दीप्त दृष्टिर मतो ओइ छबिके उद्भासित करे आछे। समस्त घरेर मध्ये ओइ छबिटिइ सब चेये दृश्यमान। श्यामा नियममतो पानेर बाटा निये मधुसूदनके पान दिल, तार परे पायेर काछे बसे पाये हात बुलिये दिते लागल। ये-कोनो कारणेइ होक आज मधुसूदन प्रसन्न छिल। विलाति दोकानेर थेके एकटा रुपोर फटोग्राफेर फ्रेम किने एनेछिल। गम्भीरभावे श्यामाके बलले, "एइ नाओ।" श्यामाके समादर करबार उपलक्ष्येओ मधुसूदन मधुर रसेर अवतारणाय यथेष्ट कार्पण्य करे। केनना से जाने ओके अल्प एकटु प्रश्रय दिलेइ ओ आर मर्यादा राखते पारे ना। ब्राउन कागजे जिनिसटा मोड़ा छिल। आस्ते आस्ते कागजेर मोड़कटा खुले फेले बलले, "की हबे एटा?"

मधुसूदन बलले, "जान ना, एते फटोग्राफ राखते हय।"

श्यामार बुकेर भितरटाते के येन चाबुक चालिये दिले, बलले, "कार फटोग्राफ राखबे?"

"तोमार निजेर। सेदिन सेइ ये छबिटा तोलानो हयेछे।'

"आमार एत सोहागे काज नेइ।" बले सेइ फ्रेमटा छुंड़े मेजेर उपर फेले दिले।

मधुसूदन आश्चर्य हये बलले, "एर माने की हल?"

"एर माने किछुइ नेइ।" बले मुखे हात दिये केँदे उठल, तार परे बिछाना थेके मेजेर उपर पड़े माथा ठुकते लागल। मधुसूदन भाबल, श्यामार कम दामेर जिनिस पछन्द हय नि, ओर बोध करि इच्छे छिल एकटा दामि

गयना पाय। समस्त दिन आपिसेर काज सेरे एसे एइ उपद्रवटा एकटुओ भालो लागल ना। ए-ये प्राय हिसटिरिया। हिसटिरियार 'परे ओर विषम अवज्ञा। खुब एकटा धमक दिये बलल, "ओठो बलछि, एखनइ ओठो!"

श्यामा उठे छुटे घर थेके बेरिये चले गेल। मधुसूदन बलले, "ए किछुतेइ चलबे ना।"

मधुसूदन श्यामाके विशेष भावेइ जाने। निश्चय ठाओरेछिल एकटु परेइ फिरे एसे पायेर तलाय लुटिये पड़े माप चाइबे--सेइ समये खुब शक्त करे दुटो कथा शुनिये दिते हबे।

दशटा बाजल श्यामा एल ना। आर-एकबार श्यामार घरेर दरजार बाइरे थेके आओयाज एल, "महाराज बोलाया।"

श्यामा बलले, "महाराजके बलो आमार असुख करेछे।"

मधुसूदन भावले, आस्पर्धा तो कम नय, हुकुम करले आसे ना।

मने ठिक करे रेखेछिल आरओ खानिक बादे आसबे। ताओ एल ना। एगारोटा बाजते मिनिट पनेरो बाकि। बिछाना छेड़े मधुसूदन द्रुतपदे श्यामार घरे गिये ढुकल। देखले घरे आलो नेइ। अन्धकारे वेश देखा गेल--श्यामा मेजेर उपर पड़े आछे। मधुसूदन भावले ए-समस्त केवल आदर काड़बार जन्ये।

गर्जन करे बलले, "उठे एस बलछि, शीघ्र उठे एस। न्याकामि क'रो ना।"

श्यामा किछु ना बले उठे एल।

५४

परदिन आपिसे यावार आगे खाबार परे शोबार घरे विश्राम करते एसेइ मधुसूदन देखले छबिटि नेइ। अन्यदिनेर मतो आज श्यामा पान निये मधसूदनेर सेवार जन्ये आगे थाकते प्रस्तुत छिल ना। आज से अनुपस्थितओ। ताके डेके पाठानो हल। बेश बोझा गेल एकटु कुण्ठितभावेइ से एल। मधुसूदन जिज्ञासा करले, "टेबिलेर उपर छबि छिल, की हल।"

श्यामा अत्यन्त विस्मयेर भान करे बलले, "छबि! कार छबि!"

भानेर परिमाणटा किछु बेशि हये पड़ल। साधारणत पुरुषदेर बद्धि-वृत्तिर 'परे मेयेदेर अश्रद्धा आछे बलेइ एतटा सम्भव हयेछिल।

मधुसूदन क्रुद्धस्वरे बलले, "छबिटा देख नि।"

श्यामा नितान्त भालोमानुषेर मतो मुख करे बलले, "ना, देखि नि तो।"

मधुसूदन गर्जन करे बले उठल, "मिथ्ये कथा बलछ।"

"मिथ्ये कथा केन बलब, छबि निये आमि करब की।"

"कोथाय रेखेछ बेर करे निये एस बलछि! नइले भालो हबे ना।"

"ओमा की आपद! तोमार छबि आमि कोथाय पाब ये बेर करे आनब।"

बेहाराके डाक पड़ल। मधु ताके बलले, "मेजोबाबुके डेके आन।"

नवीन एल। मधुसूदन बलले, "बड़ोबउके आनिये नाओ।"

श्यामा मुख बाँकिये काठेर पुतुलेर मतो चुप करे बसे रइल।

नवीन खानिकक्षण परे माथा चुलकोते चुलकोते बलले, "दादा, ओखाने एकबार कि तोमार निजे याओया उचित हबे ना? तुमि आपनि गिये यदि बल ताहले बउरानी खुशि हबेन।"

मधुसूदन गम्भीरभावे खानिकक्षण गुड़गुड़ि टेने बलले, "आच्छा, काल रविवार आछे, काल याब।"

नवीन मोतिर मार काछे एसे बलले, "एकटा काज करे फेलेछि।"

"आमार परामर्श ना नियेइ?"

"परामर्श नेवार समय छिल ना।"

"ताहल तो देखछि तोमाके पस्ताते हबे।"

"असम्भव नय। कुष्ठिते आमार बुद्धिस्थाने आर कोनो ग्रह नेइ, आछेन निजेर स्त्री। एइजन्ये सर्वदा तोमाके हातेर काछे रेखेइ चलि। व्यापारटा हच्छे एइ—दादा आज हुकुम करलन बउरानीके आनानो चाइ। आमि फस करे बले बसलेम, तुमि निजे गिये यदि कथाटा तोल भालो हय। दादा की मेजाजे छिलेन राजि हये गेलेन। तार पर थेकेइ भावछि एर फलटा की हबे।"

"भालो हबे ना। विप्रदासबाबुर ये-रकम भावखाना देखलुम की बलते की बलबेन, शेषकाल कुरुक्षेत्रेर लड़ाइ बेधे याबे। एमन काज करले केन?"

"प्रथम कारण बुद्धिर कोठा ठिक सेइ समयटातेइ शून्य छिल, तुमि छिले अन्यत्र। द्वितीय हच्छे, सेदिन बउरानी यखन बललेन, आमि याब ना, तार भितरकार मानेटा बुझेछिलुम। ताँर दादा रुग्ण शरीर निये कलकाताय एलेन तबु एकदिनेर जन्ये महाराज देखते गेलेन ना,—एइ अनादरटा ताँर मने सब चेये बेजेछिल।"

शुनेइ मोतिर मा एकटु चमके उठल, कथाटा केन ये आगे तार मने पड़े नि एइटेइ तार आश्चर्य लागल। आसले निजेर अगोचरेओ श्वशुर-बाड़िर माहात्म्य निये ओर एकटा अहंकार आछे। अन्य साधारण लोकेर मतो महाराज मधुसूदनेरओ कुटुम्बितार दायित्व आछे ए-कथा तार मने बले ना।

सेदिनकार तर्केर अनुवृत्तिस्वरूपे नवीन एकटुखानि टिप्पणी दिये बलल, "निजेर बुद्धिते कथाटा आमार हयतो मने आसत ना, तुमिइ आमाके मने करिये दियेछिले।"

"की रकम शुनि?"

"ओइ ये सेदिन बलले, कुटम्बितार दायित्व आत्ममर्यादार दायित्वेर चेयेओ बड़ो। ताइ मने करते साहस हल ये महाराजार मतो अतबड़ो लोकेरओ विप्रदासबाबुके देखते याओया उचित।"

मोतिर मा हार मानते राजि नय, कथाटाके उड़िये दिले, "काजेर समय एत बाजे कथाओ बलते पार! की करा उचित एखन सेइ कथाटा भाबो देखि।"

"गोड़ातेइ सकल कथार शेष पर्यन्त भावते गेले ठकते हय। आशु भाबा उचित प्रथम कर्तव्यटा की। सेटा हच्छे विप्रदासबाबुके दादार देखते याओया। देखते गिये तार फले या हते पारे तार उपाय एखनइ चिन्ता करते बसले ताते चिन्ताशीलतार परिचय देओया हबे, किन्तु सेटा हबे अति-चिन्ताशीलता।"

"की जानि आमार बोध हच्छे मुशकिल बाधबे।"

५५

सेदिन सकाले अनेकक्षण धरे कुमु तार दादार घरे बसे गानबाजना करेछे। सकालवेलाकार सुरे निजेर व्यक्तिगत वेदना विश्वेर जिनिस हये असीमरूपे देखा देय। तार बन्धनमुक्ति घटे। सापगुलो येन महादेवेर जटाय प्रकाश पाय भूषण हये। व्यथार नदीगुलि व्यथार समुद्रे गिये वृहत् विराम लाभ करे। तार रूप बदले याय, चञ्चलता लुप्त हय गभीरताय। विप्रदास निश्वास छेड़े बलले, "संसारे क्षुद्र कालटाइ सत्य हये देखा देय कुमु, चिरकालटा थाके आड़ाले; गाने चिरकालटाइ आसे सामने, क्षुद्र कालटा याय तुच्छ हये, तातेइ मन मुक्ति पाय।"

एमन समये खबर एल, 'महाराज मधुसूदन एसेछेन।'

एक मुहूर्ते कुमुर मुख फ्याकाशे हये गेल; ताइ देखे विप्रदासेर मने बड़ो बाजल, बलले, "कुमु, तुइ बाड़िर भितरे या। तोके हयतो दरकार हबे ना।"

कुमु द्रुतपदे चले गेल। मधुसूदन इच्छे करेइ खबर ना दियेइ एसेछे। ए पक्ष आयोजनेर दैन्य ढाका देबार अवकाश ना पाय एटा तार संकल्पेर मध्ये। बड़ो घरेर लोक बले विप्रदासेर मनेर मध्ये एकटा बड़ाइ आछे ब'ले मधुसूदनेर विश्वास। सेइ कल्पनाटा से सइते पारे ना। ताइ आज से एमनभावे एल येन देखा करते आसे नि, देखा दिते एसेछे।

मधुसूदनेर साजटा छिल विचित्र, बाड़िर चाकरदासीरा अभिभूत हबे एमनतरो वेश। डोराकाटा विलिति शार्टेर उपर एकटा रङिन फुलकाटा ओयेस्टकोट, काँधेर उपर पाट-करा चादर, यत्ने कोँचानो कालापेड़े शान्तिपुरे धुति, वार्निश-करा कालो दरबारि जुतो, बड़ो बड़ो हीरेपान्नाओआला आंटिते आंगुल झलमल करछे। प्रशस्त उदरेर परिधि वेष्टन करे मोटा सोनार घड़िर शिकल, हाते एकटि शौखिन लाठि, तार सोनार हातलटि हातिर मुण्डेर आकारे नाना जहरते खचित। एकटा असमाप्त नमस्कारेर द्रुत आभास दिये खाटेर पाशेर एकटा केदाराय बसे बलले, "केमन आछेन विप्रदासबाबु, शरीरटा तो तेमन भालो देखाच्छे ना।"

विप्रदास तार कोनो उत्तर ना दिये बलले, "तोमार शरीर भालोइ आछे देखछि।"

"विशेष भालो ये ता बलते पारि ने—सन्ध्येर दिकटा माथा धरे, आर खिदेओ भालो हय ना। खाओयादाओयार अल्प एकटु अयत्न हलेइ सइते पारि ने। आबार अनिद्रातेओ माझे माझे भुगि, ओइटेते सब-चेये दुःख देय।"

शुश्रुषार लोकेर ये सर्वदा दरकार तारइ भूमिका पाओया गेल।

विप्रदास बलले, "बोध करि आपिसेर काज निये बेशि परिश्रम करते हच्छे।"

"एमनिइ की! आपिसेर काजकर्म आपनिइ चले याच्छे, आमाके बड़ो किछु देखते हय ना। म्याक्नटन् साहेबेर उपरेइ बेशिर भाग काजेर भार, सार आर्थर पीबडिओ आमाके अनेकटा साहाय्य करेन।"

गुड़गुड़ि एल, पानेर बाटाय पान ओ मसला निये चाकर एसे दाँड़ाल, तार थेके एकटि छोटो एलाच निये मुखे पुरल, आर किछु निले ना। गुड़-गुड़िर नल निये दुइ-एकबार मृदु मृदु टान दिले। तार परे गुड़गुड़िर नलटा बाँ

हाते कोलेर उपरेइ धरा रइल। आर तार व्यवहार हल ना। अन्तःपुर थेके खबर एल जलखाबार प्रस्तुत। व्यस्त हये बलले, "ओइटि तो पारब ना। आगेइ तो बलेछि, खाओयादाओया सम्बन्धे खुब धरकाट करेइ चलते हय।"

विप्रदास द्वितीयबार अनुरोध करले ना। चाकरके बलले, "पिसिमाके बलो गे, ओँर शरीर भालो नेइ, खेते पारबेन ना।"

विप्रदास चुप करे रइल। मधुसूदन आशा करेछिल, कुमुर कथा आपनिइ उठबे। एतदिन हये गेल, एखन कुमुके श्वशुरबाड़िते फिरिये निये याबार प्रस्ताव विप्रदास आपनिइ उद्विग्न हये करबे---किन्तु कुमुर नामओ करे ना ये। भितरे भितरे एकटु एकटु करे राग जन्माते लागल। भावले एसे भुल करेछि। समस्त नवीनेर काण्ड। एखनइ गिये ताके खुब एकटा कड़ा शास्ति देबार जन्ये मनटा छटफट करते लागल।

एमन समय सादासिधे सरु कालापेड़े एकखानि शाड़ि परे माथाय घोमटा टेने कुमु घरे प्रवेश करले। विप्रदास एटा आशा करे नि। से आश्चर्य हये गेल। प्रथमे स्वामीर, परे दादार पायेर धुलो निये कुमु मधुसूदनके बलले, "दादार शरीर क्लान्त, ओँके बेशि कथा कओयाते डाक्तारेर माना। तुमि एइ पाशेर घरे एस।"

मधुसूदनेर मुख लाल हये उठल। द्रुत चौकि थेके उठे पड़ल। कोल थेके गुड़गुड़िर नलटा माटिते पड़े गेल। विप्रदासेर मुखेर दिके ना चेयेइ बलले, "आच्छा, तबे आसि।"

प्रथम झोँकटा हल हन हन करे गाड़िते उठे बाड़िते चले याय। किन्तु मन पड़ेछे बाँधा। अनेक दिन परे आज कुमुके देखेछे। ओके अत्यन्त सादासिधे आटपौरे कापड़े एइ प्रथम देखले। ओके एत सुन्दर आर कखनो देखे नि। एमन संयत एत सहज। मधुसूदनेर बाड़िते ओ छिल पोशाकि मेये, येन बाइरेर मेये, एखाने से एकेबारे घरेर मेये। आज येन ओके अत्यन्त काछेर थेके देखा गेल। की स्निग्ध मूर्ति। मधुसूदनेर इच्छे करते लागल, एकटु देरि ना करे एखनइ ओके सङ्गे करे निये याय। ओ आमार, ओ आमारइ, ओ आमार घरेर, आमार ऐश्वर्येर, आमार समस्त देहमनेर, एइ कथाटा उलटेपालटे बलते इच्छे करे।

पाशेर घरे एकटा सोफा देखिए कुमु यखन बसते बलले, तखन ओके बसतेइ हल। नितान्त यदि बाइरेर घर ना हत ताहले कुमुके धरे सोफाय आपनार पाशे बसात। कुमु ना बसे एकटा चौकिर पिछने तार पिठेर उपर

हात रेखे दाँड़ाल। बलले, "आमाके किछु बलते चाओ?"

ठिक एमन सुरे प्रश्नटा मधुसूदनेर भालो लागल ना, बलले, "याबे ना बाड़िते?"

"ना।"

मधुसूदन चमके उठल—बलल, "से की कथा!"

"आमाके तोमार तो दरकार नेइ।"

मधुसूदन बुझले श्यामासुन्दरीर खबरटा काने एसेछे, एटा अभिमान। अभिमानटा भालोइ लागल। बलले, "की ये बल तार ठिक नेइ। दरकार नेइ तो की। शून्य घर कि भालो लागे?"

ए-निये कथा-काटाकाटि करते कुमुर प्रवृत्ति हल ना। संक्षेपे आरएकबार बलले, "आमि याब ना।"

"माने की? बाड़िर बउ बाड़िते याबे ना—?"

कुमु संक्षेपे बलले, "ना।"

मधुसूदन सोफा थेके उठे दाँड़िये बलले, "की! याबे ना! येतेइ हबे!"

कुमु कोनो जवाब करले ना। मधुसूदन बलले, "जान पुलिस डेके तोमाके निये येते पारि घाड़े धरे! 'ना' बललेइ हल!"

कुमु चुप करे रइल। मधुसूदन गर्जन करे बलले, "दादार स्कुले नुरनगरि कायदा शिक्षा आबार आरम्भ हयेछे?"

कुमु दादार घरेर दिके एकबार कटाक्षपात करे बलले, "चुप करो, अमन चेँचिये कथा क'यो ना।"

"केन? तोमार दादाके सामले कथा कइते हबे नाकि? जान एइ मुहूर्तेइ ओके पथे बार करते पारि।"

परक्षणेइ कुमु देखे ओर दादा घरेर दरजार काछे एसे दाँड़ियेछे। दीर्घकाय, शीर्णदेह, पाण्डुवर्ण मुख, बड़ो बड़ो चोख दुटो ज्वालामय, एकटा मोटा सादा चादर गा ढेके माटिते लुटिये पड़छे, कुमुके डेके बलले, "आय कुमु, आय आमार घरे।"

मधुसूदन चेँचिये उठल, बलले, "मने थाकबे तोमार एइ आस्पर्धा। तोमार नुरनगरेर नुर मुड़िये देब तबे आमार नाम मधुसूदन।"

घरे गियेइ विप्रदास बिछानाय शुये पड़ल। चोख बन्ध करले, किन्तु घुमे नय, क्लान्तिते ओ चिन्ताय। कुमु शियरेर काछे बसे पाखा निये वातास करते लागल। एमनि करे अनेकक्षण काटले पर क्षेमा पिसि एसे बलले, "आज कि खेते हबे ना कुमु, वेला ये अनेक हल।"

विप्रदास चोख खुले बलले, "कुमु या खेते या। तोर कालुदाके पाठिये दे।"

कुमु बलले, "दादा, तोमार पाये पड़ि एखन कालुदाके ना, एकटु घुमोबार चेष्टा करो।"

विप्रदास किछु ना बले सुगभीर वेदनार दृष्टिते कुमुर मुखेर दिके चेये रइल। खानिक बादे निश्वास फेले आबार चोख बुजले। कुमु धीरे धीरे बेरिये गिये दरजा दिल भेजिये।

एकटु परेइ कालु खबर पाठाल ये आसते चाय। विप्रदास उठे ताकियाय हेलान दिये बसल। कालु बलले, "जामाइ एसे अल्पक्षण परेइ तो चले गेल। की हल बलो तो। कुमुके ओदेर ओखाने फिरे निये याबार कथा किछु बलले कि?"

"हाँ बलेछिल। कुमु तार जवाब दियेछे, से याबे ना।"

कालु विषम भीत हये बलले, "बल की दादा! ए ये सर्वनेशे कथा।"

"सर्वनाशके आमरा कोनोकाले भय करि ने, भय करि असम्मानके।"

"ताहले तैरि हओ, आर देरि नेइ। रक्ते आछे, याबे कोथाय। जानि तो, तोमार बाबा म्याजिस्ट्रेटके तुच्छ करते गिये अन्तत दु-लाख टाका लोकसान करेछिलेन। बुक फुलिये निजेर विपद घटानो ओ तोमादेर पैतृक शख। ओटा अन्तत आमार वंशे नेइ, ताइ तोमादेर सांघातिक पागलामिगुलो चुप करे सइते पारि ने। किन्तु बाँचब की करे?"

विप्रदास उँचु बाँ हाँटुर उपर डान पा तुले दिये ताकियाय माथा रेखे चोख बुजे खानिकक्षण भाबले। अवशेषे चोख खुले बलले, "दलिलेर शर्त अनुसारे मधुसूदन छ-मास नोटिस ना दिये आमार काछ थेके टाका दावि करते पारे ना। इतिमध्ये सुबोध आषाढ़ मासेर मध्येइ एसे पड़बे—तखन एकटा उपाय हते पारबे।"

कालु एकटु विरक्त हयेइ बलले, "उपाय हबे बइ कि। बातिगुलो एक दमकाय निबत, सेइगुलो एके एके भद्ररकम करे निबबे।"

"बाति तलार खोपटार मध्ये एसे ज्वलछे, एखन ये-फराश एसे ताके ये-रकम फुँ दियेइ नेबाक ना—ताते बेशि हा-हुताश करबार किछु नेइ। ओइ तलानिर आलोटार तद्‌बिर करते आर भालो लागे ना, ओर चेये पुरो अन्धकारे सोयास्ति पाओया याय।"

कालुर बुके व्यथा बाजल। से बुझले एटा असुस्थ मानुषेर कथा, विप्रदास तो ए रकम हालछाड़ा प्रकृतिर लोक नय। परिणामटाके ठेकाबार

जन्ये विप्रदास एतदिन नानारकम प्ल्यान करछिल। तार विश्वास छिल काटिये उठबे। आज भाबतेओ पारे ना,--विश्वास करबारओ जोर नेइ।

कालु स्निग्ध दृष्टिते विप्रदासेर मुखेर दिके चेये बलले, "तोमाके किछु भावते हबे ना भाइ, या करबार आमिइ करब। याइ एकबार दालाल-महले घुरे आसि गे।"

परदिन विप्रदासेर काछे एक इंरेजि चिठि एल--मधुसूदनेर लेखा। भाषाटा ओकालति छाँदेर--हयतो वा अयार्टनिके दिये लिखिये नियेछे। निश्चित करे जानते चाय कुमु ओदेर ओखाने फिरे आसबे कि ना, तार परे यथाकर्तव्य करा हबे।

विप्रदास कुमुके जिज्ञासा करले, "कुमु, भालो करे सब भेबे देखेछिस ?"

कुमु बलले, "भावना सम्पूर्ण शेष करे दियेछि, ताइ आमार मन आज खुब निश्चिन्त। ठिक मने हच्छे येमन एखाने छिलुम तेमनि आछि--माझे या-किछु घटेछे समस्त स्वप्न।"

"यदि तोके जोर करे निये याबार चेष्टा हय, तुइ जोर करे सामलाते पारबि ?"

"तोमार उपर उत्पात यदि ना हय तो खुब पारब।"

"एइजन्ये जिज्ञासा करछि ये, यदि शेषकाले फिरे येतेइ हय ताहले यत देरि करे याबि ततइ सेटा विश्री हये उठबे। ओदेर सङ्गे सम्बन्ध-सूत्र तोर मनके कोथाओ किछुमात्र जड़ियेछे कि ?"

"किछुमात्र ना। केवल आमि नवीनके, मोतिर माके, हाबलुके भालो-बासि। किन्तु तारा ठिक येन अन्य बाड़िर लोक।"

"देख् कुमु, ओरा उत्पात करबे। समाजेर जोरे, आइनेर जोरे उत्पात करबार क्षमता ओदेर आछे। सेइ जन्येइ सेटाके अग्राह्य करा चाइ। करते गेलेइ लज्जा संकोच भय समस्त विसर्जन दिये लोकसमाजेर सामने दाँड़ाते हबे, घरे-बाइरे चारिदिके निन्देर तुफान उठबे, तार माझखाने माथा तुले तोर ठिक थाका चाइ।"

"दादा, ताते तोमार अनिष्ट, तोमार अशान्ति हबे ना ?"

"अनिष्ट अशान्ति काके तुइ बलिस कुमु ? तुइ यदि असम्मानेर मध्ये डुबे थाकिस तार चेये अनिष्ट आमार आर की हते पारे ? यदि जानि ये, ये-घरे तुइ आछिस से तोर घर हये उठल ना, तोर उपर यार एकान्त अधिकार से तोर एकान्त पर, तबे आमार पक्षे तार चेये अशान्ति भावते पारि ने। बाबा तोके खुब भालोबासतेन, किन्तु तखनकार दिने कर्तारा

थाकतेन दूरे दूरे। तोर पक्षे पड़ाशुनोर दरकार आछे ता तिनि मनेइ करतेन ना। आमिइ निजे गोड़ा थेके तोके शिखियेछि, तोके मानुष करे तुलेछि। तोर बाप-मार चेये आमि कोनो अंशे कम ना। सेइ मानुष करे तोलार दायित्व ये की आज ता बुझते पारछि। तुइ यदि अन्य मेयेर मतो हतिस ताहले कोथाओ तोर ठेकत ना। आज येखाने तोर स्वातन्त्र्यके केउ बुझबे ना, सम्मान करबे ना, सेखाने ये तोर नरक। आमि कोन् प्राणे तोके सेखाने निर्वासित करे थाकब? यदि आमार छोटो भाइ हतिस ताहले येमन करे थाकतिस तेमनि करेइ चिरदिन थाक् ना आमार काछे।"

दादार बुकेर काछे खाटेर प्रान्ते माथा रेखे अन्यदिके मुख फिरिये कुमु बलले, "किन्तु आमि तोमादेर तो भार हये थाकब ना? ठिक बलछ?"

कुमुर माथाय हाथ बुलोते बुलोते विप्रदास बलले, "भार केन हबि बोन? तोके खुब खाटिये नेब। आमार सब काज देब तोर हाते। कोनो प्राइभेट सेक्रेटारि एमन करे काज करते पारबे ना। आमाके तोर बाजना शोनाते हबे, आमार घोड़ा तोर जिम्मेय थाकबे। ता छाड़ा जानिस आमि शेखाते भालोबासि। तोर मतो छात्री पाब कोथाय बल? एक काज करा याबे, अनेक दिन थेके पारसि पड़बार शख आमार आछे। एकला पड़ते भालो लागे ना। तोके निये पड़ब, तुइ निश्चय आमार चेये एगिये याबि, आमि एकटुओ हिंसे करब ना देखिस।"

शुनते शुनते कुमुर मन पुलकित हये उठल, एर चेये जीवने सुख आर किछु हते पारे ना।

खानिक परे विप्रदास आबार बलले, "आरओ एकटा कथा तोके बले राखि कुमु, खुब शीघ्रइ आमादेर काल बदल हबे, आमादेर चालओ बदलाबे। आमादेर थाकते हबे गरिबेर मतो। तखन तुइ थाकबि आमादेर गरिबेर ऐश्वर्य हये।"

कुमुर चोखे जल एल, बलले, "आमार एमन भाग्य यदि हय तो बेंचे याइ।"

विप्रदास मधुसूदनेर चिठि हाते राखले, उत्तर दिले ना।

५६

दु-दिन परेइ नवीन मोतिर मा हाबलुके निये एसे उपस्थित। हाबलु ज्येठाइमार कोले चड़े तार बुके माथा रेखे केंदे निले। कान्नाटा किसेर जन्ये

स्पष्ट करे बला शक्त,---अतीतेर जन्ये अभिमान, ना वर्तमानेर जन्ये आबदार, ना भविष्यतेर जन्ये भावना ?

कुमु हाबलुके जड़िये धरे बलले, "कठिन संसार, गोपाल, कान्नार अन्त नेइ। की आछे आमार, की दिते पारि याते मानुषेर छेलेर कान्ना कमे। कान्ना दिये कान्ना मेटाते चाइ, तार बेशि शक्ति नेइ। ये-भालोबासा आपनाके देय तार अधिक आर किछु दिते पारे ना, बाछारा, सेइ भालोबासा तोरा पेयेछिस ; ज्येठाइमा चिरदिन थाकबे ना, किन्तु एइ कथाटा मने राखिस, मने राखिस, मने राखिस।" बले तार गाले चुमो खेले।

नवीन बलल, "बउरानी, एबार रजबपुरे पैतृक घरे चलेछि ; एखानकार पाला साङ्ग हल।"

कुम व्याकुल हये बलले, "आमि हतभागिनी एसे तोमादेर एइ विपद घटालुम।"

नवीन बलले, "ठिक तार उलटो। अनेक दिन थेकेइ मनटा याइ याइ करछिल। बेंधे-सेधे तैरि हये छिलुम, एमन समय तुमि एले आमादेर घरे। घरेर आश खुब करेइ मिटेछिल, किन्तु विधातार सइल ना।"

सेदिन मधसूदन फिरे गिये तुमुल एकटा विप्लव बाधियेछिल ता बोझा गेल।

नवीन याइ बलुक, कुमुइ ये ओदेर संसारेर समस्त ओलट-पालट करे दियेछे मोतिर मार ताते सन्देह नेइ, आर सेइ अपराध से सहजे क्षमा करते चाय ना। तार मत एइ ये, एखनओ कुमुर सेखाने याओया उचित माथा हेँट करे, तार परे यत लाञ्छनाइ होक सेटा मेने नेओया चाइ। गला बेश एकटु कठिन करेइ जिज्ञासा करले, "तुमि कि श्वशुरबाड़ि एकेबारेइ याबे ना ठिक करेछ ?"

कुमु तार उत्तरे शक्त करेइ बलले, "ना, याब ना।"

मोतिर मा जिज्ञासा करले, "ता हले तोमार गति कोथाय ?"

कुमु बलले, "मस्त एइ पृथिवी, एर मध्ये कोनो एक जायगाय आमारओ एकटुखानि ठाँइ हते पारबे। जीवने अनेक याय खसे, तबुओ किछु बाकी थाके।"

कुमु बुझते पारछिल, मोतिर मार मन ओर काछ थेके अनेक खानि सरे एसेछे। नवीनके जिज्ञासा करले, "ठाकुरपो, ताहले की करबे एखन ?"

"नदीर धारे किछु जमि आछे तार थेके मोटा भातओ जुटबे, किछु हाओया खाओयाओ चलबे।"

मोतिर मा उष्मार सङ्गेइ बलले, "ओगो मशाय, ना, सेजन्ये तोमाके भावते हबे ना। ओइ मिर्जापुरेर अन्नजले दाबि राखि, से केउ काड़ते पारबे ना। आमरा तो एत बेशि सम्मानी लोक नइ, बड़ोठाकुर ताड़ा दिलेइ अमनि बिबागि हये चले याब। तिनिइ आबार आज बादे काल फिरिये डाकबेन, तखन फिरेओ आसब, इतिमध्ये सबुर सइबे, एइ बले राखलुम।"

नवीन एकटु क्षुण्ण हये बलले, "से-कथा जानि मेजोबउ, किन्तु ता निये बड़ाइ करि ने। पुनर्जन्म यदि थाके तबे सम्मानी हयेइ येन जन्माइ, ताते अन्नजलेर यदि टानाटानि घटे सेओ स्वीकार।"

वस्तुत नवीन अनेकबारइ दादार आश्रय छेड़े ग्रामे चाषवासेर संकल्प करेछे। मोतिर मा मुखे तर्जनगर्जन करेछे, काजेरवेलाय किछुतेइ सहजे नड़ते चाय नि, नवीनके बारेबारे आटके रेखेछे। से जाने भाशुरेर उपर तार सम्पूर्ण दाबि आछे। भाशुर तो श्वशुरेर स्थानीय। तार मते भाशुर अन्याय करते पारे किन्तु ताके अपमान बला चले ना। कुमुर प्रति कुमुर स्वामीर व्यवहार येमनइ होक ताइ बले कुमु स्वामीर घर अस्वीकार करते पारे, ए-कथा मोतिर मार काछे नितान्त सृष्टिछाड़ा।

खबर एल डाक्तार एसेछे। कुमु बलले, "एकटु अपेक्षा करो, शुने आसि डाक्तार की बले।"

डाक्तार कुमु के बले गेल, नाड़ि आरओ खाराप, रात्रित्तरे घुम कमेछे, बोध हय रोगी ठिक विश्राम पाच्छे ना।

अतिथिदेर काछे कुमु फिरे याच्छिल, एमन समय कालु एसे बलले, "एकटा कथा ना बले थाकते पारछि ने, जाल बड़ो जटिल हये एसेछे, तुमि यदि एइ समये श्वशुरबाड़ि फिरे ना याओ, विपद आरओ घनिये वरबे। आमि तो कोनो उपाय भेबे पाच्छि ने।"

कुमु चुप करे दाँड़िये रइल। कालु बलले, "तोमार स्वामीर ओखान थेके तागिद एसेछे, सेटा अग्राह्य करबार शक्ति कि आमादेर आछे? आमरा ये एकेबारे तार मुठोर मध्ये।"

कुमु बारान्दाय रेलिङ चेपे धरे बलले, "आमि किछुइ बुझते पारछि ने, कालुदा। प्राण हाँपिये ओठे, मने हय मरण छाड़ा कोनो रास्ताइ आमार खोला नेइ।" एइ बले कुम द्रुतपदे चले गेल।

दादार घरे यखन कुमु छिल, सेइ अवकाशे क्षेमा पिसिर सङ्गे मोतिर मार किछु कथावार्ता हये गेछे। नानारकम लक्षण मिलिये दुजनेरइ मने सन्देह हयेछे कुमु गर्भिणी। मोतिर मा खुशि हये उठल, मने मने बलले, मा काली

करुन ताइ येन हय। एइबार जब्द! मानिनी श्वशुरबाड़िके अवज्ञा करते चान, किन्तु ए ये नाड़िते ग्रन्थि लागल, शुधु तो आँचले आँचले नय, पालाबे केमन करे।

कुमके आड़ाले डेके निये गिये मोतिर मा तार सन्देहेर कथाटा बलले। कुमुर मुख विवर्ण हये गेल। से हात मुठो करे बलले, "ना ना, ए कखनोइ हते पारे ना, किछुतेइ ना।"

मोतिर मा विरक्त हयेइ बलले, "केन हते पारबे ना भाइ? तुमि यत-बड़ो घरेरइ मेये हओ ना केन, तोमार बेलातेइ तो संसारेर नियम उलटे याबे ना। तुमि घोषालदेर घरेर बउ तो, घोषाल-वंशेर इष्टिदेवता कि तोमाके सहजे छुटि देबेन? पालाबार पथ आगले दाँड़िये आछेन तिनि।"

स्वामीर सङ्गे कुमुर अल्पकालेर परिचय दिने दिने भितरे भितरे की रकम ये विकृत मूर्ति धरेछे गर्भेर आशङ्काय ओर मने सेटा खुब स्पष्ट हये उठल। मानुषे मानुषे ये-भेदटा सब चेये दुरतिक्रमणीय, तार उपादानगुलो अनेक समये खुब सूक्ष्म। भाषाय, भङ्गिते, व्यवहारेर छोटो छोटो इशाराय, यखन किछुइ करछे ना तखनकार अनभिव्यक्त इङ्गिते, गलार सुरे, रुचिते, रीतिते, जीवनयात्रार आदर्शे, भेदेर लक्षणगुलि आभासे छड़िये थाके। मधुसूदनेर मध्ये एमन किछु आछे या कुमुके केवल ये आघात करेछे ता नय, ओके गभीर लज्जा दियेछे। ओर मने हयेछे सेटा येन अश्लील। मधुसूदन तार जीवनेर आरम्भे एकदिन दुःसहभावेइ गरिब छिल, सेइ जन्ये 'पयसा'र माहात्म्य सम्बन्धे से कथाय कथाय ये-मत व्यक्त करत सेइ गर्वोक्तिर मध्ये तार रक्तगत दारिद्र्येर एकटा हीनता छिल। एइ पयसा-पूजार कथा मधुसूदन बारबार तुलत कुमुर पितृकुलके खोँटा देबार जन्येइ। ओर सेइ स्वाभाविक इतरताय, भाषार कर्कशताय, दाम्भिक असौजन्ये, सबसुद्ध मधुसूदनेर देहमनेर, ओर संसारेर आन्तरिक अशोभनताय प्रत्यहइ कुमुर समस्त शरीरमनके संकुचित करे तुलेछे। यतइ एगुलोके दृष्टि थेके चिन्ता थेके सरिये फेलते चेष्टा करेछे, ततइ एरा विपुल आवर्जनार मतो चारिदिके जमे उठेछे। आपन मनेर घृणार भावेर सङ्गे कुमु आपनिइ प्राणपणे लड़ाइ करे एसेछे। स्वामीपूजार कर्त्तव्यतार सम्बन्धे संस्कारटाके विशुद्ध राखबार जन्ये ओर चेष्टार अन्त छिल ना, किन्तु कतबड़ो हार हयेछे ता एर आगे एमन करे बोझे नि। मधुसूदनेर सङ्गे ओर रक्तमांसेर बन्धन अविच्छिन्न हये गेल, तार वीभत्सता ओके विषम पीड़ा दिले। कुमु अत्यन्त उद्विग्नमखे मोतिर माके जिज्ञासा करले, "की करे तुमि निश्चय जानले?"

मोतिर मार भारि राग हल, सामले निये बलले, "छेलेर मा आमि, आमि जानब ना तो के जानबे ? तबु एकेबारे निश्चय करे बलबार समय हय नि। भालो दाइ काउके डेके परीक्षा करिये देखा भालो।"

नवीन, मोतिर मा, हाबलुर याबार समय हल। किन्तु दैवेर एइ चरम अन्यायेर कथा छाड़ा कुमु आर कोनो किछुते आज मन दिते पारछिल ना। ताइ खुब साधारणभावेइ श्वशुरबाड़िर बन्धुदेर काछ थेके ओर विदाय नेओया हल। नवीन याबार समय बलले, "बउरानी, संसारे सब जिनिसेरइ अवसान आछे। किन्तु तोमाके सेवा करबार ये-अधिकार हठात् एकदिने पेयेछि से ये एमन खापछाड़ाभावे हठात् आर-एकदिन शेष हते पारे, से-कथा भाबतेओ पारि ने। आबार देखा हबे।" नवीन प्रणाम करले, हाबलु निःशब्दे काँदते लागल, मोतिर मा मुख शक्त करे रइल, एकटि कथाओ कइले ना।

५७

खबरटा विप्रदासेर काने गेल। दाइ एल, सन्देह रइल ना ये कुमुर गर्भावस्था। मधुसूदनेर कानेओ संवाद पौंछेछे। मधुसूदन धन चेयेछिल, धन पुरो परिमाणेइ जमेछे, धनेर उपयुक्त खेताबओ मिलेछे, एखन निजेर महिमाके भावी वंशेर मध्ये प्रतिष्ठित करते पारलेइ ए-संसारे तार कर्तव्य चरम लक्ष्ये गिये पौंछोबे। मनटा यतइ खुशि हल ततइ अपराधेर समस्त दायित्व कुमुर उपर थेके सरिये बोझाइ करले विप्रदासेर उपर। द्वितीय एकखाना चिठि ताके लिखले, शुरु करले whereas दिये, शेष करले Your obedient servant मधुसूदन घोषाल सइ करे। माझखानटाते छिल I shall have the painful necessity इत्यादि। ए-रकम भय-देखानो चिठिते चाटुज्ये वंशेर उपर उलटो फल फले, विशेषत क्षतिर आशङ्का थाकले। विप्रदास चिठिटा देखाले कालुके। तार मुख लाल हये उठल। से बलले, "ए-रकम चिठिते आमारइ मतो सामान्य लोकेर देहे एकेबारे बादशाहि मात्राय रक्त गरम हये ओठे। अदृश्य कोतोयाल बेटाके हाँक दिये डेके बलते इच्छे करे, शिर लेओ उसको।"

दिनेर वेला नानाप्रकार लेखापड़ार काज छिल, से-समस्त शेष करे सन्ध्यावेला विप्रदास कुमुके डेके पाठाले। कुमु आज सारादिन दादार काछे आसेइ नि। निजेके लुकिये लुकिये बेड़ाच्छे।

विप्रदास बिछाना छेड़े चौकिते उठे बसल। रोगीर मतो शुये थाकले

मनटा दुर्बल थाके। सामनेर दिके कुमुर जन्ये एकटा छोटो चौकि ठिक करे रेखेछे। आलोटा घरेर कोणे एकटु आड़ाल करे राखा। माथार उपर बड़ो एकटा टाना पाखा हुस हुस करे चलछे। वैशाख-शेषेर आकाशे तखनओ गरम जमे आछे, दक्षिणे हाओया एक एकबार अल्प एकटु निश्वास छेड़ेइ थेमे याच्छे, गाछेर पातागुलो येन एकान्त कान-पाता मनोयोगेर मतो निस्तब्ध। समुद्रेर मोहानाय गङ्गा येखाने नील जलके फिके करे दियेछे, अन्धकारटा येन सेइरकम। दीर्घविलम्बित गोधूलिर शेष आलोटा तखनओ तार कालिमार भितरे भितरे मिश्रित। बागानेर पुकुरटा छायाय अदृश्य हये थाकत, किन्तु खुब एकटा ज्वलज्वले तारार स्थिर प्रतिबिम्ब आकाशेर अङ्गुलि-संकेतेर मतो ताके निर्देश करे दिच्छे। गाछतलार निचे दिये चाकररा क्षणे क्षणे लण्ठन हाते करे यातायात करछे, आर पेँचा उठछे डेके।

कुमु बोध हय एकटु इतस्तत करे एकटु देरि करेइ एल। विप्रदासेर काछे चौकिते बसेइ बलले, "दादा आमार एकटुओ भालो लागछे ना। आमार येन कोथाय येते इच्छे करछे।"

विप्रदास बलले, "भुल बलछिस कुमु, तोर भालोइ लागबे। आर किछु दिन परेइ तोर मन उठबे भरे।"

"किन्तु ताहले—" बले कुम थेमे गेल।

"ता जानि—एखन तोर बन्धन काटाबे के?"

"तबे कि येते हबे दादा?"

"तोके निषेध करते पारि एमन अधिकार आर आमार नेइ। तोर सन्तानके तार निजेर घरछाड़ा करब कोन् स्पर्धाय?"

कुमु अनेकक्षण चुप करे बसे रइल, विप्रदासओ किछु बलले ना।

अवशेषे खुब मृदुस्वरे कुमु जिज्ञासा करले, "ताहले कबे येते हबे?"

"कालइ, आर देरि सइबे ना।"

"दादा, एकटा कथा बोध हय बुझते पारछ, एबार गेले ओरा आमाके आर कखनो तोमार काछे आसते देबे ना।"

"ता आमि खुबइ जानि।"

"आच्छा, ताइ हबे। किन्तु एकटा कथा तोमाके बले राखि, कोनोदिन कोनो कारणेइ तुमि ओदेर बाड़ि येते पारबे ना। जानि दादा, तोमाके देखबार जन्ये आमार प्राण हाँपिये उठबे, किन्तु ओदेर ओखाने येन कखनो तोमाके ना देखते हय। से आमि सइते पारब ना।"

"ना कुमु, सेजन्ये तोमाके भाबते हबे ना।"

"ओरा किन्तु तोमाके विपदे फेलबार चेष्टा करबे।"

"ओरा या करते पारे ता करा शेष हलेइ आमार उपर ओदेर क्षमताओ शेष हबे। तखनइ आमि हब स्वाधीन। ताके तुइ विपद बलछिस केन?"

"दादा, सेइदिन तुमि आमाकेओ स्वाधीन करे नियो। ततदिने ओदेर छेलेके आमि ओदेर हाते दिये याब। एमन किछु आछे या छेलेर जन्येओ खोओयानो याय ना।"

"आच्छा, आगे होक छेले, तार परे बलिस।"

"तुमि विश्वास करछ ना, किन्तु मार कथा मने आछे तो? ताँर तो हयेछिल इच्छामृत्यु। सेदिन संसारे तिनि ताँर जायगाटि पाच्छिलेन ना, ताइ ताँर छेलेमेयेदेरके अनायासे फेले दिये येते पेरेछिलेन। मानुष यखन मुक्ति चाय, तखन किछुतेइ ताके ठेकाते पारे ना। आमि तोमारइ बोन, दादा, आमि मुक्ति चाइ। एकदिन येदिन बाँधन काटब, मा सेदिन आमाके आशीर्वाद करबेन एइ आमि तोमाके बले राखलुम।"

आबार अनेकक्षण दुजने चुप करे रइल। हठात् हुहु करे वातास उठल, टिपायेर उपर विप्रदासेर पड़बार बइटार पातागुलो फर फर करे उलटे येते लागल। बागान थेके बेलफुलेर गन्धे घर गेल भरे।

कुमु बलले, "आमाके ओरा इच्छे करे दुःख दियेछे ता मने कारो ना। आमाके सुख ओरा दिते पारे ना आमि एमनि करेइ तैरि। आमिओ तो ओदेर पारब ना सुखी करते। यारा सहजे ओदेर सुखी करते पारे तादेर जायगा जुड़े केवल एकटा-ना-एकटा मुशकिल बाधबे। ता हले केन ए विड़म्बना। समाजेर काछ थेके अपराधेर समस्त लाञ्छना आमि एकला मेने नब, ओदेर गाये कोनो कलंक लागबे ना। किन्तु एकदिन ओदेरके मुक्ति देब, आमिओ मुक्ति नेब; चले आसबइ ए तुमि देखे नियो। मिथ्ये हये मिथ्येर मध्ये थाकते पारब ना। आमि ओदेर बड़ोबउ, तार कि कोनो माने आछे यदि आमि कुमु ना हइ? दादा, तुमि ठाकुर विश्वास कर ना, आमि विश्वास करि। तिन मास आगे ये-रकम करे करतुम, आज तार चेये बेशि करेइ करि। आज समस्त दिन धरेइ एइ कथा भावछि ये, चारि-दिके एत एलोमेलो, एत उलटो-पालटा, तबु एइ जञ्जाले एकेबारे ढेके फेले नि जगत्टाके। ए-समस्तके छाड़िये गियेओ चन्द्रसूर्यके निये संसारेर काज चलछे, सेइ येखाने छाड़िये गेछे सेइखाने आछे वैकुण्ठ, सेइखाने आछेन आमार ठाकुर। तोमार काछे ए-सब कथा बलते लज्जा करे,—किन्तु आर तो कखनो बला हबे ना, आज बले याइ। नइले आमार जन्ये मिछिमिछि

भाबबे। समस्त गियेओ तबु बाकि थाके एइ कथाटा बुझते पेरेछि। सेइ आमार अफुरान, सेइ आमार ठाकुर। ए यदि ना बुझतुम ताहले एइखाने तोमार पाये माथा ठुके मरतुम, से-गारदे ढुकतुम ना। दादा, ए-संसारे तुमि आमार आछ बलेइ तबे ए-कथा बुझते पेरेछि।" एइ बलेइ कुमु चौकि थेके नेबे दादार पायेर उपर माथा रेखे पड़े रइल। रात बेड़े चलल, विप्रदास जानालार बाइरे अनिमेष दृष्टि मेले भाबते लागल।

५८

परदिन भोरे विप्रदास कुमुके डेके पाठाले। कुमु एसे देखे विप्रदास बिछानाय बसे, एकटि एसराज आछे कोलेर उपर आर एकटि पाशे शोओयानो। कुमुके बलले, "ने यन्त्रटा, आमरा दुजने मिले बाजाइ।" तखनओ अल्प अल्प अन्धकार, समस्त रात्रिर परे वातास एकटु ठाण्डा हये अशथपातार मध्ये झिर झिर करछे, काकगुलो डाकते शुरू करेछे। दुजने भैरों रागिणीते आलाप शुरू करले, गम्भीर शान्त सकरुण; सतीविरह यखन अचञ्चल हये एसेछे, महादेवेर सेइदिनकार प्रभातेर ध्यानेर मतो। बाजाते-बाजाते पुष्पित कृष्णचूड़ार डालेर भितर दिये अरुण-आभा उज्ज्वलतर हये उठल, सूर्य देखा दिल बागानेर पाँचिलेर उपरे। चाकररा दरजार काछे एसे दाँड़िये थेके फिरे गेल। घर साफ करा हल ना। रोद्दुर घरेर मध्ये एल, दरोयान आस्ते आस्ते एसे खबरेर कागज टिपाइयेर उपर रेखे दिये निःशब्दपदे चले गेल।

अवशेषे बाजना बन्ध करे विप्रदास बलले, "कुमु तुइ मने करिस आमार कोनो धर्म नेइ। आमार धर्मके कथाय बलते गेले फुरिये याय ताइ बलि ने। गानेर सुरे तार रूप देखि, तार मध्ये गभीर दुःख गभीर आनन्द एक हये मिले गेछे; ताके नाम दिते पारि ने। तुइ आज चले याच्छिस कुमु, आर हयतो देखा हबे ना, आज सकाले तोके सेइ सकल बेसुरेर सकल अमिलेर परपारे एगिये दिते एलुम। शकुन्तला पड़ेछिस,—दुष्यन्तेर घरे यखन शकुन्तला यात्रा करे बेरियेछिल, कण्व किछुदूर पर्यंत ताके पौंछिये दिलेन। ये-लोके ताके उत्तीर्ण करते तिनि बेरियेछिलेन, तार माझखाने छिल दुःख-अपमान। किन्तु सेइखानेइ थामल ना ताओ पेरिये शकुन्तला पौंछेछिल अचञ्चल शान्तिते। आज सकालेर भैरोंर मध्ये सेइ शान्तिर सुर, आमार समस्त अन्तःकरणेर आशीर्वाद तोके सेइ निर्मल परिपूर्णतार

दिके एगिये दिक; सेइ परिपूर्णता तोर अन्तरे तोर बाहिरे, तोर सब दुःख तोर सब अपमानके प्लावित करुक।"

कुमु कोनो कथा बलले ना। विप्रदासेर पाये माथा रेखे प्रणाम करले। खानिकक्षण जानलार बाइरेर आलोर दिके ताकिये दाँड़िये रइल। तार परे बलले, "दादा, तोमार चा-रुटि आमि तैरि करे निये आसि गे।"

मधुसूदन आज दैवज्ञके डाकिये शुभयात्रार लग्न ठिक करे रेखेछिल। सकाले दशटार किछु परे। ठिक समये जरिर काज-करा लाल बनातेर घेटाटोपओआला पालकि एल दरजाय, आसासोटा निये लोकजन एल, समारोह करे कुमुके निये गेल मिर्जापुरेर प्रासादे। आज सेखाने नहवत बाजछे, आर चलछे ब्राह्मणभोजन, ब्राह्मणविदायेर आयोजन।

मानिक एल बार्लिर पेयाला हाते विप्रदासेर घरे। आज विप्रदास बिछानाय नेइ, जानलार सामने चौकि टेने निये स्थिर बसे आछे। बार्लि यखन एल कोनो खबरइ निले ना। चाकर फिरे गेल। तखन क्षेमा पिसि एलेन पथ्य निये, विप्रदासेर काँधे हात दिये बललेन, "विपु, वेला हये गेछे, बाबा।"

विप्रदास चौकि थेके धीरे धीरे उठे बिछानाय शुये पड़ल। क्षेमा पिसिर इच्छा छिल केमन धुमधाम करे आदर करे ओरा कुमुके निये गेल तार विस्तारित वर्णना करे गल्प करेन। किन्तु विप्रदासेर गभीर निस्तब्धता देखे कोनो कथाइ बलते पारलेन ना, मने हल विप्रदासेर चोखेर सामने एकटा अतलस्पर्श शून्यता।

विप्रदास यखन बले उठल, "पिसि, कालुके पाठिये दाओ" तखन एइ सामान्य कथाटाओ अदृष्टेर एकटा प्रकाण्ड निःशब्द छायार भितर थेके ध्वनित हल। पिसिर गा छमछम करे उठल।

कालु यखन एल, विप्रदास तार हाते एकखाना चिठि दिले। विलतेर चिठि सुबोधेर लेखा। सुबोध लिखेछे, बारेर डिनार शेष ना करेइ यदि से देशे आसे ताहले आबार ताके फिरे येते हबे। तार चेये शेष-डिनार सेरे माघ-फाल्गुन नागात देशे फिरे एले तार सुविधे हय, अनर्थक खरचेर आशङ्काओ बेंचे याय। तार विश्वास विषयकर्मेर प्रयोजन ततदिन सबुर करते पारे।

आजकेर दिने विषयकर्मेर संकट निये विप्रदासके पीड़ा दिते कालुर एकटुओ इच्छे छिल ना। कालु बलले, "दादा, एखनओ तो टाका तुले नेबार कोनो कथा ओठे नि, आर किछुदिन यदि सावधाने चलि, काउके ना घाँटाइ, ता हले शीघ्र कोनो उत्पात घटबे ना। याइ होक, तुमि कोनो भावना क'रो ना।"

विप्रदास बलले, "आमार कोनो भावना नेइ कालु। लशमात्र ना।"

विप्रदासेर भावना कालुर भालो लागे ना,--एक अत्यन्त निर्भावना तार आरओ खाराप लागे।

विप्रदास खबरेर कागज तुले निये पड़ते लागल, कालु बुझले ए-सम्बन्धे कोनो आलोचना करते विप्रदासेर एकटुओ इच्छा नेइ। अन्यदिन काजेर कथा शेष हलेइ कालु चले याय, आज से चुप करे बसे रइल, इच्छा करते लागल अन्य किछु कथा बले, या हय कोनो एकटा सेवाय लेगे याय। जिज्ञासा करले, "बाइरेर दिके ओइ जानलाटा बन्ध करे देब कि? रोद्दुर आसछे।"

विप्रदास हात नेड़े जानाले ये, दरकार नेइ।

कालु तबु रइल बसे। दादार घरे आज कुमु नेइ ए-शून्यता तार बुके चेपे रइल। हठात् शुनते पेले बिछानार निचे टम कुकुरटा गुमरे गुमरे केंदे उठल। कुमुके से चले येते देखेछे, की एकटा बुझेछे, भालो करे बोझाते पारछे ना।

योगायोग १३३६ सालेर आषाढ़ मासे ग्रन्थाकारे प्रकाशित हय।

विचित्रा पत्रे योगायोग धारावाहिक भावे (आश्विन १३३४—चैत्र १३३५) प्रकाशित हइयाछिल। प्रथम दुइ संख्याय उपन्यासटि तिन पुरुष नामे प्रकाशित हइयाछिल। तृतीयबारे कवि इहार नाम परिवर्तन करिया योगायोग नाम देन। एइ उपलक्षे विचित्राय "नामान्तर" नामे ये कैफियत प्रकाशित हय ताहा निम्ने मुद्रित हइल।

"तिन पुरुष" नाम धरे आमार ये-गल्पटा विचित्राय बेर हच्छे तार नाम रक्षा करतेइ हबे एमन कोनो दाय नेइ। काँचा थाकते थाकतेइ ओ-नामटा बदल करब बले स्थिर करेछि। पाठक-दरबारे तार कारण निर्देश करि।

नवजात कुमारकुमारीदेर नाम देबार जन्ये आमार काछे अनुरोध एसे थाके, अवकाशमतो से-अनुरोध पालन करेओ एसेछि। कारण एते कोनो दायित्व नेइ। व्यक्तिसम्बन्धे मानुषेर नाम तार विशेषण नय, सम्बोधनमात्र। लाउयेर बोँटा निये लाउयेर विचार केउ करे ना, ओटाते धरवार सुविधे। यार नाम दियेछि सुशील तार शीलता निये आमार कोनो जवाबदिहि नेइ। सुशील-ठिकानाय पत्र पाठाले शब्देर सङ्गे प्रयोगेर असंगतिदोष निये डाकपेयादा कागजे लेखालेखि करे ना, ठिक जायगाय चिठि पौँछोय।

व्यक्तिगत नाम डाकबार जन्ये, विषयगत नाम स्वभावनिर्देशेर जन्ये। मानुषकेओ यखन व्यक्ति बले देखि ने, विषय बले देखि, तखन तार गुण वा अवस्था मिलिये तार उपाधि दिइ,—काउके बलि बड़ोबउ, काउके बलि मास्टारमशाय।

साहित्ये यखन नामकरणेर लग्न आसे द्विधार मध्ये पड़ि। साहित्य-रचनार स्वभावटा विषयगत ना व्यक्तिगत एइटे हल गोड़ाकार तर्क। विज्ञानशास्त्रे विषयटाइ सर्वेसर्वा, सेखाने गुणधर्मेर परिचयइ एकमात्र परिचय। मनस्तत्त्वघटित बइयेर शिरोनामाय यखनइ देखब 'स्त्रीर सम्बन्धे स्वामीर ईर्षा' बुझब विषयटिके व्याख्या द्वाराइ नामटि सार्थक हबे। किन्तु 'ओथेलो' नाटकेर यदि ओइ नाम हत पछन्द करतुम ना। केनना एखाने विषयटि प्रधान नय, नाटकटिइ प्रधान। अर्थात् आख्यानवस्तु, रचनारीति, चरित्र-चित्र, भाषा, छन्द, व्यञ्जना, नाट्यरस सबटा मिलिये एकटि समग्र वस्तु। एकेइ बला चले व्यक्तिरूप। विषयेर काछ थेके संवाद पाइ, व्यक्तिर काछ थेके तार आत्मप्रकाशजनित रस पाइ। विषयके विशेषणेर द्वारा मने बाँधि, व्यक्तिके सम्बोधनेर द्वारा मने राखि।

एमन एकटा-किछु अवलम्बन करे गल्प लिखते बसलुम याके बला येते

पारे विषय। यदि मूर्ति गड़तेम एकताल माटि निये बसते हत। अतएव ओटाके "माटि" शिरोनामाय निर्देश करले विज्ञाने वा तत्त्वज्ञाने बाधत ना। विज्ञान यखन कुण्डलके उपेक्षा क'रे तार सोनार तत्त्व आलोचना करे तखन ताके नमस्कार करि। किन्तु कनेर कुण्डल निये वर यखन सेइ आलोचना-टाकेइ प्राधान्य देय तखन ताके बलि वर्बर। रसशास्त्रे मूर्तिटा माटिर चेये बेशि, गल्पटाओ विषयेर चेये बड़ो। एइजन्ये विषयटाकेइ शिरोधार्य करे निये गल्पेर नाम दिते आमार मन याय ना। वस्तुत रससृष्टिते वैष-यिकताके बड़ो जायगा देओया उचित हय ना। याँरा वैषयिक प्रकृतिर पाठक ताँदेर दाबिर जोरे साहित्यराज्ये हाटेर पत्तन हले दुःखेर विषय घटे। हाटेर मालिक विषयबुद्धिप्रधान विज्ञान।

एदिके सम्पादक एसे बलेन, संसारे नाम रूप दुटोइ अत्यावश्यक। आमि भेबे देखलुम, रूपेर आमरा नाम दिइ, वस्तुर दिइ संज्ञा। सन्देश येखाने रूप सेखाने ताके बलि "अवाक चाकि" येखाने वस्तु सेखाने ताके बलि मिष्टान्न। सम्पादकमशायेर संज्ञा हच्छे "सम्पादक", एखाने अर्थ मिलिये आदालते हलफ करे बलते पारि शब्देर सङ्गे विषयेर षोलो आना मिल आछे। किन्तु येखाने तिनि विषय नन्, रूप,—अर्थात् स्वतंत्र ओ एकमात्र, सेखाने कोनो एकटामात्र संज्ञा दिये ताँके बाँधा असम्भव। सेखाने ताँर आछे नाम। सेइ नामेर सङ्गे मिलिये शत्रु मित्र केउ ताँर याचाइ करे ना। पितामाता यदि ताँके "सम्पादक" नामइ दितेन तबे नाम सार्थक करबार जन्ये सम्पादक हबार कोनो दरकारइ ताँर थाकत ना।

गल्प जिनिसटाओ रूप; इङ्रेजिते याके बले क्रियेशन। आमि ताइ बलि गल्पेर एमन नाम देओया उचित नय येटा संज्ञा, अर्थात् येटाते रूपेर चेये वस्तुटाइ निर्दिष्ट। विषवृक्ष नामटाते आमि आपत्ति करि। कृष्ण-कान्तेर उइल नामे दोष नेइ। केनना ओ-नामे गल्पेर कोनो व्याख्याइ करा हय नि।

सम्पादकमशाय यखन गल्पेर नामेर जन्ये पेयादा पाठालेन ताड़ाताड़ि तखन तिन पुरुष नामटा दिये ताँके विदाय करा गेल। तार परक्षणेइ नामटा काहिनीर आँचलेर सङ्गे तार ग्रन्थिबन्धन करे निये काने काने मुहूर्ते-मुहूर्ते बलते लागल, यदेतत् अर्थं मम तदस्तु रूपं तव। आमार सङ्गे तोमाके सम्पूर्ण मिले चलते हबे। "छायेवानुगतास्वच्छा" इत्यादि। काहिनी बले, तार माने की हल? नाम बले, वाक्ये भावे आज थेके आमाके सप्रमाण करे चलाइ तोमार धर्म। काहिनी बले, रेजिस्टार बइये कर्तार ताड़ाय सम्मति

सइ करेछि बटे, किन्तु आज आमि हाजार हाजार पाठकेर सामने दाँड़ियेइ सेटा बेकबुल येते चाइ

कर्ता बलेन, तिन पुरुषेर तिन-तोरणओआला रास्ता दिये गल्पटा चले आसबे एइ आमार एकटा खेयालमात्र छिल। एइ चलाटा किछुइ प्रमाण करबार जन्ये नय, निछक भ्रमण करबार जन्येइ। सुतरां एइ नामटा त्याग करले आमार गल्पेर कोनो स्वत्वेर दलिल काँचबे ना।

अतएव सर्वसमक्षे आमार गल्प आज तार नाम खोयाते बसेछे। आमरा तिन सत्येर जोर मानि ; विचित्रार पाताय नाम सम्बन्धे दुइबार सत्यपाठ हये गेछे। तिनबारेर वेलाय मुख चापा देओया गेल।

आर-एकटा नाम ठाउरेछि। सेटा एतइ निर्विशेष ये गल्पमात्रेइ निर्वि-चारे खाटते पारे। सरकारि जिनिसमात्रेरइ मतो से-नामे चमत्कारिता नेइ। नाइ वा रइल। जापाने देखेछि, तलोयारेर फलकटार उपरे कारिगर यखन तार कारुकलार आनन्द ढेले देय खापटाके तखन नितान्त निरलंकार करे राखे। गल्प निजेइ निजेर परिचय देबार साहस राखे येन,—नामके येन जोरगलाय आगे आगे नकिबगिरि करते ना पाठाय।

तिन पुरुष नाम घुचिये आमार गल्पेर नाम देओया गेल 'योगायोग'।

४ अक्टोबर, १९२७ —विचित्रा। अग्रहायण १३१४
'किन्ता' जाहाज। श्यामेर पथ

बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ का यह उपन्यास 'योगायोग' नागराक्षरों में प्रकाशित हो रहा है। मूल बँगला ग्रंथ को ज्यों का त्यों हिन्दी में लिख दिया गया है। लेकिन बँगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से उसमें अन्तर है। बँगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण के लिए उन विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। पाठकों के सुभीते के लिए बँगला उच्चारण की कुछ विशेषताओं पर नीचे प्रकाश डालने की चेष्टा की जा रही है।

(१) बँगला में 'अ' का उच्चारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। वह 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है, जैसे अँग्रेजी के 'not' में 'o'। बँगला में लिखते हैं 'खाब', लेकिन पढ़ते हैं 'खाबो' जैसा।

(२) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बँगला में काफ़ी स्वतन्त्रता है। यह लचीलापन हिन्दी में नहीं है। दीर्घ ई और ऊ अगर पद के आदि में हों तो उनका उच्चारण प्रायः ह्रस्व जैसा होता है। जैसे 'ईश्वर' का उच्चारण 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(३) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच जैसा होता है। जैसे बँगला 'एक' में 'ए' का उच्चारण हिन्दी के 'ऐसा' में 'ऐ' के समान होता है।

(४) ऐकार का उच्चारण 'ओइ' जैसा होता है। जैसे, 'ऐकतान'—ओइकतान।

(५) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है। जैसे, हिमांशु—हिमांग्शु, बांला—बांग्ला।

(६) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्रायः हलन्त उच्चरित होता है, जैसे, आमार—आमार्, आँधार—आँधार्। लेकिन कविता में छन्दानुरोध से 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है। जैसे 'बकुल-बागान' में 'बकुल' का उच्चारण बकुल(ो) जैसा भी हो सकता है।

(७) बँगला में 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में बराबर 'ख' होगा। जैसे, क्षिति—खिति; क्षमा—खमा। लेकिन अन्यत्र 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' होगा। जैसे लक्षण—लक्खण।

(८) बँगला में 'ण' और 'न' दोनों का उच्चारण सदा 'न' ही होता है।

(९) बँगला में 'ब' और 'व' का अन्तर नहीं है। ये दोनों ही 'ब' पढ़े जाते हैं। तत्सम शब्दों के लिखने में भले ही 'व' को 'ब' ही लिखा

जाय लेकिन उसका उच्चारण 'ब' होता है। जैसे लिखा तो 'विवश' जाता है लेकिन पढ़ा जाएगा 'बिबश'।

(१०) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पड़े और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिए बँगला में 'ओय' लिखते हैं। जैसे 'तिवारी' का 'तिओयारी'; 'हवा' का 'हाओया'। यहाँ 'ओया' का उच्चारण 'वा' ही होगा।

(११) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है। जैसे, यात्रा--जात्रा; योग--जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढ़ेंगे। जैसे, नियम--नियम; नयन--नयन; समय--समय।

(१२) बँगला में तीनों सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यञ्जन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है। जैसे, स्तब्ध--स्तब्ध; स्निग्ध--स्निग्ध।

(१३) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व हो कर मकार का लोप कर देता है। जैसे, छद्म--छद्दँ; पद्म--पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नहीं होता। जैसे, स्मरण--सँरण, स्मृति--सृँति।

(१४) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व हो कर यकार-वकार का लोप कर देगा। जैसे, भृत्य--भृत्त; नित्य--नित्त; वाद्य--ब्राद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है। जैसे, द्वार--दार; ज्वाला--जाला।

(१५) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त में रहने पर भी जकार हो जाता है। जैसे, सूर्य्य--सूर्ज्ज; धैर्य्य--धैर्ज्ज।

(१६) प्रस्तुत ग्रंथ में 'व' के बदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढ़ना चाहिए। जैसे, पाओया--पावा; खाओया--खावा; याओया--जावा।

बँगला व्याकरण संबंधी कुछ ज्ञातव्य बातें

ऊपर बँगला शब्दों की उच्चारण-सम्बन्धी मुख्य विशेषताओं पर हम प्रकाश डाल चुके। अब बँगला व्याकरण की चर्चा करने जा रहे हैं। व्याकरण की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त कर लेना पाठकों के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

(क) क्रियारूप

बँगला में क्रिया के विभिन्न रूप हैं। क्रिया के इन विविध रूपों में जो अपरिवर्तित अंश है वही धातु है। धातु निर्णय का सहज उपाय यह है कि उत्तम पुरुष के वर्तमान काल के धातुरूप के अन्तिम 'इ' को हटा देने से जो रूप रह जाता है वही धातु है। जैसे आमि याइ (मैं जाता हूँ)। इसमें 'याइ' का 'इ' हटाने पर 'या' रह जाता है। 'या' धातु है। इसी प्रकार 'आमि कराइ' में 'करा' धातु है।

बँगला भाषा के दो रूप हैं: (१) साधु, और (२) चलित। 'लिखा', 'शुना' साधु रूप है और 'लेखा, 'शोना' चलित रूप। क्रियापद 'कहियाछे' साधु रूप है और 'कयेछे' चलित रूप है। सर्वनामों के विषय में भी यही बात है। अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में कोई भेद नहीं है। बोलने में चलित रूप का प्रयोग होता है और लिखने में साधु रूप का। वैसे आजकल के लेखक लिखने में भी चलित रूप का ही प्रयोग करते हैं।

सकर्मक और अकर्मक के अलावा बँगला में क्रिया के दो भेद और हैं: समापिका और असमापिका।

धातु में जिस विभक्ति के योग से समापिका क्रियापद बनता है उसे 'तिङ' कहते हैं और उस क्रियापद को 'तिङन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से तिङन्त पद करे, करेन, करिस, करि आदि। इसी प्रकार जिस प्रत्यय के योग से असमापिका क्रियापद अथवा विशेष्य-विशेषण बने, उसे 'कृत्' कहते हैं और उस पद को 'कृदन्त' पद कहते हैं। जैसे कर् धातु से कृदन्त पद (असमापिका क्रिया) करिते (करते), करिया (करके), करते, क'रे आदि।

प्रेरणार्थक धातु (णिजन्त धातु) बनाने के लिए बँगला के धातुरूप में 'आ' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे कर् से णिजन्त धातु 'करा' होगा।

बँगला में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया नहीं बदलती। जैसे, मेयेरा याच्छे (लड़कियाँ जा रही हैं); छेलेरा याच्छे (लड़के जा रहे हैं)।

क्रिया के तीन काल हैं: भूत, भविष्यत् और वर्तमान। लेकिन बँगला की क्रिया का काल-विभाग हिन्दी की तरह नहीं होता।

बँगला के क्रियापद में वचन-भेद नहीं होता। जैसे, से याइतेछे (वह जा रहा है), ताहारा याइतेछे (वे लोग जा रहे हैं)।

पुरुष तीन प्रकार के हैं: प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष के गौरवार्थक और सामान्य दो रूप हैं। जैसे, तिनि करेन (वे करते हैं),

से करे (वह करता है)। मध्यम पुरुष के गौरवार्थक, सामान्य और तुच्छ तीन रूप हैं। जैसे, आपनि करेन (आप करते हैं), तुमि कर (तुम करते हो) तथा तुइ करिस (तू करता है)। उत्तम पुरुष का केवल एक रूप है। जैसे आमि करि (मैं करता हूँ)।

बँगला के काल-भेद तथा उनके नामों की जानकारी भी उपयोगी होगी। बँगला व्याकरणों में दो प्रकार से उनके नाम दिए हुए हैं। नित्यप्रवृत्त, विशुद्ध, अद्यतन, अनद्यतन, परोक्ष, भूत-सामीप्य, वर्तमान-सामीप्य आदि नाम संस्कृत व्याकरण के अनुकरण पर रखे गये हैं। सहज तरीक़े से समझने के लिए उनका नामकरण निम्नलिखित ढंग से किया जाता है :

नाम	उदाहरण (साधु)
नित्यवृत्त वर्तमान	करे (करता है)।
घटमान ,,	करितेछे (कर रहा है)।
पुराघटित ,,	करियाछे (किया है)।
अनुज्ञा ,,	कर (करो)।
साधारण अतीत	करिल (किया)।
नित्यवृत्त ,,	करित (करता)।
घटमान ,,	करितेछिल (कर रहा था)।
पुराघटित ,,	करियाछिल (किया था)।
साधारण भविष्यत्	करिबे (करेगा)।
अनुज्ञा ,,	करिओ (करना)।

क्रिया की विभक्तियाँ
(चलित)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	छे	छेन	छ	छिस	छि
पुराघटित ,,	एछे	एछेन	एछ	एछिस	एछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	——	——
साधारण अतीत	ले	लेन	ले	लि	लाम
नित्यवृत्त ,,	त	तेन	ते	तिस	ताम
घटमान ,,	छिल	छिलेन	छिले	छिलि	छिलाम
पुराघटित ,,	एछिल	एछिलेन	एछिले	एछिलि	एछिलाम
साधारण भविष्यत्	बे	बेन	बे	बि	ब (बो)
अनुज्ञा ,,	बे	बेन	ओ	इस	——

(साधु)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	इतेछे	इतेछेन	इतेछ	इतेछिस	इतेछि
पुराघटित ,,	इयाछे	इयाछेन	इयाछ	इयाछिस	इयाछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	---	---
साधारण अतीत	इल	इलेन	इले	इलि	इलाम
नित्यवृत्त ,,	इत	इतेन	इते	इतिस	इताम
घटमान ,,	इतेछिल	इतेछिलेन	इतेछिले	इतेछिलि	इतेछिलाम
पुराघटित ,,	इयाछिल	इयाछिलेन	इयाछिले	इयाछिलि	इयाछिलाम
साधारण भविष्यत्	इबे	इबेन	इबे	इबि	इब
अनुज्ञा ,,	इबे	इबेन	इओ (इयो)	इस	---

क्रिया की इन विभक्तियों के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है।

'काट्' (काटना) धातु के नित्यवृत्त वर्तमान का चलित और साधु रूप इस प्रकार होगा :

चलित	साधु
काटे, काटेन, काट, काटिस, काटि	चलित जैसा ही होगा

घटमान अतीत का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप---काटछिल, काटछिलेन, किटछिले, काटछिलि, तथा काटछिलाम

साधु रूप---काटितेछिल, काटितेछिलेन, काटितेछिले, काटितेछिलि, तथा काटितेछिलाम।

साधारण भविष्यत् का रूप इस प्रकार होगा :

चलित रूप---काटबे, काटबेन, काटबे, काटबि, काटबो।

साधु रूप---काटिबे, काटिबेन, काटिबे, काटिबि, काटिबो। इसी प्रकार अन्य रूप भी समझे जा सकते हैं।

बहुत लोग 'लाम' के स्थान पर 'लुम' अथवा 'लेम' का प्रयोग करते हैं।

जैसे, 'काटलाम' (काटा) के बदले 'काटलुम' अथवा 'काटलेम' लिखते हैं।

इसी प्रकार से 'ताम' के बदले 'तुम' अथवा 'तेम' का प्रयोग करते हैं। जैसे, 'काटताम' (काटता) के स्थान पर 'काटतुम' अथवा 'काटतेम' लिखते हैं।

साधारण अतीत में सकर्मक क्रिया में 'ले' तथा अकर्मक क्रिया में 'ल' लगाते हैं। यह चलित रूप में होता है। जैसे, करले (किया), खेले (खाया), दिले (दिया), तथा गेल (गया), शुल (सोया), दौड़ल (दौड़ा)। वैसे इसका व्यतिक्रम भी देखा जाता है। बहुत लोग 'करल' (किया), 'बलल' (बोला) आदि लिखते हैं।

(ख) कारक

बँगला में कारक सात हैं : कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध तथा अधिकरण।

कारक की कई विभक्तियों को मूल विभक्ति कहा जा सकता है। वैसे प्रयोग में आने वाली कई विभक्तियाँ मुख्यत: कर्ता, कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण सूचक हैं। जैसे के, र, ते क्रमश: कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं। प्रत्येक कारक की अलग विभक्तियाँ नहीं हैं। निम्नलिखित कई विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न कारकों में प्रयुक्त होती हैं :

विभक्ति	कारकों के नाम
ए, य, ते, ये	कर्ता, करण, सम्प्रदान, अधिकरण
रा, एरा	कर्ता (बहुवचन)
दिगके, दिके, देर	कर्म, सम्प्रदान (बहुवचन)
के, रे	कर्म, सम्प्रदान (एकवचन)
एर (येर), र, कार	सम्बन्ध (एकवचन)
दिगेर, देर	सम्बन्ध (बहुवचन)
देर	कर्म (बहुवचन)
एते	अधिकरण (एकवचन)

बहुत स्थानों पर पद योग करने से कारक निष्पन्न होता है। जैसे, बाड़ी थेके (घर से), पेन्सिल दिये (पेन्सिल से), मानुषेर द्वारा (मनुष्य से) आदि। द्वारा, दिये, आदि करणकारक-सूचक हैं तथा थेके, अपादानकारक-सूचक। लेकिन द्वारा, दिया आदि को अव्यय मानना उचित है। इनका प्रयोग विभक्ति के बाद भी मिलता है। जैसे, मन्त्रेर द्वारा (मन्त्र से)। इसमें 'एर' सम्बन्धकारक की विभक्ति है और उसके बाद 'द्वारा' का प्रयोग हुआ है।

टा और टि का प्रयोग, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। जैसे, छेलेटा (लड़का), कविताटि (कविता)। इसमें अर्थ ज्यों का त्यों है। टा का प्रयोग प्रायः अनादरसूचक है और 'टि' का प्रयोग बहुत-कुछ आदरसूचक।

गुला, गुलो, गुलि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। इनसे बहुवचन सूचित होता है। 'गुला' 'गुलो' अनादर-सूचक हैं और 'गुलि' आदरसूचक। लोकगुला (लोग), जिनिसगुलो (वस्तुएँ), मेयेगुलि (लड़कियाँ)।

'खाना', 'खानि' का प्रयोग केवल पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। 'खाना' अनादरसूचक है और 'खानि' आदरसूचक। जैसे, मुखखानि (मुख), कागजखाना (कागज़)।

'गण', 'रा', 'एरा' (येरा) का प्रयोग साधारणतः व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तुओं के लिए होता है। जैसे देवगण, छेलेरा (लड़के)।

'ए', 'ये', 'ते', 'ये' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है : अकारान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्द हो तो 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे मानुषे, विद्युते। आकारान्त अथवा एकारान्त शब्द हो तो 'य' और 'ते' का व्यवहार होता है। जैसे छेलेय, सेवाय। अगर इनसे भिन्न स्वरान्त शब्द हो तो 'ते' का व्यवहार होता है। जैसे, छुरिते। एकाक्षर शब्द अथवा अन्त में दो स्वर आएँ तो 'ये' का प्रयोग होता है। जैसे, गाये (शरीर में), दइये (दही में)।

विभिन्न कारकों में विभक्ति के प्रयोग

कर्ता कारक :

साधारणतः कर्ता, एकवचन में कोई विभक्ति नहीं होती। जैसे, राम खाच्छे (राम खा रहा है)।

कर्तृवाच्य के प्रयोग से कभी-कभी कर्ता में 'ए' विभक्ति लगती है। जैसे, लोके बले (लोग कहते हैं)।

कर्ता अनिर्दिष्ट होने पर अथवा कर्ता में करण या अधिकरण का भाव रहने पर ए, य, ते, ये, योग करते हैं। जैसे, पोकाय केटेछे (कीड़े ने काटा है), वेदे बले (वेद में कहा गया है), वृष्टिते भासियें दिले (वर्षा से बहा दिया)।

एकजातीय कर्ता का भाव बताते समय 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे, पण्डिते पण्डिते तर्क चलेछे (पण्डितों में तर्क हो रहा है)।

बहुवचन में गण, रा, एरा (येरा) का प्रयोग होता है। जैसे, पण्डितेरा बलेन (पण्डित लोग कहते हैं)। आदरसूचक या समूहबोधक कर्ता होने पर रा के बदले एरा का प्रयोग होता है। जैसे, बउएरा (बहुएँ)। गुलो, गुला, गुलि का प्रयोग बहुवचन में होता है, जिसपर पहले ही प्रकाश डाला जा चुका है।

कर्म कारक :

एकवचन में साधारणतः कोई विभक्ति नहीं होती। जैसे, डाक्तार डाक (डाक्टर को बुलाओ)। वैसे इसका कोई निर्दिष्ट नियम नहीं है; कभी विभक्ति का लोप होता है, कभी नहीं होता। जैसे, भगवानके डाक (भगवान को पुकारो)।

कर्मपद प्राणिवाचक अथवा व्यक्ति का नाम हो तो 'के' विभक्ति का प्रयोग होता है और अप्राणिवाचक या क्षुद्र प्राणिवाचक शब्दों में 'के' का प्रयोग नहीं होता। पद्य में रे, ए, य का प्रयोग होता है। जैसे, गुरुरे डाकिया (गुरु को पुकार कर), गुरुजने कर नति (गुरुजन को प्रणाम करो)। बहुवचन होने पर गणके, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। जैसे देवगणके, ताहादिगके आदि।

द्विकर्मक क्रिया के गौण कर्म में के, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। मुख्य कर्म में विभक्ति नहीं लगाते। जैसे, छेलेके दुध दाओ (लड़के को दूध दो)।

कर्मवाच्य के प्रयोग में कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति लगती है। जैसे, रामके बला हय नाइ (राम से कहा नहीं गया है)।

कर्म-कर्तृवाच्य के प्रयोग में भी कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति होती है। जैसे, तोमाके कृश देखाइतेछे (तुम दुबले दीखते हो)।

करण कारक :

करण कारक में साधारणतः द्वारा, दिया विभक्ति होती है और कभी-कभी इन दोनों के बदले 'हइते' विभक्ति प्रयुक्त होती है। कभी-कभी 'ए' विभक्ति भी होती है।

'द्वारा' और 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थ-वाचक शब्दों में होता है। सम्बन्ध-विभक्ति के बाद भी 'द्वारा' का प्रयोग होता है। व्यक्तिवाचक शब्दों के बहुवचन में 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग नहीं होता। जैसे, भृत्येरद्वारा, अश्वेर द्वारा, किन्तु साबान दिया (साबुन से)।

केवल व्यक्तिवाचक शब्दों में कर्म-विभक्ति के बाद 'दिया' अथवा 'दिये'

का व्यवहार होता है। जैसे, चाकरदिगके दिये (नौकरों से), चाकरके दिये (नौकर से)।

केवल जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के बाद ए, य, ते, ये, जोड़ा जाता है। जैसे, सेवाय तुष्ट (सेवा से तुष्ट), एइ गाड़ि गरुते चले (यह गाड़ी बैल से चलती है)।

सम्प्रदान कारक :

सम्प्रदान कारक की विभक्ति प्रायः कर्म कारक के समान है। जैसे, दरिद्रके धन दाओ [दरिद्र को ('के लिये') धन दो]।

कभी-कभी ए, य, ते, का भी व्यवहार होता है। जैसे सत्पात्रे, देव-सेवाय आदि।

अपादान कारक :

इस कारक की विभक्तियाँ हइते, (ह'ते), थेके, अपेक्षा आदि हैं। जैसे, गृह हइते (गृह से), तिन दिन थेके (तीन दिनों से)।

कभी-कभी 'दिया' का भी व्यवहार होता है। जैसे, ताहार मुख दिया एमन कथा बाहिर हइबे ना (उसके मुँह से ऐसी बात नहीं निकलेगी)।

'निकट' आदि शब्दों में अपादान कारक की विभक्ति विकल्प से लोप होती है। जैसे, आमि ताहार निकट ए कथा शुनियाछि (मैंने उससे ऐसी बात सुनी है)।

तुलना करते समय सम्बन्ध कारक की विभक्ति के बाद अपेक्षा, चेये, चाइते आदि लगाते हैं। जैसे, तोमार चेये वृद्ध (तुमसे अधिक वृद्ध)।

कभी-कभी सप्तमी की 'ए' विभक्ति भी अपादान में प्रयुक्त होती है। जैसे, मेघे वृष्टि हय (मेघ से वृष्टि होती है)।

सम्बन्ध कारक :

र, एर, इस कारक की विभक्तियाँ हैं। साधारणतः शब्दों के अन्त में 'र' योग करने से सम्बन्ध कारक सूचित होता है। 'एर' का योग शब्दों में उस समय होता है जब उनका रूप एकवचन का हो तथा वे अकारान्त, व्यञ्जनान्त, एकाक्षर शब्द हों अथवा उनके अन्त में दो स्वर हों। जैसे, मायेर (माँ का), जामाइयेर (दामाद का)। 'र' विभक्ति का उदाहरण—दयार (दया का), चुरिर (चोरी का)।

'र' विभक्ति का प्रयोग उस हालत में भी होता है जब मनुष्य के नाम का उच्चारण अकारान्त हो। जैसे, अमूल्यर (अमूल्य का)। लेकिन

शिव का शिवेर होगा क्योंकि शिव के उच्चारण में व हलन्त की तरह उच्चरित होता है।

विशेषण-पदों में केवल 'र' योग करते हैं। जैसे, भालर जन्य (अच्छे के लिए)।

समय अथवा अवस्थान-वाचक शब्दों में 'कार' योग करते हैं। जैसे, आजिकार (आज का), उपरकार (ऊपर का)।

व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तु के सूचक बहुवचन शब्दों में देर, दिगेर, गणेर का योग करते हैं। जैसे, छेलेदेर (लड़कों का), जन्तुदिगेर (जन्तुओं का)। व्यक्ति, जन्तु तथा पदार्थवाचक बहुवचन में गुलार, गुलोर, गुलिर, सकलेर, समूहेर आदि का प्रयोग होता है। जैसे, मेयेगुलिर (लड़कियों का)। जिनिसगुलोर (वस्तुओं का), प्राणि सकलेर (प्राणियों का), इत्यादि।

अधिकरण कारक :

ए, य, ते, ये, अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं।

अधिकरण दो प्रकार के हैं: कालबोधक और आधारसूचक। क्रिया जब किसी काल में समाप्त होती है तब उसे कालवाचक अधिकरण कहते हैं और जब किसी स्थान पर समाप्त होती है तब वहाँ आधार-अधिकरण का भाव आ जाता है। 'प्रभाते आमरा बेड़ाइया थाकि' (सबेरे में हमलोग टहला करते हैं)। यह कालवाचक अधिकरण का उदाहरण है।

आधार अधिकरण तीन तरह के हैं--ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक। उदाहरणार्थ :

ऐकदेशिक--ऋषि वने थाकितेन (ऋषि वन में रहते थे)।

वैषयिक--आमि विद्याय आपनार निकट बालक (विद्या में मैं आपके निकट बालक हूँ)।

अभिव्यापक--तिले तैल आछे (तिल में तेल है)।

कालवाचक शब्द के बाद कभी-कभी विभक्ति योग नहीं करते। जैसे, एक समय आमि बिश क्रोश हाँटिते पारिताम (एक समय था जब मैं बीस कोस पैदल चल सकता था); ए समय से कोथाय (इस समय वह कहाँ है)। लेकिन अगर विशेषण पद कालवाचक शब्द के पहले न हो तो विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है। जैसे, दिने घुमाइयो ना (दिन में न सोना)।

क्रिया गमनार्थक होने पर कभी-कभी अधिकरण की विभक्ति नहीं लगती। जैसे, काशी पाठाओ (काशी भेजो); कलिकाता याइब (कलकत्ते जाऊंगा)।

बहुवचन में गण, गुला, गुलो, गुलि, सकल आदि के बाद विभक्ति का योग होता है। जैसे, कथागुलिते (बातों में); जीवगणे (जीवों में)।

(ग) सर्वनाम

बँगला में सर्वनाम के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं :

पुरुषवाचक सर्वनाम--आमि (मैं), तुमि (तुम); से (वह) इत्यादि।

निर्देशक या निर्णयसूचक सर्वनाम--ताहा (तद्); इहा (यह); उहा (वह) इत्यादि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम--कि (क्या), के (कौन) आदि।

सापेक्ष या समुच्चयी सर्वनाम--ये

अनिर्देश या अनिश्चयसूचक सर्वनाम--केह, केउ (कोई) आदि।

आत्मवाचक सर्वनाम--निजे, आपनि, स्वयं आदि।

साकल्यवाचक सर्वनाम--उभय, सकल, सब आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं :--उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष, जिसे हिन्दी में अन्य पुरुष कहते हैं।

कर्ता कारक के एकवचन में इन पुरुषों के निम्नलिखित रूप हैं।

	सामान्य	तुच्छ	गौरवार्थ
उत्तम पुरुष	आमि (मैं)		
मध्यम पुरुष	तुमि (तुम)	तुइ (तू)	आपनि (आप)
प्रथम पुरुष	से, ताहा, ता (वह)		तिनि (वे)
	ये, याहा, या (जो)		यिनि (जो)
	के (कौन), कि (क्या)		के, किनि (कौन)
	ए, इहा (यह)		इनि (ये)
	ओ, उहा (वह)		उनि (वे)

व्यक्तिबोधक--तिनि, यिनि, के (किनि), इनि, आपनि, तुमि, तुइ, आमि।

व्यक्ति अथवा जन्तुवाचक--से, ये, के।

व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक--ए, ओ।

पदार्थ अथवा क्षुद्र जन्तुवाचक--ताहा (ता), याहा (या), कि, इहा, उहा।

वचन और कारक-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन होता है, लेकिन स्त्रीलिंग और पुंलिंग-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन नहीं होता।

याहाते, ताहाते आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण की तरह होता है।

से, ये, कि, ए, ओ का प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है। जैसे, से दिन (उस दिन)।

कारकों की विभक्ति सहित सर्वनामों के रूप

उत्तम पुरुष :

आमि (मैं)
(पुंलिंग और स्त्रीलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आमि, मुइ	आमरा, मोरा
कर्म	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरके, मोदिगके, मोदिगेरे, मोदेर
करण	आमाद्वारा, आमार द्वारा, आमाके दिया, आमा-हइते (ह'ते), आमा-कर्तृक	आमादिग (-दिगेर) द्वारा, दिया, कर्तृक; आमादेर दिया, द्वारा
सम्प्रदान	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरे मोदेर, मोदेरे, मोदिगके
अपादान	आमा हइते, आमा ह'ते	आमादेर (आमादिग) हइते
सम्बन्ध	आमार, मोर (मझु), मम	आमादिगेर, आमादेर मोदेर
अधिकरण	आमाय, आमाते, मोते	आमादिगेते, आमादिगेर सकले, मोदिगे

मध्यम पुरुष

तुमि (तुम)
(स्त्रीलिंग और पुंलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तुमि, तुइ	तोमरा, तोरा
कर्म	तोमाके, तोमार, तोके, तोरे तोर	तोमादिगके, तोदेर, तोदिगके
करण	तोमाद्वारा, तोमाकर्तृक, तोर द्वारा	तोमादिगेर द्वारा, तोदेर द्वारा
सम्प्रदान	(कर्म कारक के समान रूप होता है)	
अपादान	तोमा हइते, तोर हइते	तोमादेर हइते, तोदेर हइते
सम्बन्ध	तोमार, तोर, तव	तोमादिगेर, तोमादेर, तोदेर
अधिकरण	तोमाते, तोमाय, तोके, तोय	तोमादिगते, तोमादेर सकले, तोमादिगते

तुइ (तू) शब्द का व्यवहार तीन अर्थों में होता है :

(१) तुच्छार्थ में--निर्लज्ज तुइ क्षत्रिय समाजे (क्षत्रिय समाज में तू निर्लज्ज है)।

(२) स्नेह-वात्सल्य में--तुइ आमार नयनमणि (तू मेरे नयनों की मणि है)।

(३) देवतादि के संबोधन में--तुइ कि बुझबि श्यामा मरमेर वेदना [श्यामा (माँ काली), तू मर्म-वेदना को क्या समझेगी]।

करण और अपादान का अलग रूप नहीं है। कर्म अथवा सम्बन्ध कारक के रूपों में दिया, द्वारा, हइते योग करने से इन दोनों कारकों का रूप प्राप्त हो जाता है।

आपनि (आप)

चलित रूप		साधु रूप	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आपनि	आपनारा	आपनि	आपनारा
आ नाके	आपनादिगके,-देर	आपनाके	आपनादिगके
आपनार	आपनादेर	आपनार	आपनादिगेर,-देर
आपनाते	--	आपनाते	--

प्रथम पुरुष

तिनि (वे)

	चलित		साधु	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तिनि	ताँरा	तिनि	ताँहारा
कर्म, सम्प्रदान	ताँके	ताँदिके, ताँदेर	ताँहाके	ताँहादिगके
सम्बन्ध	ताँर	ताँदेर	ताँहार	ताँहादिगेर ताँहादेर
अधिकरण	ताँते	--	ताँहाते	--

यिनि (जो) का रूप तिनि की तरह ही होता है।

उपर्युक्त क्रम से अर्थात् पहली पंक्ति में कर्ता, द्वितीय में कर्म-सम्प्रदान, तृतीय में सम्बन्ध और चतुर्थ में अधिकरण कारक के अन्य सर्वनामों के रूप नीचे दिये जा रहे हैं।

इनि (ये)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
इनि	एँरा	इनि	इँहारा
एँके	एँदिके, एँदेर	इँहाके	इँहादिगके
एँर	एँदेर	इँहार	इँहादिगेर, इँहादेर
एँते	--	इँहाते	—

उनि (वे)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उनि	ओँर	उनि	उँहारा
ओँके	ओँदिके, ओँदेर	उँहाके	उँहादिगके
ओँर	ओँदेर	उँहार	उँहादिगेर, उँहादेर
ओँते	--	उँहाते	--

से (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
से, ता	तारा	से, ताहा	ताहारा
ताके	तादिके, तादेर	ताहाके	ताहादिगके
तार	तादेर	ताहार	ताहादिगेर, ताहादेर
ताते (ताय)	--	ताहाते (ताय)	—

ये, याहा (जो) का रूप से, (ताहा)–जैसा होगा।

के (कौन)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
के, किनि	काँरा	के, किनि	काँहारा
काके	कादिके, कादेर	काहाके	काहादिगके
कार	कादेर	काहार	काहादिगेर, काहादेर
काते, किसे	—	काहाते	—

ए, इहा (यह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ए	एरा	ए, इहा	इहारा
एके	एदिके, एदेर	इहाके	इहादिगके
एर	एदेर	इहार	इहादिगेर, इहादेर
एते	--	इहाते	--

ओ, उहा (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ओ	ओरा	ओ, उहा	उहारा
ओके	ओदिके, ओदेर	उहाके	उहादिगके
ओर	ओदेर	उहार	उहादिगेर, उहादेर
ओते	--	उहाते	--

ए, इहा, इनि से निकटस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है और ओ, उहा, उनि से दूरस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है।

'ताय' (उसको, उसमें) का प्रयोग प्रायः पद्य में होता है।

'किसे' केवल पदार्थवाचक है।

'किनि' का प्रयोग साधु और चलित दोनों रूपों में प्रायः अप्रचलित हो गया है।
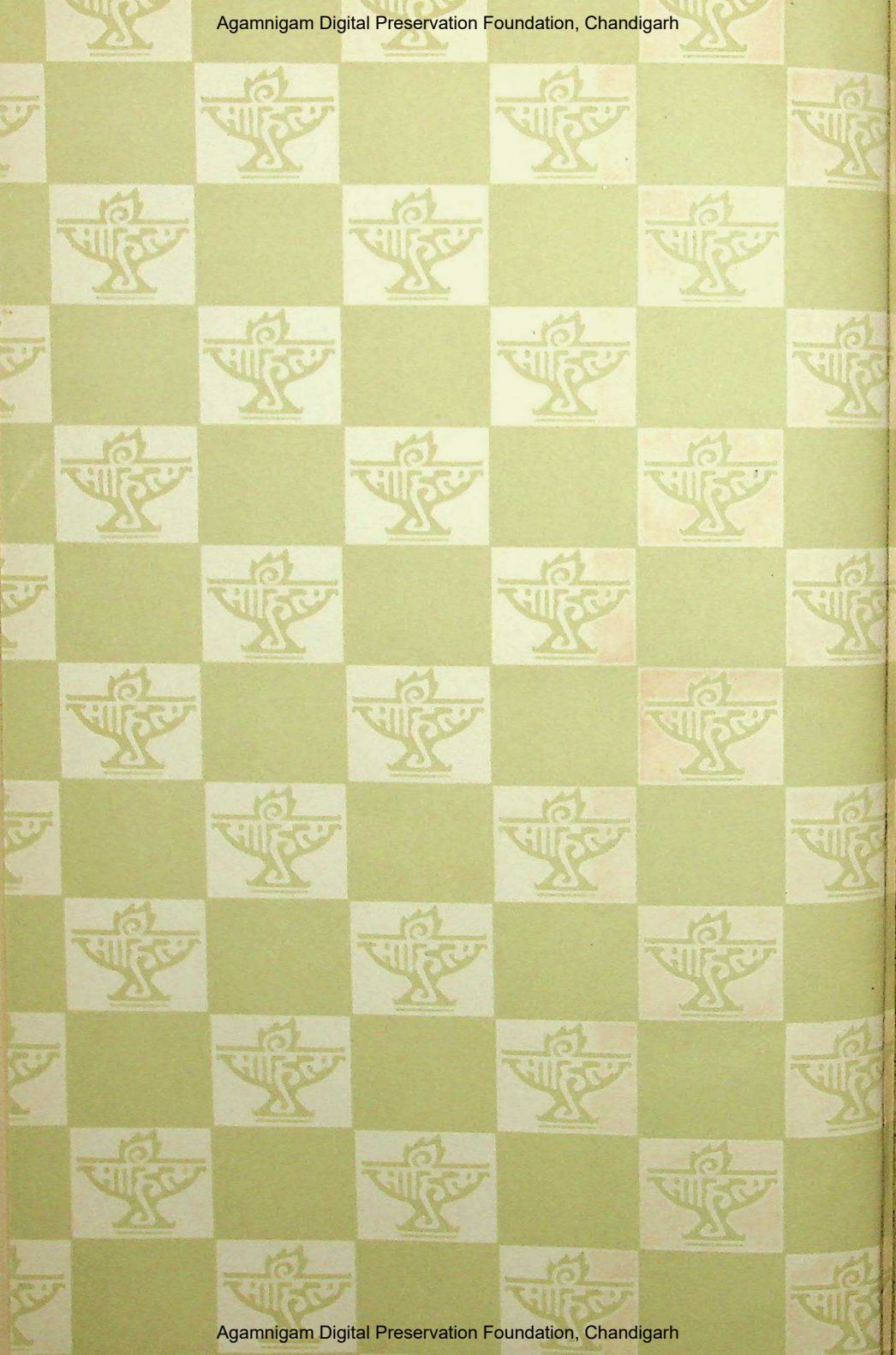
रवीन्द्र-शताब्दी-समारोह के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की समस्त कृतियों में से विशिष्ट रचनाओं का सङ्कलन देवनागरी लिपि में निम्न प्रकार से प्रकाशित करने का आयोजन किया है :

१ : एकोत्तरशती (१०१ कविताएँ); २ : गीत-पञ्चशती (५०० गीत); ३ : एकविंशती (२१ कहानियाँ); ४ : नाट्य-सप्तक (सात नाटक: विसर्जन, चित्राङ्गदा, चिरकुमार-सभा, राजा, डाकघर, मुक्तधारा तथा रक्तकरबी); ५ : तीन उपन्यास (गोरा, चोखेर बालि तथा योगायोग); ६ : निबन्धमाला खण्ड १ (दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सामयिक विषयों पर निबन्ध); ७ : निबन्ध-माला खण्ड २ (साहित्यिक विषयों पर निबन्ध, संस्मरण, यात्रावर्णन एवं पत्र आदि); ८ : बालसाहित्य (बालोपयोगी चुनी हुई रचनाओं का सङ्कलन)।

यह सङ्कलन कई खण्डों में प्रकाशित होगा। अब तक इनमें से 'एकोत्तरशती', 'गीत-पञ्चशती', 'गोरा', 'चोखेर बालि', 'नाट्य-सप्तक' (प्रथम खण्ड) तथा 'बाल साहित्य' प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रस्तुत खण्ड **योगायोग** गुरुदेव के अन्तिम उपन्यासों में है, जिसमें वंगीय आभिजात्य वर्ग के सामाजिक जीवन का अन्तश्चित्र है। इसमें विलुप्तप्राय सामन्तीय शक्तियों और नवोदित व्यवसायी वर्ग के संघर्ष की, सद्यसम्पन्न उद्धत अहङ्कार और परम्परागत नैतिकता के संघर्ष की कहानी है। कहानी के माध्यम हैं: अपनी क्षमता से धनोपार्जन करके सम्पन्न बनने वाला असंस्कृत, उद्दण्ड, लखपति मधुसूदन और उसकी पत्नी कुमुदिनी, जो अस्तोन्मुखी जीवन-पद्धति के सर्वोत्तम गुणों की सच्ची प्रतिनिधि है। घटनाओं की दुर्निवार धारा में ये दो नितान्त भिन्न चरित्र निकट आने को विवश होते हैं और परस्पर टकरा जाते हैं। इस टकरा-हट से उत्पन्न परम्परागत मूल्यों की पराजय इस उत्कृष्ट कलाकृति को पावन करुणा के सौन्दर्य से भर देती है। चरित्र-चित्रण के सूक्ष्म कौशल और युगीन जीवन के विशद चित्रण के कारण **योगायोग** भारतीय साहित्य की एक अविस्मरणीय रचना है।

इस रचना का नागरी लिप्यन्तर डा० कणिका विश्वास ने किया है। पुस्तक के अन्त में पाठकों के लाभार्थ परिशिष्ट रूप से बँगला भाषा के उच्चारण और व्याकरण-वैशिष्ट्य पर एक टिप्पणी भी दी गई है, जिसका सम्पादन डा० सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय तथा डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने मिल कर किया है।

इस शृंखला के अन्य खण्ड तैयार किये जा रहे हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। इस ग्रन्थमाला में सङ्कलित सभी रचनाओं का प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी प्रस्तुत किया जा रहा है।